चरवाहे की कहानी की किताब

नए समुदायों के नए चरवाहों के प्ररिक्षिण के लिए

रौब थियेसन, जार्ज पैटरसन चतुर्थ संस्करण-मई 2003

चतुर्थ संस्करण - मई 2003
शोधित-4 जनवरी 2004

अनेक भाषाओं मे निशुल्क डाउनलोड
http://www.paul-Timothy.net.

अनुवादक

आप इस अभिलेख का प्रयोग, अनुवाद, छपाई तथा प्रकाशन बिना किसी पुर्व आज्ञा तथा बिना किसी अधिकार के ईसाई चर्च कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिये किसी भी देश व समुदाय के लिये कर सकते है।

यदि आप इस पुस्तक को अनुवाद तथा प्रकाशित करें तो कृप्या दो बातों का ध्यान रखे:

1) इस पृष्ठ की कृतिस्वाम्य कथन का समावेश करें ताकि कोई भी कानूनन इसका वितरण ना रोक सके।

2) यदि संभव हो तो हमें इसकी एक प्रति, कम्प्यूटर फाईल में भजें आपकी भाषा बोलने वालो अन्यों के साथ बाँटने के लिये। उसको http://www.paul- Timothy.net.

अनुवादन में पृष्ठ की गिनतियों का क्रय बदल जायेगा। पृष्ठ की गिनती की जगह आपको खण्ड तथा अध्याय मिलेगें खण्ड संख्या I, II तथा III से, और अध्याय संख्या I, II तथा III से, आदि। उदाहरणत: II-5 का अर्थ खण्ड II ,अध्याय 5 खण्ड I के अध्याय 'खोज' कहलातें हैं, खण्ड II के ''आज्ञाये'' तथा खण्ड III में ''प्रबन्धन''। जब आप अनुवाद करें तो कहानी के पात्रों के नामों को लेकर भ्रमित ना हो : मि. वइिज़ अन्यों से वृद्ध है। वो बढ़ई है। वो समुदायों को शुरू करने के लिये लर्नर के क्षेत्र में जाते है। लर्नर पहले एक लकड़ी का कार्य करने वाले के रूप में मि. वाइेज़ का शिष्य है तथा बाद में एक नए चरवाहे के रूप में सारे लर्नर की पत्नी है।

डेबराह लर्नर के घर के पास रहती है

सैमुअल डेबराह का भाई है तथा केवल खण्ड III मे प्रकट होता है

हेल्पर लर्नर का भाई है तथा पड़ोस की दूसरी बिरादरी में रहता है।

राशेल लर्नर की पत्नी है।

मि. फूलिश उसी क्षेत्र मे रहते है तथा कहानी में बेईमानी भरे वार्तालाप करते है।

केयर गिवर मि. फूलिश के बहनोई है तथा बुद्धिमान है। वो हेल्पर के पड़ोस में रहता है।

कारमैन केयर गिवर की पत्नी है।

जेकर लर्नर के चर्च का एक बुजुर्ग है (प्राचीन है) तथा एक दुकान का स्वामी है।

सैफायर जेकब की दुकान की एक कर्मचारी है ।

जोसफ़ खण्ड III में नए का एक बुजुर्ग (प्राचीन) है लोसा जोसफ़ की पत्नी है।

रूत एक नई शादीशुदा है, खण्ड़ III में प्रकार होती है।

तोबाइस रूत का पति है तथा नशीली दवाईयों का दीवाना है।

रौब थियेसन तथा एनी के द्वारा कापीराइट (c) 2003

विषय-सूची

अपनी इच्छानुसार विषयों को देखने के लिये इस सूची का प्रयोग करें।

यदि वर्तमान आवश्यकता धर्मप्रचार की है तो चुनिए खण्ड I,खोज

यदि वर्तमान आवश्यकता नए चर्च को स्थापित करने की है तो खण्ड II का प्रयोग करें, आज्ञायें।

यदि चर्च के मार्गदर्शकों को प्रशिक्षित करने की अतिशीघ्र आवश्यकता है तो खण्ड III का प्रयोग करें, प्रबन्धन।

परिचय (प्रस्तावना)

यह पुस्तक किस के लिये है ?

कहानीयों को क्यों प्रयोग करे ?

इस पुस्तक का कैसे उपयोग करे ?

चरवाहे की कहानी की किताब इंटरनेट द्वारा नि: शुल्क

खण्ड I : मसीह को खोजने में लोगों की सहायता करें

खण्ड I के अध्याय 'खोज' है:

I-I- खोज 1: जीवन के सच्चे अर्थ को दूँढ़े *(परमेश्वर हमसे प्रेम करता है तथा चाहता है कि हम उसमें हमेशा आनंदित रहें)*

I-2-खोज 2: एक परमेश्वर की ओर मुड़े *(मूरतें छोड़े तथा जो भी सर्वव्यापी परमेश्वर का स्थानाप्पन हो उसे त्यागें)*

I-3-खोज 3: यीशु में क्षमा तथा जीवन दूँढ़े *(उसके कार्य, उसकी मृत्य तथा पुर्नत्थान पर भरोसा करें)*

I-4-खोज 4: पाप और मृत्यु की शक्तियों सें बचें *(यीशु की मृत्यु तथा शैतान पर विजय)*

I-5-खोज 5: जीवन की आवश्यक चीज़ो को पहचानें *(पापों से मुड़ें तथा अनंत मूल्य की चीजों को खोजें)*

I-6-खोज 6: सच्ची धार्मिकता खोज़े *(जो लोग कहते हैं कि वो अच्छे है, उन्हें भी परमेश्वर की क्षमा की आवश्यकता है)*

I-7-खोज 7: यीशु में अनंत जीवन पायें *(बपतिस्मा से शुरूआत करके, आज्ञाकारिता के द्वारा वि.श्वास दिखाएं)*

I-8-खोज 8: यीशु के अनुयायी बनें *(जीवित मसीह को जो मिले तथा अनुकरण करें)*

खण्ड II : मसीह के आज्ञाकारी समुदाये स्थापित करें

खण्ड II के अध्याय मसीह की सात मूल आज्ञायों है।

II-1-यीशु की आज्ञा 1 : पश्चाताप, विश्वास तथा पवित्रआत्मा का ग्रहण (पापों से मुक्ति)

II-2-यीशु की आज्ञा 2 : नए विश्वासियों को बपत्सिमा देना (फिर यीशु में पवित्र जीवन जीना, जिस का वो प्रारंभ करता है)

II-3-यीशु की आज्ञा 3: यीशु के शिष्य बनाना (परमेश्वर के वचन तथा यीशु के प्रति आज्ञाकारिता सिखाना)

II-4-यीशु की आज्ञा 4: प्रेम (परमेश्वर तथा इन्सानों से प्रेम, जरूरतमदो की सेवा, शत्रुओं को क्षमा)

II-5-यीशु की आज्ञा 5: प्रर्थना (परमेश्वर की स्तुति, पापों की स्वीकृति, दूसरें के लिए प्रार्थना, चंगाई, अध्यात्मिक संगाम्र में हिस्सा)

II-6-यीशु की आज्ञा 6: रोटी तोड़ना (प्रभु भोज, आत्मा मे परमेश्वर की स्तुति)

II-7-यीशु की आज्ञा 7: अर्पण (देना) परमेश्वर की हर देन को बाँटना)

खण्ड III : चर्च के मूल प्रबन्धनों का विकास करना

खण्ड III के अध्यायों में नए नियम के प्रबन्धनों की आवश्यकताएँ हैं:

III-1-प्रबन्धन 1: पवित्र वचन को दूसरों तक ले जायें तथा नए विश्वासियों का बपतिस्मा दें।

III-2-प्रबन्धन 2: एक दूसरे की सेवा के लिये आत्मिक वरदानों का प्रयोग करने वाले संगठन का निर्माण करें।

III-3-प्रबन्धन 3: परमेश्वर की उपासना करें तथा प्रभु भोज मनाएं
III-4-प्रबन्धन 4: परमेश्वर के वचन को पढ़ें, पढ़ायें तथा लागू करें।
III-5-प्रबन्धन 5: नए समुदाय शुरू करें।
III-6-प्रबन्धन 6: विश्वासियों (प्राचीनों) तथा मार्गदर्शको को प्रशिक्षित करें।
III-7-प्रबन्धन 7: समुदायों के भीतर तथा आपस में भाईचारे का विकास करें।
III-8-प्रबन्धन 8: व्यक्तिगत तथा पारिवारिक समस्याओं से ग्रस्त लोगों से भेंट करें तथा परामर्श दें ।
III-9-प्रबन्धन 9: समस्त परिवारों में विश्वास तथा विवाहों को दृढ़ करें।
III-10-प्रबन्धन 10: बीमारों, जरूरतमंदो तथा दुर्व्यवहार से ग्रस्त लोगों की देखभाल करें।
III-11-प्रबन्धन 11: मसीह जैसे बनें तथा चर्च संगठन में अनुशासन बनाए रखें।
III-12-प्रबन्धन 12: परमेश्वर से बात करें ।
III-13-प्रबन्धन 13: ईश्वरीय साधनों के अच्छे खिदमतगार बनें।
III-14-प्रबन्धन 14: मिश्नरी भेज़ें।

खण्ड IV: पुराने तथा नए नियम में से बाईबल की कहानीयाँ

यह बाईबल की कहानीयों की लगभग पूरी सूची, जो कि ऐतिहासिक क्रम में है, सारी मुख्य सिद्धान्त तथा चर्च की गतिविधि यों से संबंधित है तथा दिखती है कि पुराने नियम की घटनाऐं नए नियम की सच्चाईयों का भविष्य कथन करती है।

खण्ड V: स्थानीय सूचीपत्र

प्रस्तावना

यह पुस्तक किनके लिये हैं?

चरवाहे की कहानियों की किताब आसान भाषा में उन लोगों के लिये है जो.....

- जिनके पास उनकी भाषा में बाईबल नहीं है
- जिन्हें तुरन्त प्रशिक्षिण चाहिये
- प्रशिक्षण के लिये खर्चा करने लायक नहीं है
- जो लम्बे अत्यवहारिक धर्मोपदेशों के बजाय सामान्य कहानीयाँ पसन्द करते हैं। चरवाहे की कहानीयाँ निशुल्क है तथा किसी भी भाषा में अनुवाद करी जा सकतीं हैं।

कहानीयाँ क्यों प्रयोग करें ?

चरवाहे की कहानीयों की किताब हमें बाईबल के महत्वपूर्ण सिद्धान्त तथा चर्च की जरूरी गतिविधियों के बारें में बताती है, जिन पर मसीही पीढ़ियों से विश्वास करतें हैं तथा प्रयोग में लातें हैं। यह कहानीयाँ बाईबल की सच्चाई की ओर जाती है ना कि ऐतिहासिक क्रम के विश्लेषण की ओर, तथा नए विश्वासीयों तथा मार्गदर्शकों को बताती है कि परमेश्वर के वचन को किस प्रकार से प्रयोग करना चाहिये जैसे कि प्रभु यीशु मसीह प्राय: करते थे।

सारी मूल बाईबल की कहानीयाँ एतिहासिक घटनाओं से उपजी है। इन घटनाओं के बारे में प्रेरितों तथा भविष्यवक्ताओं की प्रेरक व्याख्याओं हमें मूल मसीही अध्यात्म देती है। पवित्र आत्मा इन ऐतिहासिक वर्जनों का प्रयोग लोगों को पश्चात्ताप परिवर्तित करने तथा चर्च प्रबन्धनों को आदर्श देने में प्रयोग करता है।

बाईबल हमारे विश्वास तथा चर्च अभ्यासों की एक ऐतिहासिक नीवं बिछाती है। उदाहरण के तौर पर, रोमियों तथा इब्रानियों की पुस्तकें उन लोगों के लिये लिखी गई है जो पहले से बाईबल की कहानीयों को जानते थे, जिनपर उनके निर्देशों का आधार है। पुराने नियम में उन ऐतिहासिक घटनाओं में अदम और उसका पतन, परमेश्वर का इब्राहम को उसके सारे देशों के ऊपर आशीषें का वायदा, अब्राहम द्वारा इसहाक की कुर्बानी, मूसा और कानून, हारन्न का वास्तविक महायाजक का रूप पागान के शत्रुओं के ऊपर दाऊद की विजय, जैसी ऐतिहसिक घटनाओं का समावेश है। नए नियम की घटनाओं में यीशु का जन्म, जीवन, मृत्यु, पुर्नउत्थान, ऊपर उठना,तथा पेन्तीकुस्त पर पवित्र आत्मा का आना–तथा और बहुत घटनाओं का समावेश है।

बाईबल की कहानियों की सूची

बाईबल की कहानीयों की पूरी सूची के लिए खण्ड IV ''पुराने व नए नियम में बाईबल की कहानीयाँ'' देखें। वह ऐतिहासिक क्रम में बाईबल की कहानीयों की सूची है, जो समस्त सिद्धान्त बताती है, तथा कैसे पुराने नियम की घटनायें नए नियम की सच्चाईयों का भविष्यकथन करती है, यह बताती है।

इंटरनेट से चरवाहे की कहानीयों की किताब नि: शुल्क प्राप्त करें

Download shephend' s Story book from < http ://http://www.paul- Timothy.net.

अधिक जानकारी के लिये < training @ paul- timothy.net >. **को लिखे**

इस पुस्तक को कैसे प्रयोग करें

अगर आप नए चरवाहों को प्रशिक्षित करते हैं

जिन नए चरवाहों को आप प्रशिक्षित करते हैं उनके साथ बाईबल की कहानीयों को पढ़े तथा तर्क करें। यदि बाईबल उनकी भाषा

में अनुवादित नहीं है तो उन्हें कहानीयाँ बताएं। उनसे कहें कि वो अपने लोगों में यह कहानीयाँ सुनायें। और उनको चरवाहे की कहानीयों मे 'मि.फूलिश' की कमियों से बचने को कहें। ''लर्नर,'' ''हेल्पर,'' तथा अन्यों के साथ यह चरित्र वास्तविक लीग नहीं है। यह बाईबल में प्रस्तुत लोगों की किस्मों का प्रतिनिधित्व करते है। जबकि जो बाईबल के चरित्र इस किताब में प्रस्तुत है, वो वास्तविक व्यक्ति है।

सारे विधार्थी एक समूह बनाकर पढ़े। यह समूह हो सकता है:

- एक चर्च,
- एक कार्य समुदाय जो कि मार्गदर्शक प्रशिक्षित कर रहा है या एक चर्च की शुरूआत कर रहा है,
- एक बड़े चर्च में से एक छोटा समुदाय। शुरू में वो समुदाय केवल एक परिवार भी हो सकता है, परंतु उसका अभिप्राय एक छोटे चर्च का विकास करना होगा।

अगर आप एक नए चरवाहे (मार्गदर्शक) हैं

कहानीयों को पढ़े तथा याद करें। उन्हें नए विश्वासीयों तथा उनके परिवार जो मि.फूलिश ने कहा उसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें, परन्तु जो मि. फूलिश ने कहा उसे ना करने की चेतावनी दें।

इस किताब में सें वो अध्याय चुनें जो तत्काल आत्यश्कताओं तथा अवसरों से संबंधित हैं।

चरवाहें की कहानी की किताब में तीन खण्ड हैं। जो आपकी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करें, उस खण्ड से शुरू करें।

यीशु मसीह की प्रस्तुति के लिये खण्ड I का उपयोग करें, मसीह को खोजने में लोगों की सहायता करें।

नया समुदाय बनाने या फिर से शुरू करने के लिये खण्ड II का प्रयोग करें, मसीह के आज्ञाकारी समुदाय स्थापित करें।

चरवाहों (मार्गदर्शकों) को प्रशिक्षित करने के लिये खण्ड III का प्रयोग करें, चर्च के मूल प्रबन्धनों का विकास।

अगर आप विद्यालय में पढ़ातें हैं

चरवाहे की कहानी की किताब विद्यालय में पाठयपुस्तक के रूप में सेवा करने के लिये नहीं लिखी गई थी । यह उन लोगों को प्रशिक्षित करने के लिये लिखी गई जो नए समुदायों की सेवा करते हैं। यदि आप इसे एक पाठ्य पुस्तक के रूप में प्रयोग करतें हैं तो आपका विद्यार्थीयों से ज़्यादा पढ़कर विचार करना होगा, परीक्षा लिखकर। या फिर वो भी एक समुदाय का प्रारम्भ करें, एक पाठ्यक्रम की तरह।

सिर्फ परीक्षायें देने की जगह विद्यार्थीयों से कहें कि वो सूचित करें कि उन्होंनें क्या सिखाया तथा उनके लोगों ने क्या काम किया (मरकुस 16:30)।

इस चरवाहे की कहानी की किताब में 85 अभ्यास है। हर अभ्यास एक व्यवहारिक कार्य समर्पण का आधार बन सकता है। इस पुस्तक की साम्रगी के केवल आपको उपदेश ही नहीं देने है। आपको हर विद्यार्थी के साथ अपना समय व्यतीत करना पड़ेगा उसको अपनी प्रबंधन गतिविधियों का नक्शा बनाने में सहायता करने के लिये, अगले दो सप्ताह के आस-पास तक उसके प्रश्न तथा सूचनायें सुनने के लिये।

खण्ड - I
मसीह को खोजने में लोगों की सहायता करें

खण्ड I के अध्याय *''खोज''* है। जाँचे उन्हें जिनका अभ्यास आपके लोगों के द्वारा आपकी सन्तुष्टि के अनुसार किया जा रहा है:

1-1-खोज-1-जीवन के सच्चे अर्थ को ढूंढें (परमेश्वर हमसे प्रेम करता है तथा चाहता है कि हम उसमें हमेशा आनंदित रहें)
1-2-खोज -2-एक परमेश्वर की ओर मुड़े (मूरतें छोड़े तथा जो भी सर्वव्यापी परमेश्वर का स्थानाप्पन हो, उसे त्यागें)
1-3-खोज-3-यीशु में क्षमा तथा जीवन ढूंढे (उसके कार्य, उसकी मृत्यु तथा पुर्नउत्थान पर भरोसा करें)
1-4-खोज-4-पाप और मृत्यु की शक्तियों से बचें (यीशु को मृत्यु तथा शैतान पर विजय)
1-5-खोज-5-जीवन की आत्यश्क चीजों को पहचानें (पापें से मुड़े तथा अनन्त मूल्य की चीज़ों को खोज़े)
1-6-खोज-6-सच्ची धार्मिकता खोजों (जो लोग कहते है कि वो अच्छे है, उन्हें भी परमेश्वर की क्षमा की आवश्यकता है)
1-7-खोज-7-यीशु में अनन्त जीवन पायें (बपतिस्मे से शुरूआत करके, आज्ञाकारिता के द्वारा विश्वास दिखाएं)
1-8-खोज-8-यीशु के अनुयायी बनें (जीवित मसीह को मिलें, जाने तथा अनुकरण करें)

यीशु ने दो घर बनाने वालों के बारे में कहानी बताई। एक बुद्धिमान था तथा उसने अपना घर चट्टान पर बनाया। दूसरा मूर्ख था, उसने रेत पर बनाया। मैं आपका एक ऐसे आदमी से परिचय करता हूँ जो यीशु की कहानी के बुद्धिमान व्यक्ति की तरह है। वो परमेश्वर का वचन सुनना पसन्द करता है तथा उनको अभयास में लाता है। हम उसे मि. वाईज बुलाते है। वो बस द्वारा लर्नर की बिरादरी में आता है तथा अपने चचेरे भाई के साथ रहकर धर्मप्रचार करता है।

मि. वाईज़ लर्नर की नई लकड़ी के काम की दुकान पर आते है। ''तुमने अच्छा करा, लर्नर । यह एक बढ़िया नई दुकान है। मुझे तुम पर गर्व है!''

''जब मैने आपके लिये पिछले साल काम किया था तब आपने मुझे बहुत अच्छी शिक्षा दी,''लर्नर ीने जवाब दिया, ''अब मेरा बहुत अच्छा व्यापार है, तथा ये सब आपके कारण है। लेकिन मुझे डर है कि मैं हमेशा से एक अच्छा सीखने वाला नहीं रहा।''

''जब मैं तुम्हें एक अन्य बढ़ई, यीशु, के बारे में विस्मयकारी जानकारी बताता था तब तुम सुनने से इन्कार करते थे।''

लर्नर त्यौरी चढ़ाता है। ''वो धार्मिक बाते मेरे लिए सदैव ही मुश्किल रहीं है, मि. वाईज़। आपने बड़े शब्दों का प्रयोग किया था।''

''लाओ, इस मेज़ को पालिश करने में मै तुम्हारी मदद करूं, ''मि. वाईज़ ने इच्छा प्रकट करी। ''तुम ठीक कहते हो। मैनें तुम्हारे साथ बहस की तथा अपने सिद्धान्त तुम्हारे दिमाग में थोपने की कोशिश करी। परन्तु मैनें सुसमाचार को एक बेहतर तरीके से बाँटना सीख लिया है। मै तुम्हें परमेश्वर की सच्चाई एक कहानी के द्वारा बताता हूँ, जैसे यीशु करता था। कहानीयाँ समझने तथा याद रखने में आसान होती हैं। तुम उनको अपने परिवार तथा मित्रों में दोहरा सकते हो। बाईबल की कहानियाँ उन कहानियों की तरह नहीं है जो कि लोग अपने मित्रों तथा बच्चों को आंनदित करने के लिये बनाते है। वो इतिहास में घटित वास्तविक चीज़ें है।''

लर्नर का एक अन्य मित्र आता है । मि. फुलिश एक कम्पनी का बिक्री करने वाला है जो कि आपकी चाहत की चीज़ों को छोड़कर सब कुछ बेचता है। वो येशु की कहानी के मूर्ख घर बनाने वाले इन्सान की तरह है। वो चीज़ों को अपने तरीके से करना चाहता है। मि. फूलिश बीच में बोलते है, ''लर्नर, यह आदमी कुछ अजीब चीज़ सिखा रहा है। हमें यहाँ पर कोई नया धर्म नहीं चाहिये। हमें उन तरीकों को बदलने की कोई जरूरत नहीं है जिन पर हम आज तक रहते आए है। अब मेरी सुनो। मेरे पास एक नया साबुन है, जो कि तुम्हें खरीदना चाहिये, जिसकी खुश्बू दालचीनी जैसी है। आओ, सूँघो इसे।''

लर्नर, मि. फुलिश पर कोई ध्यान नहीं देता। वो अपने हृदय में जानता था कि उसकी जिदंगी में कोई चीज़ खो रहीं है। वो परमेश्वर के बारे में और जानना चाहता है। वो मि. वाईज़ को ध्यानपूर्वक सुनता है।

I-I खोज

जीवन के सच्चे अर्थ को दूँढे

(परमेश्वर हमसे प्रेम करता है तथा चाहता है कि हम उसमें हमेशा आनंदित रहे)

मि. वाईज, वर्नर को उड़ाऊ पुत्र की कहानी बताते है, जिसने की क्षमा पाई, **लूका 15:11-32 में।**

अभ्यास

कृपया इस कहानी को लूका 15:11-32 में पढ़ें, या किसी और से आपके लिये पढ़ने को कहें। अगर आपके पास अपनी भाषा में बाईबल नहीं हैं, तो किसी दूसरी भाषा की बाईबल में से बताने के लिये किसी और से कहें। यह आपको बताये, जो कि हम इस पुस्तक में आपसे पूछते हैं। वरना यह पढ़ाई व्यर्थ है।

जब आप इस कहानी को पढ़ते या सुनते है, **लूका 15:11-32** में से तो देखें कि लर्नर ने क्या खोज़ा:

- पुत्र अपने रहने के तरीके से किस प्रकार से अपने पिता को दुख पहुचाँता है ?
- पुत्र ने बाद में किस प्रकार से प्रकट किया कि वो अपनी मूर्खता पर बुरा महसूस करता है?
- जब वो एक पश्चाताप भरे दिल से घर वापस आया तो उसके पिता ने उससे कैसा व्यवहार किया?

''लर्नर,'' मि. वाईज़ समझाते है, ''हम सब उस उपद्वी पुत्र जैसे है। हम अपने स्वर्गीय पिता को भूल गए है। हमने अपने जीवन में मूर्खतापूर्ण कार्य करें हैं।

परमेश्वर अपनी बाँहों को खोले हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, हमको क्षमा करने तथा खुशियों की दावत से स्वगत करने, अपने खोर्यो हुए बच्चों का स्वागत करने के लिये जब हम अपने सच्चे तथा अनन्तकाल के घर पर वापस जाते है।''

लर्नर मेज़ को धिसना बन्द करके मि. वाईज की कही हुई बातों पर सोचता है। जबकि, मि. फुलिश अपने साबुन के बक्स को उठाते है तथा दखाज़े से बाहर जाते है। वो ताना मारते हुए कहते है, ''क्या तुम सचमुच सोचते हो कि परमेश्वर के पास दावतों हैं? मै। सोचता हूँ कि अपना समय व्यतीत करने के लिये उसके पास और अच्छे तरीके है।''

मि. वाईज उन्हें आश्वस्त करते है, ''हाँ, यीशु दावतों के बारें मे बात करता था तथा उनमें आनंदित होता था। अगर हम यीशु के नाम में माँगे तो परमेश्वर हमें खुशी से क्षमा कर देगा, तथा अपने पवित्र आत्मा को , हमारे पुराने जीवन से मुड़ने में हमारी सहायता के लिये, भेजेगा, हमें सबसे बड़ी दावत में शामिल होने के लिये।

यीशु की मृत्यु तथा पुर्नउत्थान के कारण परमेश्वर हमें क्षमा करता है तथा आनंद में प्राप्त करता है, खोए हुए बच्चों की तरह जो कि घर वापस आ गए है। उसने कहा था कि उसके साथ स्वर्ग में होना एक शादी की विशाल दावल जैसा है।''

मि. वाईज, लर्नर को सृष्टि के निर्माण तथा आदम के पतन के बारे में बतातें हैं।

अभ्यास

कृप्या अब उत्पत्ति अध्याय 1 से 3 में इस कहानी में उन प्रशनों के उत्तर देखें जो मि.वाईज ने लर्नर से किये:

- आदम और हव्वा एकदम से परमेश्वर से क्यों भयभति हो गए?
- परमेश्वर क्या कर रहा था जब उसने आदम तथा हव्वा को बगीचों में देखा?
- परमेश्वर ने उस जोड़े को आज्ञाकारिता भगं करने के करण कहा भेजा?

मि. वाईज, लर्नर की नए मेज़ को चमकाने में सहायता करता हुए समझाते है, ''शुरू में परमेश्वर आदम और हव्वा के साथ बात करता था तथा चलता-फिरता था। उसने लोग बनाये जो उसके साथ चल-फिर सकें तथा बातें कर सकें, मित्रें की तरह। उसने उनको दुख उठाने, अपने आप को खोया हुआ तथा भ्रमित महसूस करने के लिए नहीं बनाया था। तोग परमेश्वर के साथ रहने वा उसकी सृष्टि में आनंद करने के हिसाब से बनाए गए थे। परमेश्वर चाहता था कि लोग उससे स्वतंत्रता पूर्वक प्रेम करें, क्योंकि प्रेम थोपा नहीं जा सकता। परमेश्वर ने आदम तथा हव्वा को अपनी राहें रवुद चुनने की अनुमाति दी थी। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के बजाये. उन्होंनें राहों पर जाना चुना जो कि परमेश्वर के शत्रु शैतान की राहें थी। उनको उसे अपने स्वर्ग से बाहर भेजना पड़ा।

''ओह, कितना दुखद है।''

'' मानव इतिहास यह भी दिखाता है कि मनुष्य अब परमेश्वर सें बहुत दूर रहतें हैं। हमने उसके साथ अपनी मित्रता खों दी है। संसार मृत्यु तथा हिंसा से भरा हुआ है। परमेश्वर के बिना हम बहुत बड़े आत्मिक खतरे में रहते है। परमेश्वर ने हमारे शत्रु शैतान पर विजय का वादा करा था, और हमें मृत्यु तथा पाप से बचाने के लिये विजेता को भेजा था। यीशु ने हमारे विद्रोह का बदला अपनी मृत्यु से चुकाया तथा हमारा परमेश्वर के पास लौटना रअपने पुर्नउत्थान के द्वारा संभव बनाया। यीशु के द्वारा हम परमेश्वर के साथ अपने सच्चे घर में वापस जा सकते है।''

कहानी पर विचार - विमर्श के बाद, मि. वाईज़ लर्नर से पूछतें हैं, ''क्या तुम अब हमारी जिंदगियों के अर्थ को देख सकते हो ? परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ मित्रता पूर्वक रहें। क्या तुम परमेश्वर के बारे में और कहानियाँ जानना चाहते हो,तथा अपने परिवार को बाताना चाहते हो? '' लर्नर सहमत होता है तथा मि. वाईज सुझाव देते है, '' यहाँ पर हमारे को साथ -साथ स्मरण करने के लिये यूहन्ना 1:9 में एक पद है। हम अगले सप्ताह दुबारा मिलेगें।''

अभ्यास

कृपया **युहन्ना 1:9** स्मरण करें:

रोमियों 5:3-12 मे देखें कि आदम से उसके सारे पापी वंशजो पर क्या आया

रोमियों 5:13-21 में देखें कि पहले आदम से आखरी आदम मे कैसे अन्तर है।

I-2- खोज 2

एक परमेश्वर की ओर मुड़े (मूरतें छोड़े, तथा जो भी परमेश्वर का स्थानाप्पन हो; उसे त्यागें) आगामी सप्ताह में मि.वाईज, लर्नर की लकड़ी के काम की दुकान में लौटते है। वों लर्नर की, कुर्सियों का एक सेट तैयार करने में, मदद करते है। मि. फूलिश अपने हाथों में छोटी मूर्तियाँ भरे हुए आते है, तथा लर्नर से कहते है, ''इनके पास तुम्हारे घर से बुराईयों को दूर रखने की शक्ति है,'' वो समझाते है, ''एक खरीद लो।'' मि. वाईज़ कहते है, ''यह मुझे प्रतिमाओं की तरह लगती है।''

मि. फुलिश उत्तर देते है, ''अरे नहीं! यह वो सिर्फ तुम्हारे घर को सुन्दर बनाने तथा बुराईयों को दूर रखने के लिये है।''

''प्रति मयों घर में सिर्फ दुख लेकर आती है,'' मि. वाईज़ ने उन्हें बताया, ''अपनी जीविका चलाने के लिये तुम कुछ और बेच सकते हो।''

''मुझे इन्हें बेचना है ! इन्हें बेचकर मैं ज्यादा धन बनाता हूँ, बजाए किसी और सामान के।''

लर्नर पूछता है,'' यह इतनी बुरी क्यों है, मि. वाईज ?''

मि. वार्चज़ उत्तर देते हैं, ''मै तुम्हे एलिय्याह तथा बाल के भविष्यवक्ताओं के बारे में, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने के लिये बताऊँगा तथा समझाऊँगा कि क्यों हमें एक सच्चे परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिये तथा सिर्फ उसी की आराधना करनी चाहिये।''

अभ्यास

कृप्या **1 राजा 18:16-39** में इस कहानी में देखें कि लर्नर तथा मि. वाईज़ क्या पाते है:

- इस्त्रायल के देश पर मुसीबत क्यों आई ?
- भविष्यवक्ता एलिय्याह ने एक सच्चे परमेश्वर तथा बाल के मूर्ति-पूजक भविष्यवक्ताओं के बीच में क्या प्रतियोगिता आयोजित की थी?
- बाल के भविष्यवक्ताओं को क्या उत्तर मिला, तथा एलिय्याह को क्या उत्वर मिला ?
- एक सच्चा परमेश्वर कौन है?

मि. वाईज़ कहानी समझाते है: ''प्राचीन इस्त्रायल के काफी लोगों ने मूर्तियाँ बनायी थी; जिससे कि उनके पास दिखने वाले देवता हो जो उन्हीं के हों। वो एक सच्चे परमेश्वर से विमुख हो गए तथा उनके देश पर मुक्ती आई। हम भी अपने लिये देवता बनाते है, तथा हमारे ऊपर मुसीबत आ जाती है, क्यों कि हम अपने एक सच्चे परमेश्वर से विमुख हो जाते है। सिर्फ एक सच्चा परमेश्वर ही पृथ्वी पर, स्वर्ग पर, तथा संसार के सारे देशों पर राज करता है। उस पर किसी भी देश की सीमाओं का स्वामित्व या बंधन नहीं हो सकता । वो हमको हमेशा उसके पास वापस आने के लिए पुकारता है।

''एक क्षण रूको!'' मि. फूलिश विरोध करते है, ''यह तुम्हारे लिये सही तरीका हो सकता है, मेरे लिये नहीं पूवर्ज सदा आत्माओं की पूजा किया करते थे जो कि इन मूर्तियों से व्यवहार करती है! मैं उनके तरीके का पालन करूँगा।''

मि. वाईज़ कहते हैं, ''मै तुम्हें एक स्त्री के बारे में बताना चाहता हूँ जो कुँए के पास थी तथा अपने पूर्वजों के रास्तों पर चलती थी, परन्तु उसने एक बेहतर रास्ता पाया।''

अभ्यास

कृप्या **युहन्ना 4:4-42** में कहानी में देखें कि मि. वाईज़ ने क्या समझाया है:

- कुँए पर सामरी स्त्री को यीशु ने क्या देने को इच्छा जताई? किस चीज़ ने स्त्री को आश्वास्त किया कि यीशु परमेश्वर का भविष्यवक्ता है ?
- यीशु ने क्या कहा कि वो कौन है?
- जब स्त्री ने अपने लोगों से यीशु के बारे में बताया तो क्या हुआ।

मि. वाईज कहानी का लोगों से यीशु के बारे में बताया तो क्या हुआ ?

मि. वाईज कहानी को लर्नर तथा मि. फूलिश को समझाते है, जब वो कुर्सियों पर काम कर रहे थे। एक बार दूसरे देश मे यीशु, कुँए के पास एक स्त्री से बात कर रहा था। उसने उसे वो जल देने की इच्छा प्रकट करी जो कि उसको इतनी संतुष्टि देती कि फिर उसे कभी प्यास नहीं लगती 1 स्त्री इस बात को नहीं समझा कि उसका तात्पर्य उस पानी से है जो कि हमारे पास एक नया जीवन लाता है, जो कि हमने पहली कभी नहीं देखी। हम उसे खोजते है परन्तु पा नहीं पाते।''

''उस स्त्री ने यीशु से पूछा कि क्या वो उसके पूवजों से बड़ा है जिन्हो नें कुआँ खोदा तथा उसके लोगों को परमेश्वर की आराध ना करना सिखाया। यीशु ने उसको बताया कि वो परमेश्वर के द्वारा भेजा गया है कि लोगों को बताए कि सच्चे परमेश्वर की आराध ना कैसे करें। इस तरह की आराधना हमें इस प्रकार से संतुष्ट करती है जो कि कोई अन्य नहीं करती। वो हमें एक नया जीवन देती है जो कि हमने कभी संभव ना सोचा था।''

लर्नर कहता है, ''मैं यीशु के बारे में और जानना चाहता हूँ।'' मि. वाईज लर्नर को बताते है, ''मैं तुम्हें परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बनने के कुछ आसान तरीके बताता हूँ। क्या तुम मेरे साथ सच्चे परमेश्वर से बात करोगे तथा उससे पूछोगें के क्यों तुम उससे दूर हो गए?''

''तुम्हारा मतलब है प्रार्थना! मैं अभी तैयार नहीं हूँ।''

''क्या तुम इस प्रकार की और कहानियाँ सुनना चाहोगे और उन्हें अपने परिवार को बताना चाहोगे? चलो हम दोनों बाईबल की उस आज्ञा को याद करें जो हमें एक सच्चे परमेश्वर की आराधना याद दिलाती है। वह मरकुस 12:29-30 में हैं।''

अभ्यास

कृप्या अब **मरकुस 12:29-30** पढ़े और याद करें।

जब तीन व्यक्ति लर्नर की दुकान मे परमेश्वर के बारे में बात कर रहे थे, मि. फूलिश ने पूछा, ''तुम सच्चा परमेश्वर क्यों कहते हो? मुसलमान, बौद्ध तथा हिन्दू अन्य देवताओं की पूजा करते है, क्या नहीं करते? क्या बहुत सारे देवता नहीं है?''

''सच्चा परमेश्वर सिर्फ एक है। अन्य आत्माएं जिन्हें कुछ लोग देवता कहते है वो परमेश्वर की बनाई हुई है। धर्मग्रथं में उन्हें स्वर्गदूत कहा गया है। बुरी आत्माएं भी एक समय स्वर्गदूत ही थे। वो शैतान के पीछे हुए तथा सबसे ऊँचे तथा पवित्र परमेश्वर के विरूद्ध हो गए। उसने उन्हें अपनी पवित्र जगह से निकाल दिया । वो परमेश्वर को प्यार नहीं करते। परमेश्वर से प्रेम करना हर चीज़ से ज़्यादा जरूरी है। अन्य देवताओं के साथ हूँ उसको प्रेम नहीं कर सकते। हमारी मुक्ति यीशु के साथ जुड़ने में है क्योंकि वो ही परमेश्वर के साथ है।'' ''यीशु पिता परमेश्वर के साथ कैसे एक हो सकता है?'' मि. फूलिश पूछते है। ''मैं नहीं समझा।''

''सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अपने आपको प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है। यह जानना ही काफी है कि वो पवित्र पुस्तक में तीन रूपों में प्रकाट है। वो तीन रूप है, पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा एक परमेश्वर में। केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है।

''परन्तु आप को उन तीनों रूपों को जोड़ना चाहिये। आप एक, दो , तीन रूप को जोड़े तथा तीन देवता पायें।''

''नहीं! हम उन्हें जाड़ते नहीं। अगर तुम गणितीय तरीके से इस रहस्य को समझाओ तो ज़्यादा अच्छा है कि उन्हें गुणा एक फिर भी एक है। यह इसलिये है क्यों कि बेटा सदा पिता से ही आता है। यीशु न पवित्र आत्मा के बारे में यूहन्ना 15:26 में समझाया है, जब वह सहायक आयेगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से निकलता है तो वह मेरी गवाही देगा।''

मि. फुलिश अपनी सूर्तियाँ उठा कर चल दिये।

अभ्यास

कृप्या अब यूहन्ना 15:26 याद करें।

I - 3 - खोज 3

यीशु की मृत्यु तथा पुर्नउत्थान में क्षमा तथा पुर्नउत्थान में क्षमा तथा जीवन दूँढे

(उसके कार्य, उसको मृत्यु तथा पुर्नउत्थान पर भरोसा करें ना कि मानवीय प्रयत्नों पर)

अगले सप्ताह मि. वाईज़ फिर से लर्नर की दुकान पर जातें हैं तथा एक नई डेस्क को पालिश करने में सहायता करते है। लर्नर कहता है, ''मैने वो कहानियाँ अपने परिवार को सुनाई। उन्हें वो पसन्द आई, परन्तु मेरे पिता कहते हैं कि हमारे पास यीशु के अलावा भी अच्छे शिक्षक है।'' मि. वाईज़ ने जवाब दिया, ''हमारी पास और अन्य शिक्षक है, पर वो यीशु जैसे नहीं है। मैं आपको मत्ती 26:31-56 से यीशु का पकड़ा जाना और उसकी परीक्षा बताता हूँ।

अभ्यास

कृप्या मत्ती 26:31-56 पढ़े और देखें कि मि. वाईज़ क्या बताना चाहते है:

- अपनी आती हुई मृत्यु पर यीशु के क्या शब्द थे, जब उसने प्रर्थना करी ?
- यहूदा ने यीशु से कैसे विश्वासघात किया?
- अन्य शिष्यों ने कब उसे छोड़ दिया?
- महायाजकों ने किस कारण यीशु को सज़ा सुनाई?

जब वोग डेस्क पर काम करते है तो मि. वाई समझाते है, ''हम परमेश्वर से अपने पाप के कारण दूर है। हाँलाकि परमेश्वर ने संसार से प्रेम किया कि उसने अपने इकलौते पुत्र को भेजा कि वो हमें उसके पास वापस ला जाये। उसने संसार को बनाया लेकिन संसार ने उसे नहीं पहचाना। युहन्ना 3:16 तथा युहन्ना 1:10 यह बतातें हैं कि उसके खुद के शिष्यों ने उसके साथ विश्वासघात किया।

और उसे छोड़ दिया। परमेश्वर के मंदिर के महायाजकों ने उसको मरने की सज़ा सुनाई, जबकि वह एक पवित्र तथा निर्दोष आदमी था। यीशु के अपने शिष्यों की तरह हमने भी उसे छोड़ दिया है, क्योंकि हमने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया कि उसने हमारे लिये मरना पसंद किया। वो केवल हमारा शिक्षक ही नहीं था, परन्तु उसने हमें हमारे किये हुए पापों की सज़ा से बचाया।''

मि.फूलिश दुकान के दरवाज़े तक आते है तथा चिल्लाते हैं, ''देखो, मेरे पास आज क्या है। हड्डी के हत्थों वाला सरौता खरीदो।''

''उन्होने कोई ध्थान नहीं दिया। मि. वाईज़ यीशु की मृत्यु का पुर्नउत्थान का वर्णन करते है।

अभ्यास

कृप्या **लुका के अध्याय 23 तथा 24** में देखें कि मि.वाईज़ क्या वर्णन करते है:

- जिस क्षण यीशु मरा उस क्षण ऐसा क्या हुआ थाजो यह दिखाता है कि उसकी मृत्यु कितनी महत्वपूर्ण थी?
- स्वर्गदूतों ने उस स्त्री से क्या कहा जो यीशु के मरने के तीन दिन बाद उसको देखने आई थी?
- इमोस को जा रहे जा लोगों ने आखिरकार कब यीशु को पहचाना?
- यीशु के अपने शिष्यों को आखिरी निर्देश क्या थे? मि. वाईज़ ने लर्नर को मि. फूलिश को बताया, ''जिस दिन यीशु मरा, लगभग छठे घंटे से नवें घंटे तक सूरज काला पड़ गया। मंदिर का पर्दा फट गया। यीशु को दफनाया गया तथा वो तीसरे दिन तक मुर्दा रहा। सबसे पवित्र परमेश्वर ने यह नहीं चाहा कि यह सच्चा और निर्दोष आदमी मुर्दा रहे ।''

''यीशु कमजोर था!'' मि. फूलिश बोले, ''वो अपने मारने वालों को नहीं रोक सका!''

''वो उन्हें रोक सकता था, परन्तु यीशु जानबूझ कर मरा। उसने सलीब पर हमारी जगह ली। तीसरे दिन परमेश्वर मे उस मरे हुओं में से उठा लिया। वो अपने शिष्यों के पास वापस आया और उन्होंने उस छुआ तथा उसके साथ खाना खाया। उन्होनें उसे पूजा और प्रभु और परमेश्वर कहकर पुकारा, जो युहन्ना 20:28 में वर्णित है। उसके पुर्नउत्थान ने मृत्यु को ऐसे नहीं हराया।''

मि. वाईज़ लर्नर से पूछते है, ''क्या तुम परमेश्वर को ऐसे ही मानोगे? क्या तुम अब देख सकते हो कि यीशु किसी भी अन्य जीवित इन्सान से बड़ा है क्या तुम परमेश्वर से यह माँगोगे के वो तुम्हें बचाए तथा यीशु के नए से नए जीवन की ताकत दें। यहाँ पर यीशु के बारे में एक पद अपने परिवार के साथ याद करने के लिये है: युहन्ना 3:16''

लर्नर ने जल्दी से उसे याद किया। जब मि.वाईज़ चलने को हुए तो लर्नर बोला, ''मैं अपने परिवार को अब यह कहानियाँ सुना सकता हूँ । क्या हम यीशु कें बारे में बात करने के लिये जल्दी ही दुबारा मिलेगें?

अभ्यास

कृपया **यूहन्ना 3:16** याद करें तथा अपने परिवार और मित्रों को याद करने में मदद करें।

I-4- खोज 4

पापों तथा मृत्यु की शक्तियों से बचें (यीशु की, मृत्यु तथा शैतान पर विजय)

एक सप्ताह बाद मि.फूलिया हाँफते हुए आतें हैं,''बुरी खबर लर्नर, तुम्हारा भाई जो नदी के किनारे रहता है वो बस का चपेट में आकर मारा गया।''

लर्नर के हाथ से पॉलिश गिर गई तथा वो खामोशी से बैठ गया। मि. वाईज़ उसके बराबर में बैठे तथा लम्बी चुप्पी के क्षणों में उसके लिये दुआ करी । लर्नर सिसका, ''अरे नहीं! परमेश्वर क्यों ऐसी बुराई होने देता है? मि.वईज अपने मित्र को क्या सहायता कर सकता हूँ।'' मि.वाईज अपने मित्र को यीशु की मृत्यु के ऊपर शक्ति को बतातें हैं।

अभ्यास

कृपया **यूहन्ना 11:17-44** में देखे कि मि.वाईज़ क्या समझाते है:

- अपने मित्र लाजर की मृत्यु ने कैसा महसूस किया?
- यीशु ने मार्था को उन लोगों के लिये क्या बताया जो उस पर विश्वास करते है?
- जब यीशु ने मृतलाजर को पुकारा तो उसे क्या हुआ?

जब तीनों आदमी लर्नर कि दुकान में बैठें है तो मि.वाईज़ बतातें हैं, ''यीशु का भी एक बहुत अच्छा मित्र था जो मर गया था। यीशु बड़ा उदास हुआ। परमेश्वर लोगों को लिये आया उसने मार्था को बताया कि लाजर फिर से जीवन पायेगाा क्योंकि वो यीशु पर विश्वास करता था । वो ही पुर्नजीवन तथा जिदंगी है ।उसने परमेश्वर से प्रार्थना करी तथा लाज़र को गुफा से बुलाया लाजर गुफा से जीवित बाहर निकला ।

मि. फूलिश पूछते है, ''पर अब यीशु के पास जीवन देने के लिये कैन सी शाक्ति है?

''यीशु ने सबको दिखाया कि उसके पास मृत्यु के ऊपर अधिकार है । जब वो मरा तथा तीसरे दिन जीवित हुआ, उसने उन लोगों को नया जीवन दिया जो उसपर विश्वास करते है। यह जीवन कभी नहीं खत्म होता क्यों कि हमारे पास परमेश्वर की आत्मा है।

मि. वाईज़ पिशाचों के द्वारा सताने गए व्यक्ति के बारे में बताते है, जो कि यीशु से मिला था।

अभ्यास

कृप्या **मरकुस 5:1-20** मे उन उत्तरो को देखें जो मि.वाईज़ ने लर्नर से पूछे:

- बुरी आत्माए इन्सान से क्या कराती हैं?
- बुरी आत्माएँ यीशु को क्या कहती है?
- यीशु लोगों के लिय क्या करता है?
- यीशु ने उस आदमी को चंगा होने के बाद क्या करने को कहा?

मि. वाईज़ समझाते है, ''यीशु परमेश्वर का पुत्र है। उसका स्वभाव परेमेश्वर जैसा है। फिलिप्पयों 2:6 यह बताता है। वो आतमाएँ उस इन्सान को रूलाती थी तथा वह अपने आप को काटता था। वो इतना शक्तिशाली था कि उसको कोई काबू नहीं कर पाता था। जब यीशु आया तो उन्होंनें उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचाना। वो आदमी यीशु के आगे छुटनों के बल बैठ गया तथा बुरी आत्माओं ने अपने आपको सुअरों में भेजे जाने के लिये भीख माँगी। यीशु ने उन आत्माओं को आदमी में से निकाला और वो चली गई। यीशु ने उस आदमी को पूर्ण चंगा कर दिय। फिर उसने उस आदमी को उस के घर भेजा, अपने परिवार को यह बताने के लिये कि परमेश्वर ने उसके लिये क्या किया है।''

मि.फूलिश बिना कुछ कहे चले गए, तथा मि.वाईज़ बताते रहे,''जब यीशु स्वर्ग में चला गया तो उसने अपनी आत्मा उन लोगों के साथ रहने के लिये भेजी जो उस पर विश्वास करते है। परमेश्वर की आत्मा शक्तिशाली है तथा हमें हर बुराई से बचाती है। वो हमें एक नया जीवन देता है जो पवित्र है तथा कभी ना खत्म होने वाला है। वो यीशु के बारे में और लोगों को अच्छी खबर बताने में हमारी मदद करता है।''

मि. वाईज़ लर्नर से पूछते हैं, ''अब क्या तुम परमेश्वर से यीशु के नाम में प्रार्थना करना चाहते हो और अपना जीवन बदलने के लिये कहना चाहते हो? वो करेगा। इस कहानी को अपने परिवार को समझाने को लिये यहाँ यूहन्ना 11:15 में से एक पद है जो तुम्हारी मदद करेगा यह वो आशा है जो तुम अपने परिवार को दे सकते हो।'' लर्नर अब भी वो प्रार्थना नहीं करना चाहता परन्तु वो पद याद कर लेता है।

अभ्यास

कृपया युहन्ना 11:25 याद करें ।

I-5-खोज 5

जीवन की आवश्यक चीज़ों को पहचानों

(पापों से मुड़े तथा अनन्त मूल्य की चीज़ों को खोंजें)

अगले सप्ताह मि.वाईज़ लर्नर से भेंट करने के लिए लौटतें हैं परंतु उसको ना तो घर में ना दुकान पर पातें हैं। आखिरकार वो उसे सड़क पर मिलते है।लर्नर क्षमा माँगते हुए कहता है, ''मि.वाईज़, मेरे भई की मृत्यु के दिन से ही मै इतना त्यस्त था कि परमेश्वर के बारे में सोच नहीं सका। शायद एक या दो महीने.....''

''मुझे मालूम है कि तुम व्यस्त ही लेकिन जीवन इन चीजों के कारण तुम वो मत भूल जाना जो सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। मै तुम्हे नूह और बाढ़ के बारे में बताता हूँ।

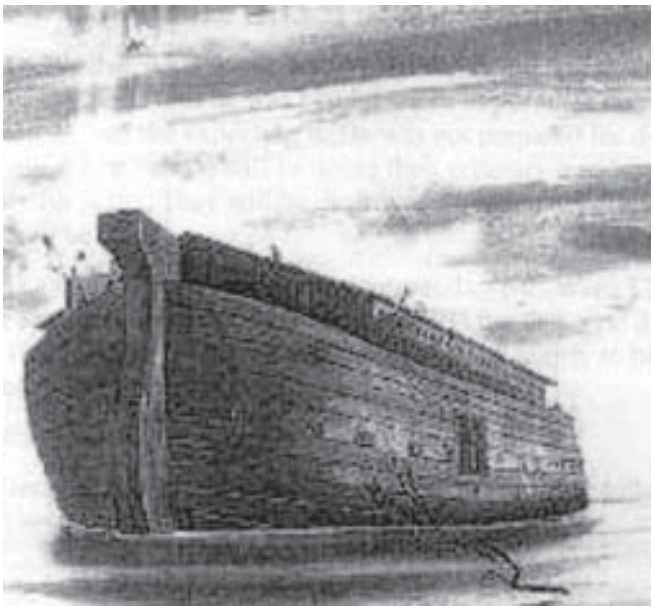

अभ्यास

कृपया उत्पात्ति 6:5-14 में देखें जो मि. वाईज़ बताते है:

- परमेश्वर उन लोगों के कामों के बारे में क्या महसूस करता था जो नूह के समय में थे?
- परमेश्वर ने नूह तथा उसके पविार को क्या बचाया?
- परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिये नूह ने क्या किया?

वो लर्नर की दुकान की ओर चले तथा एक दरवाजे पर कार्य करने लर्गे। मि. वाईज़ बाढ़ के बारे में समझाते है, ''यीशु कहता है कि नूह के ज़मानें में लोग अपना आम जीवन जी रहे थे, लूका 17:27 में । वो परमेश्वर को भूल गए तथा दुष्ट और अपराधी हार गए। परमेश्वर ने बड़े द्यैर्य से प्रतीक्षा की शायद वो पश्चाताप करें, परन्तु उन्होनें परमेश्वर को अनदेखा करा। परमेश्वर पवित्र है। वो पाप बर्दाश्त नहीं करता। नूह के समय में जो पाप और हिंसा उसने देखी, उससे को नाश करने का निर्णय लिया।''

''क्या सभी को?''

''लगभग। नूह अकेला आदमी था जो परमेश्वर की सुनता था। नूह परमेश्वर पर विश्वास करता था जबकि उसने उसे कभी देखा ना था। उसने कई साल मेहनत करके एक बड़ी नाव बनाई जबकि उसे उसको तैराने के लिये कहीं पानी न दिखाई दिया। परमेश्वर ने नूह को बचाया क्यों कि वह परमेश्वर पर विश्वास करता था, तथा उसकी आज्ञाओं को मानता था। परमेश्वर ने पृथ्वी को बाढ़ के पानी से नाश किया, परन्तु नूह और उसके परिवार को नाव के अन्दर बचा लिया।''

मि. फुलिश दरवाज़े पर सुनने के लिये रूकते है। मि.वाईज़ बताते है, ''आज हम लोग नूह के ज़माने के लोगों की तरह है । हम परमेश्वर को अनदेखा करते है तथा पाप और हिंसा से भरे हुए हैं। हमारे पाप परमेश्वर को उदास तथा नाराज़ करते है। हम सब भी मृत्यु के द्वारा नाश रूियों जायेगें यदि हम परमेश्वर की दी हुई सुरक्षित जगह में नहीं जाते जो उसने हमें दी है वो सुरक्षित जगह नूह की किश्ती की तरह है वो यीशु है । हम यीशु के हाथ में सुरक्षित है यदि हम उस पर विश्वास करतें हैं।''

मि. फूलिश असंतुष्ट होकर बोले, ''लेकिन लर्नर तो कोई गलत काम नहीं कर रहा है! उसको सुरक्षित जगह में छिपने की क्या जरूरत है? उसको ज्यादा पैसे की जरूरत है? इधर, देखा मैं क्या लाया हूँ। यह एक मिठाई बनाने की मशीन है। इस पर एक सिक्का रखो तथा बटन को घुमाओं तो मिठाई निकल कर आयेगी। खरीद लो, लर्नर, अपने लकड़ी के कारखाने के लिये। लोग मिठाई के लिये आयेगें तथा तुम्हें बहुत पैसा मिलेगा। पैसा सबसे महत्वपूर्ण चीज है।''

मि. वाईज़, मि.फूलिश से बोले, मैं तुम्हें एक बेवकूफ अमीर आदमी की कहानी सुनाना चाहता हूँ।

अभ्यास

कृपया लूका 12:13-21 में उन लोगों के लिये यीशु की चेतावनी दे दी जिन्हें केवल ज्यादा पैसे चाहिये।

मि. वाईज मि.फूलिश से पूछता है,''जो कि अभी तक अपनी मिठाई को मशीन को पकड़े हुए है। ''क्या तुमने देखा कि वो अमीर आदमी अपना समान्य व्यापार कर रहा था परंतु वो परमेश्वर की बजाए अपनी फसलों पर ज़्यादा ध्यान दे रहा था। जब उसे मृत्यु आई तो उसे आशा भी ना थी। वो मृत्यु के लिये तैयार नहीं था। यीशु कहता है कि वो फिर से पृथ्वी पर आयेगा । कुछ लोग अपना समान्य व्यापार कर रहे होंगे जैसे कि नूह के समय के लोग करते थे। वो यीशु के लिये तैयार नहीं होगे। वो बाढ़ में फंसे हुए लोगों की तरह नाश होंगें। परन्तु जो यीशु के साथ हैं वो सुरक्ष्ति रहेगें।

मि. फूलिश हँसते हुए चले जाते है, लेकिन लर्नर पूछता है, ''मि. वाईज़, मै परमेश्वर को भूले जा रहा था। मेरे साथ प्रार्थना करिये ताकि मैं यीशु के नाम में क्षमा माँगू।'' जब वो प्रार्थना कर चुके, वो बोला, '' मुझे आपके साथ बहुत पहले प्रार्थना करनी चाहिये थी। मुझे बड़ी शांति मिली। मै यह कहानियाँ अपने परिवार को सुनाऊँगा तथा परमेश्वर को याद करने में उनकी साहायता करूँगा। क्या मेरे याद रखने के लिये आपके पास कोई और बाईबल पद है?''

''रोमियो 6:23 याद करो। क्या हम जल्दी दुबारा मिल सकते है।

''हाँ, आज रात को ही। कृपया रात का खाना मेरे घर पर खायें । मेरी पत्नी सारा भी आपको जानना चाहती है।''

अभ्यास

संसार के सबसे मूल्यवान उपहार को जानने के लिये रोमियो 6:23 स्मरण करें

I-6- खोज (शोध) 6

सच्ची धार्मिकता खोजिए

(लोग जो स्वय को अच्छा कहते हैं उन्हें भी परमेश्वर की क्षमा चाहिए)

लर्नर के घर पर अच्छा नाश्ता करने के बाद उसने मिस्टर वाइज से कहा, ''सारा चाहती है कि मैं आप से एक प्रश्न पूछुँ। उसको कुछ चीज़ परेशान करती है।''

तुम्हारी आज्ञा से, लर्नर, मैं चाहता हूँ कि सारा अपनी समस्या स्वयं बताए।''

सारा झेंपती है।, ''आप ने कहा कि को कुछ चीज़ो के लिए क्षमा की आवश्यकता है। लेकिन लर्नर एक बुरा व्यक्ति नहीं है। वह एक पिता तथा पति के अपने कर्तव्य को निभाता है। वह अपने मित्रों के साथ अच्छा है। एक व्यक्ति का ईश्वर के प्रति ठीक रहने के लिए क्या यह काफी नहीं है।''

''मैं तुम्हें एक भष्ट्र चुंडी लेने वाले के बारे में बताता हूँ। कहानी सुनने के बाद, मिस्टर वाइज़ प्रश्न पूछते हैं ये देखने के लिए कि लर्नर और सारा ने उसे ठीक से समझा या नहीं।

अभ्यास

कृपया **लूका 19:1-10** में देखे लर्नर ने क्या पाया:

- यीशु ने कैसे जाना कि जककई उससे कैसे मिलना चाहता है?
- यीशु ने उस भष्ट्र चूड़ी लेने वाले से कैसा व्यवहार किया?
- जककई ने यीशु से कैसा व्यवहार किया?
- यीशु ने उसको दोषी नहीं ठहराया जैसा औरों (दूसरों)
- ने ठहराया था। जक्कई ने आभारी होकर उससे क्या कहा कि वह क्या करेगा?

उसके बाद मिस्टर वाइज़ जक्कई के बारे में बताते हैं:'' यीशु हमेशा उसके पास आता है जो उसकी ओर देखते हैं। वो उनके दिल बदलता हैं। हम लोगों के साथ स्वयं के प्रयासों से कभी भी बहुत अच्छे इंसान नहीं बन सकते। कुछ लोग सोचते है कि वो

अच्छे हैं लेकिन अपने घमण्ड में अपने पाप नहीं देखते । जब यीशु हमारे जीवन में आता वो हमें अपनी अच्छाईयां देता है। जैसे जक्कई, हम उसको अपना आभार अपने कामो के द्वारा उसे दिखाते हैं।''

''मैं अभी भी भ्रमित हूँ,'' सारा बोली। ''मेरे धार्मिक चाचा के बारें में क्या ख्याल? पादरी ने उन्हें प्रार्थनाए दी हैं जिन्हें वो दिन में कई बार दोहराते हैं। क्या उन्हें भी यीशु के द्वारा बचाये जाने की आवश्यकता है?''

''हाँ! हम केवल धार्मिक कार्य कर के ही परमेश्वर को प्रसन्न नहीं रख सकते। मैं तुम्हें फरीसी और चुंड़ी लेने वाले की कहानी बताता हूँ।''

अभ्यास

कृपया लूका 16:9-14 में देखें कि लर्नर और सारा ने क्या पाया:

- किस प्रकार के लोगों को यीशु ने भष्ट्र चुंड़ी लेने वाले की कहानी बताई?
- इस कहानी में परमेश्वर के प्रति उस धार्मिक व्यक्ति (फरीसी) की क्या भावनाए थी?
- चुड़ी लेने वाले की क्या भावनाएँ थी?
- किस व्यक्ति ने परमेश्वर को खुश किया और सच्चा धार्मिक बना?

मिस्टर वाइज़ ने सारा को अच्छे नाश्ते के लिए धन्यवाद दिया। सारा बोली, ''बाइबल कहानी के लिय धन्यवाद

धन्यवाद। अब मैं बहुत अच्छी प्रकार से समझ गई। परमेश्वर बुरे लोगों को भी क्षमा करता है।''

लर्नर ने मिस्टर वाइज़ से कहा, ''कृपया बताएँ कैसे एक छोटी सी प्रार्थना ऐसे व्यक्ति को अच्छा बना सकती हैं।''

''केवल परमेश्वर हमें सच्चा धार्मिक बनाता है। जब हम उसके साथ अपने पापों के प्रति सच्चे होते हैं और यीशु के नाम में उस पर भरोसा रख के क्षमा चाहते हैं। उसकी आत्मा आकर हम को सच्चा धार्मिक बनाती है। हम भी कहानी के व्यक्ति की तरह बहुत धार्मिक बन सकते हैं। लेकिन केवल यह परमेश्वर को पसन्द नहीं है। हमारा पश्चाताप और विश्वास ही उसको सुखी रखता है।''

मिस्टर वाइज़ चलते हुऐ लर्नर से कहते हैं, ''मैं सोचता हूँ कि सारा यीशु के बारे में सुसमाचार का प्रतिवद कर रही है। मैं आशा करता हूँ कि तुम उससे इस बारे में बात करोगे। यदि तुम सोचते हो कि वो तैयार हैं तुम उसके साथ यीशु के नाम में क्षमा के लिऐ प्रार्थना कर सकते हो, जैसे कि मैनें तुम्हारे साथ प्रार्थना करी थी।''

''मैं उससे आज रात को बात करूगाँ। अगर आप आ सकें तो कृपया सुबह वापिस आए।''

I-7-खोज (शोध) 7
यीशु में अनन्त जीवन पाए

(बपतिस्मे से शुरूआत करके, आज्ञाकरी होकर नया विश्वास दिखाएँ)

अगली सुबह मिस्टर वाइज़ लर्नर के घर लौटे। तभी मिस्टर फुलिश कई रंग बिरंगी परों वाली टोपियाँ लिए दरवाज़े पर दिखाई दिए। ''लर्नर, अपनी पत्नी सारा के लिए एक टोपी खरीद लो !''

लर्नर हँसता है। ''हमारे पास इन टोपियों के बारे में बात करने से ज्यादा जरूरी और कई चीज़े हैं। मैं और मेरा परिवार यीशु की आज्ञाओं को मान रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि मिस्टर फूलिश आप भी मानोगे।''

''मैने इसके बारें में सोचा है। मैं उसे अपने तरीके से मानता हूँ । लर्नर, इसके बारे में ज्यादा बहस मत करो । कुछ लोग करते हैं कि स्वर्ग में जाने के लिए केवल यीशु पर विश्वास करो। ज्यादा नहीं। मैं वो करूगाँ।''

''मैने कहा कि हम भी उसकी आज्ञा मानेगें।''

''तुम नहीं कर सकते। उसने कहा अपने शत्रुओं से भी प्रेम करो । यह एक सनक हैं।

मिस्टर वाइज असहमत होते हैं।''नहीं! विश्वास केवल एक शुरूआत है। परमेश्वर चाहता है कि तुम अपना विश्वास साधारण आज्ञाकारिता से निश्चित करो । कुश देश के मंत्री को कहानी तुम सब को समझने में सहायता करेगी

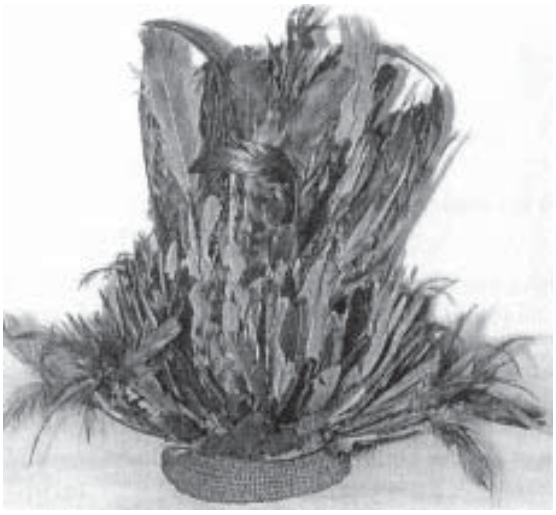

अभ्यास

कृपया प्रेरितो के काम 8:26-38 में देखें।

- कुश देशवासी धर्मपुस्तक के पुराने नियम में से किस के बारे में पढ़ा रहा था जो कि यीशु की पैदाईश से कई सौ साल पहले लिखी गई थी?
- पुराने नियम में यीशु के बारे में क्या भविष्यवाणियाँ थी?
- कुश देशवासी ने यह दिखाने के लिए क्या किया कि वो यीशु पर विश्वास रखता है?

मि. वाईज़ ने लर्नर, सारा तथा मि. फूलिश को समझाया, जब वो लर्नर के घर पर बैठे हुए थे, ''जो पुस्तक कुश देशवासी ने पढ़ी वो यशायाह 53 थी। वो यीशु के पैदा होने से सैकड़ों साल पहले लिखी गई थी, लेकिन वो बताती थी कि यीशु क्या करेगा। वो कहती है कि हम उन भेड़ों की तरह हैं जो कि अपने पापों में होकर ईश्वर से बिछड़ गई है। हम मृत्यु योग्य है। परन्तु यीशु ने हमारे सारे पाप, सारी बीमारीयाँ, सारे दुख तथा हमारी मृत्यु अपने कंधो पर ले ली। हम अपने पाप तथा मृत्यु से स्वतंन्त्र हुए क्योंकि उसने दुख उठाया तथा मृत्यु पाई।''

सारा काफी लाती है और मि. वाईज़ बताना जारी रखते है, 'जो यीशु ने उसके लिये किया था, कुशवासी उस में विश्वास रखता था। अपना विश्वास दिखाने के लिये उसने तुरन्त फ़िलिप को, वहीं सड़क के पास जहाँ उसने पानी देखा था, बपतिस्मा देने के लिये कहा। बपतिस्मा यह दिखाता है कि हम पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु और उसकी मृत्यु से जुड़ गए हैं, जैसा कुलुस्सियों 2:12 तथा रोमियों भी प्रकट करता है। हमारा पापों भरा जीवन यीशु के साथ मर जाता है। विश्वास के द्वारा हम उसको हम उसके पुनरूथान में सहभागी होते है तथा एक नया जीवन शुरु करते हैं जो कभी ना समाप्त होने वाला पवित्र हैं। उसकी आत्मा हमारे साथ रहने के लिए आती है।''

मि. फूलिश त्योरी चढ़ाते है। ''यह हँसने योग्य हैं! हमें पवित्र बनने के लिए पानी की आवश्यकता नहीं है! उसके लिए हम लम्बा ध्यान करते हैं । मैं तुम्हें एक पवित्र हिन्दु व्यक्ति की पुस्तक बेचूँगा, जो यह बताती है कि कैसे ध्यान करना चाहिए। यह, देखो।''

मि. वाईज़ नामान कोढ़ी के बारे में बताते हैं। वो उनसे समझने के लिए प्रश्न पूछते हैं।

अभ्यास

कृप्या 2 राजा 5:1-14 में देखें:

- नामान ने अपना विश्वास दिखाने के लिये क्या किया?
- नामान का कोढ़ नदी के पानी ने स्वंय नहीं धोया। ईश्वर ने यह किया। परन्तु नामान को अपने विश्वास में लाने के लिये, परमेश्वर ने पानी का कैसे प्रयोग किया?

मि.फूलिश अपनी किताब बेचने में असफल रहे तथा अपने घर को चले गए । मि. वाईज़, लर्नर तथा सारा को समझाते है: परमेश्वर हमें पानी का बपतिस्मा लेने के लिये कहता है। जैसे कि नामान का धोया जाना तथा कुश वासी का बपतिस्मा, हमारा पानी से बपतिस्मा हमारा विश्वास प्रकट करता है। यह परमेश्वर की आज्ञा मानने की हमारी पहली बात हैं।

बपतिस्मा दिखाता है कि परमेश्वर मे हमारे सारे पाप यीशु के लहु से धो दिया दिये है, जैसा कि प्रेरितों के काम 22:16 दर्शाता है। 1युहन्ना 1:7 भी हमारे परमेश्वर द्वारा धोये जाने का आश्वासन देता है।''

लर्नर और मि.वाईज़ बपतिस्में के बारे में बातचीत करते हुए दुकान तक जाते हैं। ''लर्नर, परमेश्वर चाहता है तुम परिवार सहित, आज्ञाकारिता का ये कदम उठाओ। तुमको, सारा तथा अपने बच्चें को समझाना चाहिये कि बपतिस्मा हमें यीशु मसीह से जोड़ता हैं।''

''मैं सारा से बात करूँगा। मैं नहीं जानता कि हम अब तक तैयार है।''

अभ्यास

कृपया प्रेरितों के काम 2:38 स्मरण करें।

रोमियों 6: 1-14 में भी देखें कि बपतिस्में का क्या परिणाम है जिस तरह हम जीते है।

I-8-खोज 8
यीशु के अनुयायी बनें

(जीवित मसीह से मिलें, जाने तथा अनुसरण करें)

कुछ दिनों पश्चात मि.वाईज, लर्नर के लकड़ी के कारखानें मे आते है तथा कहते है, ''मैं जल्द ही देश के दूसरे हिस्से में जा रहा हूँ। तुमने यीशु का सुसमाचार सुना है। तुम एक सच्चे परमेश्वर की हमारी आवश्यकता को जानते हो, तथा कैसे उसने यीशु को हमारे पाप तथा मृत्यु से बचाने के लिए भेजा। क्या तुमने बपतिस्मे में अपने विश्वास के बारे मे सारा से बात करी?''

''हाँ, हम दोनों को विश्वास है कि यीशु की मृत्यु तथा पुनरूथान हमारे लिए क्षमा तथा जीवन लायेगा। परंतु मैं बपतिस्में के बारे मे अधिक जानना चाहता हूँ।''

''तो फिर सुनों, कि कैसे पौलुस यीशु से मिला।''

अभ्यास

कृप्या प्रेरितों के काम 22:1-16 में देखे:

- यीशु से मिलने से पहले मसीहीयों के साथ क्या करता था?
- दमिश्क की सड़क पर जाते हुए पौलुस से किसने बात करी?
- यीशु का आज्ञाकारी शिष्य बनने के लिये पौलुस को किस चीज़ की आवश्यकता थी?

मि. वाईज़, लर्नर को एक कुर्सी ठीक करने में मदद करते हुए कहानी का सारांश बतातें हैं। ''यीशु से पहले पौलुस नें कई मसीहीयों को कारागार में डाल दिया था। वो सोचता था कि वो ऐसा करके परमेश्वर की सेवा कर रहा है। वो यह विश्वास नहीं करता था कि यीशु मुर्दो में से जी उठा है। वो यह विश्वास नहीं करता था कि यीशु वो सोचता था कि मसीही झूठे है। परन्तु जीवित यीशु ने पौलुस से बात करी। पौलुस अन्धा हो गया, जब तक कि परमेश्वर के एक भविष्यवक्ता ने आकर उसे चंगा किया। भविष्यवक्ता ने उसे उठने को, बपतिस्मा लेने तथा अपने पापों को धोने को यीशु के नाम से कहा। भविष्यवक्ता ने पौलुस से कहा कि जो कुछ उसने देखा तथा सुना है वो सब इन्सानों में उसकी गवाही देगा।''

मि. वाईज़ परमेश्वर से खामोशी में प्रार्थना करतें हैं, और उसके उपरांत बतातें हैं कि कैसे यीशु स्वर्ग में गया।

अभ्यास

कृपया लुका 24:36-53 मे देखें कि मि. वाईज लर्नर से क्या पूछते है:

- अपने शिष्यों को ये दिखाने के लिए कि वो प्रेत नहीं है, यीशु ने क्या किया?
- किन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को सब देशो को प्रकाशित करने का यीशु हमको निर्देश देते है?
- किस विलक्षण चीज को यीशु, अपने शिष्यों के पास भेजने का वादा करता है?

मि. वाईज़ कहानी समाप्त करतें हैं, जब लर्नर तथा मि. फूलिश दुकान में सुन रहे होतें हैं: ''यीशु स्वर्ग पर एक इन्सान की तरह उठाया गया। स्वर्गदूतों ने वचन दिया कि वो इसी प्रकार से वापस आयेगा।(प्ररितों के काम 1:8-11) इस बीच यीशु ने अपने शिष्यों को एक काम करने को दिया, तथा अपना पवित्र आत्मा ऊपर से भेजा जो उनको वह काम करने की शक्ति दे। वो काम आज हमारे लिए भी है। उसने स्वर्ग से हमको उसे करने की शक्ति देने का वचन दिया, जो कि हमारे पास पवित्र आत्मा के द्वारा आती है, जो हमारे में रहता है। हमारा काम है कि हम यीशु के बारे में सब लोगों से बतायें; विशेषकर उसकी मृत्यु तथा पुनरूथान, पश्चाताप की घोषणा तथा पापों की क्षमा का प्रचार करें।''

मि. फूलिश बोले, ''फिर तो यीशु अभी बहुत दूर है। मै जा रहा हूँ। तुम लोग धर्म के मामले में काफी सनकी होते जा रहे हो।''

मि. वाईज़ उसकी तरफ ध्यान न देते हुए लर्नर से कहते है, ''एक दिन यीशु वापस आयेगा तथा अपने अनुयायीयों को मुर्दो में से जिलायेगा, जिससे कि हम सब उसके साथ, जहाँ वो है, हमेशा के लिये रहेंगे (युहन्ना14:3)। लर्नर, क्या तुम परमेश्वर की और यह कदम उठाने को तैयार हो? यीशु की आवाज़ को सुनों। अपने पापों को स्वीकार करो तथा बपतिस्मा लो, अपने पापों को यीशु के नाम में धोते हुए (प्ररितों के काम 22:16)।''

''मैं अपने हृदय में जानता हूँ कि यह सत्य है। मेरा परिवार तथा मैं मसीह की आज्ञाओं का पालन करेगें। हम बपतिस्मा लेंगे। तथा मैने अपने मित्रों को यीशु के बारे में पहले से ही बताना शुरू कर दिया है।''

चरवाहे की कहानी की किताब

अभ्यास

वो करें जो मि. वाईज़ ने लर्नर से करने को कहा:

- मत्ती 28:18-20 स्मरण करें।
- यीशु के बारे में जो अपने देखा तथा सुना वो लोगों को बताएं।
- परमेश्वर का गुणगान करें, जब वो अपने शिषयों को अपने साथ घर ले जाने के लिए वापस आयेगा, उस दिन के लिये।

खण्ड - II

मसीह का आज्ञाकारी समुदाय स्थापित करें

खण्ड II के अध्यायों में यीशु की सात मूल आज्ञाए है। जाँचे उन्हें जो प्रयोग में है:

यीशु की आज्ञा # 1, पश्चाताप, विश्वास, तथा पवित्र आत्मा को ग्रहण करना (पापों से मुक्ति)

II-2-यीशु की आज्ञा # 2, नए विश्वासीयों को बपतिस्मा देना (तथा फिर यीशु मे पवित्र जीवन जीना, जिसका वो प्रारम्भ करता है)

II-3-यीशु की आज्ञा # 3, यीशु के शिष्य बनाना (ईश्वर के वचन तथा यीशु के प्रति आज्ञाकरिता सिखाना)

II-4-यीशु की आज्ञा # 4, प्रेम(परमेश्वर तथा इनसानों से प्रेम, जरूरतमंदों की सेवा, शत्रुओं को क्षमा)

II-5-यीशु की आज्ञा # 5, प्रार्थना, (परमेश्वर की स्तुति, पापों की स्वीकृति, दूसरों के लिए प्रार्थना, चंगाई, अध्यात्मिक संग्राम में हिस्सा)

II-6-यीशु की आज्ञा # 6, रोढ़ी तोड़ना (प्रभु भोज, आत्मा में परमेश्वर की स्तुति)

II-7-यीशु की आज्ञा # 7, अर्पण {(देना) परमेश्वर की हर देन को बाँटना} इस खण्ड से यह अभिप्राय है कि हम उन्हें शिष्य बनाएं जो हर चीज़ से ज्यादा यीशु की आज्ञाएं मानें।

बाईबल में हम, एक तितुस नामक चरवाहें को पाते है। तितुस 1:5 में देखें कि कैसे पौलुस प्रेरित ने इस चरवाहे को

त्रेते द्वीप पर नए मसीहीयों की मदद के लिए छोड़ा था। पौलुस ने तीतुस से कहा कि वो हर उस चीज़ को पूरा करें जिस की त्रेते के नए समाज में कमी थी। आप मि. वाईज से भाग। में मिल चुके होगे। यदि नहीं तो मैं उनका परिचय देता हूँ । वो एक चरवाहा (मार्गदर्शक) है। वो एक वास्वविक इन्सान नहीं है, पर बाईबल के तीतुस जैसा है।

भाग 1 में मि. वाईज़ ने लर्नर नामक लकड़ी का कार्य करने वाले को यीशु का सुसमाचार बताया था। उन्होंनें बाईबल की कहानी का प्रयोग किया। लर्नर ने वही कहानीयाँ अपने परिवार को बताई। अब लर्नर के परिवार और अनेक मित्रों ने मसीह को ग्रहण किया तथा बपतिस्मा लिया। मि. वाईज़, बाईबल के उस बुद्धिमान व्यक्ति की तरह है जिसने अपना मकान ठोस चट्टान पर बनाया था, जो कि यीशु मसीह है। वो नए विश्वासीयों को मदद लेता है। यह कहानीयाँ इतिहास मे हुई घटनाओं से संबंधित है।

लर्नर वहाँ रहता है जहाँ यीशु के शिष्यों को लोग मारते हैं। उसका दोस्त मि.फूलिश एक सामान बेचने वाला है, जो तरह-तरह की वस्तुएं बेचने की कोशिश करता है,जिन्हें कोई नहीं चाहता। वह बाईबल के उस मूर्ख व्यक्ति की तरह भी है जो अपना घर रेत पर बनाता हैं।

मि. फूलिश, लर्नर के लकड़ी के काम की दुकान पर यह बनाने पहुँचते है, ''मैने सुना है कि तुम मसीही बन गए हो । मैं भी बना हूँ मुझको मसीही जानकार यात्री मेरी वस्तुए ज़्यादा खरीदेगें। देखो, शायद तुम भी कुछ खरीदना चाहो। ''उसने बाँस की एक छोटी सी सीटी अपने थैले में से निकाली। ''यह चिड़ियों वाली सीटी है। इसे बजाने से चिड़ियें गाती है। मैं तुम्हें दिखाता हूँ। उसने सीटी बजाई तो तीन कुत्ते रोने लगे।

लर्नर ने उत्तर दिया, ''मैं यीशु को इसलिए मानता हूँ कि परमेश्वर की सेवा करूँ, ना कि पैसा बनाने के लिये। मैं अपने सारे मित्रों को उसके बारे में बता रहा हूँ।''

मि. फूलिश हँसे। ''तुम? तुम्हें पहले पूरी बाईबल याद करनी होगी, इससे पहले कि तुम किसी और को शिक्षा दो! अलविदा!''

बाद में उस दिन मि. वाईज़ पधारे उन्होनें लर्नर को लकड़ी का काम सिखाया था, तथा उनको, लर्नर की दुकान पर उसके साथ काम करना व बातें करना अच्छा लगता था। लर्नर ने शिकायत करी ''मि.फूलिश कहते हैं कि दूसरें को सिखाने से पहले मुझे पूरी बाईबल को जानना पड़ेगा।''

मि. वाईज़ ने चेताया, ''नहीं, यीशु में मेरे भाई! हम परमेश्वर के वचनों को सिर्फ सुनते ही नहीं है। जैसे-जैसे हम उन्हें सीखते है, हम उन्हें प्रयोग में लाते है। नहीं तो वो हमारा कुछ भला नहीं करते। मैं तुम्हें उन दो घर बनाने वालों की याद दिलाता हूँ। यीशु ने अपने शिष्यों को उनके बारे मे इसलिये बताया था, कि हम यह जानें कि उसके बचन का पालन करना कितना जरूरी है, अपने नए मसीही जीवन की शुरूआत से।''

अभ्यास

कृप्या यह कहानी मत्री 7:24-29 में पढ़े। अगर आपकी भाषा में आपके पास बाईबल नहीं है, वो जिसके पास हो, उससे पूछे। जब आप इस कहानी को पढ़े, तो इन प्रश्नों का उतर दें जो मि. वाईज़ ने लर्नर के तौयार करे थे:

- उन दोनों व्यक्तियों में क्या अन्तर है, जिन्होंने यीशु के शब्द सुने ?
- कौन चट्टान है, हरेक अच्छी चीज़ की नींव?
- इस चट्टान पर हमें अपना जीवन बनाने प्रबन्ध करने के लिये क्या करना चाहिये?

लर्नर उत्साहित होकर बोला,''फिर तो सिर्फ यीशु के वचन सुनना ही काफी नहीं हमें यह जानना चाहिये कि वो हमें क्या आज्ञाएं दता है, लेकिन जानना ही काफी नहीं। हमें मसीह की उन आज्ञाओं को प्रयोग में जरूर लाना चाहिये।''

मि. वाईज़ लर्नर की मदद करते हुए मुस्कुरातें हैं, एक मेज़ का कार्य खत्म करते हुए, ''हाँ! उसने युहन्ना 14:15 में कहा है, यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।' हम सुनतें हैं और करतें हैं,

सुनते और करते, सुनते और करते। हम नहीं सुनते, सुनते, तथा बाद में शायद कर दें।''

''मैं देखता हूँ (अच्छा)।''

''चट्टान जैसे यीशु मसीह के ऊपर बनने का तरीका है बच्चों जैसे विश्वास तथा प्रेम से उसको मानना! यीशु के प्रति से उसको मानना! यीशु के प्रति हमारे प्रेम भर आज्ञापालन पर परमेश्वर आशीष देता है। वो हमें आशीषों का वचन सिर्फ इसलिये नहीं देता कि हम उसके वचन के बारे मे ज़्यादा जानकारी रखतें हैं। स्वर्ग पर जाने से ज़रा पहले, यीशु ने हमें, हमारे बाकी के जीवन के बारे में आज्ञा पत्र के रूप में पाते हैं। यीशु हमें शिष्य बनाने को कहता है। वो हमें बपतिस्में से शुरूआत करने को कहता है, तथा फिर उन्हें सारी आज्ञाओं को सिखाने के लिये कहता है।

हम यीशु की समस्त आज्ञाओं का पालन करने पर उसके शिष्य बनते हैं। उसकी आज्ञाओं के पालन की शिक्षा देकर हम दूसरें को उसके शिष्य बनाते है। शिष्य बनाने की शुरूआत प्रेममयी आज्ञाकारिता से शुरू होती है। वो एक आधार है। एक सच्चा चर्च लोगों का वह समूह है जो यीशु की आज्ञाओं को प्रेम से मानते है। पृथ्वी पर पहला चर्च तुरन्त शुरू हुआ, यीशु मसीह की सारी आज्ञाओं का पालन करने के लिए।''

उन्होंने किसी को गाते हुए सुना। लर्नर का छोटा भाई, हेल्पर, गिटार पकड़े हुए दुकान के अन्दर प्रवेश करता है। ''क्या तुम इसे ठीक कर सकते हो, लर्नर? यह बिना चिपके आ गया। ओह, नमस्ते, मि. वाईज़। ओह, नमस्ते, मि. वाईज़। मैं खुश हूँ कि आप मुझे मिले। मैंने छिपकर एक पुलिस वाले को कहते सुना था कि आप गौरकानूनी सभाएं करते है। आप संकट में हैं, आपको यह इलका तुरन्त छोड़ देना चाहिये।''

मि. वाईज़ दुखी होकर कहतें हैं, ''मैं अभी नहीं जा सकता पहले मुझे तुम्हारे परिवार तथा मित्रें को, एक शक्तिशाली समूदाय तथा यीशु के आज्ञाकारी शिष्य, बनाने में मदद करनी हैं। फिर मै। यह सुसमाचार किसी और जगह ले जा सकता हूँ।''

हेल्पर बोला, ''मैं यीशु मसीह का शिष्य नहीं हूँ, पर मुझे लर्नर ने उसके बारे में बाताया है तथा मैं और जानना चाहता हूँ। यीशु इनसानों को क्या आज्ञायें देता है?''

मि. वाईज़ बोले, ''यह विश्वास से शुरू होता है। यीशु ने कई और आज्ञायें दी है। हम उन्हें सात सामान्य आज्ञाओं में संग्रहित कर सकते है। हम यह आज्ञायों मोक्ष प्राप्त कर करने के लिये नहीं मानते 1 जब हम यीशु के हैं,तो आज्ञाकरिता स्वभाविक है। हम उसके आज्ञाकारी है क्यों हम उसको प्यार व आदर करते है। उसकी आज्ञाओं का पालन करता है कि उसकी ज़िन्दगी हमारे अन्दर हैं।''

लर्नर ने पूछा, ''उसकी आज्ञाये क्या है?''

- यीशु की सात मूल आज्ञायें अपने साधारण रूप में यह है:
- नए विश्वासीयों को बपतिस्मा देना
- प्रेम
- रोटी तोड़ना
- प्रार्थना
- अपर्ण(देना)
- शिष्य बनाना।

मि. वाईज़ जारी रखते है, ''हमें बाईबल में यह देखना चाहिये कि वास्तव में चर्च है क्या ।'' उन्होंने लर्नर और उसके भाई हल्पर को बताया कि कैसे शुरू के मसीही यीशु की आज्ञाओं का पालन करते थे।

अभ्यास

कृपया प्रेरितों के काम 2:36-47 में देखें कि मि. वाईज़ दो आदमीयों से क्या पूछतें हैं:

- नए विश्वासीयों का कितनी जल्दी बपतिस्मा होता था तथा वो चर्च से जुड़ते थे?
- वे प्रभु भोज उत्सव मनाने को कहाँ रोटी तोड़ते थे?
- वे एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम कैसे दिखाते थे?
- परमेश्वर ने नए, आज्ञाकारी चर्च को बढ़ने के लिये क्या किया?

लर्नर सावधानीपूर्वक सुनता है, ''अब मैने जाना कि चर्च क्या है! यह जोग है जो एकत्र होकर यीशु की आज्ञाओं का पालन करतें हैं। पहले मसीही, मसीह का आदर करते थे। वो उसके वचन और जो उसने सिखाया उसे याद करते थे तथा पालन करते थे, उत्साह व खुशी के साथ। मेरा परिवार भी यीशु का वैसे ही आदर करते जा रहा है जैसे कि वो मसीही करते थे।''

''बहुत अच्छा, ''मि.वाईज ने उत्तर दिया, ''वे आरंभ से ही, पवित्र आत्मा की शक्ति के साथ मसीह की सात मूल आज्ञाओं का पालन करते थे। परमेश्वर की आशीषें तथा प्रसन्नता उन समुदायों पर होती है, जो प्रेम से उसकी आज्ञाओं का पालन करते है।''

क्रियात्मक कार्य

- अपने समुदाय को युहन्ना 14:15 याद करने में मदद करें।
- अपने समुदाय को यीशु की सात मूल आज्ञायें याद करने में मदद करें।
- यीशु की सात मूल आज्ञाओं को ध्यान में रखकर, एक छोटा सा गीत लिखें, अगर किसी ने अब तक ना लिखा होतो। यह दूसरें के सीखने में उनके लिए आसान रहेगा। दूसरों को अपनी सहायता के लिये कहें।
- अपने समुदाय को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन प्रेम में, डर में ना रहकर, करने में सहायता करें।
- अपने समुदाय मे हरेक व्यक्ति का यीशु की सात मूल आज्ञाओं का पालन, किसी भी मानव निर्मित नियमों से पहले करने को कहें।

I-1-यीशु की आज्ञा # 1

अगले सप्ताह, कई नए विश्वासी तथा अन्य जो परमेश्वर को जानना चाहते थे, लर्नर के छोटे से मकान मे एक दूसरे को अच्छी प्रकार से देख सकें तथा संवाद कर सकें मि.वाईज़ ने उन्हें पश्चाताप, विश्वास तथा पवित्र आत्मा ग्रहण करने की शिक्षा दी। उन्होने इस आज्ञा पके विभिन्न भाव मरकुस 1:15, यूहन्ना 3: 16, तथा यूहन्ना 20:22 में से पढ़े।

मि. फूलिया साया में पधारतें हैं तथा घोषणा करते है, ''मैं अब एक मसीही हूँ। मैं सोचता हूँ कि यह जीने का बेहतर रास्ता है।''

''मैं तुमसे इस बारे में बाद में बात करूँगा, ''मि.वाईज़ बोले। अब हम यीशु के लिये और ज्यादा लोगों तक पहुँचने के तरीके सोचते है। मैं यहाँ उपदेश देने नहीं आया हूँ। हम सब एक दूसरे से यह बात करेंगें कि परमेश्वर क्या कराना चाहता है। मैं चाहता हूँ तुम सब इस बारे में बात करें।''

लर्नर बोला, ''यहाँ से उत्तर की सड़क की तरफ मेरे मित्र हैं। मैं उनको यीशु के बारे मे बताना चाहता हूँ।''

मि. फूलिश बोले, ''मै आशा करता हूँ कि हम उन लोगों को ढाल सकते है, क्यों कि वो कभी-2 मेरी छोटी मूर्तियाँ खरीद लेते है। वो नाराज हो जायेगें।

''मैं असहमत हूँ,'' मि वइिज़ बोले। ''कभी-कभी, जो सबसे प्यारी बात हम लोगों के लिये कर सकते हैं, वो यह है कि हम उन्हें चेतावनी दें कि वो अपने पापों का प्रायाश्चित करें। हमें इस बात का डर नहीं होना चाहये कि वो क्रोधित होगें।'' मैं तुमको युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के निर्भय उपदेशों के बारे में बताता हूँ। कृप्या मत्ती 3:4-10 में मि.वाई के प्रश्न का उत्तर देखिए:

- युहन्ना बततिस्मा देने वाला किस प्रकार के लोगों को बपतिस्मा देता था-जो लोग अच्छी प्रकार से योग्य थे, या जिनको बुरी तरह से उसकी आवश्यकता थी?

सारा बोली, ''अब जबकि आपने हम सब लोगों को बोलने को कहा है, मैं बताँऊगी मैंने क्या खोजा है। हम जो यह जानते हैं कि हमारे जीवन में काफी पाप है, यीशु की माफ़ी को ज्यादा मानतें हैं, बजाए उन लोगों के जो यह सोचते है कि वो सचमुच अच्छें हैं।

मि. फूलिश जवाब देने को होते है, पर लर्नर पूछता है, ''लोगों को परमेश्वर के बारे में सबसे पहले हम क्या बताते है?'' मि. वाईज़ बाले, ''मैं तुम्हें सुसमाचार के संदेश की सबसे जरूरी बातों के बारे में बताता हूँ।''

अभ्यास

कृपया ये आवश्यक बातें लुका 24:36-53में देखें:

- यीशु के जीवन की किन दो महत्वपूर्ण घटनाओं को हम और लोगों को बतातें हैं?
- इस अनुच्छेद के अनुसार, पापों की क्षमा के लिये एक पापी को क्या करना चाहिये?
- यीशु के बारे मे और लोगों को बताने के लिये हमारे पास शक्ति कहाँ से आती है?

लर्नर के घर घर मि. वाईज़ समुदाय को बताते हैं, ''जब हम यीशु के बारे में और लोगों को बताते है, हम समझाते है कि वो परमेश्वर की तरफ से 'भेजा हुआ है' परमेश्वर का अभिषेक किया हुआ। इसके अलावा हम उन्हें क्या बताते है?''

एक नए विश्वासी ने शर्माते हुए उत्तर दिया, 'लर्नर ने मुझे बताया कि हमें उन्हें उसकी मृत्यु तथा पुनरूथान के बारे में बताना चाहिये।''

''हाँ। और हम उन्हें पश्चाताप करने के लिए बुलाते है। हम उनसे न सिर्फ मानसिक निर्णय लेने को कहतें हैं, पर व्यवहार करने को भी कहतें हैं। उनको बपतिस्मे के द्वारा पश्चाताप करके प्रमाणित करना होगा।''

लर्नर बात को आगे बढ़ाता है, ''फिर हम नए विश्वासीयों को ईश्वरीय शक्ति का उपयोग करने में मदद करने में करते है जो कि पवित्र आत्मा देता है, यीशु के बारे में और लोगों को बताने के लिए।''

मि.फुलिश बीच में बात काटतें हैं, ''हमें लोगों को उनके पापों के बारे में बुरा एहसास दिलाने की जरूरत नहीं है। वो उन्हें क्रोधित करती है। इसी कारण अधिकारी नहीं चाहते कि मि.वाईज़ यहाँ रहें। वो उन्हें क्रोधित करतें हैं। लोगों को सिर्फ यह सच्चाई माननी चाहिये कि ईश्वर उन्हें प्यार करता है। यही बहुत है।''

कई इस बात पर बहस करने लगे। वाईज़ बोले, कृप्या सुनो, लोगों को संदेश मानने से ज़्यादा भी कुछ करना चाहिए। मैं तुम्हें बताता हूँ कि कैसे पतरस ने यीशु को लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया।''

अभ्यास

कृप्या प्रेरितों के काम 2:22-38 में देखें:

- पतरस ने यीशु के बारे मे क्या कहा?
- पतरस ने लोगों को मुक्त होने के लिए क्या करने को कहा?

मंडली ने, जो कि एक घेरे में लर्नर के घर में बैठे थे, काफी देर तक विचार किया, फिर मि.वाईज से पूछा कि जो उन्होनें कहा उसमे क्या वो सही है। उन्होनें उत्तर दिया, ''हाँ! तुमने अच्छी तरह से सीखा है। हम उसको संक्षिप्त में लेतें हैं। प्रेरित पतरस सुसमाचार के महत्वपूर्ण सत्य का उपदेश देता था। तीन हज़ार लोगें ने पश्चाताप करके उसकी बात को माना, पवित्र आत्मा की सहायता से जिसने की उनके दिलों से बातें करी। उनको उसी दिन चर्च में बपतिस्मा दिया गया। जब तक नए विश्वासीयों को बपतिस्मा ना दिया जाए, तब तक हमें उनको चर्च में नहीं जोड़ना चाहिये, अन्यथा हम भ्रमित हो सकते है। अब, वो क्या सत्य था, जो प्रेरितों ने उन लोगों को बताए, जो परमेश्वर को पाना चाहते थे?''

एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''यीशु ही उद्धारकर्ता हैं जिसे कि परमेश्वर ने चमत्कारों के द्वारा प्रभु तथा मसीह के रूप में स्वीकारा।''

सारा बोली,''उसकी मृत्यु हमें क्षमा दिलाती है।''

एक अन्य ने जोड़ा, ''उसका पुनरूथान हमें मृत्यु पर विजय तथा पवित्र आत्मा द्वारा हमें एक नया जीवन दिलाता है।''

एक और अन्य ने जवाब दिया,''हमारी प्रतिकिया है पश्चाताप, यीशु में विश्वास, बपतिस्मा तथा चर्च में प्रवेश।''

लर्नर ने प्रतिज्ञा की, ''मैं प्रेरित पतरस के उदाहरण का अनुसरण करूँगा तथा अपने परिजनों को उसी शक्तिशाली यीशु के जीवन, मृत्यु तथा पुरूथान की कहानी सुनाँऊगा। मैं मिस्टर वाईज़ द्वारा बताई गई कहानीयों का, जब में पहली पहल यीशु का अनुयायी बना

था, प्रयोग करूँगा। उन्होंने मुझे उन कहानीयों की सूची दी है जो लोगों का सुसमाचार को समझने में मदद करेगी।'' (यह कहानीयों की सूची खझड IV में दिखाती हौ)

लर्नर का भाई हेल्पर बोला, ''मै यीशु का अनुसरण करना चाहता हूँ। मैं अपने पापों का प्रायश्चित कर सकता हूँ, क्योंकि परमेश्वर का पवित्र आत्मा मुझे ऐसा करने मे मदद करता है।'' उसने अपना गिटार उठाया तथा मसीह की विलक्षण क्षमा के ऊपर एक नया गाना रचने लगा।'' ''विलक्षण ! लर्नर चिल्लाया, मैं प्रसन्न हूँ कि मेरे मित्र तथा मेरे परिजन यीशु की तरफ आरहें है।''

कुछ दिनों पश्चात मंडली लर्नर के घर पर मिलती है तथा मि. वाईज़ घोषणा करते है, ''मैं ज्यादा समय तक आकर तुमको शिक्षा ना दे पाऊँगा। मैं लर्नर को यह कार्य सौपंता हूँ। वो मसीह में विकसित हो गया है तथा अब एक मार्गदर्शक चरवाहें की विशेषताओं से परिपूर्ण है। अपनी इसमं डली का मार्गदर्शक बनर्ने के लिये मै उस पर विश्वास के साथ उसको अधिकार देता हूँ।

''आप हमें नहीं छोड़ सकते!'' सारा रोई।

''मुझे जाना होगा। लर्नर हम तुम्हें एक 'कार्यवाहक वृद्ध' बुलायेगें,जब तक तुम बिना मेरे संरंक्षण के यह काम पूरा करना ना जान लो । तुम हेल्पर तथा अन्य को बपतिस्मा दोगे।''

मि.पुलिश विरोध करतें हैं,'' यह बहुत जल्दबाजी है। मेरे चचेर भाई ने बाईबल में पढ़ा था कि किसी भी मार्गदंर्शक पर 'एकदम' से विश्वास नहीं करना चाहीये!''

लर्नर समाझाता है,''प्रेरित पौलुस का 'एकदम' शब्द से क्या आभिप्राय था? हम जानने के लिए उसका उदाहरण देखें । मैं इन परिस्थितियों में पसैलुस प्रेरित से कुछ ज्यादा नहीं कर रहा हूँ, उस नए समाज के लिए जिसके पास किसी प्रकार का कई अनुभवी मार्गदर्शक नहीं है, और उपद्रवों के मध्य, गलतियों में, प्रेरितों के कामो के वर्णन 14:1 इसका उदाहरण है। लर्नर तुम उन लोगों को बपतिस्मा दोगे, जिनको तुम मसीह के पास ले गए हो।

क्रियात्मक कार्य

- जिन बातों को हमें दूसरें को बताना है, अपने समुदाय को यह जानने में सहायता करें लूका 24:46-47 में से।
- आप अपने परिजनों, मित्रों तथा पड़ोसियों को पश्चाताप तथा यीशु में विश्वास दिखास दिलाने के लिये क्या करेगें, विचार करें।
- नए विश्वासीयों को यह समझाने में मदद करें कि जब वो परमेश्वर की ओर मुड़तें हैं, उन्हें पापों की क्षमा तथा पवित्र आत्मा का वरदान मिलता है।

II-2-यीशु की आज्ञा # 2

बपतिस्मा लें

(फिर यीशु में नया जीवन जिए, जो वो प्रारंभ करता हैं)

लर्नर के घर मंडली की सभा में बपतिस्में पर बात हो रही है। मि. वाईज़ कहतीं हैं, ''यह यीशु की एक मूल आज्ञा है, मत्ती 28:18-20 में। कृपया कोई भी सवाल करें।''

मि. फूलिश बहस करते है।, ''इन लोगों को बपतिस्मा देना बहुत जल्दबाज़ी है। मेरा चचेरा भाई कहता है कि कि उसका चर्च प्रतीक्षा करता है, जब तक की परिवर्तित लोग हर तरह से पूर्ण ना हो जाए। इसलिए सावधान रहो। फिर क्या होगा कि तुम उन्हें बपतिस्मा दो और उनमें से कुछ लोग चर्च से दुर्बल हो जाएं? प्रतिक्षा करो तथा देखो कि वो कितना आच्छा व्यवहार करते है। फिर जो बहुत अच्छे ठहरें, उनको बपतिस्मे के दूसरा पुरूस्कृत करो।''

मि. वाईज़ दुखी होकर कहते हैं; ''तुम बपतिस्मों के अर्थ को गलत समझ रहे हो। हम आज्ञाकारिता को यीशु की तरफ नहीं टलते। वो सबसे पहले आती है। बपतिस्मा की, पछतावा करने वाले विश्वासीयों के मार्गदर्शन की शुरूआत है।''

हेल्पर बोला,''मैं बपतिस्मा लेना चाहता हूँ। इसके बारे में बाईबल और क्या बताती है?''

मि. वाईज़ उत्तर देते है, ''लर्नर, तुम्हें उस कारपाल की कहानी आती है जिसने पश्चाताप किया था, कृपया इन्हें बताओ।''

अभ्यास

प्रेरितों के काम 16:22-34 में देखें लर्नर क्या बताता है:

- कारापाल अपने आपको क्यों मारना चाहता था?
- जब पौलुस ने आश्वासन दिया कि वो मुक्त हो सकता है, कारापाल ने क्या किया जिससे और लोग भी मसीह को जान सकें?
- कितनी जल्दी कारापाल तथा उसके परिवार का बपतिस्मा हुआ?

लर्नर के घर पर जो मंडली बपतिस्मा सीख रही थी, उनसे मिलकर मि.पूलिश बोले, ''जो बाईबल कहती है, हम वैसा नहीं कर सकते। आज का समय वैसा नहीं है।''

लर्नर उनको सहीं करते हुए कहता है, ''हाँ, ऐसा ही है। पाप नहीं बदला । परमेश्वर नहीं बदला। बपतिस्मा नहीं बदला। फिलिप्पुस का कारापाल इसलिये डरा था कि उसका भाग्य खराब था- उसने सोचा कि वो कैदियों की रखवाली करने मे असफल रहा तथा उसे मृत्यु दंड हो जाएगा । वो डरा हुआ था तथा उसे मुक्ति की आशा नहीं थी। उसे पता था कि वो खो गया है। मेरे परिजन भी वैसे ही है। वो वास्तव में बुरे थे, पर यीशु उन्हे मुक्ति दिलाने आया जो स्वीकार करते है कि वो खो गए हैं, एवं आशाहीन है। बपतिस्मा उन लोगों के लिए वरदान है, जिनको क्षमा के शक्तिशाली आश्वासन की जरूरत है।''

मि. वाईज़ ने आगे जोड़ा, ''हाँ, पौलुस प्रेरित, रोमियों 6:3-8 में समझाता है कि बपतिस्मा सिर्फ पानी से सफाई (धुलाई) ही नहीं है। बपतिस्में में हमारा पापी स्वभाव यीशु के साथ सूली पर चढ़ाया जाता है। हम जीवित मसीह के साथ नई जिन्दगी के लिये उठाए जातें हैं। जब लोग पश्चाताप करते है, उनका बपतिस्मा उनको मसीह में नए जीवन की विश्वस्तता में मदद करता है। हम उनको समझाते है कि एक सा जीवन बनाने के लिए पवित्र आत्मा परमेश्वर की ओर से उनके पास वरदान स्वरूप आता है। पौलुस को कैसे पता चला कि कारापाल सच्च था?''

लर्नर ने उत्तर दिया, ''उसने अपने कार्यो से दिखाया कि वो यीशु में विश्वासी था। उसने तुरून्त अपने परिवार को एक किया। वो सब एक साथ यीशु के शिष्य बने। और बपतिस्मा लेकर उसने यीशु कि आज्ञा को माना। चलो, हम नए विश्वासीयों को मसीह के शिष्य बनाने के लिये प्रेरित करें, उनको उनके परिजनों, परिवार तथा मित्रों से प्रारंभ करवाकर।''

हेल्पर ने टिप्पणी करी, ''कारापाल ने तुरंत अपना विश्वास तथा पश्चाताप बपतिस्मों के द्वारा दिखाया।''

''हाँ,'' मि.वाईज़ ने उत्तर दिया, ''बपतिस्मा ही एक ऐसी धर्मविधि है जो यीशु ने हमारे परिवर्तन की दृढ़ता के लिए अपने चर्च को दी, जो एक कायापलट है जो ईश्वर हमारे दिलों से शुरू करता है। जो भी मसीह की और मुड़ता था, प्रेरित तुरूयत ही उसे बपतिस्मा देते थे। वो इस प्रकार से उनको समुदाय में स्वीकार करते थे। पवित्र आत्मा की शक्ति से परमेश्वर उन्हें चर्च से, व मसीह के जिस्म से जोड़ता था।''

मि. फूलिश विरोध करते है, ''परन्तु लर्नर के कुछ मित्र एवं परिजन जो बपतिस्मा लेना चाहते है, शराबी एवं चोर है! लोग चर्च की निन्दा करेगे, अगर तुम उन्हें लेते हो, जब तक वो यह सिद्ध ना करें कि वो योग्य है।''

एक व्यक्ति बोला, ''मैनें एक बहुत पापी जीवन जीया है। मैं पश्चाताप तथा यीशु मसीह का अनुकरण करना चाहता हूँ। पर हो सकता है कि मि. फूलिश सही हो। अगर मैने बपतिस्मा लिया तो मेरे कारण चर्च की बदनामी होगी।''

मि. वाईज़ ने उसे प्रोत्साहित करा, ''बपतिस्मा बुरे लोगों के लिए है। एक क्षमा किए हुए चुँगी लेने वाले की कहानी सुनें।

अभ्यास

- कृपया **लूका 18:9-14** में देखें कि मि.वाईज़ ने हतोत्साहित व्यक्ति को क्या समाझाया।
- दो व्यक्ति प्रार्थना कर रहे थे। किस व्यक्ति ने ज़्यादा लंबी प्रार्थना करी?
- परमेश्वर ने कौन सी सुनी?
- परमेश्वर के समक्ष कौन सी सही चुनी गई?

हतोत्साहित व्यक्ति चैन के साथ गहरी साँसे लेता है! और फिर से मुस्कुराना शुरू करता है। मि.वाईज़ मंडली

को समझातें हैं,'' प्रेरित बपतिस्में को एक लंबी पढ़ाई के बाद उपाधि के तौर पर नहीं लेते थे। वो उसका प्रयोग उनके लिए पुरूस्कार के रूप में नहीं लेते थे जो अपने आप को योग्य सिद्ध करते थे। यह मानवीय परम्परायें बाद में कुछ चर्चे में आई। नए

नियम में, बपतिस्मे तथा पश्चाताप के द्वारा लोग चर्च में प्रवेश पाते थे। फिर वो मसीह के जिस्म, अन्य विश्वासीयों, जो उनसे प्रेम तथा उनकी सेवा करते थे, की मदद से आत्मिक अन्नति करते थे।''

मि. फूलिश लर्नर से कहते है, ''तुम्हारे पास लोगों को बपतिस्मा देने के लिये परमेश्वर की तरफ से अधिकार नहीं है।''

''हाँ, उसके पास है,'' मि. वाईज़ बोले। ''नए विश्वासीयों को बपतिस्मा देने के हमारे अधिकार हम मत्ती 28:18-20 में पाते हैं। यह यीशु की महान आज्ञा है। और लर्नर परमेश्वर की हर जरूरत को ऐसा करने के लिए पूरी करता है।''

अभ्यास

कृपया अब मत्ती 28:18-20 में जानने के लिए पढ़ेः

- यीशु हमें किस अधिकार से शिष्य बनाने की आज्ञा देता है?
- हम लोगों के लिए कौन से दो कार्य करते है, जिनसे वो मसीह के शिष्य बनते हैं?
- यीशु हमसे क्या वादा करता है, जिससे की हमारा इस महान आज्ञा का पालन करना आसान ही जाता है?

अन्य लोग सभा से चल दिए पर मि. वाईज़ थोड़ी देरे के लिये रूके, लर्नर को अधिकारों के तीन स्तर समझाने के लिए, जो हमारे द्वारा चर्च में किए जाते है। ''लर्नर, यहाँ एक आसान तरीका है, यह जानने के लिये कि हमारे अधिकार कहाँ से आते हैं।

- पहला तथा सर्वोपरी, यीशु तथा उसके प्रेरितों की आज्ञाएँ
- प्रेरितों के वो कार्य, जिनकी कोई आज्ञा नहीं थी
- तीसरा, हमारी मानव परम्पराएं-वो कार्य जो कि एक चर्च के रूप में हम करने को सहायता है, जिनका नए नियम में कहीं उल्लेख नहीं हुआ है।''

लर्नर बोला,''हम यीशु की आज्ञाएं हर बात से ऊपर मानते है। यह आज्ञाएं तथा प्रेरितों की आज्ञाएं अधिकार का पहला स्तर है। कोई हमें प्रेम में यीशु की आज्ञाओं को मानने से नहीं रोक सकता।''

''हाँ, दूसरा स्तर प्रेरितों के उन कार्यो से संबंध रखता है जिनकी आज्ञा नहीं है। यह हमारे लिए उदाहरण है। हम उन चीज़ों को नहीं रोक सकते जो वो करते थे, ना ही हमउनकी आज्ञा दे सकते थे, क्योकि यीशु ने ऐसा कभी नहीं किया। इन प्रेरित कार्यो के अंर्तगत हैः सप्ताह के पहले दिन को सभा, घरों में सभाएं, तुरन्त बपतिस्मा तथा नए मार्गदर्शकों को अधिकार देने के लिए हाथ जोड़कर प्रार्थना करना।''

लर्नर बोला, ''मानव परम्पराएं अधिकारों का तीसरा स्तर है। क्या सब परम्परायें बुरी है?''

''नहीं। ज़्यादातर परम्परायें अच्छी है। वो हमें एकता से काम करने में मदद करती है। हांलाकि, अगर कोई मानव परम्परा मसीह की आज्ञाओं से हस्तक्षेप करे, तो हमें जरूर उनमें से एक का चुनाव करना चाहिये। क्या हम अपने चर्च की परम्परा का अनुकरण करेगें या फिर प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करेगें?''

क्रियात्मक कार्य

- अपने समुदाय के साथ मत्ती 20:18-20 याद करें।
- मनुष्य निमित आवश्यकताओं द्वारा बिना देर करें नए विश्वासीयों को चर्च व्यवस्था में सक्रियता पूर्वक हिस्सा लेने दें।
- यीशु को अपने परिवार तथा मित्रों मे ले जाने में नए विश्वासीयों की सहायता करें।
- अपने समुदाय की परम्पराओं को परखे, यह जानने के लिए, कि यीशु व उसके प्रेरितों की आज्ञाओं का पालन करने में कोई विलम्ब तो नहीं हो रहा है।

II-3-यीशु की आज्ञा # 3

शिष्य बनाए

कुछ दिन पश्चात मि. वाईज़ बस से लौटे तथा लर्नर के घर की तरफ चले। सारा ने उन्हें बताया,''लर्नर दुकान पर है। मुझे खुशी है कि आप आए। वो हतोत्साहित है।''

''क्यों? क्या हुआ?''

''मि. फूलिश और उनके मित्र हरेक से शिकायत कर रहे हैं। वो लर्नर का, किसी अध्यात्मिक शिक्षण संस्थाब से ज्ञान प्राप्त करे बिना, लोगों को धर्म के पाठ पढ़ाने के लिये, निन्दा करतें हैं। वो कहतें हैं कि जब वह बोलता है तो एक साधारण आधिकारी की तरह।

मि. वाईज़ तेजी से लकड़ी के काम की दुकान की तरफ जातें हैं। मि.फूलिश और उसके मित्र क्या कहता है, वो उनके बारे में बात करतें हैं। लर्नर विलाप करता है,''मैं एक अच्छा वक्ता नहीं है। मेरे अन्दर बोलने की कला नहीं हूँ। मेरे अन्दर बोलने की कला नहीं है।''

तुम्हारी मंडली तुम्हारे लिए बहुत छोटी है कि तुम परम्परागत वेदी के तरीके से उपदेश दो। बल्कि तुमको बाईबल की कहानीयाँ या कुछ और पढ़कर सुनाना चाहिये, तथा प्रश्न पूछने चाहिये, तथा छोटी मंडली को विचार-विमर्श करने के लिए उत्साहित करना चाहिए।''

''यही तो मैं करता हूँ। मैं उसी तरह से करता हूँ जैसा आप ने मेरे लिए किया। मैं कहानी पढ़ता हूँ या सुनाता हूँ, और फिर प्रश्न पूछता हूँ लोगों को विचार करने तथा उत्तर देने के लिये। मैं सबको हिस्सा लेने के लिए बढ़ावा देता हूँ पर मि.फूलिश यह नहीं चाहते । वो निष्क्रिय होकर सुनना चाहतें हैं, सिर्फ 'सुनने वालो' बनकर।''

''यह बहुत गलत है, याकूब 1:22 तथा। कुरिथियों 14:26 के अनुसार। बाई बल के कई पद हमें शिक्षा देने, उन्हें सुधारने तथा सचेत करने की बात बतातं हैं। इसका मतलब है कि सभाओं के दैरान हमें एक दूसरे से बातचीत करनी चाहिये। हम केवल सुनने के लिये नहीं है। चर्च के लियें परमेश्वर की जरूरतों को पूरा करने के लिये, समुदायों को छोटे समुह बनाने चाहिए जो परमेश्वर के वचन पर विचार करें तथा उसको अपने जीवन तथा प्रबन्धन पर लागू करने की योजना बनाएं। यीशु हमें सिर्फ वाक्पटु होने को

नहीं कहता। वो हमसे शिष्य बनवान चाहता है। अगर तुम एक अच्छे लोक-वक्ता बनने की चिन्ता करते हो तो तुम गलत उद्देश्य की और देखरहे हो। इससे बहुत बेहतर एक अच्छा चरवाहा बनाने है। चलो हम यीशु की शिष्य बनाने की आज्ञा पर विचार करें।

अभ्यास

मत्ती 28:18-20 में देंखे कि प्रभु यीशु मसीह हमसे कौन से जरूरी काम कराना चाहता है:

- शिष्य बनाने के लिए हम क्या सुनिश्चित करतें हैं?
- शिष्य को विशेष तौर पर क्या करना चाहिए ?

हेल्पर, लर्नर का भाई, अपने गिटार के साथ दुकार पर आता है। ''मेरा नया गीत सुनों, मि.वाईज। मैने इसको यीशु की आज्ञाओं की शिक्षा देने के लिए रचा है।'' वो यीशु की सात मूल आज्ञाओं की एक सामान्य सूची गाता है।

''बहुत अच्छे!'' मि.वईज़ उसे बधाई देते है। ''कृप्या इसे नए समुदायों को सुनाना।''

''आओ, हमारे साथ शामिल हो,'' लर्नर हेल्पर से बोला,''हम नए शिष्य बनाने के बारे में बातें कर रहे है।''

मि.वाईज मेज़ पर लकड़ी के काम के औज़ारों की तरफ इशारा करते हुए कहते है,''मसीह ने आम लोगों को अपना शिष्य बनाने के लिये बुलाया था, ना कि प्रसिद्ध वक्ताओं को । वो अपने शिष्यों से यह नहीं चाहता था कि वो सिर्फ चर्च में बैठक अच्छे वक्ताओं को सुने। वो अपने शिष्यों को वो कार्य करने की आज्ञा देता है जो एक तन्दरूस्त चर्च के जीवन के लिए जरूरी हो। मैं तुम्हें यीशु के अपने शिष्यों से वायदों के बारे में बताता हूँ:

अभ्यास

- कृप्या लूका 5:1-11 में देखें कि यीशु ने क्या कहा था कि अगर हम उसका अनुकरण करते है तो हम क्या बनेंगें।
- लूका 5:27-32 में दो बातें और देखें कि लेवी (जिसको मत्ती भी कहा जाता है) ने यीशु का अनुकरण करने के तुरंत बाद क्या किया।
- यीशु सिर्फ अच्छे लोगों का मित्र बनने के लिए ही नहीं आया था उसने क्या कहा कि वो किस प्रकार के लोगों को मुक्ति दिलाने आया है?

''हेल्पर बोला,'' मैं मसीह के बारे में अपने मित्रों को बताने का प्रयास कर रहा हूँ, पर मैं शरमाता हूँ। जिन लोगों को मैं जानता नहीं, उन लोगों से बात करने में मुझे परेशानी होती है।''

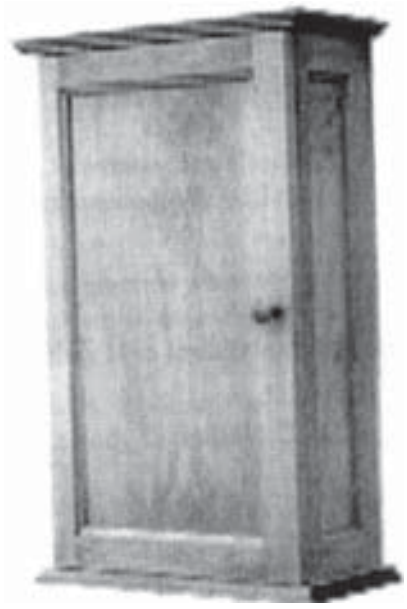

''परमेश्वर तुम्हारी मदद करेगा, ''मि.वाईज़ ने समझाया। चलो, हम, लर्नर जो अलमारी बना रहा है, उसे साफ करने में उसकी मदद करें। हम काम करते हुए बातें कर सकतें हैं। यीशु ने अपने शिष्यों से वादा करा था कि वो इन्सानों के पास बिना परमेश्वर की सहायता के नहीं जा सकते। सिर्फ उसकी शक्ति के द्वारा हम लोगों को पश्चाताप तथा विश्वासके लिये बुला सकतें हैं। वो हमें अपनी शक्ति के द्वारा वरदान देता है, पवित्र आत्मा के द्वारा। जब हम दो या उससे ज्यादा की जोड़ी बनाकर कार्य करतें हैं, तो हम उस शक्ति को ज्यादा अच्छी तरीके से पातें हैं, तथा उसका प्रयोग करते हैं।''

''इसीलिए प्रभु के बारे में लोगों से बात करना मेरे लिए कठीन होता है,'' हेल्पर ने दलील दी, ''मैंने उसे अकेले करना चाहा।''

चरवाहे की कहानी की किताब

मि. वाईज ने लर्नर को सुझाव दिया, ''जब तुम यीशु के बारे में और लोगों को बताओ तो अपने भाई को अपने साथ ले जाया करो। आओ, हम तुम दोनों के लिए अभी प्रार्थना करें, जिससे की पवित्र आत्मा तुम्हें छुए तथा तुम्हें ज्यादा सहयोग दे, जैसा कि मत्ती 9:38 में यीशु ने वादा करा है।

प्रार्थना करने के पश्चात, मि.वाईज़ समझाते है, ''जब यीशु ने लेवी को बुलाया वो सब कुछ छोड़ कर यीशु के पीछे हो लिया, जैसा कि पतरस तथा अन्य शिष्यों ने किया था।

सच्चे शिष्य यीशु को अपने जीवन के हर भाग पर अधिकार करने देतें हैं तथा तुरंत उसकी आज्ञाओं को मानते है।''

उन्होंने दरवाज़े पर किसी की आवाज़ सुनी 1 मि.फूलिश छिपकलियों का एक छोटा सा पिजंरा लिये दुकान पर आए। ''यह कोड़े खाती है,'' उन्होंनें बताया। ''यह तुम्हारे धर को मच्छर -मक्खियों से आज़ाद रखेंगी। एक खरीद लो। देखों, मैं दिखता हूँ।'' उसने एक को ज़मीन पर छोड़ा और वो दरवाज़े की तरफ भागी। एक बिल्ली उस पर झपटी और उसे लेकर भाग गई।

उन्होने लर्नर को एक प्राचीन के रूप में शिष्य बनाने के दायित्वों के बारे में बातें करी। मि.फूलिश ने मेज़ पर एक घूँसा मारा, उस पर रखा रेग का डिब्बा उलट गया। वह जोर से बोला, ''जब तक तुम और ज्यादा अध्यात्मिकता नहीं सीख लेते, तब तक तुम शिष्य नहीं बना सकते। मेरा चचेरा भाई कहता है कि उसके पादरी ने किसी को भी परमेश्वर के बारे में बताने से पहले कई साल तक शिक्षा ली थी। अगर तुम दूसरों को ईश्वर के बारे में बताने की कोशिश करते हो, जबकि तुम्हें अपने आप में ही कुछ नहीं पता, तो तुम एक पाखंडी हो।''

''नहीं!'' मि. वाईज बलपूर्वक बोले, ''तुम लर्नर से सही रूप में क्या चाहते हो कि वो क्या करें यह सिद्ध करने के लिए, कि वो मार्गदर्शक बनने के लिए उपयुक्त है, उन लोगों का जो परमेश्वपर ने उसे दिए है? पानी पर चले? वो हर आदमी की परवाह करने के लिए नहीं रूक सकता, क्यों कि वो हर तरीके में पूर्ण नहीं है! जब हम मसीह के पास आते है तब हम पहले से भी ज्यादा लोगों से प्रेम करते है।''

''हम उस विषय पर वापस चलें जिसके बारे में हम बात कर रहे थे, ''लर्नर ने याचना करी। हम शिष्य बनाना चाहते है। जो पहली बात मत्ती ने यीशु का शिष्य बनने के बाद करी वो यह थी कि उसने अपने सब मित्रों को खाने पर बुलाया ताकि वो यीशु को उनके समक्ष प्रस्तुत कर सके। हम नए शिष्यों को, यीशु को उनके मित्रों तथा परिजनों के समक्ष प्रस्तुत करने में, सहायता करतें हैं। हम उन्हें, यीशु के बारे में, उसकी शिक्षाओं, उसके चमत्कारों, उसको मृत्यु तथा उसके पुनरूथान के बारे में बतातें हैं। 1कुरिन्थियों 15:2-5 ये स्पष्ट करता है, कि अच्छी खबर ये है कि यीशु मरा तथा मुर्दो में से जी उठा, और ऐसा करके हमारे लिये क्षमा तथा अनन्त जीवन लाया।''

हेल्पर बोला, ''मैने यह बीती रात अपने परिवार को सुनाया। कानून के ज्ञानी लेवी और उसके मित्रें को 'पापी' कहता थे। पतरस भी अपने आपको पापी कहता था। यह पापी ही वो लोग थे जिन्हें यीशु ने पश्चाताप के लिए बुलाया तथा मनु मनुष्यों के पकड़ ने वाले बनाया। यीशु ने अपनी सभा में, पापीयों को, जैसे मत्ती की दवत मे चुँगी लेने वाले, बुलाया। उसने उनका परिवर्तन किया!''

मि.फूलिश ने अपंना छिपकलीयों का पिंजरा उठाया और दुकान से चले गए, उनका एक हाथ रोगन से सना हुआ था। हेल्पर ने शिष्य बनाने का विचार विर्मश जारी रख। प्रेरितों के काम, अध्याय 2 में, प्रेरित, यीशु के, उसकी मृत्यु तथा उसका पुनरूथान के बारे में बात करना नहीं छोड़ते थे । आत्मा की शक्ति से कई लोगों ने पश्चाताप किया। प्रेरित पतरस ने उन्हों हृदय परिवर्तन के बारे मे बताया और पवित्र आत्मा के वरदान तथा पापो की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेने को कहा। तीन हज़ार ने पश्चाताप करा तथा बपतिस्मा लिया, और उसी दिन चर्च से जुड़ गए।''

मि.वाईज बोले, '' और बपतिस्में के बाद प्रेरितों ने उन्हें यीशु की मूल आज्ञा ओं का पालन करना तुरंत सिखाया प्रेरितों के काम

2 कहता है कि लोगों ने प्रेरितों के उपदेशों को सुना तथा प्रयोग में लाए, एक दूसरे से प्रेम किया, साथ-साथ रोटी तोड़ी, प्रर्थना करी, तथा जो दीन थे उन्हें दिया। इस प्रकार से पहला चर्च प्रारंभ हुआ।''

लर्नर ने चिल्लाकर कहा, ''हमारा चर्च भी यीशु के मानने के साथ ऐसे ही शुरू हो रहा है जैसे कि पहले मसीही मानते थे। वो एक दूसरे से प्रेम करते थे। हम भी यीशु की आज्ञाओं का पालन करने में एक दूसरे की सहायता करेंगें। हम प्रमु यीशु मसीह के आज्ञाकारी शिष्य बनाएगें!''

''बहुत आच्छे,'' मिस्टर वाईज़ ने प्रसन्नता पूर्वक सहमति दी।" जब हम मिलते हैं तो हम मसीह की कुछ आज्ञाओं का अभ्यास करेंगें, जैसे कि प्रभु भोज तथा प्रेमय भाईचारा। यीशु की आज्ञाकारिता सच्ची पूजा का सार है। परन्तु जब हम सभाओं में नहीं होगें तब भी हम यीशु की आज्ञाओं को मानेंगें। हम हर्ष से सारे दिन उसको मानेगे, प्रार्थना करके, लोगों को उसके बारे में बताकर, तथा गरीबों की सहायता करके।''

लर्नर ने पूछा,''जब हम एक संघ के रूप में परमेश्वर की स्तुति करने के है तो हमें क्या करना चाहिये?''

''स्तुति करने के महत्वपूर्ण भागों की तुम्हारे लिए एक सूची बनाता हूँ:

प्रार्थना करो,

- परमेश्वर की प्रशंसा करो,
- अपने गुनाहों को स्वीकार करो, क्या क्षमा का आश्वासन प्राप्त करो,
- प्रमु भोज का उत्सव मनाओं,
- एक दूसरे से भाईचारा रखो,
- अर्पण करो,
- प्रभु के वचन का अध्ययन करो।''

''क्या हमें उन्हे इसी क्रम में करना चाहिये?''

''उन्हें उस क्रम में करों जो तुम्हारे लिये सबसें अच्छा हो।''

हेल्पर बोला, ''मैं साचता हूँ कि एक नया चर्च या एक- दो परिवारों का छोटा समूह इन कार्यो को कर सकता है, जब हम आपस में मिलते है।''

''जब तुम एक छोटी मंडली के साथ किसी घर में मिलो,'' मि.वाईज़ ने चेताया, ''तुम्हारा प्रार्थना के प्रारंभ एवं अन्त का एक निर्धारित समय होना चाहिये। नहीं तो और कार्यो से प्रार्थना दुविधा में पड़ जायेगी तथा इश्वरीय उपस्थिति से हम वांचित रह जायेगें।''

''यह मैनें पहले ही जान लिया है,'' लर्नर बोला! सभा को प्रारंभ करने के लिये हम सबसे खड़े होकर प्रशंसा का एक भजन गाने को कहेगे। और अन्त में खड़े होकर हम विदाई तथा आशीर्वाद के लिए एक विशेष प्रार्थना करेंगे। इस तरह से बच्चे यह जानेंगें कि कब शोर मचाना और खेलना बन्द करना है, तथा कब फिर ये शुरू करना है, जब प्रार्थना का समय खत्म हो जाए।''

मि. वाईज बोले, ''मैने तुम्हे तथा तुम्हारे परिवार को बताया था कि किसी तरह से एक साधारण पारिवारिक प्रार्थना की जाती है। तुम उसे ठीक प्रकार से करते हो तथा अन्य, जैसे हेल्पर और उसी पत्नी राशेल भी तुम्हारे साथ हो गए है। पर मैं हमेशा यहाँ नहीं रहूँगा। किसी भी समय मुझे जाना पड़ सकता है। तुम्हें बिना मेरी मदद के मार्ग दिखाना होगा, लर्नर, हर व्यक्ति को कुछ कार्य करने को देना। हर व्यक्ति को क्या अच्छा लगता है यह याद रखना। यह उनके अलग- अलग आत्मिक उपहारों के अनुरूप होगा। फिर सब हिस्सा ले सकेगें।''

चरवाहे की कहानी की किताब

क्रियात्मक कार्य

- अपने समुदाय के साथ उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जिन्हें यीशु की जरूरत है, जो आपके पास है तथा जो आपसे दूर है, उपेक्षित स्थानों पर।
- यीशु के बारे में मित्रतापूर्वक दूसरों को कैसा बताया जाता है, यह अपने लोगों को दिखाए, विशेषकर उनके संबंधियों तथा मित्रों को।
- सप्ताह में सभाओं की संख्या निर्धारित करें, उन्हें अपने मित्रों को धर्म के बारे में बताने का समय देने के लिए।
- मनुष्य साप्ताहिक सभा के अंतर्गत आराधना के सारे मुख्य तत्वों का अभ्यास करें।

  सभाओं के अंतर्गत, हर विश्वासी की, दूसरों के उत्थान के लिए, मदद करें।

II-4-यीशु की आज्ञा # 4

प्रेम

लर्नर और उसका भाई हेल्पर अपने पड़ोसियों तथा मित्रों से भेंट करते है, उनको यीशु का वचन सुनाते है। हेल्पर उनके लिए गाना गाता है। वो अलग-अलग इलाकों में रहते थे, कुछ किलोमीटर के फासले पर, इसलिये एक दिन वो लर्नर के इलाके में जाते तो अगले दिन हेल्पर के इलाके में। हेल्प के पड़ोसी, मि.केयरगिवर, ने हेल्पर को बताया, मैं एक विघालय में अध्यापक हूँ, परन्तु मै बीमार हूँ तथा काम करने में असमर्थ हूँ।''

हेल्पर उसको यीशु के बारे में बताता है, पर लर्नर चुपचाप रहता है। जब उन्होने उसका घर छोड़ा, हेल्पर ने लर्नर से पूछा,'' तुम इतने चुपचाप क्यों थे? हमें किसी तरह से उसकी मदद करनी पड़ेगी। उसका परिवार दुखी है।''

''मुझे मि. केयरगिवर अच्छे नहीं लगते,'' लर्नर ने माना। वो मि.फूलिश के बहनोई है। पिछले साल मैंने उनके लिए एक कुर्सियों का सेट बनाया था पर उन्होनें मुझे कभी पैसे नहीं दिए। बाद में मैंने उनसे भुगतान के लिए कहा और हमारें में बहस हुई। वो नाराज़ हो गए और मरी तरफ एक किताब फेंक कर मारी। वो मेरे शत्रु है। मै उनसे दुबारा भेंट नहीं करूँगा।''

वो लर्नर के घर वापस आए और मि.वाईज़ को प्रतीक्षा करते हुए पाया। हेल्पर उन्हें बताता है, लर्नर मि.केयरगिवर की जरूरत के समय में, मदद नहीं करना चाहता, क्योंकि पिछले साल उनके बीच असहमति हो गई थी।''

मि.वाईज़ ने सलाह दी, ''लर्नर, तुम्हें मत्ती 22:36-40 में यीशु के प्रेम करने की आज्ञा माननी चाहिए।'' मैं तुम्हें बताता हूँ कि यीशु ने अच्छे सामरी के विषय में क्या कहा।

अभ्यास

कृप्या **लूका 10:25-37** में देखें कि लर्नर ने व्यवहारिक प्रेम के बारे मे क्या पाया:

- हम परमेश्वर के अलावा किससे प्रेम दिखाए?
- अपने पड़ोसी को प्रेम दिखने के लिये सामरी ने क्या करा?
- परमेश्वर के दृष्टिगत, हमारा पड़ोसी कौन है?

वो इस बारे में लर्नर के घर पर बातें करते रहे। मि.वाईज़ ने सलाह दी, ''लर्नर, जो घार्मिक नेता उस घायल यात्री के पास से गुज़र गए, उन्हें पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञा मिली हुई है, परन्तु वो उसकी सहायता के लिए नहीं रूके। सामरी और यहुदी

ऐतिहासिक शत्रु है। परन्तु सामरी उस घायल यात्री की मदद के लिये जरूर रूका। एक जरूर तमंद इन्सान, चाहे वो हमारा शत्रु हो, परमेश्वर की दृष्टि में हमारा पड़ोसी है। वो चाहता है कि हम सब से प्रेम करें।''

''क्या मुझे मि. केयरगिवर से प्रेम करना चाहीए?''

''तुम क्या सोचते हो?''

''मेरा ऐसा ही अनुमान है।''

''परमेश्वर प्रेम है, और हम उस जैसे ही रचे गए हैं। उसने हमें उसको प्रेम करने के लिये बनाया, तथा एक दूसरे से प्रेम करने के लिये, जैसे वो हमसे प्रेम करता है। प्रेम लाभदायक होना चाहीए। सिर्फ यीशु के बारे में बात करना काफी नहीं। जब हम एक दूसरे के प्रति लाभदायक प्रेम के लिए रास्ते खोजतें हैं तो लोग जानतें हैं कि हम यीशु के है। हम फिर यह रूचि नहीं रखते कि परमेश्वर हमारे लिए क्या कर सकता है।''

''लाभदायक प्रेम से तुम्हारा क्या तत्पर्य है?''

''प्रेम जब लाभ दायक होता है जब हम वो कार्य करते है जिनकी यीशु हमें आज्ञा देता है। हमारी आराधना, तथा समस्त चर्च के कार्य, इस पहली महान आज्ञा से ही आतें हैं। हम अपना प्रेम, अपने पड़ोसियों की लाभदायक तरीके से सहायता करके सिद्ध करते है, विशेषकर जब उन्हे सहायता की जरूरत हो।''

मि. फूलिश लर्नर के दरवाज़े पर गाढ़े हरे रंग के द्रव्य की बोतलें लिए पहुँचते है, ''यह आवाज़ के लिये दवाई है,'' उन्होने ऐलान किया। हेल्पर, एक चम्मच रोज़ एक महीने तक लो, तुम बेहतर गा सकोगो। मि.वाईज़, लोग तुम्हें उपदेश देते हुए दूर से ही सुन सकेगें। मैं इसे बिल्ली के साथ प्रमाणित करता हूँ।'' उसने एक चम्मच भरा और नीचे किया। बिल्ली ने उसे सूँघा, गुराई और उनकी उँगली पर काट लिया। मि.फूलिश ने लोगों को डाँटा, ''तुम्हें इतना हँसने की जरूरत नहीं है! तुम्हारे मे अच्छी आदतों की कमी है।''

सारा ने उनकी उगँ ली की पट्टी करी और बोली,''यीशु हमें उन लोगों से भी प्रेम करने की आज्ञा देता है जो हमसे बुरा व्यवहार करते है। क्या आपको पता है, मि.फूलिश? मैंने आज सुबह यह मत्ती 5:44 में पढ़ा था।''

''पर तुम ऐसा तो नहीं होने दोगे कि कोई शत्रु क्रोधित हो और तुम कुछ ना करो! बिल्ली तक यह जानती है कि उसे उसको काट लेना चाहिए जो उसके साथ बुरा व्यवहार करे। लोगों को उनकी बुराई के लिये दुखी होने दो , ताकि वो फिर से ना हो!''

''कृप्या!'' मि.वाईज़ ने बीच में टोका, ''मैं तुम्हें उस नौकर के बारे में बताता हूँ जो कभी क्षमा नहीं करता था।''

अभ्यास

कृपया अब मत्ती 18:21-35 में देखें:

- कितना उधार स्वामी ने माफ किया?
- पहले दास ने, दूसरे, और गरीब दास, के साथ कैसा व्यवहार किया?
- स्वामी ने माफ ना करने वाले दास के साथ क्या किया?

वो लर्नर के घर में प्रेम तथा क्षमा के बारे में बातें जारी रहे, मि. वाईज़ ने समझाया, ''हम अपने शत्रुओं को प्यार दिखाते है, जब हम उन्हें क्षमा कर देतें हैं। ऐसे ही यीशु ने हमें क्षमा किया था। हम नए विश्वासीयों का अपने चर्च परिवार में स्वागत करके, उनको भी अपना प्रेम व्यक्त करते है! हम अपने शिष्यों की बातें सुनकर, और उनके फलदायक प्रबंधन में मदद करके भी अपना प्रेम दिखाते है। इफिसियों 4:11-12 कहता है कि गुरूओं को अपने विश्वासीयो की प्रभावशाली प्रबन्धन बनाने में अवश्य सहायता करनी चाहिये।'' प्रार्थना करने के बाद, लर्नर ने आह भरी, ''मै केयरगिवर को क्षमा कर दूँगा। परन्तु उससे घृणा ना करना कठिन है। सारा, कृप्या उसके परिवार के लिए कुछ खाने का प्रबंध करो। उनकी सहायता करूगाँ ।''

उसने एक बड़ी टोकरी रोटी, अण्डों तथा अन्य चीज़ो की, केयरगिवर को दी, जो बहुत आभारी हुआ। लर्नर ने उससे कहा, ''तुम्हें रोज़गार चाहिये पर तुम अभी भी पूरे दिन काम नहीं कर सकते। मेरी दुकान में कुछ-कुछ समय काम करो, जब तक कि फिर से तुम्हारी सेहत ठीक नहीं हो जाती। छोटे लकड़ी के बक्सों पर छोट आकारों को रंगने का हल्का कार्य तुम कर सकते हो। अगर तुम्हें थकान महसूस हो तो दिन के किसी भी समय तुम काम करना बन्द कर सकते हो। तुम अपने परिवार के लिये काफी कमा लोगे।''

कारगिवर ने लम्बे समय तक लर्नर को देखा। ''धन्यवाद मैं सुबह वहाँ पहुँच जाऊगाँ।''

कुछ सप्ताह बाद उसने लर्नर से कहा, ''मैं इस योग्य हूँ कि पूरे समय पढ़ा सकूँ । सुनो। उस विवाद के लिए जो पिछले साल हमारे बीच हुआ था। मैं गलत था। कृपया मुझे क्षमा कर दो । मैं तुम्हें भुगतान करूँगा, जिसका मैं ऋणी हूँ।'' केयर गिवर ने चर्च समाओं में जाना शरू कर दिया। बाद में उसने बपतिस्मा लिया तथा मसीह को पाया। एक आराधना सभा में, मि.वाईज़ मंडली को बताते है, ''परमेश्वर ने आपको एक अच्छा मार्गदर्शक दिया है। लर्नर अब आराधना सभायें मेरी सहायता के बिना संचालित कर सकता है। और वो उन्हें बाईबल के तरीके से करता है। तुम सब इसमें हिस्सा लो। तुम गवाही दो, प्रोत्साहन के शब्द बोलो, स्मरण करके पद दोहराओ तथा बाईबल की कहानीयाँ सुनाओ। कुछ लोग गीत गाओ और कुछ बाईबल की कहानीयों पर नाटक करो। यह गवाही है जो पौलुस हमें 1कुरिन्थियों 12-14 अध्यायों में करने को कहता है। यह सारा बाईबल से संबंधित है तथा आत्मिक रूप से तन्दरूस्त है। तुमको परमेश्वर का धन्यवाद देना चाहिये कि उसने तुम्हें एक ऐसा मार्गदर्शन दिया जो तुम्हें बाईबल के तरीके से मागदर्शन कराता है।''

जब लर्नर के घर से अन्य लोग चले गए, तो मि.फूलिश ने मि.वाईज से कहा, ''तुमने बेशक लर्नर को घमंडी बना दिया। पर जिस तरह से वो मार्गदर्शन करता है, मुझे अच्छा नहीपं लगता। हमारी मंडली के नए लोग हकलाते है तथा उसके प्रश्नों का बेवकूफी भरा उत्तर देते है। उनको आव्यश्कता से अधिक हिस्सा लेने देता है! उन्होनें अब तक यह अधिकार नहीं पाया है। वो उन्हें बहुत स्वतन्त्रता देता है! मंडली को ऐसा मार्गदर्शक चाहिये जो कठोर हो। मैं ज्यादा अच्छी तरह मार्गदर्शन कर सकता हूँ।''

''ओह, नहीं!'' मि. वाईज़ कराहे। तुम परमेश्वर की कृपा के साथ बहुत कृपाहो! ईषालु कर्मचारियों की कहानी सुनो।''

अभ्यास

कृप्या मत्ती 20:1-16 में देखें:

- नए विश्वासीयों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिये, जबकि हमने उसके लिये कड़ा परिश्रम तथा उसके लिए बहुत कष्ट उठाये, और उन्होनें नहीं?

मि. फूलिश ने मि. वाईज़ पर टिप्पणी करी, ''मैं तुम्हारी शिक्षाओं को नहीं समझता! परमेश्वर की कृपा का नए विश्वासीयों को भी उतना ही अधिकार होना चाहियें, जितना हम पुरानों को है!''

'' हम उन्हें चर्च मे परमेश्वर की उसी कृपा से स्वीकार करतें हैं, जैसे परमेश्वर ने हमें दिखाई थी।''

लर्नर, मि.वाईज़ के पास पहुंचा और उनसे चर्च के ढ़ाँचे की एकता को मजबूत करने की जिद करी। उसने यीशु की, हमारी एकता तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम की, प्रार्थना बताई।

अभ्यास

कृप्या युहन्ना 17:20-23 पढ़े:

- यीशु ने परमेश्वर से हमारे लिये क्या करने को कहा?
- किस तरह हमारी एक दूसरे के प्रति एकता, परमेश्वर एक पिता तथा परमेश्वर एक पुत्र, के समान है?
- यीशु ने किस प्रकार कहा कि संसार जानेगा कि यीशु को परमेश्वर ने भेजा?

मि. वाईज़ ने मि. फूलिश और लर्नर को बताया, ''तुम लोगों को एक दूसरे के साथ ठीक प्रकार से रहना चाहिये। परमेश्वर के लोग उसके चर्च में एक जुट होतें हैं। हम सब यीशु में एक है। एक स्थानीय चर्च लोगों का एक समूह है, जो यीशु के प्रेम में एक जुट होकर उसकी आज्ञा मानते है, चाहे वो कही। परमेश्वर चाहता है कि हम एक दूसरे की मदद करें तथा एक दूसरे को ऊपर उठाए। यीशु हमको यह नहीं बताता कि हममें से हरेक उसके अपनी-अपनी तरह से माने, अकेले, अलग-अलग। यह हम सब मिलकर करतें हैं।''

''तुम्हारा क्या मतलब है, हम सब मसीह में एक है? लर्नर ने पूछा

''पवित्र आत्मा इस तरह से हमें यीशु के शरीर से जोड़ता है कि मनुष्य उसे मानवीय तर्को से नहीं समझा सकता। यीशु ने युहन्ना 17 में कहा है कि हम उसमें एक है जैसे कि वो परमपिता के साथ एक है।'' ''मैं यह नहीं समझ, पाता।'' ''कोई भी मनुष्य परमेश्वर के रहस्य तथा हमारी नया पवित्र जीवन, जो कि यीशु में छुपा है, पूरे तौर पर नहीं समझ पाता, जैसा कि कुलिस्सीयों 3:1-7 ने प्रकट किया है। हमारी समाझदारी ही परमेश्वर के लिये सब से जरूरी बात नहीं है। वो हमारी आज्ञाकारिता को ज्यादा महत्व देता है। हम बहुत से सिद्धांत सीख सकतें हैं, तथा वो अच्छा है। परन्तु उससे ज्यादा बेहतर है कि हम यीशु की आज्ञा मानना सीखें। और सबसे अच्छा है कि हम दोनों ही बातें जाने। वो समुदाय यीशु के ढांचे को शक्तिशाली बनाएगा।''

''तुम समूह को यीशु का शरीर क्यों कहते हो? लर्नर ने पूछा।

नए नियम का चर्च यीशु का शरीर है- ना कि कोई उपाधि या भवन हम परमेश्वर के लोग उन्हें मानतें हैं, जो एकत्र होकर परमेश्वर की आराधना तथा उसकी सेवा करतें हैं। हम उस शरीर के सदस्य यह सीखाता है कि एक सच्चे परमेश्वर तथा एक दूसरे से व्यवहारिक प्रेम कैसे किया जाना चाहिये।''

''प्रेम इतना महत्वपूर्ण क्यों है?'' मि.फूलिश ने मि.वाईज़ से पूछा।

''हम जो कुछ करते है यह उसमें सबसे पवित्र उद्देश्य है। लर्नर, क्या तुम्हें याद है कि यीशु ने इसके बारेमे क्या कहा था?''

''हाँ उसने व्यवस्थाविवरण की प्राचीन आज्ञा की पुष्टि करी, ''हे इस्त्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है। तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव,और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।''

''परमेश्वर से प्रेम रखना असंभव है जब तक हम यह विश्वास नहीं करते कि वो एक है, ''मि. वाईज़ ने कहा।

''नए नियम में विश्वासी यीशु की आज्ञा को प्रेम में मानने के लिए एकत्रित हुए। प्रेरितों के काम 2 बताता है कि अपने पश्चाताप तथा बपतिस्में के बाद, उन्होंने प्रेरितों की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारा 1 उन्होनें प्रेमपूर्वक भाईचारा, दान देना, प्रभु भोज का उत्सव मनाने तथा शक्तिशालीयों प्रार्थनाओं का अभ्यास किया। इस एक जुट, यीशु के आज्ञाकारियों के द्वारा पहला चर्च प्रारम्भ हुआ। परमेश्वर के द्वारा पैदा हुआ सच्चा प्रेम जो कि आन्दमय आज्ञाकारिता में निकलता है, वो ही विश्वास का सच्चा सार है।''

क्रियात्मक कार्य

- प्रार्थना करें कि आपका समुदाय प्रेम मे स्थिर तथा स्थापित हो।
- लूका 10:27 मे यीशु की प्रेम की आज्ञा को याद रखने में अपने समुदाय की सहायता करें।
- अपने समुदाय के लिये उन लोगों की सहायता का प्रबन्ध करें जिन्हें शारीरिक एक आत्मिक सहायता की जरूरत हो।
- एक समूह के रूप मे योजनाएँ कार्य रूप में लाएं, जो एक दूसरे से, तथा अन्य समुदायों से प्रभमय एकता का निर्माण करे।

II-5-यीशु की आज्ञा # 5

प्रार्थना

कुछ दिनो पश्चात, मि.वाईज़एक ट्रक ड्राईवर से बाजार में बात कर रहे है, तभी केयरगिवर जल्दी से आया और फुफुसाया, 'पुलिस आपको गिरफ्तार करने की योजना वना रही है! मैने उनमैं से दो को यह कहते हुय सुना 1 जिस तरह यीशु के बारे में आप सार्वजनिक तरीके से बोलते है, वो अधिकारीयों को पसन्द नहीं। आईये।''

वो जल्दी से लर्नर की दुकान की तरफ चल दिये। जब वह लर्नर के साथ प्रार्थना कर चुके, मि.वाईज़ ने कस, ''मैं नहीं जानता कि कितनी लम्बी अवद्यि के बाद अब मैं तुमसे भेटं करूँगा। इससे पहले मै जाऊँ, मैं यह पक्का करना चाहता हूँ कि प्रार्थना तुम्हारे जीवन का एक नियंत्रित हिस्सा है, ना कि सिर्फ तब, जब खतरा डराये । युहन्ना 16:24 में यीशु हमें प्रार्थना करने को कहता है, ताकि हम पूर्ण सुखी हों। मैं तुम्हें यीशु की सबसे नाजुक प्रार्थना के बारे में बताता हूँ, जब वो मृत्यु का सामना कर रहा था।''

अभ्यास

कृपया अब देखने के लिये मत्ती 26:36-46 पढ़े:

- यीशु ने कहाँ पर प्रार्थना करी?
- यीशु ने किस से प्रार्थना करी?
- इस अवसर पर यीशु ने क्या मुद्रा अपनाई, जो उसकी प्रार्थना की व्यथा दर्शाती है?
- यीशु की, उसकी प्रार्थना में, सबसे बड़ी अभिलाषा क्या थी, जिसके कारण वो झुक गया तथा अपनी पहली विनती छोड़ दी?

लकड़ी के काम करने की दुकान में मि.वाईज़, लर्नर तथा केयरगिवर से कहते है, ''यीशु अपने पिता से याचना करता रहा, जब तक कि वो मृत्यु का सामना करने को तैयार ना हो गया। वो सूली पर नहीं मरना चाहता था, पर उस की इच्छा अपने पिता की आज्ञा मानने की थी। उसे विश्वास था कि उसके पिता का उत्तर, चाहेवो 'ना ' मेही क्यो ना हो, सबसे उत्तम उत्तर होगा। हमें भी उत्साह भरी प्रार्थनाएँ करना सीखना चाहिये, ईश्वर पर विश्वास रखकर, ना कि अपनी इच्छाओं को ही माँगते रहकर।''

''मैने प्रार्थना करी है कि आप को हमें छोड़कर ना जाना पड़े,'' केयरगिवर बोला।

ईश्वर चाह सकता है। पवित्र आत्मा की शक्ति से, चलो हम परमेश्वर से प्रार्थना करें, जैसे यीशु ने की, उसकी जो भी इच्छा हो हमे दिखरने के लिए। क्या तुम्हें याद है कि पिछले साप्ताह मैनें तुम्हें तुम्हें प्रार्थना के बारे में क्या बताया था?''

''हाँ,''लर्नर ने उत्तर दिया। ''हम यीशु के नाम में प्रार्थना करतें हैं, जो कि परमेश्वर की तरफ हमारी इकलौती राह है। सलीब पर उसकी मृत्यु हमारे लिये यह संभव बनाती है कि हम पिता की उप.स्थिति में सीधे जाएं तथा जो हमारी ज़रूरत हो उसे निडरता से माँगे, जैसा कि इब्रानियों 4:16 में प्रकट किया गया है! परमेश्वर से प्रार्थनाओं में हमारी अधर्मीता अब रूकावट नहीं है। यीशु ही हमारा इकलाता मध्यस्थ है।''

केयरगिवर आर्गे कहता है,''व्यवस्थाविवरण 18:11 में, धर्मगन्थ भी हमें बताता है कि हम मरें हुओं से प्रार्थना करें। मैं यीशु को जानने से पहले यह करता था । मैनें सोचा कि मेरे एक पूवर्ज की आत्मा ने मेरे दिमाग में यह डाला कि मुझे लर्नर को पैसे नहीं देने चाहिये,उन कुर्सियों के लिये जो उसने पिछले साल बनाई थी। यीशु ने मुझको तथा मेरे परिवार को उन आत्माओं के भय से मुक्त कर दिया है। हम जानते है कि उसमें कि इसी भी शैतानी आत्मा से ज्यादा शक्ति है।''

मि.वाईज ने उत्तर दिया,'' हमे सारी प्रार्थनाएं सिर्फ परमेश्वर से करनी चाहिये। और हम यीशु के नाम कें सारी प्रर्थनाएं करते है, जिसको कि पिता परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी पर सारी शक्तियाँ दी हैं; जैसा कि मत्ती 28:18 मे प्रकट है।''

केयरगिवर ने मि.वाईज से पूछा,''क्या प्रार्थना करने का कोई ऐसा तरीका है जो कि अन्य तरीकों से ज़्यादा शक्तिशाली हो? अगर मैं एक ही प्रार्थना को बार-बार दोहराऊँ, या जोर से चिल्लाँऊ, तो क्या ईश्वर मुंझे उत्तर देने को ज़्यादा इच्छुक होगा? मि.फूलिश ने मुझका बताया था कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएं तब ही सुनता है जब हम उसके चचेरे भाई की तरह से प्रार्थना करतें हैं।''

''हम विभिन्न तरीकों से प्रार्थना करने के लिए मुक्त है, जैसा हम धर्मगन्थों में देखतें हैं। परेमेश्वर इस बात की परवाह नहीं करता कि हम खड़े है, बैठे हैं, छुटनों पर है था लेटें हैं, चिल्लातें हैं या मौन हें; अकेले हैं या दूसरों के साथ है। परमेश्वर यह चाहता है कि हम हृदय ये तथा बिना किसी भ्रम के प्रार्थना करें। मत्ती 6 में उसने हमें लोगों को लुभाने के लिए सनकी शब्दों तथा लम्बी पुमरावृतियों, के प्रति चेताया है। अपनी गिरफ्तारी के सर्मपण से पहले, यीशु ने जमीन पर झुककर साष्टाँग प्रणाम किया, अपने पिता को अपनी बड़ी ज़रूरत तथा आशापालन दिखाने के लिये। बाइबल में और लोग बैठे रहते थे, खड़े रहते थे, टेकेते अेकते थे या अपने ताथ ऊपर उठाते थे। लोग विभिन्न तरीकों से प्रार्थना करते थे। वो बाते करते थे, गाते थे, चिल्लाते थे, एक मंडली की तरह साथ मिलकर प्रार्थना करते थे। हमारी प्रार्थना, हमारे शरीर की मुद्राओं की वजह से नहीं; बल्कि, क्योंकि हम परमेश्वर के आगे सच्चे हैं, तथा अपना हृदय निकाल कर उसे देते हैं, विश्वास करके कि वो सुनता है, असरदार होती है।''

लर्नर आगे बोला,''कभी-कभी यीशु अपने पिता से प्रार्थना करने के लिये अकेले में चला जाता था। अपना संबंध अपने स्वर्गीय पिता के साथ सृदृढ़ करने के लिए, हम भी हर दिन अकेले में प्रार्थना करते हैं। यीशु सार्वजनिक तरीके से भी प्रार्थना करता था, सो हम भी, यीशु में अपने भाईयों और बहनों के साथ ज़ोर से प्रार्थना कर सकते हैं।''

मि. वाईज़ ने कहा कि,''मैं तुम्हें कहानी सुनाता हूँ जिसमें यीशु प्रार्थना करने की शिक्षा देता है। वो हमें प्रार्थना करने के बहुत सारे कारण बताता है, जो कि हमारी शारीरिक मुद्राओं से ज्यादा महत्वपूर्ण है।''

अभ्यास

मत्ती 6:1-13 में कृप्या प्रार्थना पढ़े, जिसे कुछ लोग ''प्रभु की प्रर्थना'' कहते है। उन शब्दों को ढूँढे, जो प्रतिदिन प्रार्थना करने के इन कारणों को अभिव्यक्त करतें हैं:

- परमेश्वर की प्रशंसा के लिए
- परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने के लिये

- क्षमा माँगने के लिये
- शैतान से बचाव माँगने के लिये

लकड़ी के कारखाने के दखाज़े से मि.फूलिश सुन रहे थे तथा उन्होंने प्रवेश किया। मैं परमेश्वर से एक बड़ा मकान माँग रहा था पर मुझे नहीं मिला। परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर तब ही देता है जब उसे ऐसा करने की सनक सूझती है। वो जो करता है इसलिए करता है क्यों कि वो परमेश्वर है, और हमको इस बात से कोई मतलब नहीं।''

''परमेश्वर हमें जवाब देता है,'' मि.वाईज़ ने समझाया, ''परन्तु हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर हमारी आज्ञाकारिता पर निर्भर करते है, जैसा! युहन्ना 3:21, 22 बताता है। चार पाप हमारी प्रार्थनाओं में विध्न डालतें हैं: क्षमा में असफलता, स्वार्थ, विश्वास की कमी तथा दूसरों के प्रति प्रेम की कमी। हमें इन पापों को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। अगर हम ऐसा करतें हैं, तो ईश्वर, हमको क्षमा करने तथा हमारे हृदयों को बदलने के लिए, विश्वासियों तथा निष्पक्ष, जैसा कि युहन्ना 1:8-10 वादा करता है।''

उस शाम लर्नर ने विश्वासीयों को एकत्रित किया, परमेश्वर से यह माँगने के लिए कि वो मि. वाईज़ को पुलिस से बचाए 1 प्रेरितों के काम 4:29-31 के नए नियम के चर्च की तरह, उन्होनें उत्साह से प्रार्थना करी। उन्होंने यीशु का वचन लोगों तक ले के लिये, परमेश्वर से प्रार्थना करी।

क्रियात्मक कार्य

- मत्ती 6:9-13में प्रभु की प्रार्थना को अपने झुड को स्मरण कराने मे सहायता करें
- परिवार के हर सदस्य उसको प्रतिदिन व्यक्तिगत या सपरिवार प्रार्थना करने के निर्देश देने में पिताओं की सहायता करें।
- हर परिवार को प्रार्थना करने का एक निर्धारित समय तय करने के लिए कहें।
- जब ईश्वर प्रार्थनाओं के उत्तर देता है तो दूसरो को उत्साहित करने के लिए समुदाय को सूचित करें।
- लोगों को प्रभावित करने के लिए बड़े शब्दों था मूर्खतापूर्ण पुनरावृत्ति के बिना, हृदय से निष्ठापूर्वक प्रार्थना करके अपने लोगों को दिखाए।

II-6-यीशु की आज्ञा # 6

रोटी तोड़ना

एक सुबह लर्नर, मि.वाईज़ के चचरे भाई के घर जल्दी गया, डरतेहुए कि मि.वाईज़ को पुलिस ने गिरपतार कर लिया होगा। वो अभी भी वहीं पर हैं। कृप्या मेरे घर आए,''

लर्नर ने विनती करी। ''अगर वो आपके लिये आयें, तो आपका चचेरा भाई हमें चेता सकता है, और हम आपको छुपा देगों। अब आईये। प्रभु भोज का उत्सव मनाने के लिए विश्वासी आपके मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहें हैं।''

मि.वाईज़ ने उत्तर दिया, ''मैं आँऊगा, परन्तु अब से तुम्हें सेवाओ का संचालन करना चाहिये 1 मैने तुम्हें दिखाया था कैसे।''

लर्नर ने अपने घर पर एक विचार गोष्ठी की अगुवाई करी, जिसको तैयार करने में मि.वाईज़ ने उसकी सहायता करी। मंडली ने रोटी तैयार करने में मि.वाईज़ ने उसकी सहायता करी। मंडली ने रोटी तोड़ने की आज्ञा, तथा रहस्यात्मक रूप से उसके शरीर में शामिल होने के बारे में बात की। लर्नर ने मेज़ पर एक प्याले तथा रोटी की तरफ इशारा किया। ''मी.वाईज ने हमें प्रभु भोज को मनाना दिखया था, जैसा की उन्होने धर्मगन्थ में सीखा था। हम क्यो प्रभु भोज मनाते है, इस बारे में बात करते है।''

अभ्यास

- मत्ती 26:26-27मे देखें कि यीशु ने क्या कहा कि रोटी तथा प्याला क्या है।
- लूका 22:1-22 में दूँढे कि यीशु ने प्रभु भोज मनाने के लिए क्या कारण दिया।
- 1कुरिन्थियों मे देखे:
- हमें प्रभु भोज को पूर्ण भोजन से हमेशा क्यों नहीं मिलाना चाहिये।
- प्रभु भोज में किन को सकम्मलित होना चाहिए।

लर्नर अपने घर में अपने झुंड को समझाता है, ''यीशु हमें बताता है कि रोटी उसका पवित्र शरीर है तथा प्याला यीशु के लहू में परमेश्वर की नई वाचा है। इस उत्सव में हम जानते है कि प्रभु हमारे वहुत निकट है। परमेश्वर और हमारे बीच में नई वाचा, यीशु के द्वारा हमें उसके और निकट लाता है। यीशु के द्वारा हमें एक नया, पवित्र तथा अन्त जीवन, उसकी पवित्र आत्मा से मिलता है। । तुम यह प्रेरितों के काम 2:38 तथा इब्रानियों 9:15 मे देखते हो। प्रभु भोज लेकर, हम परमेश्वर की कृपा में अपना विश्वास दृढ़ करते है।''

केयरगिवर पूछता है,'' तुम इसे नई वाचा क्यों कहते हो?''

लर्नर हिचकता है तो मि.वाईज़ उत्तर देतें हैं, ''यीशु की मृत्यु तथा मुर्दो में से जी उठने से पहले, परमेश्वर मनुष्यों के पाप ढकने के लिए जानवरों के बलि स्वीकार करता था। वो पुराना समझौता था, प्रसंविदा समझौता था जो की इज़राईल के प्राचीन देश, जिसका नेता मूसा था, उसके साथ हुआ था। नया समझौता या प्रसंविदा समझौता, यीशु के लहु पर आधारित है। कानूनों को तोड़ने पर मृत्यु की जगह आधारित है। कानूनों को तोड़ने पर मृत्यु की जगह, अब ईश्वर हमें हमारे हृदयों को सुधारने तथा मार्गदर्शन करने के लिये अपना पवित्र आत्मा देता है। अब हम पुराने नियम के कानुन के आघीन नहीं है। रोमियों अध्याय 1-8 इसबात को समझातें हैं।''

लर्नर ने कहा, ''हम प्रभु भोज इसलिये मनाते है कि यीशु को याद करें और उसके बलिदान में विश्वास कर उसे दिखायें, जब तक वो वापस आता है। जो रहस्य हो रहा है उसे हमको समझने का कोई आवश्यकता नहीं है।''

''यह ठीक है,'' मि.वाईज़ ने सहमति दी। हम परमेश्वर से अपनी आज्ञाकारिता की आशीष पाने के लिये नियमित रूप से प्रभु भोज मनाते है। जो समुदाय प्रभु भोज भूल जाता है वो यीशु का गुणगान नहीं करता। प्रभु भोज हमारी एक दूसरे के साथ एकता तथा यीशु हमारा नेता होना दिखाता है। अब लर्नर, इसे हमें परोसेगा।''

मि.वाईज ने लर्नर से पूछा, ''क्यातुम यह स्मरण कर सकते बनाता है?''

लर्नर ने एक क्षण सोचा,

फिर स्मरण किया,'' 1कुरिन्थियों 10:16-17 बताता है कि रोटी और प्याले मे सम्मिलित होना परमेश्वर के शरीर और लहु में सम्मिलित होना है। हम उसे अच्छी तरह से नहीं समझते हैं। इसलिए जब हम प्रभु भोज का पालन करते है तो धर्मग्रन्थ के शब्दों का उदाहरण देता है, और अपने हृदयों में उसके कार्यों का विशवास करते है। उसके आलौकिक कार्य हमारे में है, रोटी के टुकडों में नहीं । हम सिर्फ वो ही कहते है जो यीशु ने कहा था,''लो और खाओ, यह मेरा शरीर है। पीओ, यह नई वाचा का मेरा लहू है, जैसा कि मत्ती 26:26-28 में हैं।''

अध्यात्मिक मिलन (अशा रब्बानी) सभा के बाद, मि.फूलिश चिल्ला कर बोले, ''प्रभु भोज एक पवित्र समारोह है। मेरे चचेरे भाई ने मुझे बताया था कि, इसको परोसने के लिए, हमें एक पादरी, जिसके पास अधिकारिक कागज़ हो तथा अकादमिक अध्यात्मिक शिक्षा हो, की आवयश्कता होती है, और अगर तुम इसे बहुधा करोगे तो कोई भी इसे गंभीरतापूर्वक नहीं लेगा।''

मि.वाईज असहमत होते है।''प्रेरितों के काम 20:7 दर्शाता है कि नए नियम का चर्च सप्ताह के पहले दिन साथ-साथा रोटी तोड़ते थे। हाँलाकि परमेश्वर ने हमको साप्ताहिक रोटी तोड़ने की आज्ञा नहीं दी, प्रेरितों ने हमें एक उदाहरण दिया। यह नए समुदायों में अनुशासन तथा आराधना दृढ़ करता है। विश्वासीयों की किसी भी मंडली को, चाहे वो बड़ी हो या छोटी, प्रभु भोज का पालन करने के लिए उत्साहित करना चाहिये। परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए रूकों, जब तक कि तुम्हें कोई पढ़ा- लिखा पादरी ना मिल जाए। मनुष्य निर्भित आत्यश्कताएँ जो यीशु की आज्ञाओं का पालन करने में विध्न डालती है, ज्यादा क्षति पहुँचाती है।''

म.फूलिश शिकायत करते है, ''तीन हफ्ते पहले हेल्पर की पत्नी राशेल का मेरी पत्नी से झगड़ा हो गाया। इसलिए, जब तक वो भुला ना दिया जाए, हममें में किसी को भी प्रभु भोज नहीं लेना चाहिए। राशेल को तो छह महीनों तक नहीं लेना चाहीए। मेरे चचेरे भाई ने मुझे बताया था।''

''मि.फूलिश आप भूल गए है कि प्रभु भोज हमारे यीशु के प्रति तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम को मनाने के लिय होता है। हम यीशु को मानते है, इसीलिए उसे करते है। हम उसे इसलिए नहीं नकार सकते कि हममें से एक ने पाप किया है। कोई भी, नहीं सम्मिलित हो सकता! और हम उसका एक कोड़े की तरह, उन लोगों पर जिनसे भूल हुई, प्रयोग नहीं कर सकते,उनको बहुत समय के लिए अलग कर देने से। गलतीयों 6:1 हमें शिक्षा देता है कि जब भूल किया हुआ विश्वासी पश्चाताप करता है, हम तत्काल उसे बहाल करते है। यह वही है जो हमने किया है! हाँ हमारा पाप, हमारा परमेश्वर के साथ भाईचारा कमज़ोर करता है, और वक्त के साथ अन्य विश्वासीयों के साथ भी परन्तु जब हम उसे स्वीकार करके उससे अलग होते, परमेश्वर हमारा भाईचारा फिर से शुरू कर देता है। जैसा 1युहन्ना 1:9 वादा कर देता है, यदि हम अपने पापों की मान लों, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अर्धमसे शुद्ध करने में विश्वासयोव्य है। हेल्पर की पत्नी राशेल ने तुम्हारी पत्नी से खेद जताया तथा क्षमा माँगी। इसलिए हमने उसका ईश्वर की मेज़ पर फिर से स्वागत करा।''

मि. फूलिश बुड़बुडाए, ''आप उसकों क्षमा करना चाहेंगें पर मै। नहीं!''

मि. वाईज़ ने दृढ़ता से कहा, ''चर्च की व्यवस्था दोष निकालने तथा गपशप करने का अभ्यास नहीं करती, परन्तु लोगों को परमेश्वर की तरफ वापसी को राह दिखाने में सहायता करती है। भूल करने वाले विश्वासीयों के साथ की गई कारवाई उनका पुनरूद्धार करने के लिये, तथा जो पश्चाताप नहीं करते, उनके साथ क्या किया जाए, इसे हम देखें।''

चरवाहे की कहानी की किताब

अभ्यास

- मत्ती 18:15-17 में देर्ख, जो हम कदम उठाते हैं उन विश्वासीयों को ठीक करने के लिये, जिनको इस अनुशासन की आवश्यकता है।

अध्यात्मिक मिलन (अशारब्बानी) के बाद लर्नर के घर में, मि.वाईज ने मंडली को बताया, ''अब हमें अलविदा कहना चाहिये। मुझे तुम लोगों को छोड़ना पड़ेगा। हो सकता है कि परमेश्वर मुझे किसी दिन दुबारा वापस लाये।'' उनकी आँखों मे आँसू भर आए। कई लोग रोये।

लर्नर ने कहा, ''मि.वाईज़ ने इस समुदाय से प्रेम करा और हमें यीशु की आज्ञाओं को मानना सिखाया ताकि हम एक सशक्त समुदाय बनें, जब वह चले जाएं। उन्होंने पक्का करा कि हमारे पास वो सब कुछ है जिसकी हमें विकास तथा और नए समुदाय बनाने में आवश्यकता हो। हम सब आपका धन्यवाद करते है, बन्धु।''

"रूको," मि. वाईज़ बोले, "मैं कुछ भूल गया। एक चीज़ और है करने के लिए।" उन्होंने प्राचीन बनने के लिए आवश्यकतायें, पढ़ी।

अभ्यास

विश्वासीयों का प्रचीन बनने योग्य आवश्यकताओं कृपया तीतुस 1:-9 में देखे।

मि.वाईज़ मंडली को बतातें हैं,''ईश्वरीय मार्ग दर्शन के बिना एक समुदाय पूरा नहीं है। मैनें लर्नर के एक मसीही के रूप में कुछ महीनों से गौर किया है। वो प्रचीन बनने के लिए बाईबल की आवश्यकताओं को पूरा करता है।''इस पूरे झुँड पर ईश्वर कृपा प्रदान करने की जिम्मेदारी लेने के लिये, मैं तुम दोनों पर भरोसा करूँगा।''

मि.फुलिश ने शिकायत करी, ''यह तुम्हारे लिए सही नही हैं, मि.वाईज, हमारे मार्गदर्शकों को इस प्रकार से अधिकार देना। तुम एक बाहरी व्यक्ति हो। तुम इस समुदाय के नहीं हो और ना ही इस समागम के सदस्य हो। मेरा चचेरा भाई कहता है कि बाहर के धर्माचायों को चर्च में मार्गदर्शकों का नामांकन नहीं करना चाहिये। चर्च को अपने मार्गदर्शकों का स्वंय नामांकन करना चाहिए, जैसे कि अन्ताकिया के चर्च ने किया था।''

''तुम्हारे चचेरे भाई ने कुछ अनदेखा कर दिया,''

मि.वाईज़ ने उत्तर दिया।'' अन्ताकिया का चर्च मार्ग दर्शेकों का नामांकन कर सकता था, जैसा कि प्रेरितों के काम 13:1-3 में उसने किया, क्योंकि वो एक परिपक्व चर्च था, कई परिपक्व कार्यकर्ताओं के साथ। परन्तु ऋृते में नए समुदाय थे तथा वहाँ पर अनुभवी कार्यकर्ता नहीं थे । इसलिए पौलुस ने तीतुस से, जो कि एक अनुभवी बाहरी व्यक्ति था, नए मार्गदर्शकों का नामांकन तथा उन्हें तैयार करने को कहा, तीतुस 1:5 में। इसलिए तीतुस ने नए समुदायों के लिये एक ओवरसियर का कार्य किय, जैसा कि मैं तुम्हारे समुदाय के लिए करता रहा हूँ।''

लर्नर और हेल्पर से मि. वाईज़ ने कहा, ''तुम दोनों इस नए समुदाय के लिए चरवाहें के बुजुर्ग (प्राचीन)हो। तुम अपने विश्वास

D:\Varsha final\Hindi\Story Book\Story Book (Hindi Final).p65

में युवा हो, पर तुम्हारे पास मार्गदर्शन करने के लिए बईबल है, तथा पवित्र आत्मा है, तुम्हें शक्ति देने के लिए लर्नर ,तुम हेल्पर को सिखाना जारी रखोगे, जैसे मैंने तुम्हें सिखाया था। हेल्पर कों सिखाना जारी रखोगे, जैसे मैंने तुम्हें सिखाया था। हेल्पर को सिखाना होगा तथा नए समुदाए बनाने होगें। मैं तुम दोनों को [illegible] संभव हुआ मिलने की कोशिश करूँगा।''

''हमें ऐसी आशा है,'' लर्नर ने कहा।

''क्या तुम दोनों निष्ठा से अपने समुदाय का मार्गदर्शन करने के इच्छुक हो? हर चीज़ से ऊपर होकर शिक्षा दोगे। क्या तुम विनम्रता से हर चीज़ से ऊपर होकर शिक्षा दोगे। क्या तुम विनम्रता से इन लोगों की तथा सारे विश्वासीयों की सेवा करोगे, उनको समुदाय की सेवा के उनके कार्य दिखआोगे, जैसा पतरस 5:1-4 करता है?

लर्नर और उसके भाई ने मंडली के समक्ष रीति पूर्वक वादा करा,'' हम परमेश्वर के लोगों की परमेश्वर की मदद से परवाह करेगें।''

मि.वाईज; ने मंडली से पूछा,''क्या तुम वादा करते हो कि परमेश्वर की सहायता से तुम इन मार्गदर्शकों के लिये प्रार्थना करोगे, और जब वो परमेश्वर का वचन सुनाएं उनका कहना मानोगे, तथा जो प्रबंधन ये तुम्हें दे, उनमें इनके साथ सहयोग करोगे, और जब वो परमेश्वर का वचन का सुनाये उनका कहना मानोगो, तथा जो प्रबन्ध थे तुम्हें दे, उनमें इनके साथ सहायोग करोगे?''

सब ने उत्तर दिया,''आमीन!'' सिवाय मि. फूलिया के। मि.वाईज, लर्नर और हेल्पर पर विश्वास करके, उनके लिये पवित्र आत्मा से उनको विश्वासी बनाने की कृपा, की प्रर्थना करते है, जैसे तीतुस ने त्रृते के नए विश्वासी प्राचीनों के लिये की थी।

मंडली प्रार्थना करने के लिए घुटनों पर झुकती है। कुछ रोतें हैं। लर्नर को पता है कि अब उसके पास पवित्र आत्मा की शाक्ति है, जिससे कि वो और उसका भाई, परमेश्वर के झुड का मार्गदर्शन कर सकते है।

क्रियात्मक कार्य

- मत्ती 26: 26-28 स्मरण करें जिससे आप यीशु के वही शब्द बोल सकें जब आप प्रभु भोज मनाते है।
- प्रभु भोज नियमित रूप से सबको परोसें, जो भी पश्चाताप भरें हृदयों के साथ आते है।
- नए समुदायो को प्रभु भोज परोसने के निर्देश तथा अधिकार सौपें।

II-7-यीशु की आज्ञा # 7

अर्पण

मि. वाईज़ को अलविदा कहने के पश्चात विश्वासी लर्नर के छोड़ते है। वो लर्नर के साथ प्रार्थना के लिए रूकते है। कोई दरवाज़ा खटखटाना है। एक पुलिस वाला कह ता है,''मि. वाईज़ मैं आपको यह बताने आया हूँ कि आप हमारे अधिकार में आने वाले क्षेत्र को तुंरत छोड़ दे। मैं आपको, बिना गिरफ्तार किये, जाने देने की कृपा कर रहा हूँ, क्योंकि आप एक अच्छे आदमी है। अब जाईये, नहीं तो मैं आपको कारागार मे रख दूँगा।''

सारा जल्दी से एक खाने का थैला भरती है, मि. वाईज़ को रास्ते में मदद के लिए। वो बोले, ''तुम उदार हो। मै कृतज्ञ हूँ। लर्नर, बाकी लोगों को यीशु की अर्पण (देना) की आज्ञा को बताना होगा, जैसे लूका 6:38 कहता है। उन्हे समझाना कि उन्होनें परमेश्वर से सब कुछ पाया है, और अब उन्हें आव्यश्कता है कि वो मसीह का अनुकरण करें तथा अनन्त जीवन प्राप्त करें। जैसे कि परमेश्वर ने उन्हें दिया है, उसी उदारता से वो दूसरों को दें।''

''उनमें से कुछ बहुत दरिद्र हैं तथा उनके पास धन लगभग नहीं है।''

''समुदाय की सेवा के लिये तथा लोगों की आवश्यकता में वो कुछ और भौतिक सामान दे सकते है। लर्नर, दूसरों की सेवा करो जैसे मैंने तुम्हारी सेवा करी। इस संसार के नेताओं की तरह मत बनो जो धौस जमाते है, जो उनके अधिकार में है। अपने अधिकार के प्रति लालायित ना हो। उसको नए समुदायों में नए मार्गदर्शक प्राचीनों के साथ बाँटो। यीशु के वचन दूसरे को बाताने के लिये अवसर ढूँढों।''

''मैं करूगाँ,'' लर्नर ने आश्वासन दिया।

''मैं तुम्हें यह एक उपहार स्वरूप देता हूँ।'' मि. वाईज़ ने उसको एक बाईबल थमाई। ''जब तुम इसे पढ़ो, तो जो मैने तुम्हें सिखाया है याद रखना। कृप्या अपने जाने से पहले हमें एक और बाईबल की कहानी सुनाएं। बस अभी एक छंटे तक अपेक्षित नहीं है।''

''हम उदार विधवा के बारे में पढ़े।''

अभ्यास

कृपया अब लूका 21:1-4 में देखे:

- जो कुछ भी उसके पास था, विधवा ने कितना दिया?
- ईश्वर ने अमीरों के उपहारों की तुलना में, उसके उपहार के आकार को कितना मापा?

मि.वाईज़ सचझातें हैं, ''देखो विधवा ने जो कुछ उसके पास था दे दिया, 100% ? हाँलाकि पुराने नियम के लोगों को अपनी कमाई में से परमेश्वर को 10% देने की आज्ञा दी गई थी, नए नियम के अर्न्तगत वो कानून नहीं है जो हमें प्ररणा दे सके । हमारा परमेश्वर के प्रति प्रेम वो देने की प्रेरणा देता है, जो हमसे हो सकता है, विधवा के जैसे। पौलुस ने कुरिन्थी मसीहीयों को सिखाया था कि सप्ताह परमेश्वर के कार्यो के लिए कुछ अलग रखें, 1 कुरिन्थियों 16:2में। हमारी शुद्ध कमाई में से दस प्रतिशत धक अच्छी शुरूआत है।''

लर्नर सहमत होता है।

''प्रफुल्तित एवं कृतज्ञ हृदय से देने वालों को ईश्वर अपनी आशीषें देने का वचन देता है, 2कुरिन्थयों 9: 6-7 में। जो कुछ

हमारे पास है वो परमेश्वर के द्वारा आता है। हम प्रफुल्ल होकर देतें हैं, क्योंकि हम विश्वास करतें हैं कि हमारे पास जो कुछ है उस सब के ऊपर वो है। यह हमारी परवाह करेगा तथा हमें आशीष देगा।''

लर्नर विधवा कहानी को दुबारा पढ़ता है। ''परमेश्वर ने विधवा तथा अमीर लोगों के दिलों में झांक कर देखा। उसने देखा वो क्यों दे रहें है। अमीरो ने वो दिया जोकि बच गया था, एक विवशता पूरी करने के लिये तथा लोगों को प्रभावित करने के लिये। विधवा ने सिर्फ दो छोटे सिक्के दिय, पर परमेश्वर जानता था कि वो एक प्रेम का प्रसन्ता भरा चढ़ावा है। उसने उसे अमीरों के उपहारों से भी ज्याद माना।''

मि.वाईज़ ने लर्नर को बाईबल में से लोगों के चढ़ावो के कुछ तरीके बताये:

- चरवाहक बुजुर्गो (प्राचीनों) तथा मिश्नरी की सहायता करना,
- विधवाओं तथा अनाथों, तथा अन्य गरीबों की सहायता करना,
- भूखों की सहायता करना,
- पुराने नियम का मंदिर बनवाना था मरम्मत कराना।

मि.वाईज़ ने अलविदा कहा। मि.फूलिश दरवजे के बाहर उनकी प्रतीक्षा करते है तथा कहते है, ''बेहतर होगा कि आप अधिकारीयों से यह वादा कर लें कि आप उनकी मानेगे, जिससे की वो आपको रहनें दें। आप अपना जीवन क्यों नष्ट कर रहें है? यीशु के बारे मे शिक्षा देना छोड़कर, यहाँ पर एक अच्छी नौकरी पाये।''

मि.वाईज ने आह भरी, ''मि.फूलिश, तुम हमारी पवित्र आशा को नहीं समझते। जो हम अब दे रहे है वो हमारी स्वर्ग में पुरान्स्कार के लिये निवेश है। हम यीशु के वापस आने की प्रतीक्षा कर रहें है, जैसे उसने छोड़ा था, जैसा प्रेरितों के काम 1:9-11 कहता है। जब वो आयेगा, सब चीज़े बदल जायेगीं। हमें एक सवर्गीय पुरूस्कार मिलेगा । हम वो दौलत पायेंगे जो अनन्तकाल तक मौजूद रहेगी। अब मुझे चलना चाहिये। मि.फूलिश, कृप्या प्रकाशितवाक्य 21 में पढ़ें कि यीशु में हमारा भविष्य कैसा है।'' मि.फूलिश ने सिर्फ ''अलविदा'' कहा और चल दिये, परन्तु लर्नर अपनी आँखों में खुशी की चमक लिए धर्मग्रन्थ के वचनों को पढ़ता है।

अभ्यास

कृप्या प्रकाशितवाक्य 21:1-9 में ढूँढने के लिये पढ़े:

- परमेश्वर नए राज्य में किसके साथ रहता है?
- स्वर्ग में आसुँओं तथा मृत्यु को क्या होता है?
- जो लोग परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते तथा अपना पापों भरा जीवन जारी रखतें हैं, उनको क्या होता है?

लर्नर प्रसन्न होता है, ''यह कहता है कि हम परमेश्वर के साथ रहेगें तथा उसके लोग होगे । हम त्रुटिहीन होगें तथा वो हमार ऐसे स्वागत करेगा जैसे एक दुल्हा अपनी खूबसुरत दुल्हन का करता है! वहाँ पर रोना, वेदना तथा मृत्यु ना होगा हर चीज़ नई और खूबसूरत होगी ! मि.वाईज़, अगर मैं तुम्हें दुबारा नहीं देख पाया तो, मैं तुम्हें तब देखूगाँ जब परमेश्वर एक नया स्वर्ग तथा पुथ्वी बनायेगा।''

मि.वाईज़ ने कहा,''लर्नर, हम एक उत्कृष्ट राज्य की प्रतीक्ष कर

रहे है। इसलिये, इस जीवन में धन- दौलत तथा प्रभाव बनाने की चिन्ता मत करो। यह महत्वपूर्ण चीज़ें नहीं है, क्यों कि जीवन बहुत जल्दी व्यतीत हो जाता है। अगर परमेश्वर धन से तुम्हें आशीष दें,तो उसको कमजोरों की मदद में उपयोग करो तथा परमेश्वर की सेवा करो। तुमने मेरा उदाहरण देखा है। मैं कभी भी तुम्हारे ऊपर बोझ नहीं रहा। याद रखो लेने से ज्यादा देना धन्य है, जैसा कि परमेश्वर ने प्रेरितों के काम 20:34,35 में कहा है।''

लर्नर और उसका भाई, आँख में आसूँ लिये मि.वाईज़ को बस में जाते हुए देखते हैं'' हो सकता है हम उन्हें फिर कभी ना देखें; ''लर्नर शोक प्रकाट करता है।

क्रियात्मक कार्य

- 2 कुरिन्थियों 9:6-7 स्मरण करे, जो हम प्रसन्नता पूर्वक दे सकते है उसे देने के लिये। फिर उसकी अपने लोगों को शिक्षा दे।
- जो चढ़ावा लोग देतें हैं, अपने झुँड के साथ उसका लेखाजोखा रखें तथा वो कैसे खर्च किया जाता है,ध्यान रखें।
- धन गिनने के लिए एक खजांची तथा एक अन्य व्यक्ति नियुक्त करें।
- खजांची को निर्देश दें कि वो कभी उधार ना दे, या ऐसी चीज़ों का भुगतान ना करे जिसका मार्गदशकों ने अधिकार ना दिया हो।
- एक विश्वासी को धन खर्चने का निर्णय कभी भी अपने आप नहीं लेना चाहिये, या सारा अपने लिए ही नहीं रखना चाहिये, या सारा अपने लिए नहीं रखना चाहिये।
- चढ़ावे किन चीज़ों के लिए प्रयोग किए जायेगें, यह चर्च समिति के साथ योजना बनाएं। उन लोगों की की पहले सहायता करें जिन की आत्यश्कताएं गंभीर तथा तत्काल हैं।

खण्ड - III

मूल प्रबन्धन का विकास करना

नया नियम जो प्रबन्धन चाहता है, खण्ड III में वो अध्याय हैं। जाँचे उन्हें जो आप और आपके लोग अपने सन्तोष में कर रहें है।

III-1-प्रबन्धन-2-पवित्र वचन को दूसरें तक ले जाएं और नए विश्वासीयों को बपतिस्मा दें

III-2-प्रबन्धन-2-एक दूसरे की सेवा के लिए आत्मिक वरदानों का प्रयोग करने वाले संगठन का निर्माण करें

III-3-प्रबन्धन-3-परमेश्वर की उपासना करें तथा प्रभु भोज मनाएं

III-4-प्रबन्धन-4-परमेश्वर के वचन को पढ़ें, पढ़ायें तथा लागू करें

III-5-प्रबन्धन-5-नए समुदाय शुरू करें

III-6-प्रबन्धन-6-विश्वासीयों(प्राचीनों)तथा मार्गदर्शकों को प्रशिक्षित करें

III-7-प्रबन्धन-7-समुदायों के भीतर तथा आपस में भाईचारे का विकास करें

III-8-प्रबन्धन-8-व्यक्तिगत तथा परिवारिक समस्यायों से ग्रस्त लोगों से भेंट कों तथा परामर्श दें

III-9-प्रबन्धन-9-समस्त परिवारें का विश्वास तथा विवाहों को दृढ़ करें

III-10-प्रबन्धन-10-बीमारों, जरूरतमंदो तथा दुर्वव्यवहार से ग्रस्त लोगों की देखभाल करें

III-11-प्रबन्धन-11-मसीह जैसे बनें तथा चर्च संगठन में अनुशासन बनाएं रखें

III-12-प्रबन्धन-12-परमेश्वर से बात करें

III-13-प्रबन्धन-13-ईश्वरीय साधनो के अच्छे खिदमतकार बनें

III-14-प्रबन्धन-14-मिश्नरी भेजें

खण्ड III का कैसे प्रयोग करें

खण्ड III चौदह मूल प्रबन्धनों से संबंध रखता है। यह नए नियम में वो प्रबन्धन है जो परमेश्वर समुदायों से कराना चाहता है। इस चरवाहे की किताब में से, लर्नर की तरह,आपका अपना समुदायकिन पेरशानियों था अवसरों को देख रहा है, यह निर्णय करें। फिर उपयुक्त सूची को एक रेस्तरां सूची जैसे प्रयोग में लाएं। उस प्रबन्धन को ढूँढे जो इस समय आपके समुदाय को सश्क्त कर सकता है। उन कहनियों की शिक्षा तथा उनका प्रयोग, जो की उस प्रबन्धन के अर्न्तगत आती है, अपने समुदाय के प्रबन्धन के अर्न्तगत आती है, अपने समुदाय के प्रबन्धन में विकसित करें। फिर परमेश्वर के सत्य को कार्यवन्तित करने में अपने समुदा़य की सहायता करें।

इस कुस्तक के पहले भाग में हमने आपको मि.वाईज़ नामक शिक्षक से मिलाया था। वह एक वास्वविक आदमी नहीं है, परन्तु वो बाईबल के प्रेरित पौलुस की तरह है। प्रभु यीशु मसीह ने पौलुस को देशों में विश्वासीयो के समुदाय स्थापित करने का कार्य सौंपा था। पौलुस ने प्रचार करा, समुदाय शुरू करे तथा उनमें प्राचीन नियुक्त करे। उसने तीतुस तथा तिमुथियुस जैसे शिष्यों को प्ररिक्षण

दिया जो कि उसके बाद कार्यो को जारी रख सकें। पौलुस अपने द्वारा शुरू किये हुए समुदायों को कभी नहीं भूला, तथा उन्हें उत्साहित और निर्देश देने के लिये पत्र लिखता रहा। हमारे पास बईबल में ऐसे कुछ पत्र है। हमारे पास बाईबल में वो पत्र भी है जो उसने तीतुस तथा तिमुथियुस को प्रशिक्षण देने के लिए लिखे थे।

पौलुस के उदाहरण का अनुकरण कर.ते हुए मि.वाईज़ ने लर्नर नामक व्यक्ति तथा उसके परिवार और मित्रों को उपदेश दिया। मि.वाईज़ ने लर्नर को, जो कि एक बढ़ई था, नए विश्वासीयों का एक समुदाय संगाठित करने में सहायता की। वो यीशु की मूल आज्ञाओं के का पालन करने लगे तथा आराधना करते समय, परमेश्वर हमसे जो चाहता है उन चीज़ों का अभ्यास करने लगे। पुलिस मसीही मार्गदर्शकों के खिलाफ हो गई, तथा मि.वाईज को उस क्षेत्र को छोड़ने को कहा। लर्नर ने उन्हें बहुत समय से नहीं देखा।

लर्नर ने अपने भाई हेल्पर को, समुदाय का मार्गदर्शक बनने का, प्रशिक्षण देने का प्रस्ताव रखा। हेल्पर ने उत्तर दिया, ''मैं अच्छी तरह नहीं पढ़ सकता। पर मै गिटार बजा सकता हूँ तथा गा सकता हूँ।''

''तुम इन शिक्षाओं से जल्द ही बेहतर पढ़ना सीख लोगो। जो मैनें मि.वाईज़ से सीखा वो मैं तुम्हारे को दूँगा! वो प्रोरित के जैसा है। वो यहाँ नए मार्गदर्शकों को प्रशिक्षण देना जारी रखता है, जबकि वो काफी दूर है। वो हमें डाक द्वारा शिक्षायें भेजता है। हम बाईबल तथा मि.वाईज़ की भेजी हुई शिक्षाओं, दोनों का उपयोग करेंगें। उनमें बाईबल की कहानीयाँ है जो ईश्वरीय सत्य को लोगों पर लागू करतीं हैं।''

इस चरवाहे की कहानी की किताब में उन कहानीयों का समावेश है जो कि मि. वाईज प्रयोग करतें हैं। यह खण्ड III यह बताता है कि कैसे लर्नर ने, जो कुछ उसने सीखा, अपने शिष्यों तथा अपने समुदाय की और बढ़ाया (दिया)। इस तरह लर्नर ने अपने समुदाय को यीशु की सात मूल आज्ञाओं द्वारा, प्रबन्धन विकासित करें में सहायता करौ उसने हेल्पर तथा अन्य मार्गदर्शकों को प्रशिक्षण दिया। हेल्पर एक नया समुदाय

शुरू कर रहा है। लर्नर का परिचित, मि.फूलिश, एक सामान बेचने वाला है, वो जो सामान बेचने की कोशिश करता है, वो किसी को पसंद नहीं। वो समुदाय में शामिल होता है यह देखने के लिये कि क्या वो उससे कुछ लाभ प्राप्त कर सकता है। वो यीशु के प्रेम के लिये वहाँ नहीं है, तथा वो लर्नर को यीशु के आज्ञाकारी शिष्य बनाने पर निरूत्साहित (विरोध) करता है।

D:\Varsha final\Hindi\Story Book\Story Book (Hindi Final).p65

III-1-प्रबन्धन-1
पवित्र वचन को दूसरों तक ले जायें, और नए विश्वासीयों को बपतिस्मा दें

हेल्पर हमेशा की तरह स्तुतियाँ गाते हुए लकड़ी के कारखाने में लर्नर को एक सीढ़ी बनाने में मदद कर रहा है। मि. फूलिश आते है तथा निवेदन करते है, ''लर्नर क्या तुम मेरे लिए एक हल्का, दो पहियों वाला ठेला बना सकते हो, मुझे अपने सामान का प्रदर्शन करने के लिए, जैसा तुमने सब्जी उगने वाले के लिए बनाया था? मैं तुम्हें अभी भुगतान नहीं कर सकता, पर मैं ज्यादा सामान बेच सँकूगा और अगले महीने आसानी से भुगतान करने लायक हो जाँऊगा।'' लर्नर ने क्षण भर सोचा फिर उत्तर दिया,'' जाओ मेरे को दो पुराने साईकिल के पहिये तथा काठ-कबाड़ लाकर दो, और मैं बना दूँगा। पर मुफ्त में। मि. वाईज़ ने हमें पैसे उधार देने या लेने के प्रति चेतावनी दीहै।''

मि.फुलिश रूकते है जब हेल्पर अपनी योजनाओं के बारे में बात करता है। ''मैं एक और समुदाय शुरू करना चाहता हूँ-एक बच्चा चर्च, जो तुम्हारे घर पर मिले, लर्नर। कुछ लोग जहाँ मैं रहता हूँ, यहाँ तक आराधना करने आयेंगे।''

लर्नर ने उत्तर दिया, ''मैं वो दुआ कर रहा था कि ऐसा हो। मैं अपने समुदाय से, जो उस तरफ रहतें हैं, तुम्हारे साथ जाने के लिए कहूँगाा। मैं सोचता हूँ कई ऐसा करेंगें।''

''नहीं।'' मि.फूलिया शिकायत करतें हैं,''यह यहाँ हमारे चर्च को कमज़ोर करेगा।''

लर्नर ने उन्हें सही किया, ''मि.वाईज़ कहते थे कि यीशु को हमारे पूरे क्षेत्र तक पहुँचने का एक ही रास्ता है, कई समुदायों को शुरू करने का,हर समाज़ में एक। हमारे क्षेत्र का समुदाय केवल एक छोटी मंडली जैसा ही नहीं होना चाहिऐ। कई मंडलियाँ पास में इकट्ठा काम करेंगीं। इस प्रकार हम यीशु के लिए हज़ारों तक पहुँच सकते है। पवित्र पुस्तक सारे क्षत्र में बेल की तरह फैलती रहेगी।''

मि.फूलिश जातें हैं और हेल्पर कहता है,''मैने विश्वासीयों से जो मेरे पस में रहतें हैं, प्रचार में मेरी सहायता करने को पूछा था। उन्होनें कहा कि उन्हें पता नहीं कि किस तरह करें। वे डरते हैं। मैं उनको उनके डर पर हावी होने मैं कैसे मदद कर सकता हूँ?''

''लनर्र न एक शिक्षा याद करी, जो मि.वाईज उसके पास छोड़ गए थे, डर से संबंधित। वो बोला, ''मि.वाईज़ तुम्हारे लिए तथा अन्यों, जिनको हम मार्गदर्शक बनने का प्रशिक्षण देतें हैं, शिक्षायें छोड़ गए है। उनमें से एक ज्ञान ये है कि बाईबल में कितने लोगों ने दूसरें को परमेश्वर के ज्ञानके ज्ञान के बारे में विश्वास तथा हिम्मत से बताया। ये तुम्हें तुम्हारे सहयोगी को समझाने में सहायता करेगा कि वो अपने विश्वास को उसी तरीके से अभ्यास में लाएं। जब वो यीशु के बारे में बात करेगें तो उन्हें परेशानीयों का सामना करना पड़ेगा। दाउद और दैत्य की कहानी, साहस का उदाहरण देती है।''

अभ्यास

1 शमुअल 17:1-51 में देखें कि के दैत्य से कैसे लड़ें:

- एक चरवाहे के रूप में अच्छे कार्य ने किस प्रकार से दाऊद को ऐक भयानक आदमी से लड़ने को तैयार किया?
- दाऊद क्यों विश्वस्त था कि वो दैत्य को हरा देगा, सौनिकों के हथियारों के बिना भी?

लर्नर ने सीढ़ी पर कार्य करते हुए समझाया, ''जब दाऊद अपनी भेड़ों की देखभाल कर रहा था, उसने भयानक परिस्थितियों में परमेश्वर पर विश्वास करना सीख। उसने परमेश्वर की आराध ना तथा उसके वचन को पढ़ने के लिये समय निकाला। इस चीज़ ने उसको बिना डरे गोलियत का सामना करने के लिए तैयार किया। बईबल में कई लोग परमेश्वर के लिये साक्षी थे। अब आग मे तीन मनुष्यों, की वैसी ही कहानी सुनो।''

अभ्यास

दान्नियल 3 में देखे:

- वो बिना डरे खतरे का सामना करने के योग्य कैसे थे?
- परमेश्वर की महानता के प्रति राजा क्यों आश्वस्त था?

सुसमाचार के प्रचार के लिये, हेल्पर दाऊद की तरह साहसी होने के बारे में एक गाना लिखना है। वो गाना उनके दिलों को छू गया और अब डर जैसी कोई रूकावट नहीं। अगले दिन हेल्पर, लर्नर की दुकान में पूछने के लिये गया, ''क्या बाईबल हमें उदाहरण देती है कि कैसे प्रभावपूर्ण तरीके से सुसमाचार का प्रचार करें? हमें सहायता चाहिए।''

लर्नर ने लकड़ी काटना बन्द करा तथा सुझाव दिया, ''पहला गैर-यहुदी समुदाय तथा कुरनेलियुस पड़े। तुम समाचार के प्रचार के लिये तीन निर्देशतत्व पाओगे।''

अभ्यास

प्रेरितों के काम 10:1-33 में पायें हेल्पर ने क्या खोज करी:

- पतरस क्या कर रहा था जब लोग उसे खोजने याफ़ा को जाते थे?
- परमेश्वर ने पतरस को कैसे दिखाया कि उसे औरों के पास उनके विभिन्न तरीके अपनाने चाहिये, ना कि उनकी, उसकी तरह बनने की प्रतीक्षा करें?
- पतरस और सिपाही यों के साथ- कैसरीया को कौन गया?
- पतरस ने कैसरीया में कुरनेलियुस के अलावा किसको अपनी प्रतीक्षा करता पाया?
- सुसमाचार के प्रचार का संदेश शुरू करने से पहले, पतरस ने कुरनेलियुस के प्रति अपना आदर कैसे दिखाया?

हेल्पर ने एक रेगमार लिया और एक मेज़ को चमकाने में लर्नर की सहायता करा। उन्होंने बातें करी कि कैसे पतरस प्रचार के लिए तैयार हुआ। लर्नर ने बताया, उसने निम्नलिखित कार्य करके उसे करा:

1) प्रार्थना करके।

2) ईश्वरीय मार्गदर्शन सुनकर

- पतरस की प्रार्थना के दौरान, परमेश्वर ने उसे दिखाया कि वो सबको स्वीकार करता है। लोगों को हमारे जैसे बनने की प्रतीक्षा करने के बजाए, पहले हम उन तक पवित्र वचन ले जाए।

3) कार्य दल का संगठन करके।

- अकेले जाने के बजाए पतरस औरों को अपने साथ ले गया। हमें भी, लोगों के घरों पर, दो या तीन की टोली में जाना चाहिये।

4) सबके पास जाने के बजाए उनको खोजना जो परमेश्वर का वचन सुनना चाहतें हैं।

- जब वो कैसरयीया पहुँचा, पतरस ने कुरनेलियुस के मित्रों तथा परिजनों को उसके घर में सुसमाचार सुनने की प्रतीक्षा करते पाया।

5) खोजी तथा उसके परिवार तथा मित्रों के प्रति आदर भाव दिखाना।

- पतरस ने बोलने से पहले, उनसे पूछकर, कि उन्होने उसे क्यों बुलाया तथा उसे क्यों सुन रहे हैं, उनके प्रति आदरभाव दिखाया। जब लोग कुरने लियुस की तरह प्रतिक्रिया करें, तो हमें पवित्र वचन को उनके मित्रें तथा परिवार में बाँटने में सहायता करनी चाहिये।

लर्नर ने हल्पर को सुसमाचार के प्रचार कास दूसरा निंदेशतत्व समझाया: प्रेरितों की तरह यीशु के साक्षी बनें, जब वो दोनों लकड़ी के कारखाने में काम कर रहे थे। ''हम मसीह के साक्षी है; कि हमने क्या अनुभव करा तथा उसने हम सब के लिये क्या किया। तुम अब बेहतर तरीके से पढ़ना सीख गए हो। कृप्या प्रेरितों के काम 10 पद 34-43 मे इसे देखे।''

अभ्यास

प्रेरितों के काम 10:34-43 में पतरस के संदेश में देखे:

- अपने बारे मे पतरस ने क्या साक्ष्य दिया?
- यीशु के बारे मैं कौन सी तीन महत्वपूर्ण बातें पतरस ने कहीं?
- अपने पुनस्थान की प्रतिक्रिया में यीशु ने अपने शिष्यों को क्या आज्ञा दी?

लर्नर ने समझाया, ''पतरस की तरह, हमाश सेदेश साधारण शब्दों में बताए कि कैसे परमेश्वर ने हमें बदला है, तथा औरों को उसके बारे में बताने के लिये भेजा है। हमको यीशु की अच्छाई तथा शक्ति उसकी मृत्यु और उसका पुनरूथान का वर्णन करना चाहिये। हमें यीशु के नाम में पापों की क्षमा का वादा करना चाहिये।''

लर्नर ने हेल्पर को सुसमाचाार के प्रचार का तीसरा निर्देशतत्व समझाया: परमेश्वर तथा उसके लोगों द्वारा नए विश्वासीयों की स्वीकृति की पुष्टि करके उन्हे आश्वस्त करें। ''जो प्रतिक्रिया करतें हैं, उन्हें आश्वास्त करने के लिए हम क्या करते है; अब देखे।''

अभ्यास

देखें प्रेरितों के काम 10:44-48 में क्या हुआ था:

- यीशु की मुत्यु के उपरान्त, पतरस किस महत्पूर्ण घटना का साक्षी हुआ था, जब पवित्र आत्मा लोगों के हृदयों में आ गया था?
- पवित्र आत्मा के कार्य को प्रमाणित करने के लिये पतरस ने तुंरत क्या किया था?

जब वो दुकान में साथ-साथ काम कर रहे थे तो लर्नर ने अपने भाई हेल्पर को बताया, ''पतरस ने मंडली को बपतिस्मा लेने के आदेश पर विश्वास करते है। उसने जाना कि उन्होनें अपने पापों का पश्चाताप करा है तथा उन्हें क्षमा मिल गई है, क्योंकि पवित्र आत्मा उनके ऊपर आ गया था। उसने किसी भी और बात की प्रतीक्षा नहीं करी परन्तु बपतिस्में से आत्मा के काम को प्रभाणित किया। पतरस ने यीशु की शिष्य बनाने की आज्ञा को मत्ती 28:18-20 में पालन किया। उसने कुरनीलियुस तथा उसके मित्रों को बताया कि यीशु से क्षमा किस प्रकार पायें 1 जब उन्होनें प्रतिक्रिया की तो उसने उन्हें तुरन्त बपतिस्मा दिया। हमें यीशु के प्रति साधारण, तुरन्त आज्ञाकारिता के पतरस के उदाहरण का पालन करना चाहिये।''

हेल्पर ने प्रतिक्रिया की,'' इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हम असरदार नहीं हो सके! प्रारम्भ में ही हम, लोगों को पास जाने के। हमें सबकी सहायता करनी चाहिए, खासतौर पर नए विश्वासीयों को उनके परिवार तथा मित्रें से बात करने के लिए।''

लर्नर ने स्मरण करा,''मि.फूलिया ने अपने चचेरे भाई के चर्च के एक प्रचारक को प्रचार सभा लेने का न्यौता दिया था। उसने बड़े-बड़े शब्दों तथा जटिल संदेशों का प्रयोग किया था, जो लोग समझ नहीं पाये थे। उसने लोगों से अपने लिये बड़े चढ़ावो की भीख माँगी थी।''

''हम वैसे प्रचार करें जैसे पतरस करता था,''

हेल्पर ने सुझाव दिया,''मैं आज रात को कारगिवर से पूछूँगा कि क्या हम उसके साथ उसके मित्र के यहाँ, यीशु के बारे में बात करने जा सकते है। मैने शिक्षा की पुस्तिका में, जो मि.वाईज़ छोड़ गए थे, पढ़ा था कि कुछ लोग हमें अस्वीकार करेगें। यीशु मत्ती 10:14 में कहता है कि अगर कोई नहीं सुनता, वो हम को किसी और के पास जाना चाहिये। मैं पवित्र वचन को कई और जगहों पर, जहाँ हमारे परिजन रहते है-ले जाना चाहता हूँ। क्या तुम मेरी सहायता करोगे?''

लर्नर ने उत्तर दिया, ''हाँ। मि.वाईज़ ने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें तथा अन्य लोगों को कई समुदायों का मार्गदर्शक बनने, तथा इस क्षेत्र में मसीह को ले जाने के लिए, प्रशिक्षित करूँ। मुझे उन लोगों से मिलने की आवयश्कता है जहाँ तुम प्रचार कर रहें हो, ताकि मैं तुम्हारे कार्य को देखूँ और तुम्हें ऐसे प्रशिक्षित करूँ जैसे कि मि.वाईज़ ने मुझे किया था कि ईश्वरीए शक्ति के साथ ताकतवर बनो, अपनी से नहीं। मैं तुम्हें स्तिफनुस के निडर साक्ष्य के बारें में बताता हूँ।''

अभ्यास

प्रेरितों के काम 7:54 से 7:60 में देखें कि संदेश अस्वीकार होने के बावजूद स्तिफनुस ने परमेश्वर को महिमा मंडित किया।

लर्नर की पत्नी सारा को घर के बाहर छंटी बजने की आवाज़ सुनाई दी। मि. फूलिश अपने ठेले को धकिया रहे थे, जिसके

साथ उन्होने एक घंटी जोड़ रखी है, लोगों को उनका सामान खरीदने को बुलाने के लिये। उन्होनें उसे बताया, ''यह खुबसूरत मोमबत्तियाँ देखो। क्या लर्नर यहाँ है?''

उसने उत्तर दिया, ''वो काम कर रहें है।''

मि. फूलिश एक मोमबत्ती उठाकर कहतें है।,

''देखो, इसके माम में वो रसायन है जिससे इसकी लौ विभिन्न रंगो में जलती है। मैं एक जलता हूँ।'' वो घर में घुसा और एक मोमबत्ती जलाई। वो पीली जली, फिर लाल, और फिर ज़ोर से धू-धू करी और तीखे धुएँ से सारे कमरे को भर दिया। सारा ने तौलिया हिलाकर बदबूदार हवा को कमरे से बाहर निकाला।

एक पड़ोस की लड़की, डेबराह, चिल्लाई, ''आग!'' और सहायता के लिये दौड़ कर आई।

जब उन्होंनें। रवाँसना बन्द करा, इेबराह प्रसन्नता पूर्वक बोली, ''मैं बहुत शांतिमय तथा सुरक्षित महसूस करती हूँ जब से मुझे लर्नर ने बपतिस्मा दिया है। यीशु मेरे साथ हर समय रहता है।''

''क्या?'' मि.फूलिश चीखे। ''तुम इतनी जल्दी कैसे बपतिस्मा पा गई?'' सारा से उन्होंने शिकायत करी,''इस का एक अवैध बच्चा है तथा यह ये भी नहीं जानती कि उसका बाप कौन है! ऐसे लोगों को शामिल करके लर्नर हमारे चर्च को बर्बाद कर देगा।''

डेबराह सिसकती है,''मैं वो पापमय जीवन छोड़ चुकी हूँ!'' वो जाने को होती हैं पर सारा उसे एक कुर्सी को ओर ले जाती है।

मि.फूलिश ने चिल्लाकर कंधे झटके और धम-धम करके दरवाज़े के बाहर चले गए,''तुम उसको उतना नहीं जानती जितना मैं जानता हूँ। तुम देखोगी लर्नर दुखी होगा कि उसने इसे बपतिस्मा दिया।'' डेबराह उनकी तरफ जीभ निकालती है तथा उनके पीछे भद्दा मुँह बनाती है, जब वो जातें हैं।

बपतिस्मा देने के लिए यीशु की आज्ञा का मानना

सारा इेबराह को सांत्वना देने को तैयार है। उसने पत्थरावह हुई स्त्री की कहानी स्मरण करी जो लर्नर ने पारिवारिक प्रार्थना के समय बताई थी।

अभ्यास

युहन्ना 8:1-11 मे देखेः

- फरीसी उस स्त्री को यीशु के पास क्यों लाए थे?
- पुराने नियम का मूसा का कानून, ऐसी स्त्रीयों के साथ, लोगों को क्या करने को कहती थी, आज्ञा देती थी?
- इस पापिन के साथ, जो मृत्यु के योग्य थी, फरीसीयो ने कैसा व्यवहार किया?
- यीशु ने उस से कैसा व्यवहार किया?
- जब से यीशु आया, पापीयों को सज़ा देने का अधिकार किसको है?

सारा ने डेबराह को आश्वासन दिया,''मेरी युवा मित्र, जब परमेश्वर ने तुम्हें क्षमा कर दिया है तो मनुष्य तुम्हें कैसे सज़ा दे सकतें हैं? वो तुम्हें प्यार करता है। इस कहानी में मि.फूलिश ने फरीसीयों की तरह व्यवहार किया। उन्हें स्त्री की चिन्ता नहीं थी। वो उसको लाए सिर्फ यीशु को फंसाने के लिये। उन्होनें स्त्री को सबके सामने खड़ा करके लज्जित किया। यीशु ने उसकी चिन्ता नहीं की, हाँलाकि वो पूर्ण था, तथा उसके ऊपर पत्थर फेंक सकता था। उसने उसे मृत्यु से बचाया। उसने तुमको भी मृत्यु से बचाया है।''

''तुम देखते हो, यीशु के आने के आने से पहले परमेश्वर ने मूसा को अपना कानून दिया जो लोगों को बताता था कि किस प्रकार जीना है। कानून दिया जो लोगों को बताता था कि किस प्रकार जीना है। कानून कहता था कि मूर्तियों की पूजा मत करना,

हत्या, चोरी, झूठ या व्याभीचार मत करना। यह कानून हम पुराने नियम में पातें हैं। यह कानून लोगों को दिखता है कि परमेश्वर पवित्र है और पाप सहन नहीं करता। जो लोग कानून तोड़ते थे उन्हें मरना पड़ता था। केवल यीशु ही ऐसा व्यक्ति था जिसने पूर्ण रूप से कानून को माना। जब वो मरा, उसने हमारी मृत्यु दंड की कानून की वो शक्ति को समाप्त कर दिया।

''हमने तुम्हें बपतिस्मा दिया क्योंकि तुमने यीशु के नाम में परमेश्वर से क्षमा माँगी थी, उसने तुम्हें मृत्यु से बचाया तथा नया जीवन दिया। उसने तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान दिया। बपतिस्में से हम तुम्हारा विश्वास तथा ईश्वरीय वादे को पुष्टि करते है। कानून और अपने पापों के लिए तुम यीशु के साथ मर गए। फिर तुमने यीशु मे नया जीवन पाया। यीशु की पूर्ण क्षमा को याद रखो, और फिर कभी पाप मत करो।''

लर्नर वापस घर आया। सारा ने बताया कि मि.फूलिश ने ईबराह से क्या कहा। लर्नर ने उसे आश्वस्त किया,

''कई अनमिज्ञ लोगों की तरह, मि.फूलीश, ये सोचते है कि तुम्हें बपतिस्मे के लिये पूर्ण होना पड़ेगा। यह बपतिस्मे के लिये पूर्ण होना पड़ेगा। यह बपतिस्में का मतलब नहीं है। झूठों के अलावा और कोई भी बपतिस्मा ना पा सकेगा, जो सिर्फ यह कहतें हैं कि वो पूर्ण है। नए विश्वासी जो युवाव्यस्था में यीशु को पातें है वो परमेश्वर की दृष्टि में नवजात शिशु है। उनसे उनके आत्मिक बचपन में बहुत सारी भूल हो जाती है। उन्हें हमारे तुरंत प्रेम,देखभाल और बपतिस्मे द्वारा स्वीकृति की आव्यश्कता है।

यीशु का बपतिस्मा

डेबराह ने रोना बन्द करा। वो बोलती है, ''मुझे डर है मैं दुबारा से पाप में ना पड़ जाँऊ! मैं परमेश्वर की सेवा के लिये बहुत कमज़ोर हूँ।'' सारा ने उसे मत्ती 3से यीशु के लिये बपतिस्मे की कहानी सुनाई।

अभ्यास

मत्ती के अध्याय 3 में देखें:

- यीशु का इसलिए बपतिस्मा किया गया कि वो पापी था या फिर वो सारे पापीयों की तरफ था? मत्ती के अध्याय 4 में देखें:
- शैतान ने किन तीन चीज़ों को करने का यीशु को प्रलोभन दिया? शैतान ने यीशु से क्या वायदा करा कि अगर वो उसकी पूजा करें
- दोनों अध्याय मत्ती 3-4 स्मरण करें: क्या यीशु का बपतिस्मा पहले से हो गया था बाद में,
- जब उसने अपने शिष्यों को बुलाया और अपनी सार्वजनिक रूप से विचार प्रकट करने के बाद?

डेबराह बोली, ''यीशु पापी नहीं था। उसने सबको दिखाया कि वो इसलिये नहीं आया था कि वो पापीयों पर आरोप लगाये जैसे व्याभीचारी स्त्रियों, जैसे कि मै। मै अब समझती हूँ। वो मि. फूलिश की तरह नहीं था।यीशु हमारी तरफ होने के लिए आया। इसी का मतलब यीशु का बपतिस्मा है। उसका बपतिस्मा हुआ और फिर उसने परमेश्वर के दूत के रूप में कार्य शुरू किया। हो सकता है मैं भी अब परमेश्वर की सेवा करनी शुरू करूँ, अब मेरा बपतिस्मा हो चुका है, जैसे यीशु ने की थी।''

''हाँ, बिल्कुल!'' सारा सहमत हुई, ''वो मज़दूर जो देर से आए कि कहांनी सुनो। तुम देखोगे कि कैसे परमेश्वर हमें कार्य देता है, जितनी जल्दी संभव हो सके, करने के लिये।''

अभ्यास

मत्ती 20:1-16में देखे:

- जमीदार हर मजदूर से क्या करने के लिये कहता है, दिन के समय की बिना परवाह किये?
- पहले मजदूर, बाद के मजदूरों से क्यो ईर्ष्या करते थे?

क्रियात्मक कार्य

- अपने लोगों को पवित्र वचन उनके पपरिवार तथा मित्रों तक ले जाने के लिये इस भाग में उल्लेखित कहानीयों का प्रयोग कर; उन्हें प्रोत्साहन दें।
- अपने लोगों को साधारण साक्ष्य, कि यीशु ने उनके लिए क्या किया, तैयार करने में मदद करें तथा पुनरूथान बताने में।
- वो सब जो यीशु के पास पापों की क्षमा के लिए आतें है उन्हें जितनी जल्दी संभव हो बपतिस्मा दें, उनके पश्चाताप को निश्चित करने के लिये। समुदाय के जीवन में उनका स्वागत करें।
- सिर्फ उस चीज़ का अनुरोध करें जो नया नियम चाहता है बपतिस्म के लिये। यह बुरे लोगों के लिये हैजो अपने पापों को स्वीकार करतें हैं और यीशु में विश्वास रखतें हैं, उन्हें क्षमा करने तथा उन्हें बदलने के लिये।
- समुदाय को इस तरह से संघटित हो करें जिससे परिपक्व मसीही, नए मसीहीयों की, उनको उनके परिवार तथा मित्रों को यीशु के बारे में बताने में सहायता करें।

III -2-प्रबन्धन 2

आत्मिक वरदानों का प्रयोग करके एक दूसरे की सेवा करने वाला संगठन बनाएं

डेबराह, लर्नर और उसकी पत्नी सारा से उनके घर में बात कर रही है। वो खुशी से हँसी और कहा, ''ईश्वरीय वरदान का क्या मतलब होता है यह मैं देखती हूँ! मैं परमेश्वर से वो ही क्षमा तथा दया प्राप्त करती हूँ, जैसे परमेश्वर के झुँड का हर सदस्य! प्रभु यीशु मुझे अपनी सेवा तुंरत करने देगा। मैं अपने पूरे हृदय से उसकी सेवा करके अपना आभार उस पर प्रकट करना चाहती हूँ।'' उसने सारा का हाथ पकड़ा ''मैं अभी से शुरू कर सकती हूँ, जिससे बच्चों के लिए बाईबल की कहानीयाँ तैयार करने का तुम्हें ज्यादा समय मिले?''

लर्नर बोला,''यह आश्चर्य जनक है! मुझे एहसास नहीं था कि कितनी जल्दी नए मसीही परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं। मि. वाईज़ ने मुझे बताया था कि नए विश्वासीयों के लिये समाज तथा समुदाय को सेवा करने के बहुत तरीके हैं। पवित्र आत्मा समुदाय में सबको कार्य देता है।''

डेबराह बोली,''कृप्या इसे समझाएं। परमेश्वर का पवित्र आत्मा हर व्यक्ति को कार्य कैसे देता है?''

लर्नर ने उसके हाथ में एक बाईबल अध्ययन जो मि. वाईज़ छोड़ गए थे दिया। वो पढ़ती है, ''पवित्र आत्मा हमारे जीवन में काम से कम पाँच कार्य करता है:

पहला, पवित्र आत्मा हमको सुधारता है, जैसा युहन्ना 3:1-8 प्रकट करता है। हमनें आत्मा में फिर से जन्म लिया है। जब कि हमारा शरीर पाप में मर गया है, हमारी आत्मा यीशु में जीवित है।

दूसरा, पवित्र आत्मा हम पर मोहर लगाती है। पौलुस ने इफीसियों 1:12-13 में लिखा था कि, पवित्र आत्मा हमारे ऊपर एक मोहर जैसा है, हमारा उद्धार करने के ईश्वरीय वादे की जमानत।

तीसरा, पवित्रआत्मा हमको यीशु के शरीर में बपतिस्मा देता है, जैसा कि। कुरिन्थियों 12:112-13 प्रकट करता है। वो हमारे में परमेश्वर के साथ रहने की इच्छा जगाता है।

चौथा, पवित्र आत्मा हम में से हरेक को आतिमक वरदान देता है, जैसा कि रामियों 12 तथा 1 कुरीन्थियों 12 प्रकट करता है। वो हममें से हरेक को यीशु के लिये कार्य करने की शक्ति देता है। यह वरदान खुद की सेवा के लिए नहीं है, परंतु पूरे समुदाय का निर्माण करने के लिये है। अच्छे मार्गदर्शक समुदाय में सबकी मदद करते है, जिससे कि पूरे समुदाय की सेवा के लिये वो अपने वरदानों का प्रयोग करें।

पाँचवा, वो हमको फलदायक बनाता है, गलतियों 5:22-23 यदूपि, जब हम उसके पास आते हैं, तो वो हमें पूरी तरह से क्षमा कर देता है, रोमियों अध्याय 7 कहता है कि तब भी हम अपने आप के अन्दर युद्ध लड़ते हैं। हमारे अन्दर क्या व्यक्ति चाहता है कि हम वो करें जो उचित हो, परन्तु कभी-कभी वो पुराना व्यक्ति जो हमारी साँसारिक देह मे रहता है, हमको पाप में धकेल देता है। जब तक हम मरतें हैं, हम परमेश्वर का अनुकरण करने का प्रयास करतें है। पवित्र आत्मा हमको शक्ति देता है तथा हमारे अन्दर अपने गुणों को दृढ़ करता है। कुछ लोग आत्मिक परिपक्ता में बहुत जल्दी विकसित हो जातें हैं परन्तु कुछ को कई साल लगतें हैं। परमेश्वर के विश्वास में हम जैसी प्रतिक्रिया करते है, हम सीखतें हैं कि यीशु की तरह ज्यादा से ज्यादा कैसे हो। हम अपने आने वाले समय की तरफ देखते है जब हमको पापों से रहित जीवन की महिमा में उठाया जाएगा।''

चरवाहे की कहानी की किताब

डेबराह ने बाद में पढ़ने के लिये बाईबल के लेखांश को लिख लिया। सारा ने कहा, ''परमेश्वर ने तुम लोगों को औरों की सेवा करने के लिए आत्मिक वरदान दियें हैं। उदाहरण के लिये लर्नर के पास नहेम्याह की तरह प्रबन्धकर्ता होने का उपहार है। मैं एज्रा की तरह एक शिक्षिका हूँ। हेल्पर, इफी सियों के प्रचीनों की तरह एक चरवाहा है। वो हमारे समुदाय में लोग का मार्गदर्शन करके सहायता करतें हैं। समुदाय में अन्य लोग कार्यकर्ता है जो मिलकर सेवा करते है जैसे अक्विला तथा लोग उनका कैसा प्रयोग किया करते थे, मैं तुमको पढ़ कर गाती हूँ। हम इन उदाहरणों का प्रयोग समुदाय में सबको अपना कार्य दूँढने के लिए, प्रोत्साहित करने के लिये करतें हैं।'' सारा वो सूची जो मि.वाईज़ छोड़ गए थे, दूसरों को शिक्षा देने के लिये पढ़ती है।

अभ्यास

रोमियों 12:3-8 मे सूचीबद्ध आत्मिक वरदानों का प्रयोग: निम्नलिखित उन आत्मिक वरदानों की सूची है जो साराने डेबराह को दिखाई? अगर आप से हो सके, जिन कार्यो के लिए परमेश्वर ने आपको आत्मिक वरदान दिये है, उनको आसानी से करने के लिये उन पर चिन्ह लगाए:

- ☐ सेवा, शमुअल जैसी 1 शमुअल 1:20-28 में।
- ☐ भविष्यवाणी, युहन्ना बपतिस्मा देने वाले जैसी युहन्ना 1:26-34 में
- ☐ अर्पण(देना),बरनबा जैसी प्रेरितों के काम 4:36-37 में
- ☐ शिक्षा देना, एज्रा जैसी नहेम्याह 8 में
- ☐ प्रोत्साहन(प्रेरित करना), जैसी पौलुस ने प्राचीन इफीसियों के लिए किया था, प्रेरितो के काम 20:17-38 में।
- ☐ अगुआई जैसे मूसा ने निर्गम 18:13-26 तथा नहेम्याह ने महेम्याह अध्याय 2-3 में।
- ☐ दया जैसे दाऊद ने करी 1श्मुअल: 24 में

1 कुरिन्थियों 12:4-11 द्वारा अतिरिक्त वरदान

- ☐ ज्ञान के शब्दों के साथ बोलें जैसे सुलेमान 1 राजा में।
- ☐ जानकारी के शब्दों के साथ बोलें जैसे याकूब जिसने अनियंत्रित ज़बानों के खतरे के बारे में चेताया था याकूब 3 में।
- ☐ विश्वास(आस्था)का अभ्यास करें जैसा इब्राहिम ने तारों को देखकर ईश्वरीय वादे पर किया था-उत्पति 15:1-6 में या कोढ़ी तथा सूबेदार को तरह मत्ती 8:1-13 में
- ☐ चंगाई करें जैसे यीशु ने मरकुस 2:1-12 में की, याप तरस ने प्रेरितों के काम 3:1-16 में की।
- ☐ चमत्कार करें(दिखाएं)जेसे एलीय्याह ने 1 राजा 18:16-46 में किये।
- ☐ पहचान(आत्माओं की)जैसे पौलुस ने प्रेरितों के काम 13:6-12 में किया था।
- ☐ भाषा उन भाषाओं में बोलों जैसे कुरने लियुस के परिवार ने प्रेरितों के काम 10: 44-48 में।
- ☐ दुभाषीयें बनें जैसे कुरिन्थियों को कहा गया था 1कुरिन्थियों 14:26-28 में।

इफिसियों द्वारा और वरदान 4:11-16

- ☐ उपेक्षित स्थानों में प्रेरित के रूप में जाएं जैसे पौलुस और बपनबा, प्रेरितों के काम, अध्याय 13-14 में।
- ☐ एक प्रचारक के रूप में पवित्र वचन की घोषणा करें जैसे फिलिप्पुस ने प्रेरितों के काम 8:26-40 में किया।
- ☐ **पादरी**(चरवाहा)जौसा कि इफिसियों के प्राचीनों को निर्देश दिये गए थे प्रेरितों के काम 20:28-34 में।

इस सूची को पढ़ने के बाद, डेबराह घर के कार्यो मे सारा की सहायता करती है। अगली सुबह सारा डेबराह के घर मिलने गई तो सुना कि वो अपने भाई को वो सब बातें समझा रही है, जो उसने एक रात पहले सीखीं थी, आत्मिक वरदानों को स्मरण करके तथा उन व्यक्यिों को जिन्होंने बाइबल में उसके प्रयोग को आर्दश बनाया।

डेबराह ने सारा को बताया, ''मैनें सारी शिक्षा पढ़ली जो आपने मुझे दी थी।''

जो परमेश्वर ने उनके चर्च को आत्मिक वरदान दिये थे, उन्होनें उसके बारें में बातें करीं। सारा ने कहा, ''मैं सोचती हूँ कि मेरे पति लर्नर के पास वो ही आत्मिक वरदान है जो नहेम्याह निमाग्णकर्ता के पास थे। इस मार्गदर्शक ने अपने लोगों को एक ऐसे काम को पूरा करने के लिये संगठित किया जिसे और लोगों उसे असम्भव माना था। यहुदी लोगों ने परमेश्वर का साथ छोड़ दिया था। उसने उनको, उनके शत्रुओं के द्वारा हार दिलाई। उनकी राजधानी येरूसलम बर्बाद कर दी गई तथा उनको दूसरे देश में ले जाया गया। परमेश्वर की वाचा के अनुसार वो बाद में वापस आए, परंतु उन्होनें दुबारा येरूसलम की दीवारें नहीं बानई। सौ साल तक वो दीवारे खण्डरों की तरह पड़ी रहीं। नहेम्याह ने उसके बारे में सुना और सहायता करने को गया। वो एक सच्चा नेता था (मार्गदर्शक था)।

डेबाराह पूछती है,''मेरे पास क्या आत्मिक वरदान है?'' सारा ने उत्तर दिया, ''पक्के तौर पर बताना जल्दबाज़ी होगी पर लगता है तुम्हारे पास शमुअल जैसा लोगों की सेवा करने का वरदान है। शमुअल जैसा लोगों की सेवा करने का वरदान है। शमुअल अपनी इच्छा से परमेश्वर के मंदिर की देखभाल करता था। और ऐसा लगता है कि तुम्हारे पास एज्रा की तरह शिक्षा देने का भी वरदान है। तुमने अपने भाई को बहुत अच्छी तरह सिखाया। यह देखकर बड़ी खुशी होगी कि परमेश्वर तुम्हारी सेवा करने को योग्यताओं को कैसे विकसित करता है।''

लर्नर अपने भाई हेल्पर के साथ उस दिन घर लौटता है। उसकी पत्नी सारा उसें डेबराह के साथ हुए आत्मिक वरदानों के विचार-विमर्श के बारें में बताती है। ''मैंने उसे बताया है कि तुम्हारे पास नहेम्याह की तरह नेतृत्व का वरदान है।''

लर्नर ने उत्तर दिया, ''मैं आशा करता हूँ , चलो हम नहेम्याह के बारे में, मि. वईज़ जो शिक्षा छोड़ गए थे, उसे दुबारा से देखें, एक अच्छे नेवा(मार्गदर्शक)के गुणों को जानने के लिये।''

अभ्यास

निम्नलिखित बातों को देखनें के लिए नहेम्याह की पुस्तक पढ़े (यह एक लंबा अभ्यास है परन्तु प्रयत्न करने के योग्य):

- नहेम्यापह को उस परेशानी का कैसे अहसास हुआ जिसमें उसके लोग थे?
- अपने तथा अपने लोगों के गुनाह के बारे में नहेम्याह ने क्या प्रार्थना करी?

नहेम्याह अध्याय 2 में देखे:

- नहेम्याह की प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर ने क्या किया, जब कि नहेम्याह उस समय भी राजा की सेवा कर रहा था?

नहेम्याह अध्याय 3 में देखें:

- नहेम्याह ने सेवकों को कैसे संगठित किया?

नहेम्याह अध्याय 4 में देखे:

- सेवकों को किस विरोध-का सामना करना पड़ा?
- नहेम्याह ने विरोध पर काबू पाने के लिए लोगों को कैसे संगाठित किया?
- नमेम्याह ने लोगों को अनुसरण करने के लिये किस प्रकार का उदाहरण व्यक्त किया?

नहेम्याह अध्याय 6:15-17 मे देखें:

- कितने दिनों में लोगों ने का निर्मण किया?
- आसपास के देशों ने क्या अभ्सास किया जब उन्होनें देखा कि परमेश्वर ने अपने लोगों को कैसे आशीष दी?

नहेम्याह अध्यायों 8:1-6 तथा 9:3 में देखे:

- मार्गदर्शको ने लोगों को क्या पढ़कर सुनाया, जो कि एक बड़ा नवजागरण तथा परमेश्वर की आशीषें लाया?

सारा लोगों के लिये काँफी लाई तथा हेलपर ने अपने गुरू लर्नर से कहा, ''मैं इससे प्रभावित हूँ कि लोगों ने उस विशाल दिवार को सिर्फ बावन दिनों में बना दिया, जबकि वो कई सालों तक खण्डरों की तरह पड़ी रही थी। मैं आशा करता हूँ कि मैं नहेम्याह की तरह एक दृढ़ तथा निश्चयबद्ध मार्गदर्शक(नेता) हो सकता हूँ। वो अपनी बिरादरी तथा अपने समाज की परेशनियों के लिये बहुत परवाह करता था।''

''हाँ,''लर्नर ने जवाब दिया।''जब नहेम्याह अपने समुदाय तथा अपने देश के मार्गदर्शकों के लिए प्रार्थना करता था,वो अपनी तथा उनकी क्षमा के लिए माँगता था। वो परमेश्वर से, लोगों को प्रेम से सेवा करने की समझदार योजनाँए माँगता था। जो वो परेशानियाँ देखता था उनके बारे में वो अपने समुदाय से ईमानदारी से बातें करता था और वो उनसे निपटने के लिए सावधानी से योजनायें बनाते थे।'' जब वो प्रार्थना करने लगा तो उसने अपनी पत्नी सारा को शामिल होने को कहा,'' प्रभु मुझे आपकी सहायता चाहिए। मैं नहेमयाह के उदाहरण का अनुकरण करना चाहता हूँ तथा अपने लोगों को प्रेरणा हूँ कि जब उनका विरोधीयों से सामना हो, वो कार्य करते रहें। हम चाहते है कि हर एक व्यक्ति दूसरों की सेवा .करने के लिये अपने आत्मिक वरदानों का प्रयोग करें।''

हेल्पर बोला, ''मैं नहेम्याह के बारे में एक गाना लिखूगाँ, दूसरे मार्गदर्शकों को उसके उदाहरण का अनुकरण करने को, प्रोत्साहन देने के लिये।

क्रियात्मक कार्य

- आत्मिक वरदानों तथा बाईबल के आर्दशों की उपरोक्त सूची का प्रयोग करें, अपने समुदाय के सब लोगों, नए मसीही तथा बच्चों सहित,की सहायता करने के लिये, ताकि वो चर्च के निर्माण में अपने वरदानों का प्रयोग करें।
- नहेम्याह की तरह, विनम्रतापूर्वक अगुआई कर्रें, पहले अपने पापों को परमेश्वर के समक्ष स्वीकार करते हुए तथा उससे अपने लिये समझदारी भरी योजनाए माँगते हुए, जब आपअपने समुदाय को प्रेरित तथा संगठित करें, उसके लिए बड़े-बड़े काम करने के लिये।

III-3-प्रबन्धन -3

परमेश्वर की उपासना करें तथा प्रभु भोज मनाएं

लर्नर आपने घर पर पढ़ा रहा है जब मि.फूलिश तथा समुदाय के अन्य लोग सोते है। उसने दो युवा लोगों को प्रभु भोज के दौरान कुछ खाते देखा। बच्चे बैचेनी से इधर-उधर देख रहे थे। उसकी पत्नी सारा ने बाद में उसे बताया, ''मैंने उनमें से कुछ को बातें करते देखा जब उन्हें यह नहीं पता था कि मैं वहाँ पर हूँ। वो बहस कर रहे थे कि उन्हें किस का अनुकरण करना चाहीये, मि. बाईज़, हेल्पर था तुम्हारा। एक ने मि.फूलिश को मानने को कहा। एक किशोर ने दूसरे को बताया,'यह उबाने वाला है। लर्नर हमेशा कुछ करता है, और वो हमेशा एक सा होता है। यह एक रीति है जो हम बिना सोचे करतें हैं। इसीलिये मैं कुछ खाने को लाया!''

लर्नर, मि.वईज़ को लिखता कि क्या हो रहा है। मि.वाईज़ समुदाय को पढ़ कर सुनाने के लिये यह संदेश लर्नर के पास वापस भेजते हैं, ''मेरे प्यारे भाइयों तथा बहनों। मुझे तुम्हारे को वो ही बात कहनी चाहिये जो कि प्रेरित पौलुस नें कुरिन्थियों को। कुरिन्थी 11:17-34 में कही थी। ऐसा प्रतीत होता है कि जब तुम आपस में मिलते हो तो तुम्हारे में से कुछ लोग अच्छाई से ज़्यादा नुकसान कर रहें है। तुम्हारे बीच में मतभेद है। यह प्रभु भोज नहीं है। जिसके लिये तुम चिंतित हो, जब तुम साथ आते हो, तुम में से कुछ लोग अध्यात्मिक मिलन के अनुष्ठान के दौरान खतें हैं, लोगों के सामने जो भूखे है। क्या तुम्हारे पास खाने और पीने के लिए घर नहीं है? जब हम प्रभु भोज को गंभीरता से नहीं लेते है तो हम पाप करते है। क्या तुम भूल गए हो कि जब तुम समुदाय के रूप में आराधना करते हो तो परमेश्वर उपस्थित रहता है?''

अभ्यास

1 कुरिन्थियों 11:17-34 में देखेः

- यीशु के क्या शब्द थे जब उसने रोटी तोड़ी जिस रात उसके साथ विश्वासघात हुआ?
- हम किसके विरूद्ध पाप करतें हैं जब हम प्रभु भोज के दौरान यीशु के जिस्म का आदर करने में असफल रहते है?
- पवित्र अशा लेने से पहले हम क्या जाँचते है जिससें की हम ईश्वरीय न्याय को अपने ऊपर ना लाएं?

मि.वाईज़ का पत्र जारी रहता है, ''अपने जाने से पहले मैंने तुम्हें आराधना करना सिखया था। मैंने सिखाया था कि जब हम आपस में मिलते है तो परमेश्वर उपस्थित रहता है। हम अपने हर कार्य के द्वारा परमेश्वर की आराधना करतें हैं।''

लर्नर कहता है, ''मैं मि.वाईज़ की शिक्षा याद करता हूँ। हम आराधना करतें हैं, अपनी प्रार्थना तथा स्तुति में, करतें हैं, अपनी प्रार्थना तथा स्तुति में, परमेश्वर का वचन सिखाने में, प्रभु में परमेश्वर के समक्ष अपने पापों को स्वीकार ने में, देने में,और अपने भाईचारे में। हम यह बातें मनोरंजन के लिये नहीं करते है। इन चीजों को विभिन्न वरीकों से करने की परमेश्वर ने हमको स्वतन्त्रता दी है। पौलुस नें इफिसियों से कहा था कि हमारे दिलों में परमेश्वर के लिये संगीत बनायें, भजनों में, स्तुति तथा अध्याात्मिक गानों में । गाने -भजन,हमारे अपने शब्द या दूसरें के लिखे गीत भी हो सकतें हैं। वो परमेश्वर के महान कार्यो के साक्ष्य तथा उसका धन्यवाद देने के लिये होतें हैं। वो परमेश्वर की महानता को सराहने तथा उसके प्रति पूज्यभाव के लिये भी होते हैं।"

हेल्पर बोलता है, "मि. वाईज़ ने हमें यह भी बताया था कि पुराने नियम में ईश्वर के लोग अपने उत्सवों के दौरान कैसे उसकी आराधना करते थे। वो मुक्ति दिवस सात दिन तक चलता था जिसमें हर दिन एक विशिष्ट चढ़ावा तथा विशिष्ट सभाएं पहले और अंतिम दिन को होती थी।

चरवाहे की कहानी की किताब

जब सुलेमान ने परमेश्वर का मंदिर बनवाया, लोगों की भीड़ येरूसलम में उत्सव मनाने आती थी। वो साथ साथ खाते थे तथा मंडपो में रहते थे। वो संगीतकारों को, गाते तथा तुरही व अन्य वाघयन्त्रों को बजाते हुए, खड़े रहकर देखते थे। राजा सुलेमान उनके लिये एक विशेष प्रार्थना करता था, पहले खड़े रहकर फिर घटनों के बल होकर। हमारी प्रार्थनाएं, परमेश्वर की उपस्थिती में मधुर महकने वाली खुश्बू के समान है।"

र्लनर ने फिर से पत्र में से पढ़ा, "यहाँ पर कुछ चीज़ें है जो तुम मार्गदर्शन कर सकते हो, अपनी परमेश्वर के प्रति आराधना को सुंदर बनाने के लिये, जैसे उसकी उपस्थिती में सुगंध होती है:

- तैयारी के साथ प्रार्थना करो।
- अपने समय से आगे निकल चुके लोगों से आराधना के विभिन्न भागों में सहायता के लिये आग्रह करो।
- सबको अपने भाग की योजना सावधानीपूर्वक पहले से बनाने में सहायता करो।
- सबके लिए, बच्चों सहित, विभन्न प्रकार से हिस्सेदारी का प्रबन्ध करो।
- विशेष घटनाएं, जैसे यीशु का जन्म, उसकी मृत्यु तथा पुर्नउत्थान, पर उत्सव मनाओ।

उन्होंने इन चीजों पर कुछ मिनट विचार करा, फिर र्लनर ने पत्र को पढ़ना जारी रखा, "जैसे कि इब्रानियों का लेखक कहता है, 'बहुत पहले, परमेश्वर हमारे पूवर्जो से भविष्य वक्ताओं के द्वारा बातें करता था। पर अब, उसने आंतिम दिनों में, उसने अपने पुत्र यीशु के द्वारा बात करी, परमेश्वर की अपनी महिमा व्यक्त करती है, तथा उसके बारे में हर चीज़ परमेश्वर को यर्थात रूप से व्यक्त करती है। हमारे पापों को साफ करने के बाद जब उसकी मृत्यु हुई। वो स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ सम्मान को जगह पर बैठा। जब हम परमेश्वर की आराधना करतें हैं, हम यीशु का सम्मान करते है, उसके नाम में प्रार्थना करके, उसके वचनों की शिक्षा देकर, तथा प्रभु भोज में उसकी मृत्यु का ऐलान करते है। हम उसके शरीर, जो उसका समुदाय है, की परवाह करते हैं। दान तथा भाईचारे से।"

कई लोग बोले, "आमीन!" और लर्नर पत्र समाप्त करता है।

"जब तुम साथ मिलकर ईश्वर की आराधना करते हो तथा प्रभु भोज लेते हो, तुम मसीह के शरीर तथा लहु मे संम्मिलित होते हो। तुम उसकी मृत्यु का ऐलान करते हो। तुम परमेश्वर की उपस्थिती में प्रवेश करते हो। अगर तुम यह परमेश्वर की उपस्थिती में प्रवेश करते हो। अगर तुम यह महसूस नहीं करते तो तुम मसीह के शरीर तथा लहू का अनादर करते हो। पुराना नियम हमें बताता है कि कितना महत्वपूर्ण मसीह का बहाया हुआ लहू है।"

लर्नर बोला, "हेल्पर कृप्या मुक्ति दिवस की कहानी सुनाओ जो हमने साथ में सीखी थी, कि कैसे परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करें।"

अभ्यास

निर्गमन 12:21-42 में देखें कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्त्र में दासता से मुक्त कराया:

- रात के मध्य में कौन मर गया था?
- इसत्रायलीयों को उनके पहिलौठे पुत्रों को खोने से, किस चीज़ ने बचाया?
- क्या होता था जब मिस्री पहिलौठा मरता था इस्त्रायली दासों की मुक्ति संभव बनाने में?
- इस्त्रायलीयों को अपनी सारी पीढ़ीयों तक दासता से आज़ादी को कैसे याद रखना चाहिए?

सभा के बाद, लर्नर और उसका भाई हेल्पर बाईबल के लेखांश पढ़तें हैं जो मि.वाईज़ ने उनके लिये सूचीबद्ध करी थी, पुराने नियम के शरणलय तथा आराधना के बारे में। लर्नर से पूछा, "कृप्या इसके बारे में अगले हफ्ते शिक्षा दें।"

जब हेल्पर ने शिक्षा देनी शुरू की तो सब उस पर विशेष ध्यान देतें हैं। वो एक गाना गाता है जा उसने इस अवसर के लिखा था, दरवाज़े के प्रत्येक तरफ रंगे हुए मुक्ति दिवस के लहू मेमने के लिये। उसने समझाया, ''पुराने नियम में, यहूदी हर साल मुक्ति दिवस मनाते थे,जो परमेश्वर से प्रम करते थे। कि कैसे परमेश्वर ने उनको स्वतन्त्र करने के लिये लहू तथा पहिलौठे पुत्रों का उपयोग किया। वो एक उदाहरण था, हमें यह दिखाने के लिए कि कैसे परमेश्वर का पुत्र अपने खून से, पापों में हमारी दासता से हमको स्वतन्त्र के रूप में समझाया गया है।''

अभ्यास

इब्रानियों 9:1-26 पढ़े यह जानने के लिये हेल्पर क्या सिखता है:

- शरणस्थल के पहले, बाहरी कमरे में क्या चीज़े थी?
- अन्दर वाले कमरें में, पवित्र स्थान, में क्या चीज़े थी?
- वर्ष भर में महायाजक क्या करता है, अपने तथा लोगों के पापों से छुटकारा पाने के लिये, क्या करता है?
- परमेश्वर का पुत्र हमारी मुक्ति हमेशा के लिये कैसे सुराक्षित करता है?

हेल्पर ने लोगों से पूछा, ''क्या तुम्हारे पास प्रश्न है?'' एक ने पुराने नियम में आराधना करने जैसा क्या था?

मि. वाईज़ ने यह समझाया था। प्राचीन समय में लोग एक मेमना या एक बैल लेते थे और आराधना के लिये जाते थे। वो उस पर अपनी गर्दन काट देता था। यह झंझट वाला काम था। लहू की बलि यीशू की मृत्यु की भविष्यवाणी करती थी, जिसका लहू हमेशा के लिये पश्चाताप करता था, ससार के समस्त पापों के लिये । लर्नर, तुम यह समझाने मे मेरी सहायता कर सकते हो क्या?''

लर्नर बोलता है, ''मंदिर के पवित्र स्थान में एक दीवट, एक मेज़ और भेंट की रोटीयाँ थी। परदे के पीछे, परमपवित्र जगह में धूप तथा वाचा का संदूक था। महायाजक वहाँ वर्ष में एक बार प्रवेश करता था, लहू लेकर अपने पापों को ढ़कने के लिये। जब यीशु मरा, परदा बीच में से चिर गया, तथा यीशु ने परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया, जैसे हमारे महायाजक नें। उसका लहू हमारे पाप एक ही बार में हमेशा के लिये ले लेता है तथा हम धूप की तरह अपनी प्रार्थनाएं चढ़ाते है। परमेश्वर की मेज़ पर जब हम पवित्र रोटी तोड़ते है, हम मसीह की उपस्थिति में होतें हैं। जब हम नई वाचा का उसका लहू पीते है तब वो उपस्थित रहता हैं। उसने वादा किया था, कि जब भी दो या तीन उसके नाम मे इकटठें होगें वो उपस्थित रहेगा।''

केयरगिवर ने कहा, ''मैं अब समझ सकता हूँ कि मैनें यीशु के शरीर को नहीं पहचाना था जब हमने प्रभु भोज दिया था। मैं यह भूल गया था कि उपस्थिति मे सीधे प्रवेश पाते हैं। मैं सोचता हूँ कि प्रार्थना में हम सबको अपना व्यवहार सुधारने की आव्यश्कता है।''

लर्नर ने टिप्पणी करी,''पौलुस भी इस चीज़ को 1 कुरिन्थियों अध्याय 12-14 में साफ करता है, कि एक मार्गदर्शक ही सब कुछ नहीं कर सकता जितने भी यह करना चाहते है, उन्हें प्रार्थना में किसी रूप में सक्रिय हिस्सा लेना पड़ेगा। अब से, मैं अपने मार्गदर्शक के उत्तरदाशित्व औरो के साथ बाटूँगा। जो इसको करने में हिस्सा लेना चाहते हैं, मैं उन सब की सहायता करूँगा। हम सब और आगे बढ़ेगें तथा समुदाय को कई और मार्गदर्शक मिलेगें जो कि नए समुदाय शुरू कर सकते हैं।''

लर्नर हेल्पर की तरफ मुड़ता है, ''मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है। कृप्या भविष्य में प्रभु भोज के लिये हमारे लोगों को बहेतर बनाने में मेरी सहायता करना। और मुझे तुम बाकी लोगों की सहायता की भी आत्यश्कता है, हमारी प्रार्थना तथा हमारे प्रबन्धनों के विभिन्न हिससों को बेहतर बनाने के लिये । हेल्पर मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी संगीत से सहायत करो।'' लर्नर और लोगों को भीकाम देता है, जिस से की, तब के बाद से, केवल वो ही नहीं होगा जो आराधना की अगुआई करे।

सभा के बाद, लर्नर ने हेल्पर को बताया,''हमारे समुदाय के लिये मै इन निर्देशों का अनुकरण करूँगा। मैं अब यह महसूस कर रहा हूँ कि मैं लापरवाह हो गया था। जैसा कि पौलुस ने उन कुरिन्थियों को सख्त सजा दी, जो प्रभु भोज मानाने के दौरान यीशु के शरीर का आदर करने में असफल रहे थे । वो यीशु के महान त्याग को याद रखने में विफल रहे थे। वो यह देखने में विफल रहें कि जब हम आपस में मिलतें हैं तो हम यीशु का शरीर हाकतें हैं। परमेश्वर इस रहस्य को गंभीरता से लेता है, और तुम्हारे समुदाय में भी सब को लेना चाहीए। पौलुस ने हमें चेताया था कि हम इस समारोह मे पूरा योजन ना बनाये, क्योंकि लोग मसीह के शरीर तथा लहू में हिस्सेदारी से ज़्यादा खाने में रूचि दिखाते है, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 10:16-17 कहता है।''

क्रियात्मक कार्य

- जिनके पास संगीत की योग्यता तथा शिक्षा देने या ज्ञान के शब्द देनें का आत्मिक वरदान है, उन्हें प्रार्थना के विभिन्न मागों का मार्गदर्शक बन, हिस्सा लेने के लिये कहें।
- नए तथा रचम्नात्मक तरीकों से परमेश्वर के प्रति प्रेम को उनको अभिव्यक्त करने में प्रोत्साहित करें। जिनके पास संगीत की प्रतिभा हैं, उन्हें परमेश्वर की स्तुति के गीत लिखने को प्रोत्साहित करें, स्थानी संगीत शैली का प्रयोग करते हुए।
- इस खण्ड की कहानीयों को प्रयोग मे लाए, इस बात की शिक्षा देने के लिये कि जब भी हम उसकी आराधना के लिये कि जब भी हम उसकी आराधना के लिये इकटठा होते है वो उपस्थित रहता है।
- गायन के अलावा, आराधना में किसी भी तरिके से सबको हिस्सा लेने की योजना बनाए, बच्चो सहित।
- उन लोगों को पहले से ही तैयारी करने में सहायता करे जो आराधना के विभिन्न हिस्सेयें के मार्गदर्शक हैं।

III-4- प्रबन्धन-4

परमेश्वर के वचन को पढ़े, पढ़ायें तथा लागू करें

लर्नर अपने भाई हेल्पर से भेटं करता है, जो कि लर्नर के घर से कुछ किलोमीटर दूर रहता है, उसको परार्मश देने तथा देखने के लिए कि उसका कार्य कैसा चल रहा है। केयरगिवर, विद्यालय में अध्यापक, हेल्पर के बराबर में रहता है तथा परामर्श के सत्र में उपस्थित होता था, परून्तु अब हेल्पर के नए समूह के साथ मिलता है, जो उसके घर के पास है।

प्रार्थना के बाद, हेल्पर ने अपनी योजनाएं समझाई,

''लर्नर, तुमने मुझे यहाँ एक नया समुदाय शुरू करने के लिये प्रोत्साहित किया, उनके साथ जो यीशु का अनुकारण करते हैं। मुझे तुम्हारी सहायता की आवयश्कता है। मैं दुविधा में हूँ उन नियमों को लेकर, जो लोग मुझे बतातें हैं कि एक नए समुदाय को उनका अनुकरण करना चाहिये।'' केयरगिवर ने जोड़ा,''मैं भी दुविधा में हूँ । मेरा साला मि.फूलिश आकर इस नए समुदाय का मार्गदर्शन करना चाहता है। वो यह जिद करता है कि हेल्पर काफी युवा है तथा उसको कई साल बाईबल स्कूल में बिताने चाहिए, इस से पहले कि वो पादरी बने। वो कहता है कि प्रेरित पौलुस ने बाईबल की शिक्षा येरूसलम के एक विद्यालय में ली। उसने यह बात लगभग हमारे समुह में सबसे कही है। अन्य लोग भी यह मान रहें है कि हमें चीजों को दूसरी तरह से करना चाहिये । कुछ लोग मोमबत्ती तथा कुछ अन्य चीज़ों का प्रयोग हमारी प्रार्थना में करना चाहते है। हर एक हमारे नए समुदाय को बताना चाहता है कि क्या करना चाहिये।''

लर्नर उन्हें आश्वस्त करता है, ''हर चीज़ से ऊपर सहजता से यीशु को मानो। यह तुम्हारे नए समूदाय की नीवं है। अगर तुमने इसके अधिकारों को मसीह को आज्ञाओं के ऊपर स्थापित किया, तो शैतान धावा बोल देगा और खाली जगह को भर देगा, और तुम्हें हमेशा यही दुविधा रहेगी। अधिकारों के तीन स्तरों को याद रखो:

- पहला, वो करो जिसकी यीशु तथा उसके प्रेरितो ने आज्ञा दी थी, सबसे पहले।
- दूसरा, तुम्हारे पास उन चीज़ों को करने की स्वतंत्रता है जो कि प्रेरित करते थे पर उन्होनें आज्ञा नहीं दी थी, पर तुम यह माँग ना करना कि सब समुदाय उसे करें, क्यों कि सिर्फ परमेश्वर पृथ्वी के सारे चर्चो के लिये नियम बना सकता है।
- तीसरा, हर मानवी रीति को जाँचो, यह निश्चित करने के लिये कि वो तुम्हारे नए समुदाय में सुधार लाती है तथा आज्ञाकारिता में विध्न नहीं डालती।''

केयरगिवर पूछता है, ''अधिकारों के तीन स्तरों में से कौन सा बाईबल स्कूल जानें पर लागू होता है?''

केयरगिवर क्षण भर के लिये रूकता है, फिर तर्क देता है, ''यीशु ने हमें कभी आज्ञा नहीं दी कि हम किसी विधालय से स्नातक बनें। प्रेरितों ने जिन चरवाहों को नामित किया, चर्च संगठनो से अलग, कभी किसी को स्कूल में नहीं भेजा प्रशिक्षण के लिये। तो यह अधिकारों के तीसरे स्तर का है, मानव रीति, सबसे निम्न स्तर का।''

''ठीक! इसका यह मतलब नहीं कि संस्थागत प्रशिक्षण गलत है, पर सामधारणत्या हमको इसकी माँग उन पद्धतियों की जगह नहीं करनी चाहिये जो बाईबल हमें प्रयोग में लाने को प्रकट करती है। यहाँ तुम उस पद्धति को चुनने के लिये स्वतन्त्र दो जो तुम्हारे लिये सबसे अच्छा काम करे । एक शिक्षण संस्था, चर्चो से अलग, कुछ अवस्थाओं मे लाभकारी होती है, जहाँ पर चर्च बहुत शक्तिशाली है, तथा वहाँ पर काफी पढ़ें लिखे पादरी है।पर यह हमारे जैसे नए आँदोलन का सर्मथन नहीं करती ।''

केयरगिवर पूछता है,'' तीनों अधिकारों के स्तरों में से किसके अर्न्तगत हम नए मार्गदर्शक को सिखाना निर्धारित करतें हैं जैसे पौलुस ने किया?''

लर्नर ने उत्तर दिया, ''हमारे प्रभु यीशु मसीह एवं प्रेरित सीखने वालों को परामर्श देते थे, पर आज्ञा के रूप में नहीं। इसलिऐ नए मार्गदर्शकों को परामर्श देना स्तर दो का है, एक वैकल्पिक प्रेरितों के कार्य।मैं हेल्पर को रेसे प्रशिक्षित करना अधिक पसंद करूँगा जैसा मि.वाईज मुझे प्रशिक्षण दे रहें थे। हम उसको उसी तरह से करने की कोशिश करतें है जैसे यीशु तथा पौलुस नए मार्गदर्शकों को प्रशिक्षण देते थे। मि.वाईज़ कहते थे कि वो पौलुस प्रेरित की नकल करतें हैं, जिसने कई नए मार्गदशकों को प्रशिक्षण दिया। इनमें से एक नया मार्गदर्शक जिसे पौलुस सिखाने के लिये ले गया था, वो युवा परंतु आत्मिक तौर पर परिपक्व था, जिसका नाम तिमुथियुस था। बाद में, जब पौलुस और जगहों पर समुदाय शुरू करने के लिये यात्रा कर रहा था या रोम में कारागार में बैठा हुआ था–वो तिमुथियुस को प्रोत्साहित करने के लिये पत्र लिखा करता था, समझाता था कि कैसे उसे एक अच्छा चरवाहा बनना चाहिये। उसने उसे औरों को प्रशिक्षित करने को कहा था, जो कि आगे फिर औरों को प्ररिाक्षित करें, एक पुर्नउत्पादक लड़ी के परिणाम जैसा।''

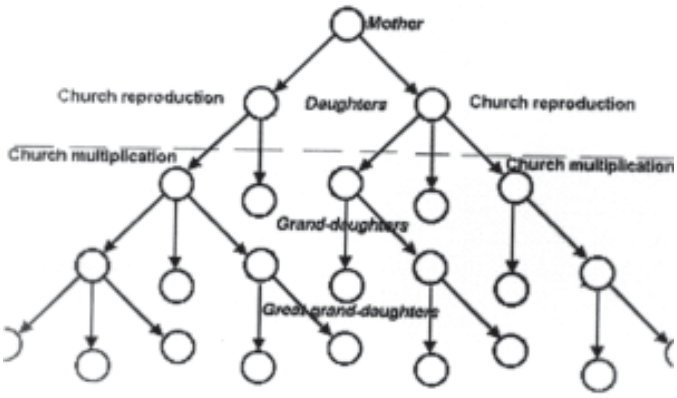

''मैं देखता हूँ पुर्नउत्पादक लड़ी से तुम्हारा क्या मतलब है।'' केयरगिवर ने कहा।''मि.वाईज ने लर्नर तथा अन्य को प्रशिक्षित किया। र्लनर तुम्हें प्रशिक्षण दे रहा है,हेल्पर। तुम अन्य मार्गदर्शकों को प्रशिक्षण देना, जैसे-जैसे हम नए समुदायों के काम करेंगें। मैं चाहता हूँ कि तुम बईबल को प्रयोग करने दिखाओं जैसे मि.वाईज़ करतें हैं। फिर हम सब प्रेरित पौलुस के उदाहरण का अनुकरण करेंगें।''

''बढ़िया,'' लर्नर बोला, "हेल्पर, क्या तुम केरारीगवर को ढूंढने में मदद कर सकते हो कि पौलुस ने तिमुथियुस को क्या लिखा, बाईबल को प्रयोग करने के बारे में?"

अभ्यास

2 तिमुथियुस 3:10 से 4:5 में देखें केयरगिवर को खोज करने में हेल्पर क्या सहायता करता है:

- पौलुस ने युवा मार्ग दर्शक तिमुथियुस को क्या कार्य दिये?
- हम यह कैसे जानतें हैं कि हम परमेश्वर के वचन के रूप में बाईबल पर विश्वास कर सकतें हैं?
- हमें दूसरें की सहायता करने के लिये बाईबल को किस रूप मे प्रयोग करना चाहिये?
- अपने कार्यो से तथा अपने वचनों (शब्दों) से पौलुस ने तिमुथियुस को किन तरीकों से शिक्षा दी?
- हमें परमेंश्वर ने क्या दिया, जिस से की दूसरों को यीशु में विश्वास के द्वारा मुक्ति के बारे मे निशचिंतता से शिक्षा दे सके?

हेल्पर केयरगिवर को समझाता है, जबकि लर्नर सुनता है''पौलुस ने तिमुथियुस को धर्मगन्थ का प्रयोग सिखाने में डाँटने में, सुधारनें में तथा सही जीवन यापन का प्रशिक्षण देने में करने के लिये बताया। लर्नर ने मुझे सिखाया था कि धर्मगन्थ परमेश्वर की साँसे है। उनमें परमेंश्वर के अधिकार है तथा वो सत्य का ज्ञान करातें हैं। जब हम धर्मगन्थ की बातों को मानतें हैं, हम परमेश्वर की मानते है। जब हम बईबल पढ़तें हैं तथा उसको मानते है, पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन करता है। वो हमें मसीह का आज्ञाकारी बनाता है।''

हेल्पर ने लर्नर को सरसरी निगाह से देखा, जो कहता है,'' तुम इसे ठीक तरीके से सिखा रहो हो, जैसे कि मि.वाईज़ ने मुझे सिखाया था तथा मैनें तुम्हें सिखाया है। कृप्या जारी रखो।''

पौलुस ने तिमुथियुस को परमेश्वर के द्वारा ही नहीं परन्तु उसके उदाहरण से भी सिखाया। उन दोनों आदमीयों में एक शक्तिशाली रिश्ता था। तिमुथियुस ने पौलुस का जीवन, उसका विश्वास तथा उसके दुख देखे थे। वो अपने जीवन में परमेश्वर के वचनों के हर ब्यौरे को पूरा करने में कभी नहीं चूक। परमेश्वर के वचनों के प्रति अपनी आज्ञाकारिता के कारण यीशु और पौलुस दोनों का अत्याचार सहना पड़ा। शैतान हर संभव तरीके से यीशु का विरोध करता है।"

केयरगिवर पूछता है, "शैतान यीशु का कैसे विरोध करता है?"

लर्नर ने हेल्पर को समझाने के लिये कहा। हेल्पर बोला "चलो हम शैतान द्वारा यीशु पहली बड़ी परीक्षा को फिर से देखते हैं।"

अभ्यास

मत्ती 4:1-11 से देखें

- किन तीन चीजों से शैतान ने यीशु को प्रलोभन दिया?
- हर प्रलोभन के उत्तर में यीशु ने क्या उदाहरण दिया?
- उसकी परीक्षा के बाद यीशु की देखभाल के लिये कौन आया?

हेल्पर ने समझाया, "शैतान चाहता था कि यीशु परमेश्वर तथा परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करना छोड़ दे। यीशु ने हर बार धर्मगन्थ के अनुसार शैतान के प्रलोभनों का उत्तर दिया। यीशु ने ईश्वर के वचनों को माना ना कि शैतान के शब्दों का अनुकरण किया। परीक्षा का सामना करना कठिन है। यीशु ने अपनी कठिन परीक्षा, परमेश्वर के वचनों का अनुकरण करके विजयी हुआ। फिर स्वर्गदूत आए और उसकी देखभाल करी।"

धर्मग्रन्थ को कैसे पढ़ें

केयरगिवर ने हेल्पर से कहा, "तुम बाईबल को परमेश्वर का वचन कहते हो। उससे तुम्हारा क्या तात्पर्य है मैं सोचता था कि वो मनुष्यों द्वारा लिखी गई है!"

हेल्पर समझाता है जो लर्नर ने उसे सिखाया था। "बाईबल 66 पुस्तकों का एक संग्रह है जो पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन से मनुष्यों द्वारा लिखा गया था। इन पुस्तकों में प्राचीन कानून, इतिहास, कविता भविष्यवाणी, यीशु का जीवन, तथा नए समुदायों के लिये पत्र, सम्मिलित है। सारी बाईबल की विषय वस्तु यीशु मसीह है। यूहन्ना 3:16 उसके संदेश का सारांश निकालता है। क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश ना हो पर अनन्त जीवन पायें।"

"मैं सोचता था कि बाईबल दो पुस्तकें है, पुराना नियम तथा नया नियम।"

"बाईबल दो भागों में विभाजित है," हेल्पर समझाता है जो उसने पिछले हफ्ते लर्नर से सीखा था, "पुराना नियम परमेश्वर की प्राचीन इज़रायल के साथ वाचा से संबंधित है, जो यह थी कि अगर उन्होने उसके कानूनों को माना तो वो उन्हें उसने पुराने कानून का पूरी तरह से पालन किया, तथा उसके मृत्यु के कानून से हमें स्वतन्त्र किया। अब हम पुराने नियम के रिवाज़ो को नहीं मानते, जैसे कि सांतवे दिन, शनिवार को कार्य करने पर पत्थराव करना। नया नियम परमेश्वर को मनुष्यों के साथ नई वाचा से संबंधित है, जो यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा हमको मुक्ति देना है। वो हमको यीशु में प्रेम के साथ सेवा करना सिखाता है। हम पुराना नियम ध्यानपूर्वक इसलिये पढ़ते हैं कि वो हमें परमेश्वर के व्यक्तित्व तथा यीशु के कार्यों के शक्तिशाली उदाहरण इस प्रकार से देता है कि उन्हें समझने में आसानी है।"

"नया नियम हमें बताता है कि हम यीशु मसीह के शिष्य कैसे बनें। उसमें सम्मिलित हैं:

सुसमाचार जो कि यीशु मसीह का जीवन मृत्यु तथा पुर्नउत्थान दर्शाती है। वो कानून की पुस्तकों के अनुरूप है, पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकें। प्रेरितों के काम बताते हैं कि कैसे पवित्र आत्मा की शाक्ति से प्रेरितों ने समुदाय का गठन किया, यीशु के स्वर्ग में ऊपर उठने के पश्चात्। वो पुराने नियम के ऐतिहासिक पुस्तकों के अनुरूप है जो न्यायीयों तथा इस्त्रायली राजाओं के साहसिक कार्यों संबंधित है।

पत्र जो प्रेरितों तथा उनके सहकर्मीयों ने नए समुदायों तथा विश्वासीयों की सहायता के लिये लिखे थे, पुराने नियम की कार्य रचनाओं, जैसे कि नीतिवचन तथा भजन संहिता, के अनुरूप है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रेरित युहन्ना द्वारा भविष्य की पूर्व सूचना देती है तथा पुराने नियम में बाद के भविष्यवक्ताओं जैसे यशायाह, यिर्मयाह तथा योना की पुस्तकों के अनुरूप है।"

केयरगिवर पूछता है, "बाईबल के अध्ययन करने का श्रेष्ठ तरीका क्या है?" हेल्पर लर्नर की तरफ देखता है पर लर्नर फिर से उसे ही उत्तर देने को कहता है, "यह तुम्हारा शिष्य है हेल्पर तुमने यह चीजें सीख रखी हैं, तुम्हें उसे शिक्षा देनी चाहिये।

हेल्पर ने केयरगिवर को समझाया, "जब तुम बाईबल का अध्ययन करो तो प्रार्थना से प्रारंभ करो, फिर बाईबल की किसी पुस्तक में से पढ़ो या प्रार्थना या विश्वास जैसे विषय पढ़ो। तुम जितने चाहों उतने दिन उसे समाप्त करने में ले सकते हो। केवल एक पद

के ऊपर ही ध्यान मत दो, क्योंकि तुम उसका गलत अर्थ समझ सकते हो। उसके बजाए उसे पूरे अनुच्छेद के साथ पढ़ो। जो पद तुम पढ़ रहे हो उससे पहले तथा उसके बाद जो आता है पढ़ो जिस से कि तुम उसका संदर्भ समझ सको। अगर तुम अनुच्छेद को ना समझ पाओ तो पूरा अध्याय पढ़ो। अगर अध्याय समझ में ना आए तो पुस्तक पढ़ो।"

"संदर्भ से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"संदर्भ एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, कि क्या हो रहा है," हेल्पर बोला, "बिल्कुल अभी क्या कहा या लिखा गया था, तथा आगे क्या आयेगा। यह जानने के लिये कि किसने कहा या लिखा, किस से कहा तथा क्यों, हम संदर्भ ढूँढते हैं। क्या वो अध्याय में अलंकारिक दृष्टि दर्शाते हुए हैं, या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाले में है, जिसकी हम शब्दिक व्याख्या करते हैं। क्या शैतान बोल रहा है, या कोई बुरा व्यक्ति। अगर ऐसा है तो जो कहते हैं ना हम उस पर विश्वास करतें हैं ना वो कार्य करते हैं।"

"तुम्हारे कहे अनुसार, संदर्भ पढ़ने के पश्चात भी अगर हम नहीं समझ पाते, तो?"

"किसी भी चीज़ की दूसरे को शिक्षा मत दो जो तुम्हें समझ नहीं आती," हेल्पर ने उत्तर दिया। "नए नियम से शिक्षा देना शुरू करो। बाद में, पूरी बाईबल पढ़ो। बाईबल पढ़ने से कोई लाभ नहीं अगर हम उसकी शिक्षाओं को नहीं मानते जो तुमने सीखा है उसका प्रयोग करने के लिये परमेश्वर से सहायता माँगो।"

"जब तुम बाईबल का एक अनुच्छेद पढ़ते हो, तुम उसे ज्यादा अच्छी तरह समझोगे, अगर तुम इन बातों को देखोगें:

पुस्तक किसने लिखी तथा वो किसके लिए लिखी गई?

कब और कहाँ, अनुच्छेद में दी गई घटनाऐं घटी?

अनुच्छेद में कौन बोल रहा है?

अनुच्छेद हमको क्या करने के लिये तैयार करता है?

धर्मग्रन्थ की शिक्षा कैसे दें तथा यीशु के शिष्य बनायें

हेल्पर कहता है, "मैं एक गाना लिखने जा रहा हूँ कि परमेश्वर के वचनो को अध्ययन कितनी चमत्कारिक संपन्नता देता है। गाने में किस चीज़ पर ज्यादा महत्व देना चाहिए?"

केयरगिवर ने सुझाव दिया, "तुम उल्लेख कर सकते हो कि जब हम पवित्र आत्मा की शक्ति में धर्मग्रन्था का प्रयोग करते हैं, तो वो हमारे जीवन को बदल देता है।"

लर्नर ने जोड़ा, "हम एक अच्छे राजा योशिय्याह तथा नवीनीकरण के बारे में गा सकते हैं। उसने परमेश्वर के वचन को पढ़ा तथा उसका पालन किया और अपने लोगों में आत्मिक नवीनीकरण लाया।

अभ्यास

2 इतिहास 34:1-13 में देखें:

- परमेश्वर के प्रति योशिय्याह राजा का क्या व्यवहार था?
- परमेश्वर को पाने के लिये योशिय्याह ने क्या किया?

2 इतिहास 34:14-21 में देखें:

- राजा योशिय्याह क्यों भयभीत था, तथा उसने और उसके लोगों ने जो कर दिया था, उसके लिये क्यों पश्चाताप किया?

2 इतिहास 34:22-33 में देखें:

- राजा योशिय्याह के पश्चाताप और परमेश्वर के वचन पर आज्ञाकारी प्रतिक्रिया का क्या परिणाम निकला?

जब वो हेल्पर के घर में बात कर रहे थे, तो केयरगिवर ने लर्नर से कहा, "मैं तुम्हारी तरह परमेश्वर के वचनों का उपदेश देना चाहता हूँ। क्या तुम समझ सकते हो कि कैसे एक अच्छा संदेश तैयार करूँ?

लर्नर ने केयरगिवर तथा हेल्पर को समझाया जो मि. वाईज़ ने उसे सिखाया था, "जब तुम उपदेश देने की तैयारी करते हो, यह प्रारंभिक चरण करो: योजना, अध्य्यन, व्याख्या तथा लागू करना।

- **अपने संदेश की योजना बनाना :** परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिये प्रार्थना करो। आपका समुदाय कौन सा विशेष सत्य सुनना चाहता है इसके बारे में सोचें? क्या कोई प्रबन्धन है जिसको बलवान करने की आव्यश्कता है? बाईबल का कौन सा भाग आपके समुदाय को यीशु के प्रति प्रेम तथा सेवा में बलवान बनायेगा?
- **धर्मगन्थ का अध्ययन करे:** आपके लोगों की आव्यश्कता के लिये बाईबल में कहाँ शिक्षा दी गई है, ढूँढे। बाईबल की पुस्तक, या छोटा अनुच्छेद या कोई विषय ढूँढे। विषय एक अध्ययन है, एक प्रकरण है जो कि उस सत्य से संबंध रखता है जिसकी शिक्षा देने की आपकी योजना है। बाईबल का अध्ययन कैसे करें जिस प्रकार हम विचार विमर्श कर रहें थे। अपनी शिक्षा देने से पहले आपको एक प्रकरण या पुस्तक कई सप्ताह तक पढ़नी पड़ सकती हैं जो महत्वपूर्ण बिन्दु मिलें उन्हें लिख लें। अपने जीवन में शिक्षा को लागू करने का एक व्यवहारिक तरीका ढूँढे।
- **परमेश्वर के वचन की व्याख्या करें:** अपने संदेश को एक प्रश्न या एक उदाहरण के साथ प्रस्तुत करें जो कि उद्देश्य को साफ समझायें। जो महत्वपूर्ण बिन्दु आपने पढ़ने के दौरान लिखे थे, उन्हें समझाएं। लोगों को अपने जीवन में इस शिक्षा को लागू करने के लिये अपने निजी जीवन के, या धर्मगन्थ में से कहानीयाँ या उदाहरण दें।
- **परमेश्वर के वचन को लागू करें:** लोगों को बतायें कि कैसे यह अनुच्छेद उनके जीवन पर सीधा लागू होता है। अंत में, जो उन्होंने बिल्कुल अभी सुना, उसको प्रयोग करने के लिये तुरन्त प्रोत्साहित करें।"

हेल्पर ने लर्नर से पूछा, "क्या तुम आज रात हमारे नए संगठन को उपदेश दोगे? उनको धर्मग्रन्थ के अधिकारों के बारे में जानने की आव्यश्कता है, जैसे कि तुमने आज केयरगिवर तथा मुझे सिखाया।"

लर्नर कहता है, "नहीं धन्यवाद, पर धर्मगन्थ के अधिकारों के बारे में तुम्हारे समुदाय के लिये संदेश तैयार करने में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। हम 2 तिमुथियुस 3:16-17 में फिर से देखें। तुम राजा योशिय्याह तथा यीशु की परीक्षा की कहानीयाँ, दृष्टान्तों के रूप में सम्मिलित कर सकते हैं।"

उस शाम हेल्पर घबराया हुआ था जब वो अपने लोगों को संदेश की शिक्षा दे रहा था। उसने उन्हें अधिकारों की तीन स्तरों के लिये बताया। पहला नए नियम की आज्ञायें है। दूसरा स्तर नए नियम की वो प्रथाएँ थी जिनकी कोई आज्ञा ना थी। तीसरा स्तर मनुष्य के रिवाज है। उसने तीनों स्तर अच्छी तरह समझाएं।

समाप्त करने के बाद, हेल्पर ने टिप्पणी करी, "तुम में से कुछ लोग चाहते थे कि मैं कुछ सालों के लिये बाईबल स्कूल चला जाऊँ। मैं अब यह देखता हूँ कि यह ना तो मसीह की आज्ञा थी तथा ना ही प्रेरितों की प्रथा। यह पादरीयों के प्रशिक्षण के लिए एक साझा रिवाज है। मैं लर्नर से परमेश्वर का वचन सीखते रहने की योजना बना रहा हूँ क्योंकि वो तुम्हारे ऊपर प्रभावी तौर से परमेश्वर का वचन लागू करने में सहायता कर रहा है। हर दो सप्ताह में लर्नर मुझ से मिलता है तथा दिखाता है कि कैसे धर्मग्रन्थ में से ज्यादा से ज्यादा इस नए समुदाय के जीवन मे लागू करना है।"

क्रियात्मक कार्य

- अपने सुदाय को धर्मग्रन्थ के अधिकारो की शिक्षा देने के लिये इस भाग की कहानीयों का प्रयोग करें।
- अपने समुदाय को बाईबल की पुस्तकें, तथा हर पुस्तक के लेखन के तरीके जैसे कविता, इतिहास, पत्र या भविष्यवाणी, स्मरण करने में सहायता करें।
- अपने समुदाय की उसके कार्यो के लिये अधिकारों के तीनो स्तरों में भेद करने में सहायता करें।
- चारों मूल चरण के पालन द्वारा अपना संदेश तैयार करें: योजना अध्ययन, व्याख्या तथा लागू करना।
- अपने समुदाय के अन्य लोगों को संदेश तैयार करने में सहायता करें जो कि यीशु मसीह के लिये प्रेम तथा सेवा को प्रबल करें।

III-5-प्रबन्धन-5

नए समुदाय शुरु करें

लर्नर के घर पर एक आराधना सभा के बाद मि. फूलिश, दो महिलाओं को साथ में खड़ी करके, लर्नर को बताया, हमें तुम्हारे साथ बात करनी चाहिये। हमने यह निर्णय लिया है कि तुम्हारे शिष्य हेल्पर को एक और चर्च शुरु नहीं करना चाहिये। उसमें उपस्थित होने के लिए कई लोग हमारे चर्च को छोड़ चुके हैं। यह हमारे चर्च को निर्बल बनाता है। तुमको हेल्पर के संगठन के लोगों को यहाँ वापस आने के लिये कहना चाहिये। वो एक विभाजन कर रहें हैं। हेल्पर को हमारी सेवा के लिये, तुम्हारे साथ यहाँ कार्य करना चाहिये।"

"मैं तुम्हारी परेशानी समझता हूँ," लर्नर ने उत्तर दिया, "पर मेरे भाई, हेल्पर वो कर रहा है जो मि. वाईज़ तथा मैनें उससे करने के लिये कहा है। वो अपनी पत्नी राशेल के कई रिश्तेदारों से मिल रहा है, जो उस क्षेत्र में रहते हैं। वो सुसमाचार पर अनुक्रिया कर रहें हैं। मैं नहीं चाहता कि वो यहाँ आएं। वो परमेश्वर के राज्य के विकास को सीमित कर देगा। परमेश्वर के राज्य को हमारे सारे देश में समुदायों का गुणन करके फैला दो।"

"मैं सहमत नहीं हूँ," उनमें से एक महिला बोली, "पर अगर तुम एक नया समुदाय शुरु करते हो तो तुम्हें उसका मार्गदर्शन लेना चाहिये। हेल्पर उसको मार्गदर्शन करने में, एक विश्वासी के रुप में बहुत नया है।"

लर्नर धीरे से बोल, "हेल्पर का नया संगठन बहुत जल्दी ही एक शक्तिशाली समुदाय बन जायेगा। वो मेरा नहीं, परन्तु मसीह का है। हरेक नए प्रारंभ हुए समुदाय का मार्गदर्शन करने का मेरे पास समय नहीं है। मैं हेल्पर को प्रशिक्षण दे रहा हूं जिससे कि वो उस समुदाय का मार्गदर्शन कर सके तथा अन्य विश्वासी प्रशिक्षित करें पवित्र आत्मा लर्नर को मार्ग दिखायेगा, जैसे कि उसने हमको दिखाया है।" उसने पूछा, क्या तुम सुनना चाहते हो कि कैसे पौलुस ने समुदाय प्रारम्भ करे थे?" उनमें से एक महिला "हाँ" बोली तथा कुछ लोग सुनने के लिये एकत्रित हुए, तथा लर्नर ने दुबारा उन्हें बैठने के लिये आमंत्रित किया।

अभ्यास

प्रेरितों के काम, अध्याय 13-14 में देखें:

- अन्तिया के लोगों ने पौलुस तथा बरनबा को कैसे चुना तथा उनको नए समुदाय प्रारम्भ करने के लिये अलग-अलग भेजा?
- कार्य संगठन ने पिसिदया, अन्तिया तथ लुस्त्रा में सुसमाचार कैसे प्रस्तुत किया?
- जब यहुदियों ने उनको कुछ नगरों से निकाल दिया तो उन्होंने क्या किया?
- पौलुस तथा बरनबा ने अपने वापसी के रास्ते में उन क्षेत्रों में क्या किया जहाँ लोग उनके संदेश के द्वारा विश्वास से आए थे?
- उन्होंने क्या किया जब वो खुद अपने समुदाय में अन्तिया में वापस आए?

लर्नर ने उस छोटे समूह को जो कि सुनने के लिये एकत्रित हुए थे, समझाया, कि वो म. फूलिश से क्या कह रहा था। "जब समुदाय आराधना तथा उपवास में था, उन्होंने जाना कि परमेश्वर ने विशेष कार्य के लिये पौलुस तथा बरनबा को अलग-अलग भेजा है। सरदारों ने उन पर भरोसा जताया, उनके लिये प्रार्थना करी तथा उन्हें एक तोली के रुप में भेजा। वो जहाँ कहीं भी गये, उन्होंने ग्रहणशील लोग ढूँढे, तथा उन्हें यीशु के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कैसे यीशु, वो चुना हुआ जिसकी परमेश्वर ने वाचा की, मारा गया, परन्तु फिर जी उठा और कई ने उसे देखा। उन्होंने बीमारों के लिये प्रार्थना करी, तथा कुछ चंगे हो गएं तुस्त्रा में, लोगों का; उन्हें देवताओं के रुप में पूजा करने से मना किया तथा मूर्तिपूजा छोड़ने को मना किया तथा एक सच्चे परमेश्वर पर मुड़ने को कहा।

गैर यहुदियों ने अनुक्रिया की तथा बहुतों ने विश्वास किया, परन्तु बहुत यहुदियों ने संदेश को अस्वीकार कर दिया। जब वो वहाँ से निकाल दिये गए, तो पौलुस तथा बरनबा ने अपने पैरों की धूल झाड़ी तथा दूसरे स्थान पर चले गए। अपने वापसी के रास्ते में, इन ही नगरों के होते हुए, पौलुस तथा बरनबा ने हरेक समुदाय में मार्गदर्शन करने के लिये प्राचीन नियुक्त किये तथा उन्हें परमेश्वर के समक्ष प्रार्थना तथा उपवास से प्रतिबद्ध किया फिर वो घर वापस आए, समुदाय को बताने के लिये, जिसने उन्हें बाहर भेजा था। यही है, जो हमारा समुदाय भी कर रहा है, हेल्पर तथा उसके नए झुँड से प्रारम्भ करके। मि. फूलिश एक गुस्साये घोड़े की तरह हिनहिनाये तथा दोनो महिलाओं को साथ लिये चले गए।

नए समुदायों का आरम्भ करना

लर्नर फिर से हेल्पर से मिलने तथा परामर्श और प्रोत्साहन देने गया। उसने उसे बताया, "हेल्पर, राशेल के परिजनों ने सुसमाचार के प्रति जल्दी ही प्रतिक्रिया करी, जैसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई और यहुदियों ने की थी, क्या तुमने उन सब से पश्चात्ताप करने, यीशु में विश्वास करने तथा उसके नाम बपतिस्मा लेने के लिये पूछा है?"

"हाँ। मुझे आगे क्या करना है?"

"उन्हें परमेश्वर की आराधना करना बताओ, आराधना के मूल तत्वों के साथ, जैसे तुमने हमसे, बड़े समुदाय से सीखी थी। उनको विश्वासी बनाने में सहायता के लिए केयरगिवर को अपने साथ रखना। आधारभूत बातों को भूलना नहीं उन्हें प्रार्थना करने, परमेश्वर के वचन को सीखने, अपने पाप स्वीकार करने तथा क्षमा का आश्वासन पाने, प्रभु भोज मनाने तथा भाईचारा लेने और देने, की शिक्षा देना। हर एक को किसी तरह की हिस्सेदारी देना। उन्हें यीशु की सात मूल आज्ञाओं का पालन करना सिखाना। क्या तुम्हें वो याद है?"

"मैं उन्हें गाता हूँ," हेल्पर उत्तर देता हैं "मैं कभी नहीं भूल सकता।"वो गाना गाता है, जिसमें वो सूचीबद्ध है, पश्चात्ताप तथा विश्वास, बपतिस्मा लेना, प्रेम प्रभु भोज देना, प्रार्थना, अर्पण करना तथा शिष्य बनाना है। "परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें यह सब करने में सहायता करता है।"

"बहुत अच्छा," लर्नर बोला, "जब संगठन नियमित रुप से मिले, अन्य अच्छे मार्गदर्शक चुनो, तथा प्रार्थना के साथ उन पर भरोसा करो। तुम उपवास भी कर सकते हो, जैसे प्रेरित करते थे, हाँलाकि उन्होंने आज्ञा नहीं दी थी। एक से अधिक मार्गदर्शक पास में होना अच्छा होता है, जैसे कि पौलुस ने किया था, उन नए समुदायों में जो उसने शुरु किये थे। यह मार्गदर्शक अस्थाई हो सकते हैं। मतलब, तुम उनका अस्थाई नामांकन करो, ये देखने के लिये कि वो कितना अच्छा करते हैं। यह जानने के लिये समय लगता है कि किसको परमेश्वर ने इस उत्तरदायित्व के लिये वरदान दिया ह यीशु की सात मूल आज्ञाओं के पालन को तुरन्त लागू करने में मार्गदर्शकों की सहायता करो। जो तुमने मुझसे सीखा है, उनकी ओर बढ़ाओं। मैं तुम्हारी सहायता करुँगा, जब भी तुम्हें उसकी आवश्यकता होगी।" दो सप्ताह पश्चात लर्नर हेल्पर से मिलने गया। हेल्पर ने बताया, "जो तुमने मुझे सिखाया था मैं उसे अभ्यास में लाया हूं। मैं, राशेल

के और भी परिजनों से मिला हूँ। फिर मैं उन्हें उनके दोस्तों के पास मिलने ले गया। बहुतों ने यीशु को प्राप्त किया। मेरे नए समुदाय में हर एक जन उसका अभ्यास कर रहा है जो तुमने मुझे उन्हें सिखाने के लिये सिखाया था।"

कुछ सप्तहा पश्चात् लर्नर फिर से हेल्पर से मिलता है। हेल्पर ने बताया, "हमने एक और नए समुदाय का प्रारंभ किया है। वो मेरे ससुर के घर में मिलते हैं। मैंने राशले के दो चाचाओं को अस्थाई प्राचीन नियुक्त करके भरोसा किया।"

"मैं यहाँ पर पवित्र आत्मा को काम करते देख रहा हूँ। अब हमारे पास एक छोटा सा समुदाय हैं मैं प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ रहा था। मुझे तुम्हें यह बताने दो कि पहला चर्च। कैसे शुरु हुआ, जिससे कि तुम राशेल के दोनों चाचाओं को यहीं चीज़े सिखा सको जब तुम उन्हें प्रशिक्षित करना जारी रखो।"

अभ्यास

प्रेरितों के काम 1 में देखें:

- स्वर्ग में ऊपर उठने से पहले, यीशु ने अपने शिष्यों को कहाँ पर सुसमाचार ले जाने को कहा था?
- उनकी शक्ति कहाँ से आती थी?

प्रेरितों के काम 2 में देखे:

- क्या हुआ जब पवित्र आत्मा शिष्यों के ऊपर आया?
- पतरस ने यीशु के बारे में भीड़ से क्या कहा?
- पश्चातापी लोगों ने क्या चीज़ें करी, जिसका पहले समुदाय के जन्म के रुप में परिणाम निकला?

लर्नर ने हेल्पर को समझाया, हेल्पर के घर मे, "यीशु ने अपने शिष्यों को हरेक घर में सुसमाचार ले जाने की आज्ञा दी, उनसे प्रारंभ करके जो हमारे सबसे निकट है। उसने स्वर्गीय शक्ति, पवित्र आत्मा का वादा किया। वो पेन्तीकुस्त के दिन आया तथा शिष्यों को भर दिया। कुछ लोग इसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कहते हैं पवित्र आत्मा ने उनको शक्ति से भर दिया। हमें अहसास दिलाने के लिये या व्यक्तिगत अनुभव कराने के लिये वा साधारणतया ऐसा नहीं करता है। प्रेरितों ने भीड़ को उनकी भाषा में सुसमाचार बताया, जो कि प्रेरितों ने कभी नहीं सीखी थी। पतरस ने ऐलान किया कि यीशु ने कई चमत्कारों से यह प्रमाणित किया था कि वो ही परमेश्वर का चुना हुआ है जब यीशु हमको हमारे पापों से मुक्त करने के लिये मरा तथा दफनाया गया, उसके बाद वो जीवन में फिर उठ गया।"

"मुझे याद है," हेल्पर बोला, "तीन हज़ार लोगों ने पतरस को सुना तथा अपने पापों का प्रायश्चित किया। प्रेरित उनको बपतिस्मा देते थे तथा उसी दिन चक्र में सम्मिलित कर लेते थे। नए विश्वासी प्रत्येक दिन एकत्रित होकर घरों में प्रार्थना करते थे तथा यहुदियों के मंदिर के परिसर में भी। वो यीशु की सात मूल आज्ञाओं का अभ्यास तुरन्त शुरु कर देते थे, और पहल चर्च येरुशलेम में प्रारंभ हुआ। वो एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे।"

यीशु की प्रेम करने तथा एक दूसरे को देने की आज्ञा का व्यवहारिक तरीकों से पालन करना।

परमेश्वर ने हेल्पर के समुदाय को आशीषें दी तथा उसका सामान्य तरीके से विकास हुआ जैसे-जैसे लोगों ने अपने मित्रों तथा परिजनों को यीशु के बारे में बताया। हेल्पर लर्नर की लकड़ी के काम की दुकान में यह बताने जाता है कि, "मेरा समुदाय लोगों के लिये बहुत ज्यादा बड़ा हो गया है, कि वो भाईचारा तथा एक दूसरे की सेवा का आनंद लें, जैसा कि वो पहले करते थे। वो सिर्फ आते हैं, निष्क्रिय होकर सुनते हैं। वो सब एक दूसरे को अब नहीं जानते, तथा मेरे घर में पूरे नहीं आते है। हमारा एक दूसरे के प्रति प्रेम ठंडा पड़ रहा है, क्योंकि हमारा संगठन बड़ा हो गया है। लोग एक दूसरे को नहीं जानते। वो एक दूसरे से बात नहीं करते है। अब वो एक बड़ा, प्यार परिवार नहीं रह गया है। वो प्रचार भी नहीं करते, जैसा कि जब संगठन छोटा था, करते थे। हम यीशु के प्रति अपना साक्ष्य तथा अपना भाईचारा शक्तिशाली कैसे रख सकते हैं?"

लर्नर ने उत्तर दिया, "यह एक सांझी समस्या है। समुदाय के दो प्रमुख कार्य होते हैं, लोगों को यीशु के पास लाना तथा उनको यीशु का अज्ञाकारी शिष्य बनाना। तुम्हें अपने समुदाय को यह कार्य करने के लिये, छोटे संगठनों से संघटित करने की आवश्यकता है। यहाँ पर एक सुझावों की सूची है छोटे संगठन कैसे बनाएँ, नए छोटे संगठन के मार्गदर्शकों के लिये, जो कि थोड़े से परिवारों के साथ अपने घर पर मिलेंगे।" वो लिखता है:

हरेक छोटा संगठन या सैल (Cell) नए नियम का समुदाय है; वो हर चीज़ करता है जो कि एक समुदाय को करना चाहिए, भले ही वो एक बड़े समुदाय के शरीर का हिस्सा है। इसी तरह से प्रेरितों के काम में प्रेरित, समुदाय को संघटित करते थे। नगर के चर्चो में बड़ी संख्या में लोग होते थे, पर वो कई समुदायों से मिलकर बनते थे, जो कि छोटे संगठनों में घरों में मिलते थे, प्रार्थना करते थे, परमेश्वर के वचन को सीखते थे तथा प्रभु भोज मनाते थे।

अगर संभव हो तो मार्गदर्शक के घर में सभा करना छोड़ दें। लोग यह सोच सकते हैं कि संगठन उसका है, तथा दूसरों के घरों में जाने से हम यीशु के लिये अधिक लोगों को जीत सकते हैं।

मार्गदर्शक को संगठन से चढ़ावे के धन की देखभाल नहीं करनी चाहिये। किसी और का नामांकन करें। नेता को चरवाहें बनाने के लिये स्वतंत्र होने देना चाहिये।

छोटे संगठन को सिर्फ उपदेश ही नहीं देने चाहिये, इसके बजाए उनके साथ में बाईबल का अध्ययन करना चाहिये। जो अनुच्छेद आप पढ़ रहे हो, उसके बारे में प्रश्न पूछने चाहिये। सबकी उस बारे में बात करने देनी चाहिये। उनको वरदानों के अनुसार, आराधना में, शिक्षा में, हिस्सा लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

पूरे परिवारों को गतिविधियों में सम्मिलित करना चाहिये। हर बार जब आप मिलते हैं, पूरा खाना नहीं खाना चाहिये। यह मेजबान के लिऐ एक बोझ होगा, और प्रभु भोज से ध्यान हटायेगा, जैसे पौलुस ने चेताया था। कुरिन्थियों में। अजनबी लोगों को शिक्षा देने की अनुमति नहीं देनी चाहिए आप तथा अन्यों को पहले उसके जीवन तथा शिक्षाओं की जाँच-परा कर लेनी चाहिये।

नए मार्गदर्शक बनाने के लिये, लोगों को खोजें, जो संगठन में आप के साथ कार्य कर सके। जो कुछ भी आपने सीखा है उनकी तरफ आगे बढ़ाए। उनको उनके अपने संगठन, कितनी जल्दी हो सके, बनाने का प्रोत्साहन देना चाहिये। यह यीशु के लिए आंदोलन को विकसित करता रहेगा।

लर्नर के लकड़ी के कारखाने में दो महीने पश्चात्, हेल्पर अपने कार्यो के बारे में बताता है। "मैं तथा अन्य नए प्राचीन तुम्हारे परामर्श का अनुकरण कर रहे हैं। हमने सारे क्षेत्र में छोट संगठनों का घरों में मिलने का प्रबन्ध किया है। कुछ संगठनों उनके यहाँ भी जाते हैं जो विश्वास नहीं करते। अन्य प्रार्थना पर ध्यान लगाते हैं, या कार्यकर्ताओं को और दूर नई जगहों पर भेजते हैं। उनमें से ज़्यादातर लोग समुदाय के जरुरतमंदो की देखभाल करते हैं। समुदाय तथा नए छोटे संठनों को स्थापित करने के लिये वो अपने आत्मिक वरदानों का प्रयोग करने के तरीके खोजतें हैं। वो सुसमाचार के साथ अपने खुद के दायरे के मित्रों के पास जाते हैं। मैं नियमित रुप से प्रार्थना के लिये, उनकी सूचनाए सुनने के लिये, उनकी काठिनाईयों से निपटने के लिए तथा प्रोत्साहन देने के लिए, सब छोट संगठनों के प्राचीनों से मिलता रहता हूँ।"

एक संगठन परिजनों से मिलता है जो काफी दूर रहते हैं मेरी तथा प्राचीनों की इन संगठनों का व्यवस्थित करके, नए समुदाय की तरह बनाने की योजना है। वो सब महीने में एक बार संयुक्त अराधना तथा उत्सव के लिये आते हैं। अगली बार, कृप्या तुम भी आना।"

लर्नर ने चेताया, "अगर वो सब एक बड़े संगठन में मिलतें हैं तो तुम्हें सावधान रहना होगा। इसी कारण से अधिकारियों ने मि. वाईज़ को यहाँ के छोड़ने के लिये कहा था। मसीह के चर्च के विस्तार के पीछे अक्सर अत्याचार रहता है।"

हेल्पर ने उत्तर दिया, "उनमें से कुछ को परमेश्वर मसीह के साक्ष्य के रुप में, दूर के स्थानों पर भेजेगा, जैसे कि उसने मि. वाईज़ के लिये करा। यह ज्यादा समय, पैसा तथा प्रयास लेगा, परन्तु मैं चाहता हूँ कि हमारा समुदाय परमेश्वर के कार्यो के प्रत्येक आवश्यक भाग में हिस्सा ले, जैसे कि तुमने मुझे सिखाया था।"

"बहुत अच्छा!" लर्नर सहमत हुआ, "ईश्वर चाहता है कि यीशु मसीह का पवित्र वचन दुनिया का हरेक संगठन तथा संस्कृति सुने वो परमेश्वर की कृपादृष्टि में खुशियाँ मनाता है जो दुनिया के कोने तक पहुँचाता है।

क्रियात्मक कार्य

- परमेश्वर की सहायता माँगे ताकि आपका समुदाय उन लोगो को पहचान सके जो नए समुदाय शुरु कर सकते हैं तथा उनको अलग अलग तरीको से प्रार्थना, उपवास तथा भरोसा करना सिखायें।
- नए बपतिस्मा पाये विश्वासीयों के समूह, जो आराधना करने को एकत्रित होते हैं, तथा एक नए समूदाय के रुप में यीशु को मानते हे, उन्हें पहचानें तथा उनके लिए स्थानीय मार्गदर्शक नियुक्त करें।
- अगर नए मार्गदर्शक विश्वास में काफी भूल है, तो उनको केवल अस्थाई रुप में प्राचीन नियुक्त करें जब तक वो अपने आप को साबित ना करें।
- इन नए मार्गदशकों को परदे के पीछे से परामर्श दें। वो कुछ महीनों या कुछ सालों के लिये अस्थाई मार्गदर्शक हो सकते हैं, जब तक यह सिद्ध ना हो जाए कि परमेश्वर ने इस उत्तरदायित्व के लिये किसको वरदान दिया है।
- नए मार्गदर्शकों को पहले तथा सबसे ऊपर यीशु की आज्ञायें मानने की शिक्षा दें। उनको बपतिस्मा देना, प्रभु भोज मनाना तथा अराधना के मूल तत्वों का अभ्यास करना, दिखायें।
- अगर आपका समुदाय, हर एक की बात सुनने, जब वो मिलते हैं, से ज्यादा बड़ा है, या एक परिवार जिसमें सब एक दूसरे की सेवा करते हैं, उससे भी ज्यादा बड़ा है तो छोटे संगठन बनायें। संगठनों को छोटा रखें जिससे कि सब हिसासा लें सकें तथा एक दूसरे की सेवा व्यवहारिक तरीके से करें।

III -6 -प्रबन्धन-6

प्राचीनों तथा अन्य मार्गदर्शकों को प्रशिक्षित करें

एक दिन हेल्पर लर्नर से मिलने उसके घर आया परन्तु लर्नर बोला, "तुमसे मिलने के लिये आज मैं बहुत व्यस्त हूँ। मैं माफी चाहता हूँ।" हेल्पर चकित हो गया तथा पूछा कि क्या हुआ, पर लर्नर ने कह दिया कि वो इस समय बात नहीं कर सकता।

हेल्पर ने सारा से पूछा कि क्या परेशानी है। वो बोली, "मुझे नहीं पता। वो किसी चीज़ के लिए हतोत्साहित है। वो उसके बारे में नहीं बोलेगा।"

हेल्पर उदास होते हुए चला गया। वो मि. वाईज़ को एक संदेश लिखता है, "मैं लर्नर के बारे चिंतित हूँ। ऐसा लगता है कि उस ने काम के प्रति उत्साह खो दिया है। कुछ गड़बड़ है।"

कुछ दिनों पश्चात, मि. वाईज़ पहुंचतें है, लम्बे समय बाद अपनी पहली भेंट के लिये। उनको हेल्पर मिलता है तथा वो लर्नर से बातें करने जाते हैं। वो लर्नर को उसके घर पर पाते हें पर वो बात नहीं करना चाहता। वो चलने के लिये उठते हैं पर सारा उनसे रुकने का आग्रह करती हे। "मि. वाईज़" "वो बोली," ओह! मैं कितनी खुश हूँ कि आप आये! मैं सोचता हूँ कि मुझे पता है कि क्या गलत है। समुदाय अब इतना ज्यादा बड़ा हो गया है जिसके कारण लर्नर बहुत ज़्यादा व्यस्त हो गया है तथा अपने आप को थका हारा बना लिया है। वो अपने परिवार को कुछ समय नहीं देता है। कुछ समुदाय जिनकी वो सेवा करता है अब उसकी आर्थिक मदद करते हें, जिससे कि उसको अपनी दुकान में काम करने की जरुरत ना पड़े, परन्तु वो अब भी कई सारे उत्तरदायित्वों में दबा पड़ा है। वो हरेक से बिना किसी वजह के गुस्सा हो जाता है, यहाँ तक की नए विश्वासियों के साथ भी।"

मि. वाईज़ तथा हेल्पर ने लर्नर से प्रार्थना करने को कहा। वो उनके साथ प्रार्थना नहीं करना चाहता। वो लम्बे समय तक चुपचाप बैठे रहे। आखिरकार लर्नर नरमी से बोला, "मैं बहुत ज्यादा थका हुआ हूँ। मेरे पास बहुत ज्यादा काम है। आपको दुबारा के यहाँ का मार्गदर्शन ले लेना चाहिये, मि. वाईज़ पुलिस अब हमें परेशान नहीं कर रही है। सब सुरक्षित रहेगा।"

"मि. वाईज़ असहमत हुए।" तुम्हें वो ही परेशनी है जो मूसा को थी। उसने अपने आप से बहुत ज्यादा किया। वो दूसरों पर पुरोहितीय दायित्व ना सौंप सका। तुमने हेल्पर तथा नए समुदायों को सौंपकर एक अच्छा काम किया, पर अपने समुदाय के साथ तुम

असफल हो गऐं तुम्हारे लोगों के मार्गदर्शन में तुम्हारी सहायता के लिये मैं वापस यहाँ नहीं आ सकता। अगर मैं हर समुदाय का मार्गदर्शन करने की कोशिश करूँगा जिसको शुरु करने में मैने सहायता करी थी पवित्र आत्मा के काम में विघ्न डालूँगा। मैं अपने आप को घिस डालूँगा तथा जिन्हें ज़रुरत है उनकी मदद ना कर सकूँगा।"

लर्नर चुपचाप बैठा सुनता रहा। मि. वाईज़ ने कहना जारी रखा, "यीशु ने हमको शिष्य बनाने तथा उनको उनकी आज्ञा करी हुई हर चीज को मानने की शिक्षा देने की आज्ञा हमको करी थी। उसने अपने शिष्यों के लिये, वो सब दिया, जिसकी उनका नए समुदायो शुरु करने तथा प्रबन्धन करने, में आवश्यकता थी। कभी-कभी वो उन्हें,दो-दो करके उपदेश देने के लिये भेज देता था जबकि वो उन के साथ रहता था। उसने कहा था कि वो उसके बाद उससे भी बड़े काम करेंगे। उन्होंने उसकी आज्ञा मानी तथा जो कुछ भी उन्होंने उस से पाया था सब नए मार्गदर्शकों को आगे बढ़ाया। परमेश्वर ने उनकी प्रेममय आज्ञाकारिता पर आशीषें दी।"

"पर मैं इतना शक्तिशाली नहीं हूँ जैसे वो थे।"

"ईश्वर तुम्हारी आवश्यकतानुसार तुम्हें शक्ति देता है। अब जो यीशु ने किया था तुम्हें वो करना चाहिये। जिस चीज़ की भी बन्ध न करने में उनको आवश्यकता हो उसे अपने समुदाय के अन्यों को दो। मैंने तुम पर अपना भरोसा किया था तथा मार्गदर्शन के दायित्व तुमको दिये थे। शक्ति की आत्मा तुम्हारे अन्दर रहती है जैसे कि मेरे रहती है। अब तुम अपन`आप को बहुत व्यसत पाते हो। हम साथ में पढ़ते हैं कि मित्रों की सलाह उन मार्गदर्शकों के लिए जो बहुत व्यस्त है।

अभ्यास

- निर्गमन अध्याय 18 में देखें कि मूसा के ससुर मित्रो ने उसे क्या करने के लिये कहा था:
- मूसा के परार्मश का देने से पहले मित्रों ने क्या देखा कि मूसा क्या गलत कर रहा है?
- मूसा के आसपास लोग सुबह से रात तक क्या करते थे।
- यित्रो का मूसा को ज्ञान भरा सुझाव क्या था?
- जब उसने मार्गदर्शन को बाँटा, तब क्यों मूसा लोगों की सेवा अच्छी प्रकार से करने लगा?

सारा चाय लाती है तथा मि. वाईज़, लर्नर तथा हेल्पर की कहानी समझातें हैं। "मूसा एक महान मार्गदर्शक था। वो मिस्त्र में परमेश्वर के लोगों को दासता से बाहर लाया।

बाईबल कहती है कि वो एक बहुत विनम्र आदमी था। वो अपने लोगों की पूरी हृदय से सेवा करता था पर वो अकेला उनकी सेवा ठीक से नहीं कर पाया। यित्रो ने देखा कि लोग सुबह से रात तक उनकी शिकायतों पर उसके निर्णय की प्रतीक्षा करते हें वो लोगों के साथ-साथ अपने को भी थका रहा था। बुरे मार्गदर्शक अपना मार्गदर्शन दूसरों के साथ नहीं बाँटते। अब लर्नर, कृप्या मुझे बताओ कि तुम्हें इस कहानी से क्या याद आता है।"

लर्नर ने एक क्षण सोचा। "मित्रों ने मूसा को अनुभवी मार्गदर्शक नियुक्त करने को कहा था जो कि उसके दायित्वों का भार बाँट सकें। इन लोगों को ईमानदार, आत्मिक रुप में परिपक्व तथा योग्य होना था। यित्रों ने मूसा को सिर्फ उन वादों का निर्णय करने को कहा था जो कि कठिन थे तथा अन्य मार्गदर्शन उसके पास लाते थे। उसको बड़ी संख्या के मार्गदर्शकों के साथ व्यवहार रखना था, जो कि छोटी संख्या वालों के साथ व्यवहार रखते तथा अन्त में दस के छोटे संगठनों में जाता जहाँ वो प्रभावी तरीके से लोगों का मार्ग दर्शन कर सकते थे।"

"हाँ! जब मूसा ने इस तरह से मार्गदर्शन शुरु करा, उसको प्रार्थना करने तथा शिक्षा देने का समय मिला। वो लोगों की ज्यादा अच्छी तरह सेवा कर सका। लर्नर, मूसा जैसा, तुम्हारे पास करने के लिये बहुत काम है। क्योंकि तुम्हारा कई नए प्राचीनों के साथ अच्छा सम्बन्ध है, उनको काफी कुछ दायित्वों का भार बाँटने दो, छोटे संगठनों का मार्गदर्शन करके।"

"पर नए मार्गदर्शक गलतियाँ करते हैं," लर्नर ने शिकायत करी। मैं उन्हें गलतियाँ नहीं करने देना चाहता।"

"हाँ, कर सकते हो, मेरे भाई," मि. वाईज कहते हैं, "मैंनें तुम्हें शुरु में कई गलतियाँ करने दी थी। यीशु ने अपने प्रेरितों को गलतियाँ करने दी। तुम्हारे नए मार्गदर्शक गलतियों करेंगे शायद उतनी जितनी मैंने करी थी, जब मेंने शुरुआत करी थी। शायद उतनी कितनी शुरु में यीशु के प्रेरितों ने की थी।"

लर्नर हँसता है। "मैने यह सलाह हेल्पर को दी थी पर मैं उसे अपने आप पर लागू करना भूल गया।"

मि. वाईज़ ने उत्तर दिया, "फिर चलो साथ में देखते हैं कि पौलुस ने तिमुथियुस को मार्गदर्शको को दूसरों को प्रशिक्षण देने के लिये प्रोत्साहित करने एवं प्रशिक्षित करने के बारे में क्या सिखाया

अभ्यास

2 तिमुथियुस 2:1-2 में देखें:

- पौलुस व तिमुथियुस के बीच में संबन्ध कितने गहरे थे?
- पौलुस ने तिमुथियुस को उसके लिये क्या करने को कहा जो उसने कई साध्यों की उपस्थिती से सुना था?
- तुम इस प्रशिक्षण की लड़ी में कितन संबंध खोज सकते हो? पौलुस से शुरु करके अन्यों की गिनती करे।

हेल्पर ने मि. वाईज को लर्नर के साथ दोड़ा, "क्या तुम 2 तिमुथियुस 2:2 में प्रशिक्षण की लड़ी देखते हो? पौलुस तिमुथियुस को बेट जैसा प्यार करता था। पौलुस ने उसे, तीतुस, तथा अन्यों को सिखाया। उसने यह निश्चित किया कि हर नए समुदाय के पास उसके अपने प्राचीन मार्गदर्शक हों जो कि दूसरों को सिखाने के योग्य हो। तिमुथियुस ने जो पौलुस से सुना वो विश्वसनीय लोगों में आगे बढ़ाया। इन लोगों ने दूसरो को सिखाया।

"समझा! 2 तिमुथियुस 2:2 की लड़ी के चार संबन्ध है।"

"शिष्य परम्परा एक त्रिकोण की तरह है जिसकी तीन भुजायें है। एक भुजा प्रेम है, दूसरी शब्द (वचन) हैं तथा तीसरी भुजा काम्र है, या वचन का अभ्यास है। त्रिकोण की तीनों भुजाएं अपनी जगह पर रहनी चाहिये अन्यथा वो ढह जायेगा। पौलुस एक शिष्य परम्परा के तीनों पहलुओं का अभ्यास करता था। वो अपने शिष्यों से प्रेम करता था तथा तिमुथियुस को अपना पुत्र कहता था। वो उनको विश्वसनीय तरीके से परमेश्वर का वचन सुनाता था, तथा जो कुछ उसने पाया था वो आगे बढ़ाता था। वो, परमेश्वर का वचन उनके तथा उनके संगठन के जलवन पर तुरन्त लागू करने में उनकी सहायता करता था। अब तुम्हारी क्या करने की योजना है, लर्नर?"

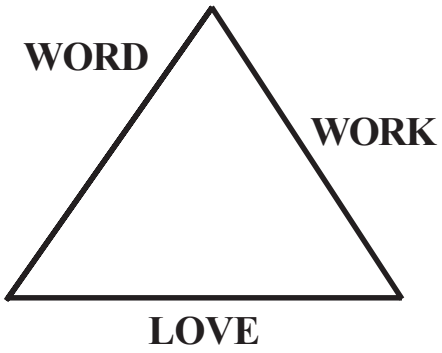

"नए प्राचीनों से मेरे सम्बन्ध कमज़ोर पड़ गए हैं। उनकी बातें ज़्यादा सुनकर मुझे उनके साथ अपने संबध बलशाली करने चाहिये। इससे पहले कि मैं उन्हें शिक्षा दूँ, मैं उनसे उनके संगठनों की आवश्यकता पूछूँगा। मैं उनको, उनकी शिक्षाएं उनके संगठन पर लागू कराने में सहायता करूँगा। मैं उनको दिखाऊँगा कि कैसे उनकी शिक्षा को दूसरों में बढाया जा सकता है, जो कि औरों को शिक्षा दे सकतें हैं, जैसा पौलुस ने कहा था। मैं प्रार्थना करने में, सुनने में, तथा साथ में योजना बनाने में ज्यादा सर्तक रहूँगा जब मैं प्राचीनों से मिलूँगा, जैसा कि आपने मेरे लिये किया।" लर्नर सूची बनाता है उन कार्यो की जो उसे करने है जब वो नए प्राचीनों से मिलेगा तथा उन्हें परामर्श देगा:

पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करो जो कि परामर्श सत्र के दौरान हम सब का मार्गदर्शन करेगा।

सीखने वालों की सुनें जब वो अपनी प्रबन्धन गतिविधियों का ब्यौरा दें।

जब वो सारांश निकालें, उनकी सुनें कि वो बाईबल में से क्या सीख रहे हैं।

अपने छोटे संगठन में जो आवश्यकताएं तथा अवसर वो देखते हैं, उसके लिए नई गतिविधियों की योजना बनाएं।

आवश्यकताओं तथा अवसरों अनुसार बाईबल की नई शिक्षाओं को निश्चित करें।

प्रार्थना में प्रभु की अपनी योजनाओं के बारे में बताएं। मि. वाईज़ बताते है, "जब एक मार्गदर्शक अपने मार्गदर्शन के दायित्वों की बाँटने में असफल होता हे, वो विनम्रता में कमज़ोर होता है। उसको सेवक की तरह का मार्गदर्शक बनना चाहिये। यीशु ने हमें दिखाया था कि सेवक मार्गदर्शक किस प्रकार के होते हैं। उसने हमें विनम्रता पूर्वक, तथा बिना महत्त्वपूर्ण तथा शक्तिशाली बनने की कोशिश किये, लोगो की सेवा करना बताया था। मेरे साथ पढ़ो उस सेवक मार्गदर्शक के बारे में जिसने अपने शिष्य के चरण धोये।

अभ्यास

यूहन्ना 13:11-17 में देखें:

- परमेश्वर की पुत्र ने किस प्रकार विनम्रता से अपने शिष्यों की सेवा करी, जैसा कि एक दास कर सकता था?
- अगर हमारे प्रभु तथा शिक्षक ने अपने शिष्यों की इस तरह सेवा करी, तो हम किस व्यवहार से दूसरों की सेवा करें?
- यीशु ने, अपने शिष्यों को सेवक मार्गदर्शकों को प्रशिक्षित करने में, सिर्फ शब्द ही नहीं बोले थे। उसने और क्या करा था?

"समझा" लर्नर ने मि. वाईज़ से कहा, "यीशु परमेश्वर का पुत्र था, पूरे आदर तथा आराधना का अधिकारी था, पर उसने विनम्रता से अपने शिष्यों की सेवा करी। उसने तौलिया लेकर उनके मिट्टी में सने पैर धोए, जैसा कि उस समय का एक दास करता था। महान शिक्षक ने अपने खुद के उदाहरण से हमें सिखाया। प्रेम मं हम दूसरों का मार्गदर्शन इसी विनम्रता से करते हैं। जब हम मार्गदर्शकों को प्रशिक्षित करते हैं, हम उन्हें सिर्फ परमेश्वर के सत्य की ही शिक्षा नहीं देते, परन्तु उन्हं दिखाते हैं कि परमेश्वर को कैसे माने, अपनी विनम्रता के उदाहरण के द्वारा।"

"अगले दिन लर्नर ने समुदाय के मार्गदर्शको को मिलने के लिये बुलाया तथा समझाया, "मैं तुम्हें काफी कुछ उत्तरदायित्व सौंपना चाहता हूँ। तुम मेरे साथ सह-पादरी बनोगे।"

लर्नर ने मि. फूलिश को न्यौता नहीं दिया था, पर वो फिर भी आ गया तथा बीच में बोला, लर्नर, कोई भी दूसरा सह-पादरी जैसी सेवा के लिये शिक्षित नहीं है। यह लोग, हमारे तथा नए चर्च जिसकी बनाने में तुम दूसरों की सहायता कर रहे हो, मार्गदर्शन नहीं कर सकते। तुमको इन्हें तीन या चार साल के लिये बाइबल स्कूल भेज देना चाहिये, शिक्षित होने से पहले।"

मि. वाईज़ अब तक नहीं गए थे। उन्होंने असहमति प्रकट की, "यह अजमाया जा चुका है, परन्तु जो यहाँ पर हमारे पास स्थिति है, यह कदाचित ही काम करे। चलो हम देखें कि प्रेरित पौलुस मार्गदर्शकों की योग्यताओं के बारें में क्या कहता है। लर्नर, क्या तुम्हें याद है अध्यक्ष होने की योग्यताएं, जो कि हमें पौलुस के तिमुथियुस तथा तीतुस में मिलती है?

अभ्यास

1 तिमुथियुस अध्याय 3 तथा तीतुस 1:5-9 में पाने के लिये देखे :

- पौलुस ने तीतुस को क्रेते में क्यों छोड़ा, तितुस 1:5 के अनुसार?
- क्रेते में नए समुदायों के लिये तीतुस को क्या करने की आवश्यकता थी?
- एक प्राचीन किस जैसा होना चाहिये? उसके चरित्र की व्याख्या करें।
- एक प्राचीन को 'शिक्षा देने योग्य' होना चाहिये। परमेश्वर क्यो यह अपेक्षा करता है?

लर्नर के घर में जो मार्गदर्शक मिल रहें है उन्हें मि. वाईज़ प्रोत्साहन देना जारी रखते है। "पौलुस ने यह निश्चित किया कि जो भी समुदाय उसने बनाया था ठसमें उसके अपने मार्गदर्शक हो। वो लोगों का मार्गदर्शन करते थे। वो साथ मिलकर सह-पादरियों का कार्य करते थे। पौलुस नए समुदाय के साथ अपना कार्य पूरा नहीं समझता था जब तक कि उसके पास अपने मार्गदर्शक ना हो। कभी-कभी पौलुस बाद में समुदायों के पास वापस जाता था तथा मार्गदर्शक नियुक्त करता था। उसने तीतुस को क्रेते में पीछे छोड़ा था वहाँ पर मार्गदर्शक नियुक्त करने के लिये।

पौलुस तथा तीतुस समुदाय में से ही आदमीयों का चुनाव करते थे। वो उन आदमियों का चुनाव करते थे, जिनका विश्वासी, अविश्वासी तथा उनका परिवार आदर करता था। एक मार्गदर्शक का चरित्र उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितनी उसकी शिक्षा देने की योग्यता।"

मि. फूलिश शिकायत करते हैं, "यहाँ पर कोई भी योग्यता नहीं रखता जो मेरे चचेरे भाई के चर्च में, चर्च का मार्गदर्शक बन सके।"

मि. वाईज़ ने उत्तर दिया, "कुछ चर्च मार्गदर्शकों के लिये योग्यताएं जोड़ देते हैं जो कि धर्मग्रन्थों में नहीं हैं; जिसकी न यीशु तथा ना ही उसके प्रेरितों ने आज्ञा दी या प्रयोग किया। यह मानव परम्परा मार्गदर्शकों को नए समुदाय में प्राचीन नियुक्त करने से रोकती है। यह पवित्र आत्मा के कार्य में विघ्न डालता है। जब भी मानव परंपराएं हमारी यीशु के प्रति आज्ञाकारित में विघ्न उत्पन्न करें, हमें उनको छोड़ देना चाहिये।"

लर्नर संगठन से कहता है, "मि. वाईज हमें वो ही परामर्श दे रहें है जो मूसा को मित्रों ने दिया था उसने पहले सुना तथा गौर करो यह देखने के लिये कि आवश्यकताएं क्या है। जब तक कि उसने साफ तौर पर प्रबन्धन की आवश्यकताएं तथा अवसर नहीं देखें, उसने कोई राय नहीं दीं मि. वाईज़ हमेशा वैसा ही करते हैं। वो सुनते हैं, फिर साथ मिलकर नई गतिविधियों की योजना बनाने में सहायता करते हैं तथा बाईबल के अनुच्छेद पढ़ने के लिए देते हैं जो आवश्यकताओं के अनुरुप होतें हैं। हम भी वैसा ही करेंगे। परमेश्वर की यह योजनाएं सर्मपित करने के लिए हम प्रार्थना करें।

अगली सुबह मि. वाईज चले गए। एक महीने पश्चात् लर्नर उनको लिखता है, "ज़्यादा उत्तरदायित्व लेने के लिए मैं गंभीरता से अपने झुंड के चार अन्य व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने लगा हूँ। मैं इन नए प्राचीनों के साथ मार्गदर्शन का भार अधिक बाँटता हूँ। हम वो करते हैं जो यित्रो नें मूसा को करने के लिये कहा था। मैं अब आराम अनुभव करता हूँ तथा मेरे पास मेरे परिवार के लिये प्रचूर समय है। नए प्राचीन अब और नए मार्गदर्शकों को प्रशिक्षण दे रहें हैं तथा मार्गदर्शन के काफी उत्तरदायित्व सौंपते हैं जैसे जैसे छोटे संगठन बन रहे हैं। वो देखते हैं कि उनके पास उनके परिवारों के लिये अधिक समय हो, तथा प्रार्थना के लिये और शिक्षा देने की तैयारी करने की प्रतिनिधि बनाने और मार्गदशकों के नमांकन में सहायता के लिये आपका धन्यवाद। पवित्र आत्मा महान कार्यो के लिये और लोगों का उपयोग कर रहा है।

क्रियात्मक कार्य

- हर नए समुदाय में प्राचीन नियुक्त करें, 1 तिमुथियुस 3 तथा तितुस 1:5-9 में योग्यताओं का अनुकरण करके।
- प्राचीनों के लिये विश्वसनीए व्यक्तियों को प्रशिक्षण दे, तथा उन्हें जल्द नए मार्गदर्शकों को प्रशिक्षण देने में सहायता करें।
- सेवक मार्गदर्शक ना कि घमंडी नियंत्रक होने के लिये नए मार्गदर्शकों को अपने शब्दों तथा अपने उदाहरणों से शिक्षा दे
- अपने तथा अपने द्वारा प्रशिक्षित मार्गदर्शकों के बीच संबंधों को बलशाली बनाएं।
- अपने द्वारा प्रशिक्षित मार्गदर्शकों से नियमित रुप से मिलते रहें। उनके ब्यौरों को सुनें तथा प्रार्थना करें। नई शिक्षाएं तथा गतिविधि यों के साथ-साथ योजना बनाएं। जब वो लोगों से मिलने जाते हैं, उनके साथ जाए, तथा उन्हें बात करने दें।
- अपने प्रशिक्षितों की प्रचार करने दें, जब आप उनसे मिलने जाए, उनके लोगों को यह दिखाने के लिये कि आप उनके मार्गदर्शन का आदर करते हैं तथा उन पर आपको पूरा भरोसा है। प्रचार करने के लिये उन्हें अच्छी तरह से तैयारी कराना आपका कार्य है। यह जानने के लिये कि आप कैसे उनकी सहायता कर सकते हैं, आपको उनको सुनने की आवश्यकता है।

III -7 -प्रबन्धन -7

समुदाय के भीतर तथा आपस में भाईचारे का विकास करें

अगले दिन लर्नर के समुदाय के कुछ लोग मि. फूलिथ के साथ लर्नर के घर पर आते हैं, जो घोषणा करता है "लर्नर, हम उस प्रसिद्ध प्रचारक को मेरे चचेरे भाई के चर्च में सुनने गए थे। मैं अब तक कई बार जा चुका। परमेश्वर के प्रति एक वास्तविक अभियान कैसे चलाया जाये यह सीखने के लिये हम तुम्हें अपने साथ चलने का निमंत्रण देते है। हम सब गलत कर रहे हैं। हमको उसकी तरह से प्रचार करना पड़ेगां वो वास्तविक रुप में जानता है कि प्रचार कैसे करते हैं! मैं यहाँ पर एक नया संगठन प्रारम्भ करन जा रहा हूँ जो कि इस महान व्यक्ति की शिक्षाओं का पालन करेगा! चर्च में अन्य लोग मुझ से सहमत है। यह हमारे चर्च के लिए परमेश्वर की इच्छा है।"

एक दूसरे से प्रेम करने के लिए मसीह की आज्ञाओं का पालन करें।

लोगों के चेहरों को देखकर लर्नर क्रोधित हुआं उनके जाने के बाद उसने सारा को बताया, "ऐसा प्रतीत होता है कि जो योजना मि. फूलिश अपने चचेरे भाई के चर्च से वापस लेकर आए हैं वो हमारे समुदाय से फैल रही है। वो पहले से ही एक कष्टदायक विभाजन का कारण बन चुकी है।

अगली बार जब समुदाय मिलता है तो लोग आपस में बहस करते हैं। भ्रम फैुल रहा है। वो मि. वाईज़ को एक संदेश भेजता है, जो कि लर्नर के समुदाय के लोगों के लिये एक पत्र के द्वारा उत्तर देते हैं। लर्नर उन को पढ़ के सुनाता है:

भाईयों और बहनों। मैं तुम्हें कुरिन्थियों में से पौलुस के उदाहरण का पालन करने के लिये कहता हूँ। मैं तुम्हें यीशु के नाम में एक दूसरे से बहस करना बन्द करने के लिये कहता हूँ। सच्ची समस्वरता के साथ रहो जिससे कि समुदाय में कोई भी विभाजन ना हो। मैं तुमसे एक मन होने का आग्रह करता हूँ विचारों तथा उद्देश्यों में संयुक्त रहकर। तुमने यीशु की आज्ञाओं का पालन बाल सुलभ विश्वास तथा प्रेम में करना सीखा था। उसको अब समाप्त मत करो। तुम में से कुछ लोग कहते हैं, "मैं मि. वाईज़ का अनुकरण करता हूँ।" दूसरे कहते हैं, "मैं लर्नर का अनुकरण करता हूँ।" अनन्य उस चर्च के प्रचारक का अनुकरण करना चाहते हैं जहाँ मि. फूलिश अपने चचेरे भाई के साथ जाते हैं। क्या मसीह टुकड़ों में बट गया? क्या मैं, मि. वाइज़ तुम्हारे लिये सलीब पर चढ़ाए गए थे? यह मानसिकता अंहकार से आती है।

जब मैं पहली बार तुम्हारे पास आया था,मैं बड़े शब्दों या भ्रमिक विचारों का प्रयोग नहीं करता था। मैं यीशु तथा

क्रूस पर उसकी मृत्यु पर केंद्रित रहता था। मेरा प्रचार तथा संदेश सादा था, परन्तु पवित्र आत्मा उसका उपयोग करता था। हम संसार के ज्ञान का उपयोग नही करते। याद करो, तुम्हारे में से बहुत सारे संसार की दृष्टि में ज्ञानी या शक्तिशाली नहीं थे, परन्तु परमेश्वर ने अपनी शक्ति से तुम्हारे जीवन में आश्चर्यजनक कार्य किये। लर्नर मेरे उदाहरण का अनुकरण कर रहा है, और तुम्हें उसे तथा प्राचीनों की शिक्षाओं को मानना चाहिए, क्योंकि वो तुम्हें परमेश्वर का वचन सिखाते हैं।

मि. फूलिश व्यवधान डालतें हैं पर लर्नर जारी रखता है।

क्या तुम यह भूल गए कि तुम सब इकट्ठे परमेश्वर का मंदिर हो, परमेश्वर की आत्मा तुम्हारे अन्दर रहती है? एक मानव मार्गदर्शक का अनुकरण करके अहंकारी मत बनो। हम सब मसीह के सेवक है, और वो हर एक इन्सान को अपने चर्च में कार्य करने को देता है। एक व्यक्ति बीज बोता है, तथा दूसरा उसमें पानी देता है, परन्तु परमेश्वर उसको उगाता है। तुम परमेश्वर का मैदान तथा परमेश्वर का भवन हो, हमारा नहीं। तुम्हारे में यह विभाजन अहंकार से आता है।

मि. वाईज़ का पत्र समीक्षा करता है कि कैसे मानव का अहंकार तथा मूर्खता ने आदमीयों को विभाजित कर दिया।

आभ्यास

उत्पत्ति 11:1-9 में देखें

- लोग किसकी महानता में विश्वास करतें हैं?
- परमेश्वर ने इस अहंकारी विरोधी को अपने विरोध से कैसे रोका?

अपने घर में लर्नर अपने समुदाय के साथ मि. वाईज़ के पत्र पर विचार विमर्श कर रहा है, "हजारों साल से लोग विभिन्न देशों, भाषाओं तथा संस्कारों में विभाजित है। अब ईश्वरीय ज्ञान में, वो हमें मसीह की आत्मा में एक कर रहा है, जो कि उसका वास्तविक उंद्देश्य था।"

नए नियुक्त किये हुए प्रचानों में से एक ने जोड़ा, "हाल ही में हमने अपने छोटे से संगठन में यह पढ़ा था। युहन्ना 17 में यीशु ने हम सब के लिये प्रार्थना करी। उसने विनती करी, "पिता, इनको एक बना, जैसे कि मैं और तू एक हैं।" विश्वव्यापी चर्च के ढ़ाँचे में यीशु की प्रार्थना का उत्तर दिया गया क्योंकि हम यीशु में एक शरीर है। वो हमारा प्राधन है। हम उसकी तरह व्यवहार ना करे परन्तु उससे यह सत्य नहीं बदलता कि पवित्र आत्मा हमको एक करता है।" वो यीशु में आत्मिक एकता के लिये प्रार्थना करके सभा का समापन करतें हैं।

अगले दिन लर्नर अपने शिस्य हेल्पर से मिलता है तथा बताता है, "मि. फूलिश के द्वारा संचालित एक संगठन ने हमारे समुदाय को विभाजित कर दिया है। कृप्या आकर मेरी सहायता करो।" वो विचार करतें हैं। कि जो लोग शक्ति तथा नियंत्रण के लिये लालायित होतें हैं, कैसे अकसर दुखदायक विभाजनों का कारण बनते हैं। हेल्पर ने अपने शिक्षक को बताया, "मैंने अभी अभी 1 कुरिन्थियों में पढ़ा कि उनमें भी विभाजन थे। मैं सोचता हूँ कि हम अध्याय 13 में सहायता प्राप्त कर सकतें हैं, "प्रेम का अध्याय

अथ्यास

1 कुरिन्थियों अध्याय 13 में देखें:

- हमारे वरदानों की क्या कीमत है अगर हम प्रेम में उनका अभ्यास नहीं करते हैं?
- वो क्या चीज़ें हैं जो प्रेम है?

- वो क्या चीज़ें हैं जो प्रेम नहीं है?
- प्रेम क्या चीज़ें करता है?
- प्रेम क्या चीज़ें नहीं करता?

जब वो वापस लर्नर के घर की ओर चलें, हेल्पर ने टिप्पणी करी जो उन्होंने पढ़ा था, "अगर हम अपने वरदानों का अभ्यास प्रेम कि जगह अहंकार से करते हैं, तो वरदान बेकार है। परमेश्वर हमारे हृदयों में प्रेम रखता है, हमें दूसरे लोगों की रूचियो का ख्याल रेखने वाला बनाकर। वो हमें उनको क्षमा करने की शक्ति देता है। प्रेम वो नहीं है जो हम अनुभूत करते हैं, परन्तु वो है जो हम करतें हैं। हम विश्वास से लोगों के साथ प्रेम से व्यवहार कर सकते हैं, उसके लिये इच्छुक ना होते हुए भी। कभी कभी हमारी भावनाओं को हमारे प्रेम के संकल्प के साथ मेल खाने मे समय लगता है।"

लर्नर प्रार्थना करता है, "प्यारे परमेश्वर, विभाजित करने वालों के प्रति मेरी अप्रसन्नता के लिये मुझे क्षमा करें, तथा उनके साथ मुझे दृढ़ता तथा प्रेम के साथ व्यवहार करने का साहस दें।"

अगले दिन लर्नर व हेल्पर मि. फूलिश से विभाजन रूकवाने की याचना करने के लिये भेंट करते हैं। मि. फूलिश जल्दी से विषय बदलतें हैं। वो बकतें हैं, "लर्नर तुम्हारे लोगों में से कुछ जरूरतमंद लोगों की मदद नही कर रहें हैं, जैसा कि तुमने उन्हें करने के लिये कहा था। तुम उन्हें ऐसे अपने अधिकारों को दुर्बल होने दे रहे हो। एक सभा बुलाओं तथा उनसे कहा कि या तो वे पालन करें या फिर छोड़ दें। यही वो लोग है जो चर्च में विभाजन का कारण बनते हैं।"

समुदाय में विचारों के मतभेदों को कैसे संभालें।

लर्नर मि. फूलिश को बताता है, "हम ऐसे कठोर मानदंडो का उपयोग करके विभाजन से पीछा नहीं छुड़ायेगें। मैं तुम्हें विभाजित राज्य की कहानी सुनाता हूँ। राजा दाऊद अपने पूरे हृदय से परमेश्वर से प्रेम रखता था, तथा परमेश्वर ने उससे वादा किया था कि उसके वंशज हमेशा राजाओं की तरह शासन करेगें। उसके पुत्र सुलेमान ने इस्त्रायल को अच्छी व्यवस्था देने के लिये परमेश्वर से ज्ञान माँगा था, तथा येरूशलम में परमेश्वर का मंदिर बनवाया था। सुलेमान का पुत्र रहबाम, परमेश्वर या परमेश्वर के लोगों की ज़्यादा परवाह नहीं करता था, जैसे कि उसके पिता तथा दादा किया करते थे। उसने गलत सलाह को सुना तथा निर्णय लिया, एक सभा जिसने इस्त्रायल के राज्य को विभाजित किया।

अभ्यास

राजाओ 12:1-19 में देखें

- लोगों ने राजा रहबाम से क्या करने को कहा?
- रहबाम के पास परामर्शदाताओं के दो दल थे। उसने किस पर ध्यान दिया?
- लोगों ने क्या करा जब रहबाम ने उनके बोझ को कम करने से मना कर दिया?

मि. फूलिश ने लर्नर तथा हेल्पर को बिना अवरोध किए सूना, फिर बोले, "मुझसे मिलने तथा यह समझाने के लिये धन्यवाद! जो तुमने कहा है मैं उसके बारे में सोचूँगा।"

हेल्पर अपने घर वापस गया तथा लर्नर अपनी लकड़ी के काम की दुकान पर बातों का विचार करने जाता है। वो पाता है कि कभी कभी उसका हाथों से काम करना सहायता करता है, जब वो परमेश्वर के वचनों पर ध्यान करता है। वो प्रार्थना करता है, "पिता, विभाजन को ज्ञानपूर्वक निपटाने में मेरी सहायता करें।" उसने याद किया जो मि. वाईज़ ने उसे बताया था कि कैसे पौलुस तथा अन्य प्रेरितों ने एक समस्या को संभाला जिसने अन्तिया में चर्च को विभाजित कर दिया था।

अभ्यास

- प्रेरितों के काम अध्याय 15 में देखें कि कैसे दो समुदायों के मार्गदर्शको ने अपने भिन्न मतों से व्यवहार किया:
- क्या मार्गदर्शक सबको विवाद का उनका पक्ष बोलने देते थे?
- पतरस ने फरीसीयों के प्रति, जो उससे असहमत थे, आदर कैसे दिखाया?
- याकूब ने असहमति का उत्तर कहाँ से ढूँढा?
- उनके निर्णय के प्रति सबकी सहमति पर क्या परमेश्वर ने सहायता करी? यदि हाँ, तो कैसे?
- क्या यहुदी मसीही गैर मसीहीयों को अपने सभी संस्कार मानने को बाधित करते थे?
- जब पौलुस तथा बरनबा ने अपना अगला मिश्नरी अभियन शुरू करा, उनके अलग काम करने का क्या कारण था, एक की बजाए दो कार्य दलों के साथ?

अगली सुबह, लर्नर को विभाजन संबंधित सहायता के लिये हेल्पर, लर्नर के घर वापस आया। लर्नर बोला, "प्रेरितों के काम 15 दर्शाते हैं कि लोग परमेश्वर की सेवा विभिन्न तरीकों से करतें हैं। मसीह के चर्च में एकता का यह तात्पर्य नहीं कि हर विश्वासी या हर समुदाय के पास समान आत्मिक वरदान हो, समान मत हो या समान अभ्यास। हम उन्हें अनुरूपता के लिये बाध्य नहीं करते। अनुरूपता एकता नहीं है। हम लोगों को सिर्फ यीशु तथा उसके प्रेरितों की आज्ञाओं का पालन करने की आज्ञा देते हैं। अन्तिया के चर्च में गंभीर विभाजन हो गया था। फरीसी बहुत सी अन्य आज्ञायों की जिद करते थे। जैसे कि उनके पास परमेश्वर जैसे अधिकार है। चर्च को अन्य चर्च की सहायता की आव्यश्कता थी।"

लर्नर प्रेरितों के काम 15 के भाग पढ़ता है तथा हेल्पर से टिप्पणी करने को कहता है। हेल्पर समझाता है, "पौलुस तथा बरनबा मुलकात के दौरान कार्य करते थे ये समझाने के लिये कि कैसे परमेश्वर ने गैर यहुदीयों को चर्च में स्वीकार किया उनको यहुदीयों के संस्कारों को ना मानते हुए। येरूशलम में मुख्य मार्गदर्शक पतरस तथा याकूब थे। जब लोगों ने अपने मत अभिव्यक्त किये, तो वो उन्हें बिना रोके, ध्यानपूर्वक सुनते थे। फिर बिना आलोचना किये, वो धर्मग्रन्थों तथा पवित्र की शक्ति से लोगों को दिखाते थे कि परमेवर ने गैर यहूदियों को यहूदियों के संस्कारों से स्वतन्त्र कर दिया है। मार्गदर्शक पहले सुनते थे, तथा फिर प्रेम में सत्य बोलते थे। आखिरकार फरीसी सहमत हुए तथा दूसरों के प्रति सर्मपण किया तथा निर्णय को स्वीकार किया। परमेश्वर ने उस विभाजन को चंगा किया।"

कई लोगों ने कहा, "आमीन!"

हेल्पर जारी रखता है, "बाद में, हाँलाकि पौलुस तथा बरनबा प्रबन्धन के कार्यों को करने के तरीकों को लेकर असहमत हुए। उन्होंने अपनी असहमति की व्यक्तिगत रूप में रखा, बिना चर्चा या एक दूसरे की आलोचना किये हुए। वो एक दूसरे के मतों का आदर करते थे तथा अपने आत्मिक वरदानों का अभ्यास अलग अलग करने पर सहमत हुए। परमेश्वर ने दोनों के कार्यो पर आशीष दी, जब वो अलग अलग रास्तों पर एक की जगह दो दलों के रूप में जाते थे, समुदयों को प्रोत्साहित करने तथा बहुत सारे नए भी शुरू करने के लिए।"

आज्ञाओं तथा पद्धतियों में भिन्नता

लर्नर के लोग सही कार्य करना चाहते हैं, तथा उसे ध्यानपूर्वक सुनते हैं जब वो समझाता है, "हमें प्रेरितों के काम 15 की दो असहमतीयों पर विचार करना चाहिए। पहला यीशु कीा आज्ञाओं के अधिकारों को उसके चर्च के लिये था। दूसरी असहमति इन आज्ञाओं के लागू करने के तरीकों का था। पौलुस तथा बरनबा संगठन के विषयों के प्रति असहमत थे। चर्च यीशु की आज्ञाओं के अधिकारों के आधीन होकर संयुक्त रहता है। पर मसीही अपने भिन्न तरीकों को भिन्न प्रबन्धनों पर लागू करने को अपनाने में स्वतन्त्र है, अपने आत्मिक वरदानों के अनुरूप। विभाजन तब आते हैं जब हम यीशु के चर्च के लिए अधिकारों के स्तरों को भ्रमित कर देते हैं। उसकी आज्ञाएं सबसे ऊपर के स्तर की है, हम हमेशा उनका पालन करते हैं। परन्तु इन आज्ञाओं को पालन करने के तरीको के अभ्यास में काफी भिन्नता होती है।"

विचार विमर्श काफी लम्बे समय तक चलता रहा। मि. फूलिश तथा उसके अनुभायी किसी की बात नहीं सुनते थे। वो लर्नर की आलोचना करते रहते थें। मि. फूलिश उनका मुख्य स्तर है तथा वो कहते रहते हैं, "लर्नर एक अच्छा आदमी है, परन्तु उसके पास शिक्षा की कमी है तथा किसी अध्यात्मिक विद्यालय की मान्यता का उपाधिपत्र नहीं है। इसलिये हम यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि वो हमको सारे सत्य की ही शिक्षा दे रहा है। "कुछ लोग उनके पास बैठे है तथा इसी बात को दोहराते हैं।

लर्नर कहता है, "हमें सब की सहमति नहीं मिली है क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे में से कई लोग थक गए हैं। जो जाना चाहते हैं वो ऐसा कर सकते हैं।"

महिलायें तथा युवा लोग चले गए। सिर्फ एक आदमी जेकब, ने मि. फूलिश के साथ सहमति जारी रखी। वो मि. फलिश के चचेरे भाई के चर्च में जाता था तथा हाल ही में लर्नर के समुदाय से आया था। जेकब ने तीसरी बार कहा "मैं सोचता हूँ कि हमें हर चीज़ उसी तरह से करनी चाहिये जैसे कि उस चर्च में होती थी जहाँ मैं जाता था।"

लर्नर ने लोगों से कहा, "जब हम समरसता के इतने अभाव में है, मैं प्रभु भोज देने को ठीक नही समझता हमने हर एक की राय सुनी। मैं प्राचीनो से उपवास तथा प्रार्थना करने के लिये कहता हूँ तथा विभाजन को समाप्त करने के लिये दुबारा मिलने को कहता हूँ।

कुछ दिनों पश्चात प्राचीन, मि. फूलिश तथा उनके अनुययियों के साथ मिलते हैं। वो प्रार्थना करते हैं तथा गाते हैं। लर्नर ने मि. फूलिश से याचना करी, "कृप्या हमें ठीक ठीक बतायें कि मेरे को मुख्य मार्गदर्शक बदलने के साथ ही तुम समुदाय में क्या परिवर्तन डालना चाहते हो।"

मि. फूलिश ने बोलना शुरू किया, परन्तु जेकब ने उन्हें रोक कर कहा, "मुझे सच बोलने दो। हमारे में से अधिकतर वैसा नहीं चाहते जैसा मि. फूलिश चाहते हैं। वो चाहते हैं कि हम उन्हें चर्च को पादरी नियुक्त करें जैसे ही लर्नर को हटाया जाता है, जब कि उनके पास भी किसी अध्यात्मिक पुरोहित प्राशिक्षालय के प्रत्ययपत्रों की कमी है। जो हम सही में चाहते हैं वो यह है कि हमको मेरे पहले चर्च की तरह की प्रणाली को मानना चाहिये। हमको उनकी आराधना करने का तरीका अच्छा लगता है। उनके पास बढ़िया ध्वनीकारक सामान है, वो अक्सर बड़ी प्रचार सभाओं के लिये खेल का मैदान (स्टेडिमय) किराये पर लेते हैं, विश्व्यात गायकों क्या पेशेवर संगीतकारों के साथ।"

मि. फूलिश जोड़ते हैं, "हमें उस प्रकार के कौतुहल की यहाँ पर कमी है। मैं विश्वास करता हूँ कि इस सारे क्षेत्र के चर्चों को, इसी प्रकार की कार्य योजनाओं तथा तरीकों के अनुरूप दोना चाहिये, एकता के लिये। हमें हर चीज़ जेकब के पूर्व चर्च की तरह करनी चाहिए।"

सभी प्राचीनों ने एकदम से प्रतिवाद किया। लर्नर ने समझाया कि उसने प्रेरितो के काम 15 में से, दो असहमतियों से क्या सीखा। उसने नम्रतापूर्वक कहा, "मैं यह देखकर प्रसन्न हूँ कि यह असमति यीशु की आज्ञाओं के बारे में नहीं हैं यह असहमति प्रबन्धन करने के विभिन्न तरीकों के बारे में है। जिस प्रचारक को तुम चाहते हो, वो प्रचार के भिन्न तरीके प्रयोग में लाता है। मेरे पास यह वरदान नहीं है। हमारा समुदाय उनके तरीकों को अपनाने के लिये इतना धनी नहीं। हमारी बिरादरी में हमारे प्रचार का तरीका ठीक काम करता है। हमारे प्राचीन तथा अधिकार लोग उन तरीकों को जारी को वरीयता देते हैं, जिन पर परमेश्वर आशीष देता रहा है। वो हमारे लोगों को पालन करने में आसान हैं जेकब के पूर्व चर्च के लोगों की हम आलोचना नहीं करते, जो अपने प्रचारक का अनुकरण करते हैं तथा उस के तरीके से कार्य करते हैं। हम उनको बदलने के लिए नहीं कहते। लगभग हमारे में से भी सभी इस बात पर सहमत है। सिर्फ विभिन्न तरीकों के इच्छा के लिये, हम एक दूसरे की आलोचना करने के लिये, एक दूसरे से क्षमा माँगे।"

प्राचीन कहतें हैं, "आमीन!"

लर्नर समझाता है, "येरूश्लम में पहला चर्च प्रत्येक दिन यहुदीयों के मंदिर के आंगन में तथा उनके घरों पर, दोनों स्थानों पर मिलता था। वो अकसर साथ खाते थे, अपनी वस्तुओं का आदान प्रदान करते थे तथा जरूरतमंद लोगों की देखभाल करते थे। वो एक प्रेममय परिवार की तरह थे। प्रेरितों के समय के समुदाय अक्सर दूसरे समुदायों को प्रोत्साहित करने के लिये भेंटकर्ता भेजा करते थे। वो मत भेदों को प्रेम से दूर करते थे, ना कि एक दूसरे की आलोचना करके। जब गैर यहूदी समुदाय विभिन्न परम्पराओं का पालन करते थे उनमें फिर भी यहुदी समुदायों के प्रति भाईचारा था। वो हर एक परंपरा को उसके संस्कारों का पालन करने देते थे, जब तक वो एक दूसरे का आदर तथा यीशु की आज्ञाओं को मानते थे। हम भी वैसा ही कर सकते हैं।" वो धर्मग्रन्थों को खोलते हैं और येरूशलम में यहुदीयों के चर्च तथा कैसरिया में और यहुदी समुदाय के बीच मतभेंदो की तुलना करते हैं, प्रेरितों के काम अध्याय 2 तथा 10 में गलतीयों में गैर यहुदी समुदाय किस तरह से यहुदी समुदायों से भिन्न या, वो यह भी विचार करते थे।

मि. फूलिश जाते हैं, परन्तु जेकब स्वीकार करता है, "मैं नहीं जानता था कि ऐसे मतभेदों को समुदाय में विधमान होने की बाईबल अनुमति देती है। तथा मैंने कभी विभेद नहीं किया उन तरीकों में जो परिवर्तित हो जाते हैं तथा सर्वव्यापी मूलभूत आशाओं में जो कभी नहीं बदलती। इसलिये मैं प्राचीनों के सुझावों को मानने की इच्छा करता हूँ तथा लर्नर को अपना प्रधान स्वीकार करता हूँ। उसकी शैली मेरे पूर्व पादरी से भिन्न है, परन्तु मैं अब देखता हूँ कि यह एक महत्वपूर्ण चीज़ नहीं है।"

क्रियात्मक कार्य

- अपने समुदाय के लिए तथा समुदाय के भीतर के लिये भाईचारे को दृढ़ करने के तरीकों को योजना बनायें।
- भाईचारे का आनद एक छोटे संगठन के रूप में या पूरे समुदाय के रूप में लने के लिये खेलो तथा आमोद प्रमोद के अन्य स्वरूपों को नियमित समय पर आप आयोजित कर सकते हैं।
- अन्य समुदायों के साथ भाईचारे के समय का प्रबन्ध करें, तथा जब उन्हें आव्यश्कता हो तो उनकी सहायता करें।
- जब चर्च में ढाँचे की एकता को असहमतियाँ डराने लगें। उन लोगों को सुनने के लिए जो बोलना चाहते हैं, एक सभा का आयोजन करें। फिर प्राचीनों को उसके बारे में सोचने दें प्रार्थना करने दें, तथा राय देने दें कि क्या करना चाहिए।
- जब तक कि वो वास्तव में मार्गदर्शन ना कर रहें हो, उनको प्राचीनों को रूप में ना पहचाने। यह छोटे संगठन के मार्गदर्शकों जैसा हो सकता है (पतरस 5:1-4)।
- प्राचीनों को, सबकी सुनने की तथा सहमति पर प्रार्थनापूर्वक पहुँचने के महत्व, की शिक्षा दें। विश्वस्त हों, कि जिस मार्ग की सलाह आप देते हैं, वो यीशु की किसी भी आज्ञा जिससे वो संबंधित हो, कि तत्काल आज्ञाकारिता को आश्वस्त करता है, तथा वो केवल कुछ को ज्यादा शक्ति तथा नियंत्रण देने के लिये ही नहीं है।

III -8-प्रबन्धन-8

भेंट करें तथा परामर्श दें

लर्नर, मि. वाईज़ के नियमित रूप से उनके द्वारा प्रशिक्षित किए गए मार्गदशकों से मिलने के उदाहरण का अनुकरण करता है। हेल्पर के घर में उसने पूछा, "तुम्हारे समुदाय की कैसी प्रगति है?"

हेल्पर ने उत्तर दिया, "मैं चिंतित हूँ। केयरीगवर के परिवार को फिर से मलेरिया हो गया है। वो निराश हैं उसके पुत्र की टाँग भी टूट गई हैं। उसकी पत्नी अवसाद से ग्रस्त बैठी हुई रोती रहती है तथा आकाश की ओर टकटकी लगाये देखती रहती है। क्या तुम उनसे बात कर सकते हो?"

वो केयरगिवर के घर भेंट करने जाते हैं और मि. फूलिश को वहाँ देखकर अचंभित हो जाते हैं। वो लर्नर से कहते हैं, "केयरगिवर का पत्नी कारमैन मेरी वहन है। मैं अपने जीजा से पैसे उधार लेने आया था क्योंकि मेरी बिक्री इन दिनों काफी कम रही। परन्तु अपनी बीमारी के कारण उसने अपनी शिक्षक की नौकरी खो दी। शायद तुम मेरी सहायता कर सकते हो।"

लर्नर ने दृढ़ता से कहा, "मैं तुम्हें कई बार बता चुका हूँ कि मैं उधार नहीं देता। केयरगिवर तथा कारमैन वो लोग है जिन्हें सहायता की जरूरत है।"

मि. फूलिश उसकी पत्नी कारमैन के सामने केयरगिवर से कहते हैं, "तुम्हें यह परेशानी इसलिये है क्योंकि तुमने तथा तुम्हारे परिवार ने बहुत ज्यादा पाप किये हैं। तुम यीशु के द्वारा नहीं बचाये जाते हो क्योंकि अगर तुम सच्चे मसीही होते तो इतना दुख नहीं उठाते।" कारमैन कमरे से ज़ोर से रोती हुई भाग गई।

"मैं यह सुनने से इनकार करता हूँ। केयरगिवर चिल्लाया। वो अपने घर से बाहर चल दिया। लर्नर तथा हेल्पर उसके पीछे गए। उसने उन्हें बताया, "मि. फूलिश ने मेरे परिवार को बहुत परेशान किया है। हम चर्च को छोड़ रहे हैं।"

हेल्पर ने उसको सहभागिता जारी रखने के लिये मनाने की कोशिश करी पर वो नहीं सुनता था लर्नर वापस घर आया तथा सारा के साथ प्रार्थना करी। वो तुरन्त मि. फूलिश के घर गया तथा उन्हें डाँटा, "तुम्हारी बहन कारमैन के परिवार ने हेल्पर का समुदाय छोड़ दिया है क्योंकि तुमने उसे हतोत्साहित किया।"

"मैं प्रसन्न हूँ," मि. फूलिश ने जवाब दिया, "उस कंजूस आदमी के बिना ही चर्च ज़्यादा अच्छा है। कारमैन को उससे कभी शादी नहीं करनी चाहिये थी।"

लर्नर को क्रोध आया पर वो कुछ नहीं बोला अगले दिन वो हेल्पर के पास वापस गया तथा उसे प्रोत्साहन दिया। निराश मसीहीयों के साथ व्यवहार करने की एक शिक्षा जो मि. वाईज़ ने दी थी, वो साथ ले गया। उसने हेल्पर को अपने घर में गिटार पर एक दुखभरी धुन बजाते हुए देखा। लर्नर ने उसके लिये पढ़ा, अपने लोगों से भेंट कर के उन्हें परामर्श देना एक मूल प्रबन्धन है। परमेश्वर पर भरोसा करने तथा प्रसन्न रहकर एक दूसरे की सहायता करके, जब जीवन दुखदायी हो तब भी, के यह व्यवहारिक तरीके हैं। ईश्वर का आत्मा हमारा परामर्शदाता कहलता है। हतोत्साहित भविष्यवक्ता के बारे में जाने कि कैसे ईश्वर ने उसकी मदद करी थी।"

अभ्यास

1 राजाओं 19:1-18 में देखें:

- एलिय्याह क्यों हतोत्साहित था? अगर पूरी कहानी जाननी हो तो अध्याय 18 पढ़ें।
- परमेश्वर ने एलिय्याह की सहायता के लिये पहले क्या भेजा अध्याय 19 में?
- गुफा में परमेश्वर के एलीय्याह से पहले शब्द क्या थें
- एलिय्याह की कैसे पता चला जब परमेश्वर उससे बात कर रहा था?
- एलिय्याह को प्रोत्साहन देने के लिये, परमेश्वर ने क्या करने को कहा?

रोशेल लर्नर के लिये चाय लाती है, जब हेल्पर शिक्षा में से पढ़ता है, "परमेश्वर के साहसी भविष्यवक्ता भी हतोत्साहित हो जाते हैं। परमेवर ने एलिय्याह को बड़े बड़े चमत्कार करने की शक्ति दी थी, परन्तु जब रानी इज़बिल ने उसे जान से मारने की धमकी दी तो वह घबराकर भाग गया। वो दूर तक भाग गया तथा शारिरिक रूप से थक गया। उसने अपने दास को पीछे छोड़ा तथा अकेला चला जो कि एक भूल थी। उसको एक साथी की आवश्यकता थी। वो मरना चाहता था। उसके हतोत्साहित होने की एक वजह यह थी कि वो थक गया था। परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को खाना तथा पानी के साथ भेजा तथा जब तक उसका शरीर चंगा ना हो गया उसे सोने दिया। फिर परमेश्वर ने उसके साथ बात करी। परमेश्वर के पहले शब्द एक प्रश्न था, "तुम यहाँ क्यों हो?" पहले परमेश्वर ने एलिय्याह को सुना। परमेश्वर ने एलीय्याह को जीने का एक कारण दिया। उसने एलिय्याह को उसकी शक्ति में एक नई आशा व एक कार्य करने को दिया।"

उन्होंने 1 राजा 19 फिर पढ़ा। लर्नर बोला, "हम महान परामर्शदाता के उदाहरण का अनुकरण करेगें। जब हम जानते हैं कि लोग हतोत्साहित है, हम उनसे भेंट करतें हैं। पहले में पता करतें हैं कि उनकी परेशानी का क्या कोई शारीरिक कारण है क्या वे थके हुए है, भूखें हैं, तथा बीमार है? चंगाई के लिये प्रार्थना तथा उनकी शारीरिक आवश्यकताओं की देखभाल करते हैं। तथा फिर प्रश्न पूछें कि क्या परेशानी है। सही कारण जानने के लिये धर्मपूर्वक सुने कि क्यों लोग हतोत्साहित या दुखी है। नम्र रहें। परमेश्वर पीड़ित लोगों से हमारी करूणा के द्वारा बात करता है, हमारे क्रोध के द्वारा नहीं।"

हेल्पर बोला, "केयरगिवर और उसके परिवार के लिये मुझे यहीं करने की आव्यश्कता है। मुझे उससे एकांत में बात करनी चाहिये, हल्की आवाज़ में, जैसे परमेश्वर ने एलिय्याह के साथ किया था।"

हेल्पर शिक्षा में से पढ़ता है, कभी भी अफवाहों को दूसरों से नहीं हराना चाहिये, जब तक तुम निश्चित ना हो जाओ कि वो सच है तथा बढ़ी चढ़ी नहीं है। इधर उधर की बातों से दूर रहें। हतोत्साहित विश्वासीयों को आशान्वित करें।, उन्हें यह याद दिलाकर की यीशु में वो क्या है। उन्हें इफीसियों 1:3-14 के उत्साहवर्धक शब्द ज़ोर से बोलने को कहें तथा हर अनमोल वादे पर अधिकार जतायें। उनको पढ़ों को पढ़ने और या अपने पीछे दोहराने दें। अक्सर उनके जीवन से पाप होते हैं जो उन्होंने परमेश्वर के समक्ष स्वीकार नहीं किये। उन्हें अपने पाप स्वीकारने में सहायता करें।

जिन्होंने उनके साथ बुरा करा है, उनको क्षमा करने में उनकी सहायता करें, खासतौर पर उनके अपने परिवार के लोगों को उन्हें परमेश्वर की क्षमा के प्रति आश्वस्त करें। आखिर में सहायता करें, कठिन परिस्थितियों में भी।"

हेल्पर ने शिक्षा को रखा तथा बोला, "हाँ मैं यह करूँगा मैं अपने समुदाय में भेंट करने तथा परामर्श देने के प्रबन्धन का आयोजन करूँगा। मैं अपने कार्यकर्ताओं के साथ आज रात को मिल रहा हूँ। कृप्या रूकें तथा मेरी सहायता करे लर्नर!"

अभ्यास

इफीसियों 1:3-14 में कई अनमोल वादे देखें, यीशु में विश्वासीयों को उत्साहित करने के लिये:

उस रात हेल्पर अपने समुदाय के अन्य कार्यकर्ताओं को समझाता है, "हमारे लोग परेशानीयों का सामना करते हैं, जिन्हें हम सिर्फ उनके घरों पर भेंट करके निपटा सकतें हैं। कुछ का अन्य लोगों से, अक्सर उनके परिवार में से ही, विवाद है। कोई बीमार बूढ़ा तथा कमजोर है, या बेरोज़गार है। कुछ लोग शराब नशीली दवाओं तथा योन संबंधी परेशानीयों से संघर्ष करते है। कुछ नए विश्वासी अपनी मुक्ति तथा चर्च में अपने स्थान के प्रति आशंकित है। कई के पास मित्र तथा परिजन है जो कि अभी तक यीशु को नहीं जानते हैं। हम ऐसा आयोजन करे कि हर नए विश्वासी किसी अन्य के द्वारा नियमित भेंट पायें। लर्नर, कृप्या बताओ कि हमें क्या करना चाहिये।"

लर्नर ज्ञानपूर्वक सलाह देता है, "यहाँ पर तुम प्रधान हो। तुम जानते हो कि तुम्हें क्या करना चाहिए। तुम उन्हें बताओं।"

हेल्पर संगठन से कहता है, "जोड़ो में जाओ पुरूष पुरूषों के साथ तथा महिला मलिाओं के साथ भेंट करें। इधर उधर की बातों को टालें। पति तथा पत्नी परिवारों को साथ साथ भेंट कर सकते हैं। जिनसे भेंट करो उनके साथ प्रार्थना करो। जो कहानीयाँ मैंने तुम्हें सिखायी है, उनका प्रयोग करो, लोगों की समस्यांए सुलझाने तथा उन्हें यीशु के बारे में बताने में तुम परिपक्व विश्वासी हो। नए वालों के साथ उनके असुरीक्षत मित्रों के पास जाओ, तथा नए विश्वासीयों को तुरन्त सीखने में मदद करो कि क्या कहना चाहिये। याद रखो, हम सब यीशु की तरह चरवाहे है जो कि एक महान चरवाहा है। हम सब उसकी भेड़ों की, प्रेम तथा करूणा से देखभाल करते हैं। विचारवान रहो! जब लोग खा रहे होते हैं या काम करते होते हैं तो उन्हें बाधित ना करो। साफ, श्रुद्धालु तथा सौम्य बनो। उनके लिये प्रर्दशित करो कि यीशु कैसा है।"

हेल्पर तथा लर्नर कोरगिवर के परिवार से भेंट करते हैं, जिन्होंने समुदाय को छोड़ दिया था फिर से हेल्पर लर्नर को केयरगिवर के परिवार से बात करने को कहता है, परन्तु लर्नर मना कर देता है, यह कहकर कि, "तुम उनके मार्गदर्शक हो।"

हेल्पर केयरगिवर तथा उसके परिवार को बताता है कि अय्यूब किस तरह से दुखी हुआ था। "अय्यूब के मित्रों ने उसे आराम पहुँचाने की कोशिश करी जब वो बीमार शोकाकुल तथा दर्द में था, परन्तु उन्होंने उसे केवल और ज्यादा त्रस्त कर दिया। वो यह कहते रहते थे कि वो दुख भोग रहा है क्योंकि वो बुरा था। अय्यूब परमेश्वर से यह पूछना चाहता था कि वो इस प्रकार से क्यों दुख भोग रहा है, क्योंकि उसने दुष्ट लोगों को आराम से रहते देखा था। मैं समझाता हूँ कि कैसे जो दर्द में होते हैं आराम पाते हैं।"

अभ्यास

अय्यूब के अध्याय 1 तथा 2 में देखें:

- परमेश्वर ने अय्यूब के विश्वास की कैसे परीक्षा ली?
- क्या अय्यूब ने जाना कि परमेश्वर उसकी क्यों परीक्षा ले रहा है?
- अब अय्यूब के अध्याय 38 तथा 42 में देखें
- परमेश्वर ने अय्यूब को कैसे उत्तर दिया?
- अंत में उसके साथ क्या हुआ?

केयरगिवर के घर में हेल्पर उसे तथा कारमैन को शान्ति देता है, "हमारे पास कई कारणों से दुख आते हैं। हम अपने ऊपर दुख ले आते हैं क्योंकि हम बेवकूफी के कार्य करते हैं। परमेश्वर हमें सही रास्ते पर लाने के लिये भी, उसको याद रखने में हमारी सहायता के लिए भी, या हमें स्वर्ग में ले जाने के लिये, देता है। वो दुखों को, हमारे विश्वास को जाँचने तथा उसे दृढ़ करने, को अनुमति देता है। कभी कभी वो हमें अपनी शक्ति से चंगा करता है। कभी कभी हमारी दुर्बलता में वो अपनी प्रबलता दिखाता है, जैसा पौलुस ने कुरिन्थियों के चर्च को बताया था।"

कारमैन तथा बच्चे बिस्तर पर जाते हैं, परन्तु केयरगिवर अधिक जानना चाहता है हेल्पर ने समझाया, पौलुस का दुखों के प्रति अभिवृत्ति।

अभ्यास

- 2 कुरिन्थियों 1:3-7 में देखें हमारी शांति का मुख्य स्त्रोत।
- 2 कुरिन्थियों 4:7-12 में देखें कि विश्वासी के कष्ट उसके शरीर में क्या दर्शाता है।
- 2 कुरिन्थियों 12:7-10 में देखें कि किस कारण से परमेश्वर ने पौलुस को कष्ट सहने की अनुमति दी।

हेल्पर केयरगिवर के साथ प्रार्थना करना जारी रखता है तथा उसे शांति देता है, "परमेश्वर हमें दुखी नहीं होने देना चाहता।यीशु हमारे दुखों को अपने कंधा पर उठाने के लिये आया था। अगर हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं तो वो हमारे दुखों में से कुछ अच्छाई लायेगा, जैसा कि वो यीशु, पौलुस तथा अय्यूब के दुखों में से सच्चाई लाया था अब मुझे उस अंधा आदमी जिस पर कोई विश्वास नहीं करता था, के बारे में बताने दो।"

अभ्यास

- युहन्ना अध्याय 9 में देखें कुछ अच्छी जो आदमी के अंधेपन के कारण हुई।
- याकूब 5:3-20 में देखें लोगों के लिये सलाह के शब्द जो दोनों अच्छे तथा बुरे समय देख रहे हैं।
- इब्रानियों 12:5-12 में देखें विश्वासी जो लगातार पाप करते रहते हैं, उनको परमेश्वर के द्वारा दंड देने को महत्वपूर्ण कारण।

जब उन्होंने केयरगिवर के घर को छोड़ा, लर्नर ने हेल्पर से कहा, "तुमने अच्छी तरह परामर्श दिया। मैं जानता था कि तुम ऐसा करोगे। इसी वजह से मैं चुप रहा।"

अगले दिन हेल्पर अपनी पत्नी राशेल को केयरगिवर की पत्नी कारमैन से भेंट कराने ले गया। राशेल ने भी भेंट करने तथा परामर्श देने की शिक्षा पढ़ी थी। उसने कारमैन को समझाया, "तुम्हारे दुखों का यह मतलब नहीं है कि ईश्वर ने तुम्हें छोड़ दिया है।"

बाद में वो एक दूसरे से मिलते हैं यह जानने के लिये के लिये कि उनके हतोत्साहित होने का मूल कारण क्या है। केयरगिवर कहता है, "मैं जानता हूँ कि इसकी जड़ क्या है। मैंने अपने परिवार की परमेश्वर की विश्वासनीयता भूलने दी। हम एक परिवार के रूप में प्रार्थना नहीं कर रहे थे। अब हम साथ साथ प्रार्थना करते हैं, तथा अपने दुखों में से अच्छाईयाँ लाने को परमेश्वर से माँगते हैं, जैसा उसने अय्यूब के लिये किया था।

हेल्पर के समुदाय के कुछ सदस्य परिवार के लिये खाना लाते हैं तथा कई दिनों तक उनकी सहायता करना जारी रखते हैं। परिवार का विश्वास दृढ़ता से बढ़ता है तथा वो वापस समुदाय में जाते हैं। जल्दी ही परमेश्वर उनकी शरीरिक बीमारीयों को भी चंगा करता है। केयरगिवर अन्य लोगों से भेंट करना प्रारम्भ करता है, उन्हें यीशु के बारे में बताने तथा आराम देने के लिए। वो उन सहायताओ को बताना पसंद करता है, "परमेश्वर ने हमारे लिये अच्छी चीज़ें लाने के लिये बुरी चीजों का प्रयोग किया।"

एक आराधना सभा के दौरान हेल्पर घोषणा करता है, "समुदाय उस करूणामय देखभाल को पहचानता है जो केयरगिवर तथा कारमैन कई दूसरों को दे रहे हैं। अब हम उन पर भरोसा करके उन को डीकन (छोटा पादरी) नियुक्त करते हैं, जैसा कि प्रेरितों के काम 6 में हैं।" संगठन के लोग वाह वाह करते हैं।

क्रियात्मक कार्य

- भेंट करने तथा परामर्श देने, उनको जिन्हें समस्माएं हैं, के प्रबन्धन का विकास करें। अपने समुदाय में उन लोगों को खोजे जिन्हें दूसरों को परामर्श देने में मज़ा आता है। इस खण्ड की कहानीयों का प्रयोग करके उन्हें प्रोत्साहित तथा नसीहत देने की शिक्षा दें।
- हर एक को कभी कभी भेंट करने का प्रबन्ध करें, चाहे वो समस्याग्रस्त हो या नहीं।
- नए विश्वासीयों को यीशु की मूल आज्ञाओं का पालन करने की शिक्षा दें, जो खण्ड में सूचीबद्ध है।
- नए विश्वासीयों के साथ उनके असुरक्षित मित्रों से भेंट तथा साक्ष्य में सहायता करने के लिये जायें।
- दुबर्ल बीमार, तथा अन्य आव्यश्कताओं से ग्रस्त बुजुर्गों की खास देखभाल करें।

III -9-प्रबन्धन-9

समस्त परिवारों का विश्वास तथा विवाहों की दृढ़ करें

मि. फूलिश अपने ठेले के साथ लर्नर के घर पर पहुँचते हैं, बिक्री के कई सामानों को प्रदर्शित करते हुए। "इसे देखो" वो बोले, "एक नई तरह की टार्च वाली बैटरी जो कभी समाप्त नहीं होती। अपनी टार्च के लिये बारह का एक पूरा डिब्बा खरीद लो।"

लर्नर पूछता है, "जब वो कभी समाप्त नहीं होती वो फिर मैं इतनी सारी क्यों खरीदूँ? तुमने उस कपड़े के नीचे क्या छिपा रखा है?"

"निजी सामान।" लर्नर कपड़े को हटाता है तथा मूर्तियाँ देखता है, उस प्रकार की जिन की कई लोग देवताओं के रूप में पूजा करते हैं।

"यह सिफ सजावट की है, घर को सुन्दर बनाने के लिए!" मि. फूलिश दृढ़ता पूर्वक कहते हैं।

"फिर तुमने उन्हें छुपाया क्यों?"

"मैं जानता था कि तुम उन्हें नापसन्द करोगे! तुम संकीर्ण मानसिकता के हो! अगर तुम्हारे में शाक्तिशाली विश्वास होता तो तुम जानते कि एक मूर्ति सचमुच कुछ नहीं है तथा तुम उसके बारे में हो हल्ला नहीं मचाते। मेरे पास दृढ़ विश्वास है, इसलिये मैं यह मूर्तियाँ बिना किसी परेशानी के बेच सकता हूँ।

"मैं तुम्हारा तर्क नहीं समझा," लर्नर उत्तर देता है, "विधर्मी जो उन्हें खरीदते हैं, उनका उपयोग पूजा के लिये करते हैं।"

"तुम्हारे में सच्चा विश्वास नहीं है। चर्च में मेरे अलावा किसी के पास भी सच्चा विश्वास नहीं है। तुम्हारे लोगों को अच्छा जीवन जीना चाहिये था पर लगभग सभी परिवारों में समस्याएँ है। पति अपनी पत्नीयों से लड़ते हैं तथा अपने बच्चों की अपेक्षा करते हैं। उन में कोई विश्वास नहीं है मैं अपने परिवार को ठीक प्रकार से रखता हूँ। जब मेरी पत्नी वैसा नहीं करती जैसा मैं चाहता हूँ, मैं उसे पटिता हूँ।"

लर्नर उत्तर देता है, "यह सच है कि हमारे परिवारों में समस्यायें है, पर लगता है कि तुम्हारे में भी है। मैंने मि. वाईज़ को बताया था कि हमको समस्त परिवारों के विश्वास को दृढ़ करने की आव्यश्कता है। वो मेरे पास अब्राहम, एक विश्वासी इन्सान को शिक्षा छोड़ गए थे। चलो हम पढ़ते हैं। परन्तु पहले यह वादा करो कि तुम यहू मूर्तियाँ नहीं बेचोगे।"

मि. फूलिश बडबड़ाते है, "जैसा तुम कहो। मैं इनके बाद और नहीं बूचूँगा। मैं अपने चर्च के साथ कोई परेशानी नहीं चाहता।"

लर्नर जारी रखता है, "अच्छा है। अब चलो अब्राहम, एक विश्वासी इन्सान को पढ़ते हैं, यह जानने के लिये कि सच्चा विश्वास क्या है। परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था कि वो उसके वंशजों में से एक के द्वारा सारे देशों पर अपनी आशीषें देगा। वो यीशु है, अब्राहम ने इस वादे पर भरोसा किया।"

अभ्यास

उत्पत्ति 21:1-7 में देखें की अब्राहम की वृद्ध तथा बाँझ पत्नी सारा को जन्म देने लायक किसने बनाया।

उत्पत्ति 22:1-18 में देखें:

- परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास की कैसे परीक्षा ली?
- परमेश्वर ने अब्राहम के पुत्र को कैसे बचाया?
- परमेश्वर ने अब्राहम से क्या वादा किया, क्योंकि वो परमेश्वर पर भरोसा रखता था?

मि. फूलिश कुछ क्षण मौन रहकर लर्नर के घर के सामने अपने ठेले पर झुकते हैं। फिर वो टिप्पणी करते हैं, "अब्राहम के पास आज के किसी भी इन्सान से ज़्यादा विश्वास था उसने तथा उसकी पत्नी ने वो कार्य बहुत पहले किये। हम आज बहुत भिन्न समस्याओं का सामना करते हैं।"

लर्नर उत्तर देता है, "अब्राहम का उदाहरण हमारे ऊपर आज लागू होता है, "परमेश्वर ने उसे एक पुत्र दिया, जिसके द्वारा सारे देशों को आशीषें देने को वादा पूरा होना था। उसने अब्राहम के विश्वास की परीक्षा ली, उसने कहकर कि वो अपने पुत्र की बली दे, वेदी पर उसकी हत्या करके। अब्राहम आज्ञा का पालन करने के लिये परमेश्वर पर काफी विश्वास करता था, तथा पमेश्वर ने इसहाक को बताया उसकी जगह एक मेढ़े को भेजकर। यह उदाहरण था, एक भविष्यवाणी, कि कैसे यीशु 2000 साल बाद हमारी जगह भरेगा। यीशु के द्वारा, जो कि अब्राहम का वंशज है, परमेश्वर ने अब्राहम से अपना वादा पूरा किया, जो कि घरती पर सारे परिवारों पर आशीष देने का था।"

"वो मुझे, कुछ ज़्यादा बिक्री के द्वारा आशीष दें सकता है।"

"तुम्हारी पत्नी को पिटाई के लिये, वो ठीक नहीं है। परमेश्वर ने विवाह की रचना की तथा उसे अच्छा बनाया। वो हमें हमारे बच्चे भेजता है तथा उनको आशीषें देता है। अगर हम परिवार के लिये उसके निर्देशतत्वों का पालन करें, हम मधुर संबंधों के साथ रह सकते हैं।"

अभ्यास

इफीसियों 5:21-33 यह जानने के लिये पढ़ें:

- मसीही पत्नीयों को किसके प्रति सर्मपण करना चाहिये?
- एक मसीही पति को अपनी पत्नी के द्वारा इस सर्मपण के योग्य होने के लिये क्या करना चाहिये?
- एक आदमी को अपनी पत्नी से किस सीमा तक प्रेम करना चाहिए?
- एक मसीही विवाह किस बात का उदाहरण है?

इफीसियों 6:1-3 यह जानने के लिये पढ़ें।

- एक मसीही घर में बच्चों के क्या कर्तव्य है?
- माता पिता के क्या कर्तव्य है?

लर्नर ने मि. फूलिश को समझाया, जब वो लर्नर के घर के बाहर ठेले के बराबर में खड़े थे, "धर्मग्रन्थ हमें बताता है कि एक आदमी तथा एक औरत, विवाह में एक होने के लिये अपने माता पिता को छोड़े। अपने बाकी (बचे हुए) सारे जीवन के लिये उन्हें एक दूसरे का विश्वासपात्र होना चाहिये। पति को अपनी पत्नी से उतना प्रेम करना चाहिए जितना वो अपने आप से करता है। पत्नी को अपने पति का आदर करना चाहिये तथा उसको प्रति समर्पित रहना चाहिए। पति को उसके ऊपर शासन करने के लिये क्रोध भरे शब्दों तथा धमकीमों का उपयोग नहीं करना चाहिए। इसके बजाए, पौलुस उन्हें बताता है, कि एक दूसरे के प्रति समर्पित रहें। अगर पति अपनी पत्नी से प्रेम करता है तथा परिवार की अच्छी देखभाल करता है, तो पत्नी प्रसन्नता से उसका पालन करेगी।"

मि. फूलिश बीच में बोलते हैं, "यह तभी काम करता है जब पति तथा पत्नी दोनों मसीही हो। मेरी पत्नी नहीं है। वो नासमझ है। मेरी उससे विवाह विच्छेद करने की तथा एक युवा मसीही लड़की से विवाह करने की योजना है! तब मेरे बच्चे बेहतर आचरण करेगें।"

लर्नर समझाता है, "नहीं! पौलुस हमें 1कुरिन्थियों 7:10-16 में बताता है कि अविश्वासी के साथ भी रहा जा सकता है, अगर उसकी इच्छा है तो। वो अविवहित विश्वासीयों को केवल अन्य मसीह के अनुयायीयों से ही विवाह करने के लिये कहता है। पौलुस यह भी बताता है कि हमें अपने बच्चों को कैसे प्रशिक्षित करना चाहिये।" लर्नर अनुच्छेद पढ़ना शुरू करता है पर मि. फूलिश चले जातें हैं। मसीह में विश्वास पाने के लिए बच्चों को कैसे शिक्षा दें उनकी अगली सभा में लर्नर समुदाय को बताता है,

हमें अपने परिवारिक जीवन को दृढ़ करना चाहिये।

पौलुस बच्चों को इफीसियों 6:1-4 में बताता है कि प्रभु में अपने माता पिता की आज्ञा मानें, जिससे वो लम्बा तथा अच्छा जीवन पायें। वो माता पिता को बताता है कि वो अपने बच्चों को ठीक तरह से प्रशिक्षित करें, ना कि उनको उन आज्ञाओं से हताश करें जिनका बच्चे आसानी से पालन न कर सकें। अच्छे माता पिता अपने बच्चों को उनका कहना मानना सिखाते हैं। तुम उनको प्रार्थना करना तथा यीशु की आज्ञाओं का पालन करना सिखाने के लिये बाईबल में से कहानीयों का उपयोग कर सकते हो। हर परिवार को घर पर पारिवारिक आराधना के लिये नियमित समय की योजना बनानी चाहिये। चलो हम सीखते हैं, एली भाजक के अच्छे तथा बुरे पुत्रों के बारे में पढ़कर।"

अभ्यास

1 शमुएल अध्याय 3 में देखें:

- शमुएल ने कितनी जल्दी आज्ञा मानी जब उसने सोचा एली उसे बुला रहा है?
- एली अपने विद्रोही पुत्र के साथ क्या करने में असफल रहा था?

लर्नर अपने घर पर समुदाय को समझाना जारी रखता है, "परमेश्वर ने एली को सावधान किया था कि वो अपने पुत्रों को सुधारे। एक इस्त्रायल के महायाजक के तौर पर एली सारे देश को एक बुरा उदाहरण दे रहा था। उसके पुत्र अपने अधिकारिक स्थानों का दुरूपयोग कर रहें थे, जैसे कि लोगों से चोरी करना तथा बुरा व्यवहार करना, परन्तु एली ने उन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं करा। वो सब मर गए क्योंकि एली ने उन्हें सुधारा नहीं था। दूसरी तरफ शमुएल के माता पिता ने शमुएल को तुरन्त तथा प्रसन्नतापूर्वक आज्ञाओं का पालन करना सिखाया था। परमेश्वर ने उसकी आज्ञाकारिता के लिए उसको, उसके सारे जीवन भर आशीषें दी।"

लर्नर अपने लोगों से कहता है कि वो बताएं कि अपने परिवारों को दृढ़ करने के लिये उनकी क्या योजनाएं है। जेकब, जो लर्नर का वफादार बन चुका है तथा तेज़ी से यीशु में बढ़ रहा है, उत्तर देता है, " माता पिता के तौर पर हम अपने बच्चों को, जब वो युवा होते हैं, उन्हें आत्मिक प्रशिक्षण देकर उनकी रक्षा करते हैं। हम उन्हें समझाते हैं कि हम क्या चाहते हैं, कि वो करें। हम उनसे

अपेक्षा करते हैं कि वो तुरन्त आज्ञा का पालन करें जैसा कि शमुएल ने किया था। अगर वो तुरन्त तथा प्रसन्नतापर्वक आज्ञा का पालन नहीं करते हैं तो हम उन्हें सुधारते हैं। क्या तुम माताएँ सहमत हो?"

एक क्षण के मौन के पश्चात सारा ने उत्तर दिया, "मैं सहमत हूँ, जेकब। बहुत युवा बच्चे जल्दी सीखते हैं जब हम उन्हें तुरन्त तथा शारीरिक तौर पर सुधारते हैं, जैसा कि नीतिवचन 13:24 कहता है। जब बड़े बच्चे आज्ञा नहीं मानते हैं, तथा हम उनसे कुछ देर के लिये कुछ चीज़ ले लेते हैं, फिर वो हमारी आज्ञा मानते हैं। हमें अपने बच्चों का आदर करना चाहिये तथा उनके ऊपर चिल्लाना नहीं चाहिए या गालीयाँ नहीं देनी चाहिए। हमें उन्हें क्रोध में आकर नहीं सुधारना चाहिए नहीं तो हम उन्हें आधात पहँचा सकतें हैं। तथा हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि माता पिता दोनों एक जैसे नियम सिखाते हैं।"

डेबराह सभा में पहली बार बोलती है, "हमें अपने उदाहरण से अपने बच्चों को शिक्षा देनी चाहिये। हम उन्हें नशा करना या अन्य व्यसनों को छोड़ना सिखाते हैं। हम उन्हें उन मित्रों का चुनाव करना दिखातें हैं, जो कि उन्हें बुराईयों की तरफ ना ललचाएँ। हम उन्हें परिश्रम से कार्य करना सिखातें हैं, हर चीज़ के प्रति अच्छी तरह से कार्य करके,जिस तरह से हम परमेश्वर के लिए करते हैं। हम उन्हें सिखाते हैं कि कैसे परमेश्वर के लिए करते हैं। हम उन्हें सिखाते हैं कि कैसे परमेश्वर के वचन को अपने जीवन पर लागू करें।"

"अति उत्तम!" लर्नर ने हर्ष के साथ कहा "यहाँ पर बाईबल में से परिवारों के बारे में कहानीयाँ है। वो बच्चों को सीख देने में आसान हैं। तुम माता पिता उनमें से कीमती सत्य अपने बच्चों को सिखा सकते हो। अपने बच्चों को तथा उन बच्चों के लिए जिनके माता पिता नहीं है, बताओ।"

अभ्यास

उत्पत्ति अध्याय 24 में देखें कि कैसे ईश्वर ने इसहाक के लिये पत्नी उपलब्ध करायी।

उत्पत्ति अध्याय 29:1-30 में देखें कि जेकब ने रोशेल के प्रति अपने प्रेम का प्रमाणित करने के लिये क्या किया।

प्रेरितों के काम 7:9-14 में देखें:

- युसुफ ने यह दिखाने के लिये क्या किया, कि उसने अपने भाईयों को, जिन्होंने कि उसे दास के रूप में बेच दिया था क्षमा कर दिया है?
- उसके परिवार को भूख से बचाने के लिये परमेश्वर ने युसुफ के दुखों का कैसे प्रयोग किया?

लूका के अध्याय 1 तथा 2 में देखें कि यीशु का जन्म किस प्रकार के परिवार में हुआ था।

सभा के अन्त में लर्नर के घर पर सारा माताओं को कुछ पल रूकने के लिये कहती है। वो उन्हें बताती है, "लर्नर ने मुझे बच्चों की शिक्षक बनने में सहायता की है। वो चाहता है कि हम बच्चों के लिये कहानीयों की एक सूचना बनाएं तथा हर सप्ताह उनमें से एक, नाटक के तौर पर समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करें।"

लर्नर ने जोड़ा, "हमको पिताओं से भी भाग लेने के लिए कहना चाहिए। कहानीयाँ ज्यादा सशक्त हो जाती है जब बड़े भी बच्चों के साथ हिस्सा लेते हैं।"

सारा याचना करती है, "तुम में से जो बच्चों को शिक्षा देना चाहता है, कृप्या सहायता करे। हम हर सप्ताह साथ साथ तैयारी करेंगे। हम चाहते हैं कि बच्चे प्रसन्न तथा आदरणीय बनें, जैसे जैसे वो सीखते हैं। अगर आदमी लोग भी हिस्सा लेते हैं तो वो ज्यादा अच्छा रहेगा। इसके लिये हमें तुम्हारी सहायता चाहिये, लर्नर।"

जेकब की पत्नी अपने बच्चों से बोली, हम हर सुबह तुम्हारे स्कूल जाने से पहले एक परिवार की तरह प्रार्थना करेंगें।"

क्रियात्मक कार्य

- अपने चर्च के परिवारों को उनके परिवारों में अधिकारों के लिए परमेश्वर की योजनाओं का पालन करने में सहायता करें।
- जब आपका परिवार परमेश्वर का वचन पढ़ें, गीत गाये तथा साथ में प्रार्थना करे, उनको समय निर्धारित करने में सहायता करें।
- माता पिता को उनके बच्चों को प्रेम से सुधारने की शिक्षा दें।
- बच्चों के लिये बाईबल की कहानीयाँ सुनने, तथा फिर उनका अभिनय करके आराधना में हिस्सा लेने का प्रबन्ध करें।
- बड़ों से भी बाईबल की कहानीयों का अभिनय करने को कहें, स्वंय या बच्चों के साथ।

III -10- प्रबन्धन -10

बीमारों जरूरतमंदों तथा दुर्वव्यवहार से ग्रसित लोगों की देखभाल करें

डेबराह, लर्नर को पड़ोसी, सुबह जल्दी उसके घर पहुँची और उसे बताया, "मेरा रिश्ते का भाई जोसक, जेल में है। तुमने उसको उसके नगर में एक नया समुदाय शुरू करने में सहायता करी थी। वो उसके घर पर मिलते थे। उसके नगर के अधिकारी मसीहीयत के विरोधी है। उसके नौ बच्चे हैं तथा भूखों मर रहें हैं।"

लर्नर तथा उसकी पत्नी सारा चावल का एक थैला तथा अन्य सामान जोसफ के पत्नी के पास ले जाते हैं।

जोसफ जेल (कारागार) में है, "लीसा बोली, "वो उसको पेशी पर ले जायेगे, उसे अनाधिकारिक सभाएं करने का दोषी ठहराने के लिये। लर्नर क्या तुम जाकर मेरे लिये एक अधिवक्ता खोज सकते हो? मुझे इसके बारे में कोई ज्ञान नहीं है। मुझे माफ करना, जब तक मैं तुम्हारे लिये चाय तैयार करती हूँ।"

लीसा छोटी सी रसोई में जाती है, तथा सारा उस से फुसफुसाती है, "ये वो बातें हैं कि जिनके लिये तुमने कहा था कि तुम दूसरे कार्यकर्ताओं को सौंप दोगे। हमारे समुदाय में अधिकतर लोग बहुत गरीब है। कुछ लोग शिक्षित नहीं है। मैं और तुम उन सब की परवाह नहीं कर सकते।"

लर्नर ने आह भरते हुए कहा, "तुम ठीक कहती हो। हमें हमारे समुदाय के लोगों से इन बातों का ख्याल रखने के लिए कहने की आव्यश्क्ता है। एक विधवा को उसके घर पर मरम्मत की आव्यश्कता है, तथा इस महिला को जोसफ की सफाई पेश करने के लिये एक अधिवक्ता पाने के लिये सहायता चाहिये।"

जब वो लौटते हैं तो हेल्पर तथा मि. फूलिश दोनो लर्नर के घर पर प्रतीक्षा करते होते हैं। मि. फूलिश ज़ोर से बोलते हैं, "लर्नर, कृप्या मुझे कुछ पैसे उधार दे दो जिससे कि मैं एक ध्वीन विस्तारक खरीद सकूँ यह घोषणा करने के लिये कि मैं क्या सामान बेच रहा हूँ। वो मेरी बिक्री को बढ़ायेगा तथा मैं तुम्हें अगले महीने भुगतान लौटा दूँगा।"

"मैंने तुम्हें बताया था कि उधार के लिये भीख मत माँगा करो।" "पादरी के रूप में तुम्हारा काम जरूरतमंदो तथा आव्यश्कता ग्रस्त लोगों की परवाह करना है। तुम हमारी उपेक्षा कर रहे हो।"

"मैं जरूरतमंदो की बहुत परवाह करता हूँ" लर्नर उत्तर देता है, "परन्तु बेकार लागों के लिये कोई इन्सान सबसे बुरा कर सकता है तो उसके हाथ में पैसे देना है। मैं तुम्हारी रोज़गार ढूढने में सहायता करके प्रसनन होऊँगा। तब तुम जरूरतमंदो की परवाह करके उनकी सहायता कर सकते हो, बजाय इसके कि खुद उनकी तरह बनो।"

हेल्पर टिप्पणी करता है, "मैं अपने समुदाय को जरूरतमंदों की सेवा की शिक्षा दे रहा हूँ। मैंने भेड़ों तथा बकरीयों के दुष्टांत से प्रारंभ किया था।"

अभ्यास

मत्ती 25:31-46 में देखें:

- जब हम जरूरतमंदों की सहायता करते हैं तो हम और किस की सेवा करते हैं?
- अविश्वासीयों को मरने के बाद क्या होता है अगर वो जरूरतमंदों की सहायता नहीं करते हैं?

लर्नर के घर में जब सारा उसे तथा मि. फूलिश को चाय दे रही थी, हेल्पर समझता है, "यीशु ने कहा था कि निर्धन, भूखे, विलाप करने वाले, तथा निर्दोष लोग जो दुखी है, ईश्वर की ओर से खास आशीषें पातें हैं। जब हम इन लोगों की सेवा करते हैं, हम परमेश्वर की सेवा करते हैं। जब हम इन लोगों की अपेक्षा करते हैं हम परमेश्वर की अपेक्षा करते हैं।"

परमेश्वर अपने लोगों की आव्यश्कताओं की कैसे पूर्ति करता है?

लर्नर कहता है, "निर्धन लोगों को भी सब की तरह अपने भोजन के लिए प्रार्थना करनी चाहिये ना कि सिर्फ याचना। परन्तु याचना करना उधार माँगने से ज़्यादा आदरणीय है, जब कि तुम्हारी उसे वापस करने की मंशा ना हो। वो लूटपाट करने का सबसे छलपूर्ण ढंग है। अपनी आव्यश्कताओं की पूर्ति के लिये हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिये।"

मि. फूलिश बडबड़ाते हैं, "यह कहना तुम्हारे लिये आसान है जब तुम्हारी मेज़ पर खाना हो।"

लर्नर कहता है, "मैं तुम्हें बताता हूँ कि परमेश्वर ने कैसे अपने लोगों की देखभाल करी, इस्त्रायलीयों की, निर्गमन की पुस्तक में। वो मिस्त्र में कई सालों से दास थे। परमेश्वर ने उनके पास मूसा नामक एक भविष्यवक्ता भेजा। मूसा ने मिस्त्र के फिरौन (राजा) को बताया कि परमेश्वर अपने लोगों की स्वतन्त्रता चाहता है। जब फिरौन ने मना कर दिया तब परमेश्वर ने मिस्त्र के ऊपर दस भयानक विपदायें भेजी। अंत में परमेश्वर ने मृत्यु के दूत को सारे पहलौठे पुत्रों को मारने के लिये भेजा। मूसा ने इस्त्रायलियों को चेताया तथा एक मेमना मारकर उसके लहू से दरवाज़े रंगने को कहा, जिससे वो दूत उनकी हानि ना करे। फिरौन का अपना पुत्र मर गया। आखिरकार उसने लोगों को जाने दिया। निर्गमन के पहले कुछ अध्याय ये बताते हैं। हेल्पर, क्या तुम कहानी को समाप्त कर सकते हो?"

मैं कोशिश करता हूँ "हेल्पर ने कहा। "लोग मिस्त्र से चलकर लाल सागर पर आकर रूक गए। उनके पास जाने के लिये कोई जगह ना थी। फिरौन ने अपना मन बदला तथा अपने सैनिकों को उनके पीछे भेजा। परमेश्वर ने इस्त्रायलियों के लिये लाल सागर के मध्य से रास्ता निकाला तथा मिस्त्री सैनिकों ने उनका पीछा करना चाहा, तो सागर उनके ऊपर उमड़ आया। उसके बाद इस्त्रालियों ने चालीस साल रेगिस्तान में बिताये, अपने घर के देश में वापस लौटने से पहले। उनको रोगिस्तान में खाने के लिये कुछ नहीं दिखा, कभी कभी पानी भी नहीं मिला, परन्तु परमेश्वर ने उनकी आवश्यकता की हर चीज़ की पूर्ति करी। फिर परमेश्वर ने उनको चमत्कारिक मन्ना दिया।"

अभ्यास

निर्गमन 16:11-35 मे देखें:

- परमेश्वर ने अपने लोगों को कैसे भोजन कराया?
- क्या मन्ना के उपहार ने लोगों को शिकायत करने तथा ईश्वर की आज्ञा ना मानने से रोका?

जब वो लर्नर के घर में चाय पीते हैं, हेल्पर एक और कहानी सुनाता है, "इसी तरह से आवश्यकता से लोगों की यीशु देखभाल करता है। मैं बताता हूँ कि कैसे यीशु अपना माँस खाने को प्रस्तुत करता है।

अभ्यास

यूहन्ना अध्याय 6 में देखें:

- पद 2-13 में बीमार तथा भूखे लोगों के लिये यीशु ने क्या किया?
- पद 14-37 में, लोग यीशु से कौन सी दो चीज़ें करने को चाहते हैं?
- पद 17-21 में, यीशु ने कैसे दिखाया कि वो प्रकृति के ऊपर राजा था?
- पद 28-40 में, स्वर्ग से रोटी कौन है तथा हम उसे कैसे पाते हैं?
- पद 41-69 में, उस रोटी को पाने के लिये जो हमें अनंत जीवन देती है, हम क्या करते हैं?

हेल्पर जारी रखता है, "यीशु ने कई बीमार लोगों को चंगा किया। जब उसके सुनने वालों के पास खाना नहीं या उसने उन्हें खिलाया। लोग चाहते थे कि वो राजा बनें तथा हमेशा उन्हें मुफ्त भोजन दे। यीशु यह आसानी से कर सकता था। वो सब के ऊपर सच्चा राजा है। वो प्रकृति पर भी राज करता है। उसने तूफानों को शांत करा तथा पानी के ऊपर चला। यीशु जानता था कि भौतिक भोजन उनके दिल नही बदल सकता। वो फिर भी परमेश्वर से दूर रहेंगें। यीशु चाहता था कि वो हमेशा की तृप्ति वाला भोजन दे। यह भोजन यीशु है, अपने आप में। युहन्ना 6 में वो उन्हें बताता है। कि अनंत जीवन पाने के लिये उन्हें उसका माँस खाना पड़ेगा। इससे कई लोग क्रोधित हुए जो कि आत्मिक सत्य नहीं सुनना चाहते थे।

परमेश्वर चाहता है कि हर एक जन यीशु में विश्वास करे तथा उसके द्वारा अनंत जीवन प्राप्त करे। जब हम चर्च का एक हिस्सा बन जाते हैं, यीशु के ढाँचे के रूप में तब वो हमें यह जीवन देता है।

मि. फूलिश उत्तर देते हैं, "यह एक अच्छी कहानी है पर यह मेरे घर की मेंज़ पर भोजन नहीं बढ़ाती अलविदा।"

डीकन (छोटे पादरी) यीशु का प्रेम दर्शाते हैं।

मि. फूलिश के जाने के बाद, हेल्पर ने लर्नर से पूछा, "मैं अपने समुदाय तथा और नए समुदायों में जरूरतमंद लोगों की कैसे देखभाल करूँ, बिना मार्गदर्शन तथा समुदाय को शिक्षा देने के अपने काम की उपेक्षा करके?"

"बिना जरूरतमंद लोगों की उपेक्षा किये तुम अपने शिक्षा देने के आत्मिक वरदानों को हवा दो। येरूश्लम के चर्च कें मार्गदर्शकों ने भी इस समस्या का सामना करा था। बहुत सी विद्यवाओं को देखभाल की आव्यश्कता थी पर वो यीशु के सुसमाचार की शिक्षा देने में व्यस्त थे।"मैं तुम्हें पहले डीकानो (छोटे पादरीयों) के बारे से बताता हूँ।

अभ्यास

प्रेरितों के काम अध्याय 6 तथा 7:54-60 में देखें:

- प्ररितों ने कैसे निश्चित किया कि अन्य देशों की विद्यवायें उपेक्षित नहीं है?
- प्रेरितों ने कैसे जाना कि जरूरतमंद लोगों की सेवा के लिये किसे नियुक्त करें?
- स्तीफनुस किस प्रकार का इन्सान था, उन सात में से एक जो विद्यवाओं की सेवा के लिये चुने गए था?

लर्नर हेल्पर को समझाता है, "प्रेरित, येरूशलम के चर्च के अपने शिक्षण तथा मार्गदर्शन के उत्तरदायित्व नही छोड़ सकते थे। इसलिये उन्होंने लोगों से अच्छी छवि वाले, ज्ञानी तथा पवित्र आत्मा से पूर्ण, सात इनसानों को चुनने के लिए कहा। पुरूष तथा महिला जो इस प्रकार से जरूरतमंद लोगों के सेवा करते थे, डीकन कहलाते थे। डीकन परमेश्वर के लोगों के सेवक होते हैं। स्तीफनुस डीकानो

में से एक, पवित्र आत्मा की शाक्ति में, अविश्वासी यहूदीयों को उपदेश भी देता था। उसके चेहरे पर तेज था तथा उसने यीशु को अपने पिता के साथ स्वर्ग में बैठे हुए देखा था। उन्होंने उसे पत्थरावह करके मार डाला।"

हेल्पर उत्तर देता है, "मुझे याद है तुमने मुझे डीकानों के बारे में क्या सिखाया था। पौलुस ने अपने शिष्य तीमुथियुस से बताया था कि डीकानों को अच्छे माता पिता तथा विश्वासनीए पति पत्नी होना चाहिये उनको परिपक्व मसीही तथा अच्छ ही छवि वाले, धन की ज्यादा महत्वकाँक्षा से रहित तथा शराब के सेवन की लत से रहित, होना चाहिये। दो महिलायें जो जरूरत मंदो की सेवा करती थी, वो दोरकास जो गरीबों के लिये कपड़े सिलती थी, तथा लीदिया, जिसने पौलुस के प्रचारक दल को रहने की जगह दी थी।"

हेल्पर ने राहत की साँस ली, "मैं अब समझ गया कि कैसे मैं जरूरतमंद लोगों की सहायता निश्चित करते हुए, अपने चर्च का मार्गदर्शन जारी रख सकता हूँ। मैं डीकनों को उनकी सेवा के लिये नियुक्त करने के लिये एक सभा बुलाऊँगा जैसे कि प्रथम विश्वासीयों ने करी।"

एक सप्ताह पश्चात हेल्पर लर्नर को सूचना देता है, मेरे समुदाय ने केयरगिवर तथा उसकी पत्नी कारमैन को डीकनों के रूप में चुना है। हमने उन पर भरोसा किया है तथा प्रार्थना करी कि परमेश्वर उन्हें स्तिफनुस के जैसा ज्ञानी बनाएं जब वो जरूरतमंद लोगों की सेवा करें।"

"हाँ। तथा कृप्या याकूब की पुस्तक में यह देखने के लिए पढ़ो कि प्राचीन बीमारों से कैसे व्यवहार करते हैं।"

अभ्यास

अब याकूब 5:13-17 में देखें कि प्राचीन बीमारों के लिए क्या करते थे।

क्रियात्मक कार्य

- अपने समुदाय तथा बिरादरी में से उन लोगों की सूची बनाएँ जिनको आपकी सहायता की जरूरत है।
- इन जरूरतमंद लोगों की सेवा के लिये अपने समुदाय के साथ प्रार्थना करें।
- निर्णय करें कि आपके समुदाय में कौन सा व्यक्ति डीकन की योग्यताओं पर खरा उतरता है, जो कि उसकी तरफ से जरूरतमंद लोगों की सेवा कर सके।
- प्रार्थना तथा भरोसे के साथ उन डीकनों को नियुक्त करें जो पौलुस की आव्यश्कताऐं पूरी करते हो।

लर्नर हेल्पर को बताता है, "हम उन लोगों की, जो दुखी है, यह याद दिलाकर कि यीशु ने भी दुख सहे थे, सहायता कर सकते हैं। वो हम सब की तरह मानव था।"

"मैं सोचता था वो परमेश्वर है।"

वो है। पर जब वो कुँआरी मरियम से पैदा हुआ तो उसने हमारा मानव स्वभाव लिया। उसने ईश्वर के पुत्र के रूप में अपनी ईश्वरीय महिमा को अपने में से खाली करा तथा सच्चा मानव बना, हमारी जैसी सारी कमजोरीयों के साथ। अंतर सिर्फ इतना है, कि उसने कभी पाप नहीं करा, फिलिप्पयों 2:1-11 यह समझाता है। इब्रानीयों 2:17-18 समझाता है कि उसको मानव बनना पड़ा। हमारा महायाजक बनकर हमारी सेवा करने तथा दुख उठाने जिससे कि जो दुखी होते हैं, वो उनकी भी सहायता कर सके।"

III -11-प्रबन्धन-11

मसीह जैसे बने तथा चर्च संगठन में अनुशासन बनाएं

जेकब लर्नन के घर में उसको बताने के लिये आया, "लर्नर भाई, मैंने अभी अभी जाना कि मेरी एक कर्मचारी सैफायर मेरी चोरी कर रही है। सैफापर यीशु में एक बहन है। मैंने उससे इस बारे में पूछा पर वो नाराज़ हो गई। क्या मैं इस पाप को अनदेखा कर दूँ जिससे की संगठन में तनाव ना हो?"

लर्नर ने उत्तर दिया, "नहीं, हम इसे संगठन में अनदेखा नहीं कर सकते। बाईबल बताती है कि हमें इससे जल्दी से निपटना होगा। मुझे सारा को लाने दो। फिर हम मसीह के निर्देशों को पालन करेगें कि उसके पास सीधे जाए। शायद एक साथ हम सैफायर को पश्चाताप करने में सहायता करें। हम प्रेम तथा भद्रता से जायेगें, जैसा कि गलतीयो 6:1 कहता है।"

वो सैफायर के घर पर पहुँचतें हैं तथा उससे अकेले में बात करने को कहते हैं। जेकब उससे कहता है, "मैंने तुम्हें खाना बनाने तथा घर साफ करने में अपनी पत्नी की सहायता के लिये भाड़े पर रखा था। मैं तुम्हें अच्छा भुगतान करता था। परन्तु तुमने हमारे पास से तौलिये तथा अन्य चीज़ें चुरा ली।"

सैफायर डर के मारे काँपने लगी। सारा उसे एक तरफ ले जाती है तथा विश्वास करती है, "हम यहाँ तुम्हें शर्मिन्दा करने नहीं आए है। हम चाहते हैं कि तुम ईश्वरीय क्षमा तथा पूरी आशीषें प्राप्त करो। तुम्हें कुछ चीज़ समझने की आवश्यकता है, इससे पहले कि हम बात करें कि तुमने क्या किया। यीशु ने हमें सिखाया था कि परमेश्वर की आशीषें उन पर आती है जो यीशु की तरह जीते हैं। चलो हम सुख के स्त्रोत साथ साथ पढ़ें।"

अभ्यास

मत्ती 5:1-6 में देखें आशीषों से संबंधित ईश्वरीय वादे:

- यीशु उन लोगों का वर्णन किस प्रकार से करता है जो परमेश्वर से सुख प्राप्त करते हैं?
- जब लोग हमें यीशु का अनुकरण करने पर दोषी ठहरातें हैं, तो हमें कैसी प्रतिक्रिया करनी चाहिये?
- हम अपने कामों द्वारा किस प्रकार से परमेश्वर की स्तुति करते हैं?

सारा अनुशासन के बारे में सैफायर को समझाती है। "अब जब हम यीशु से समबद्ध हैं, उसकी आत्मा हमें यीशु जैसा करने की इच्छा तथा शक्ति देती है। हम अब नहीं चाहते कि वो करें जो गलत है, परन्तु हमारा पुराना पापमय स्वयाव हमको बुरा करने को घकेलता है। हम अपने पुराने स्वभाव तथा नए स्वभाव की इच्छाओं के बीच में संघर्ष करते हैं। जब हम पाप में गिरते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें पाप के प्रति विश्वस्त करता है तथा पश्चाताप के लिये लाता है। वो हमें सही कार्य करने को प्रोत्साहित करने के लिये भाइयों तथा बहनों का भी प्रयोग करता है; हम को पश्चाताप मे बुलाने के लिये तथा ईश्वरीय क्षमा के प्रति आश्वस्त करने के लिये।"

"परन्तु मैं एक बुरी इन्सान हूँ, मैं तुम्हारी तरह अच्छी नहीं हूँ।"

"तुम परमेश्वर की सन्तान हो तथा वो तुम्हें बदल रहा है, "सारा सैफायर को आश्वस्त करती है। "परमेश्वर हमें प्रेम में सुधारता है, जैसे एक अच्छी माँ अपने बच्चों को सुधारती है। सुधार हमें संकट से बाहर रखता है। प्रेम पूर्वक सुधार के बिना, एक बच्चा आग या ज़हर में खेल सकता है, या गाड़ी के सामने आ सकता है। परमेश्वर हमें सुधारने के द्वारा संकटो से दूर रखता है। पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं ने इस्त्राइल को पाप करने से रूकने के चेताने के लिये सत्रह पुस्तकें लिखी थी। इस्त्रायल ने ईश्वरीय सुधार नहीं सुना तथा भयंकर भौतिक तथा आत्मिक संकट में पड़ा। अब हमारे पास पवित्र आत्मा है। वो हमारी मसीह में नया जीवन जीने में सहायता करता है। जब यीशु ने हमें पश्चाताप तथा बपतिस्मे की आज्ञा दी थी, वो हमें इस नए जीवन में जारी रहने की आज्ञा दे रहा था। मैं तुम्हें बताती हूँ वो तरीका जिससे पवित्र आत्मा हमें पवित्र बनाता है।"

अभ्यास

गलतीयों 5:6 से 6:3 में देखें:

- जब हम यीशु को नहीं जानते हैं, तब अपनी आदत अनुसार हम क्या गलतीयाँ करते हैं?
- अपनी आत्मा की शाक्ति से परमेश्वर हमारे भीतर क्या नौ सदगुण, या फल, विकसित करता है?
- इस संसार के पापों को छोड़ने के लिये हम अपने पुराने पापमय स्वभाव के साथ क्या करते हैं?
- जो पाप में गिर जाते हैं उनके पुनरूद्धार के लिए हम कैसे सहायता करते हैं?

पुरूष सारा को सैफायर से बातचीत जारी रखने को छोड़ देते हैं। वो समझाती है, "यीशु के शिष्यों की तरह, हम उसकी आशाओं के प्रेम में मानने की नित्य आदत बनाते हैं। यह हमें आनन्द देता है तथा ईश्वरीय आशीषें लाता है। यह आत्मिक संकट से भी हमारी रक्षा करता है। हर दिन हम प्रार्थना करते हैं तथा परमेश्वर के वचन को अपने जीवन पर लागू करते हैं। हम अपने कार्यों में यीशु के उदाहरण का अनुकरण करते हैं तथा आत्मा के फल का अभ्यास करते हैं। हम उनकी मानते हैं जिनको हमारे ऊपर अधिकार है। यह आत्मिक संकट से बचने तथा अनुशासन का विकास करने की विधियाँ है। जैसे जैसे हम इन आदतों का विकास करते हैं, पवित्र आत्मा हमें पाप को जीतने को शक्ति देता है।

"तुम अकेली नहीं हो। हम सब को अपनी पुरानी इच्छाये सूली पर चढ़ानी पड़ती है तथा परमेश्वर हमारी हमेशा सहायता करता है। नए नियम में, प्रेरित पौलुस हमें लोगों को आत्मिक तथा शारीरिक संकटो के प्रति सचेत करने के लिये कहता है जब वे यह गलतीयाँ करते हैं।

लालच या चोरी करना	आलस्य या गपशप	अनैतिक कार्य या मदीन्मत्ता
विवाद या विभाजन का कारण बनना	मूर्तिपूजा	सिद्धांत संबंधी भूल

सारा भद्रता से सैफायर को आश्वस्त करती है, "परमेश्वर तुम्हें तुम्हारी बुरी आदतों से मुक्त करेगा। कृप्या उससे ऐसा करने के लिये अभी माँगो।"सैफार थेड़ी देर लिये रोती है, तथा फिर ईश्वर से क्षमा माँगती है। वो सारा के साथ लर्नर के घर पर जाती है, तथा अपने मालिक जेकब से कहती है, "कृप्या मुझे क्षमा कर दें। मैंने जो आपसे चुराया था वो मैं वापस कर दूँगी। मुझे बहुत खेद है।"

अगली सभा के दौरान सैफायर ने सभा के सामने स्वीकार किया, "मेरे जीवन में पाप थे। मैं उन्हें छुपाती थी। चोरी भी परन्तु मैंने यह सब स्वीकार किया तथा ईश्वरीय क्षमा प्राप्त की मैं आशा करती हूँ कि आप सब मुझे क्षमा कर देगें।"

लोगों ने उत्तर दिया कि वो उसे क्षमा कर देगें, परन्तु बाद में मि. फूलिश लर्नर के पास आकर बड़बड़ाते हैं, "वो बहुत आसान है। चोरी करना एक बड़ा पाप है। इससे पहले कि हम उसे समुदाय में वापस लें, उसे दंड भोगना चाहिये। वो प्रतीक्षा करे तथा अपना पश्चाताप सिद्ध करे।"

लर्नर असहमत होता है, "नहीं मि. फूलिश। हम उसके हृदय को नहीं परखते हैं। उसे यीशु का अनुकरण करने में हमारी सहायता अभी चाहिये। उसे पाप छोड़ने में ईश्वरीए शक्ति की आवश्यकता है। काम पर जाने से पहले हर सुबह सारा ने उसके साथ प्रार्थना

करने की पेशकश की है, जब तक की वो सशक्त तथा विश्वासी नहीं हो जाती। यीशु ने हमें सिखाया था, कि हमें यह नहीं गिनना चाहिये कि कितनी बार हमने क्षमा किया था बल्कि हमें एक दूसरे को परीक्षा से बचने की सहायता के लिये प्रस्तुत करना चाहिये। परमेश्वर ने हमें इतना कुछ दिया है, आभार स्वरूप एक दूसरे को क्षमा करने के लिए उत्सुक होना चाहिये। अगर हम क्षमा नहीं कर सकते तो, हम परमेश्वर की महान क्षमा से अपने हृदयों को बन्द कर लेते हैं। परमेश्वर हमें सिर्फ शालीनता द्वारा बचाता है, ना कि उस से जो हम अपनी अच्छाई सिद्ध करने के लिये करते हैं।"

मि. फूलिश खिल्ली उड़ाते हैं, "हम जो भी चाहे पाप कर सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर हमें क्षमा कर देगा।"

"नहीं" लर्नर चिल्लाता है, "यह विचार सिर्फ यह दर्शायेगा कि हम सच्चे पश्चातापी नहीं हैं।"

समुदाय में मार्गदशकों को सुधारना

मि. फूलिश जेकब से भेंट करते हैं तथा लर्नर की निन्दा करते हैं, "वो सैफायर के प्रति इतना नरम दिल था क्योंकि वो छोटी चोर एक अच्छी दिखने वाली औरत (महिला) है।" जेकब हँसता है। मि. फूलिश यही बात कई और लोगों से भी कहते हैं। जल्द ही विश्वासीयों के बीच थे निन्दा चेचक की तरह फैल गई।

अगले सप्ताह की सभा में सैफायर समुदाय के अन्य लोगों के साथ प्रभु भोज मनाने का प्रतीक्षा में प्रसन्नता पूर्वक बैठी हैं मि. फूलिश खड़े होकर कहते हैं, "हमें यह कार्यवाही रोक देनी चाहिये। यह महिला सहभागिता कि लिये तैयार नहीं है। यह....."

लर्नर बात काटता है। "मैंने मि. वाईज़ के साथ पढ़ा था कि बाईबल क्या कहती है, उन विश्वासीयों से निपटने के लिये जो भूल करते हैं। अगर हम एक दूसरे से लड़ते हैं तो हमें एक दूसरे को क्षमा करके प्रभु भोज से पहले समझौता कर लेना चाहिये।"

मि. फूलिश पूछते हैं, "परन्तु अगर चर्च का मार्गदर्शक भूल करें तब?"

जेकब उत्तर देता है, "हमारे सभी मार्गदशकों पर बड़े बड़े उत्तरदायित्व है। अगर वो पाप में गिरते है, तो बहुत लोगों को चोट पहुँचा सकते हैं। परमेश्वर का वचन सिखाता है कि अगर किसी के विरूद्ध कोई दोष है तो हमें उसपर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए। अगर यह दोष इधर उधर की बातों से ईर्ष्या से या घमंड से आता है, तो बाईबल उसे अनदेखा करने को कहती है। अगर तुम्हारे पास गंभीर भूल का कोई प्रमाण हो, तो व्यवहार करो। अगर कोई मार्गदर्शक को जनता से सुधार पाने की आवश्यकता है, जब वो दूसरों की पाप से अगुआई करते है। नहीं तो उनकी गलतीयाँ बड़े विभाजन का कारण बन सकती है। मसीह के लिए मार्गदर्शक बनाना आसान कार्य नहीं है।"

अभ्यास

गलतीयों 2:11-21 में पतरस के पांखंड की कहानी देखें:

- जब पतरस विश्वासीयों को पाप में ले जा रहा था, पौलुस ने उसे कैसे सुधारा?
- पतरस के कार्य यीशु मसीह को महिमा के सुसमाचार के विरूद्ध कैसे हो गए?
- पतरस पांखंडी की तरह से अभिनय क्यों कर रहा था।
- हम यीशु मसीह में विश्वास करके या कठोर कानूनों का पालन करके, कैसे बचाए जाते हैं?
- पतरस ने सुधार स्वीकार करा। हम सब भी ऐसा ही करें।

2 शमुएल 11:1 से 12:25 में दाऊद के गुप्त पाप की कहानी देखें:

- दाऊद को अपने आप को छिपाने की इच्छा ने, किस तरह से उस से और पाप कराये?
- भविष्यवक्ता ने किस तरह से मार्गदर्शक के गुप्त पाप को सुधारा?
- परमेश्वर ने दाऊद को कैसे दिखाया, कि वो क्षमा कर दिया गया है?

जेकब समझाता है, "इन कहानीयों से दो मार्गदर्शक सुधारे गए। प्रेरित पौलुस ने प्रेरित तपरस को सुधारा क्योंकि वो मिश्या शान के कारण गैर यहूदी विश्वासीयों को अस्वीकार कर रहा था। पतरस ने यीशु का सुसमाचार अपने कार्यो के द्वारा नकार दिया तथा और लोगों को भी उसी पाप में ले गया। यहापि पतरस ने सिखाया था कि हम यीशु में विश्वास के द्वारा बचाये जाते हैं, तब भी वो ऐसा अभिनय कर रहा था जैसे कि वो यहुदीयों के कानून को मानने के द्वारा बचाया गया हो। पौलुस को उसे तुरन्त ही सार्वजनिक तरीके से सुधारना पड़ा जिस से कि सारा समुदाय भूल को समझ ले। भविष्य वक्ता नाथन ने भी दाऊद राजा को सार्वजनिक तौर पर सुधारा जिससे की सारा इस्त्रायल परमेश्वर की पवित्रता को गंभीर रूप से ले।"

जेकब मि. फूलिश की ओर पलटकर कहता है, "क्या तुम्हारे पास सबूत है कि हमारे मार्गदर्शकों में से एक ने इतना गंभीर पाप करा है जो समुदाय के द्वारा सुधारा जाए?"

मि. फूलिश कहते हैं, "ओह! सब बातों को भूल जाओ।"

जेकब ने उन्हें डाँटा, "तुम ही इस अफवाह का कारण हो।"

डेबराह ने स्वीकार किया, "मैं अब शर्मिदा हूँ कि मैंने इस अफवाह को सुना तथा दोहराया। मैंने अपने मार्गदर्शक लर्नर की निन्दा करी, एक बेतुकी अफवाह के लिये।"

जेकब ने उत्तर दिया, "मैं सोचता हूँ कि एक जंगली भेड़िये ने एक लकड़बग्घे ने, हमारे मार्गदर्शक के विरोध में निन्दा फैलाकर हमारे झुंड का विभाजन करने की कोशिश करी। लर्नर कृप्या हम में से उनको क्षमा कर दो जिन्होंने ने अफवाह सुनी तथा इस जाल में फँसे।"

उन्होंने एकता की बहाली के लिये परमेश्वर का गुणगान किया, तथा प्रसन्नता से प्रभु भोज को जारी रखा। सैफायर ने सारा को बाद में बोला, "मैं समुदाय के प्रेम तथा स्वीकारिता पर चकित हूँ। मैंने ऐसी क्षमा अपने परिवार में भी कभी नहीं देखी। परमेश्वर की महिमा कितनी महान है।"

एक महीने के पश्चात सैफायर ने समुदाय को सूचना दी, "लर्नर की प्रिय पत्नी, मुझे नित्य प्रार्थना की आदत डालने, तथा मेरी चोरी की पुरानी आदत पर विजयी होने में मेरी सहायता कर रही है। परमेश्वर ने मेरी वो बुरा इच्छा मेरे हृदय से ले ली है। उसका विचार भी अब मेरे लिये घृणित हैं यह जानकर बड़ी खुशी होती है कि परमेश्वर ने मुझे साफ किया तथा शुद्ध हृदय दिया है।

क्रियात्मक कार्य

- लोगों में नित्य आत्मिक अनुशासन, प्रार्थना, तथा दूसरों को क्षमा करने के विकास में लोगों की सहायता करें।
- लोगों को प्रेम से कैसे सुधारें कि शिक्षा देने के लिये, इस खण्ड की कहानीयों का प्रयोग करें।
- इस प्रकार का सुधार हमें आत्मिक तथा शरिरिक संकट से कैसे बचाता है, अपने लोगों को समझायें।
- जिन्होंने पाप किया है उन्हें हम परमेश्वर की महिमा से क्षमा करते हैं, सुधारते हैं तथा बहाल करते हैं, पर दंड क्यों नहीं देते समझायें।
- जिन्होंने पाप किया है उन्हें प्रेम से सुधारें। मत्ती 18:15-17; गलतीयों 6:1 तथा 1तिमुथियुस 5:19-20, के निर्देशों का पालन करें।
- जो पश्चाताप करते हैं, उनका भाईचारे से वापस स्वागत करें, तथा उन्हें ईश्वर की महिमा, सफाई तथा क्षमा के प्रति आश्वस्त करें।

III - 12 - प्रबन्धन - 12

परमेश्वर से बात करें

अगली सुबह लर्नर के घर पुलिस आती है तथा उसे जेल में ले जाती है। न्यायी उसे बताता है, "मैं एक विचारण आयोजित करूँगा यह जानने के लिये कि क्या तुमने उन सभाओं की अगुआई करी जो कि हमारी सरकार से अनधिकृत है। ध्वंसात्मक क्रिया कलापों के लिए दंड बहुत कठारे हैं तुम्हारी पत्नी के अलावा तुमसे किसी को भेंट करने की अनुमति नहीं है।"

उस दोपहर सारा लर्नर के मिलने आती है तथा बताती है, "यह इसलिये हुआ क्योंकि कितने सारे लोग प्रभु की तरफ आ रहे हैं। हम प्रतिदिन खोये हुए लोगों की मुक्ति के लिये प्रार्थना करते हैं, तथा अवसरों के लिये कि उनको मसीह के बारे में बता सकें। परमेश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया है। पर इस से उन लोगों का ध्यान खिचाँ जो मसीहीयों से घृणा करते हैं।"

लर्नर प्रार्थना करता है, "प्रभु मुझे आपका सुसमाचार इस जेल में अन्य कैदियों के साथ बाँटने के अवसर दे।"

परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है। एक हफ्ते पश्चात छह कैदी यीशु के पास आ गए थे।

तीन सप्ताह बाद न्यायी विचारण का आयोजन करता है। जोज़फ वो प्रचीन जो पहले भी गिरफ्तार हो चुका था, उसकी भी पेशी हुई। उन्होंने उसी अधिवक्ता को नियुक्त किया, परन्तु उसने उन्हें बचाने के बहुत कम प्रयास किये। अभियोक्ता साक्षी बुलाता है, जो कि नए विश्वासीयों के ऊपर बिरादरी की अच्छी परम्पराओं तथा रीति रिवाज़ों को अनदेखा करने के दोष लगाते हैं। मि. फूलिश भी लर्नर के विरोध में शपथ पत्र देते हैं। स्पष्टत! किसी ने उन्हें समुदाय की जासूसी करने के लिये धन दिया था। न्यायी धोषणा करता है, "तुम दोनों को जेल में रहना होगा, जब तक कि मैं तुम्हारी फाँसी का प्रबन्ध करूँ। यह ध्वंसात्मक सभाएं आयोजित करने का दंड है।"

हेल्पर गुप्त रूप से लर्नर के प्राचीनों से जेकब के घर में मिलता है तथा बताता है, "मेरे भाईयों तथा बहनों, तुम क्रोधित तथा भयभीत हो। हतोत्साहित मत हो। मि. वाईज़ ने हमें परमेश्वर के वचन में से सिखाया था कि जो लोग हमें मारते हैं, हमें उनसे क्रोधित नहीं होना चाहिये। जैसे यीशु ने कहा था, जब उन्होंने उसे फाँसी दी कि वो नहीं जानते कि वो क्या कर रहें हैं। परमेश्वर इसको भलाई के लिये प्रयोग करेगा। लर्नर तथा जोसफ के लिये प्रार्थना करते रहो। याद रखो, हमारी लड़ाई लोगों से नहीं अपितु पाप आत्मा की शक्तियों से है। उनके उदाहरणों का अनुकरण करो जिन्होंने बाईबल से प्रार्थनाएं करी थी जैसे अब्राहम, ऐस्तर तथा हठी विधवा मैं तुम्हें अब्राहम की मध्यस्थता की निंभीक प्रार्थना के बारे में बताता हूँ।

अभ्यास

उत्पत्ति 18:16-33 में देखें:

- अब्राहम ने किस प्रकार से जिद की जब वो सदोम के दुष्ट लोगों की मध्यस्थता कर रहा था?
- जब वो प्रार्थना कर रहा था तो अब्राहम घमंडी या नम्र था?
- अब्राहम की करूणा तथा हठ के प्रति परमेश्वर की क्या प्रतिक्रिया हुई?

जेकब के घर में एकत्रित प्राचीनो को हेल्पर समझाता है "अब्राहम ने सदोम के दुष्ट लोगों के लिये याचना करी थी। वो अब्राहम के लिये विदेशी थे, पर उनके लिये उसमें करूणा की अनुभूति हुई। परमेश्वर ने उसके दया के निवेदन के कुछ अंश का उत्तर दिया। अब्राहम ने ईश्वर से किसी भी चीज़ का कभी दावा नहीं करा अपितु नम्रता से माँगा। हम भी नगरों, देशों तथा सरकारों अपने स्वंय के तथा जो हमसे बहुत दूर है उनके लिये, मध्यस्थतता करते हैं। जब लर्नर जाता है तो कृप्या समुदाय की इस विधि से प्रार्थना करने में सहायता करें।"

सिर्फ अपने या अपने परिवारों के लिये ही प्रार्थना ना करें, परन्तु सारे समुदाय के लिये भी याद रखें। अपने मार्गदर्शकों के लिये भी प्रार्थना करें। परमेश्वर से माँगे कि वो तुम्हारे में एकता रखे तथा पवित्र आत्मा की शाक्ति से तुम को भर दें, जिससे कि तुम उसकी सेवा करो। जो आवश्यकता में है तथा जो जेल में है उनके लिये प्रार्थना करो। परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वो हमको ज़्यादा अवसर तथा ज़्यादा कार्यकर्ता दे ताकि हम दूर दराज उपेक्षित लोगों के पास जाकर उन्हें सुसमाचार सुनाये। अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि परमेश्वर ने एक अनाथ लड़की का प्रयोग एक देश को बचाने के लिये कैसे किया।"

अभ्यास

ऐस्तर 3:13 से 5:3 तथा 7:1-8 में देखें:

- किस बड़े संकट के कारण मोर्दकै विलाप कर रही थी?
- रानी ऐस्तर की राजा के साथ भेंट के लिये यहूदियों ने व्यवस्था करने के लिये क्या किया?
- अपने लोगों के प्रति प्रेम तथा अपने साहसिक विश्वास को प्रकट करने के लिये रानी ऐस्तर ने क्या किया?

ऐस्तर की पुस्तक का पुर्नावलोकन करें, कि कैसे अपने लोगों की प्रार्थनाओं द्वारा उसने एक देश को बचाया। जेकब के घर में हेल्पर ने प्राचीनों को समझाना जारी रखा, "परमेश्वर ने ऐस्तर को रानी के रूप में ऊँचा किया जिस से कि वो अपने लोगों को विनाश से बचा सके। राजा को मिलने से पहले, उसने तथा उसके लोगों ने तीन दिन तक प्रार्थना करी तथा उपवास रखा। उसके पास जाने में, उसने अपने जीवन को जोखिम में डाला, तथा अपने विश्वास के द्वारा उसने अपने लोगों को बचाया। पुराने नियम में, परमेश्वर अपनी पवित्रता दिखाने के लिये अपने लोगों के शत्रुओं को दंड देता था। परमेश्वर ने मोर्दकै के शत्रुओं को मृत्यु से दंड दिया। नए नियम में परमेश्वर उनको अपनी महिमा दिखाता है, जो उसे अस्वीकार करते हैं। यीशु हमें उनके लिये प्रार्थना करने को कहता है। लोगों को विनाश से बचाने के लिये परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं के द्वारा कार्य करता है। हमको अपने हृदयों में हर समय प्रार्थना करते रहना चाहिये। हमें प्रार्थना करने से कभी भी थकना नहीं चाहियें। आत्मिक युद्ध में प्रार्थना हमारा मुख्य हथियार है। अब मैं तुम्हें हठी विधवा के बारे में बताता हूँ।"

अभ्यास

लूका 18:1-8 में देखें:

- विधवा ने न्यायी को उसकी सहायता करने के लिये कैसे मनाया?
- क्योंकि परमेश्वर हमारा अच्छा न्यायी है, तो क्या हमें उसके प्रति अपनी प्रार्थनाओं से निरन्तर लगे रहना चाहिये? क्यों?
- यीशु जब वापस आयेगा तो वो हमारे अन्दर क्या चीज़ पाना चाहता है?

प्रार्थना के लिये इन शब्दों के साथ हेल्पर शिक्षा देना समाप्त करता है, "भ्रष्ट न्यायी ने विधवा की सहायता करी क्योंकि वो उससे लगातार माँगती रहती थी। उसने किसी चीज़ को भी अपने को रोकने ना दिया। परमेश्वर एक अच्छा न्यायी है। वो न्याय के लिये तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। अपनी विश्वासनीए प्रार्थना में किसी भी चीज़ को व्यवधान ना डालने दो। जब तुम संगठित होकर प्रार्थना करो तो अपने आस पास के लोगों के बारे में भी विचार करो। उन्हें लम्बी तथा बार बार दोहराने वाली प्रार्थनाओं के द्वारा उबा मत दो, उनके जैसे जो मिथ्या देवताओं से प्रार्थना करते हैं। निन्दा तथा इधर उधर की बातों से दूर रहो। दूसरे के साथ गलत व्यवहार हमारी प्रार्थनाओं को बाधित करता है। याद रखो कि शत्रु हमें रोकना तथा हमारा ध्यान बाँटना चाहता है। यीशु अकसर सारी रात प्रार्थना करने अकेला चला जाता था। यीशु की तरह, इस संसार के उन्मादों से परे, प्रार्थना करने के लिये समय निकालो।"

जब हेल्पर द्वार से कदम बाहर निकालता है, तो तीन पुलिसवालों को अपनी प्रतीक्षा करते पाता है। वो उसे हिरासत में लेकर कारागार (जेल) में ले जाते हैं। वो उनसे अपने को लर्नर की कोठरी में रखने को कहता है परन्तु वो मना कर दे हैं।

विश्वासी अपने घरों पर प्रार्थना तथा उपवास करते हैं। कुछ छोटी छोटी मंडली में मिलते हैं तथा लर्नर और हेल्पर के लिये प्रार्थना करते हैं। मि. फूलिश, जेकब की दुकान पर एक सभा में पहुँचते हैं, "अगर हम सचमुच चाहते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दे तो हमें घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करनी होगी। खड़े हो कर नहीं बैठ कर नहीं। लेट कर नहीं। सिर्फ अपने घुटनों पर। बाईबल कहती है कि राजा सुलेमान घुटनों के बल बैठ कर तथा अपने हाथ स्वर्ग की तरफ फैलाकर प्रार्थना किया करता था। वो ही एक तरीका है।"

जेकब प्रतिक्रिया करता है, "तुम सबको प्रार्थना के सही उददेश्य से भटका देते हो। दो आदमी कारागार में है और तुम चाहते हो कि हम अपने शरीर की मुद्राओं के ऊपर ध्यान दें। परमेश्वर हृदयों की मुद्राओं के प्रति ज़्यादा चिंतित हैं। बाईबल में वो परमेश्वर से विभिन्न तरीके से बात करते थे। कई बार वो मौन रहकर प्रार्थना करते थे। कई बार वो चिल्ला कर प्रार्थना करते थे। कई बार वो खड़े होकर या लेटकर नीचे मुँह करके प्रार्थना करते थे। कुछ लोग बाईबल में से भजन संहिता का उपयोग करते थे या अपनी प्रार्थना में गाते थे। 2 कुरिन्थियों 3:17 कहता है, "जहाँ परमेश्वर का आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है।"

मि. फूलिश चले जाते हैं। वो समुदाय को ज़्यादा प्रभावशाली प्रार्थना करने के तरीकों की सहायता करने के बारे में बात करते हैं। सब लोग प्रतिदिन अकेले तथा अपने परिवारों के साथ प्रार्थना करने की सहमति देते हैं दो बूढ़ी महिलायें हर सुबह बहुत जल्दी एकत्र होकर प्रार्थना करने का वादा करती है। जेकब विश्वासीयों से एक प्रार्थना की लड़ी बनाने के लिये कहता है। "जब किसी को किसी की कोई आवश्यकता पता चलती है तो वो उसे दूसरे को बताता है। फिर वो व्यक्ति दूसरे को, जब तब सबको, जो कि लड़ी में हिस्सा लेते हैं, प्रार्थना नहीं कर लेते। हर इन्सान विभिन्न तरीकों से तथा विभिन्न समय पर प्रार्थना कर सकते हैं।"

यीशु के नाम में प्रार्थना की शक्ति

अगले दिन जेकब तथा प्राचीन जाते हैं तथा रूत के लिये प्रार्थना करते हैं; जो कि एक नई शादीशुदा महिला है तथा गंभीर रूप से बीमार है। वो बताती है, "मेरे पति तोबाइस ने मुझे माा तथा मैं गिर गई। वो अवैध दवाईयाँ लेता है। मुझे अब बहुत दर्द है।" मि. फूलिश अब आ जाते हैं तथा उपदेश देने लगते हैं, बड़े शब्दों प्रयोग करते हुए। वो प्राचीनों को बताते हैं, "अब जबकि लर्नर जेल में है, मुझ को दर्द का मार्गदर्शन करना चाहिये।"

"नहीं तुम नहीं करोगे!" जेकब ने दृढ़तापूर्वक कहा। "तथा इन लोगों को अपनी आत्मिक शाक्ति के प्रभाव में लाने के लिये बड़े शब्दों को प्रयोग बन्द करो। अब प्राचीनों को याकूब 5 के निर्देशों का पालन करने दो" वो महिला के सिर पर एक चुटकी तेल डालते हैं तथा यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं। वो विश्वास तथा विनयशीलता से प्रार्थना करते हैं, साधारण शब्दों का प्रयोग करते हुए।

"क्या ये मेरी गल्ती है?" डेबराह अपने ज्वर से पूछती है, "क्या मैंने इतने पाप करें है?"

मि. फूलिश हाँ कहने को होते हैं, पर जेकब उसे बताता है, अगर तुम्हें कुछ पाप परेशान कर रहे हैं, तो उन्हें स्वीकार करो तथा अपनी क्षमा के लिये परमेश्वर पर भरोसा रखो।"

जब वो प्रार्थना कर रहे थे, तो उसके पति तोबाइस ने धक्का देकर दरवाज़े को खोला। वो उन्हें यीशु के नाम में प्रार्थना करते सुनता है तथा कोसता है। वो जेकब पर प्रहार करता है, परन्तु इस क्रिया में गिर जाता है तथा अपनी कलाई पर मोच ले आता है। वो दुबारा असंगत तरीके से कोसता है। जेकब प्राचीनों को बताता है, "तोबाइस ने दवाईयों को अपना दिमाग कमज़ोर करने दिया तथा बुरी आत्माओं को उसके विचारों पर अधिकार करने के लिये खोल दिया है।"

मि. फूलिश चिल्लाते हैं, "भागो! हमारा इस शक्ति से कोई मेल नहीं।" रूत, हाँलाकि, रोती है, "मत जाओ मैं तुमसे रूकने की भीख माँगती हूँ। लर्नर ने हमको बुरी आत्माओं के ऊपर यीशु की शाक्ति के बारे में बताया था। उसने कहा था कि शैतान का प्रतिरोध करे तो वो हमारे पास से भाग जायेगा।"

"हाँ," जेकब उत्तर देता है। "वो याकूब 4:7 में है। हम शैतान से नहीं भागेगें परन्तु यहीं रहेगें तथा प्रतिरोध करेगें। हम उसको यीशु के नाम में हमारे से दूर भागने के लिये विवश करेगें।" वो उस लड़के की कहानी बताता है जिसको कि पिशाचों के द्वारा यातना मिली।

अभ्यास

मरकुस 9:14-39 में देखें:

- शिष्य क्या कर रहे थे जब यीशु ने उनको पाया?
- शिष्य क्यों बुरी आत्मा को नहीं निकाल पाये?
- यीशु ने पिता को क्या करने को कहा?
- यीशु ने आत्मा को निकालने के लिये क्या किया?

जेकब समझाता है, "प्रार्थना करने के बजाए यीशु के शिष्य बहस कर रहे थे, जब वो आया। वो आत्मा को नहीं निकाल पाये क्योंकि उनको परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा नहीं था। यीशु ने उनके विश्वास की कमी के लिये उनको डाँटा। उसने पिता को विश्वास करने के लिये कहा फिर उसने आत्मा को लड़के में से जाने तथा कभी न लौटने की आज्ञा दी। उसने लड़के को पूरी तरह से चंगा किया। अब हम तोबाइस के लिये वो करते हैं जो यीशु ने करा था। आओ मेरे साथ मिलकर उसके लिये प्रार्थना करो।"

मि. फूलिश जेकब से शिकायत करता है, "हमें क्या करना है यह हमें इतना ज्यादा मत बताओ। तुम एक बहुत नए विश्वासी हो। लर्नर की अनुपस्थिति में मैं उत्तरदायी हूँ।

मि. केयरीगवर भी इस चर्च के लोगों का बहुत ज्यादा मार्गदर्शन कर रहे हैं।"

एक अन्य प्राचीन मि. फूलिश को डाँटता है, "तुम जो कह रहे हो ठीक नहीं है। जेकब के हमारे साथ काम करने का पूरा अधिकार है। तथा हमें केयरगिवर की भी मदद चाहिए हाँलाकि वो एक दूसरे समुदाय का है, नए नियम से मार्गदर्शक नियमित रूप से दूसरे समुदायों की सेवा करते थे। वो जरूरतमंद समुदायों की सहायता के लिये अक्सर यात्रा करते थे। धर्मगन्थों को समुदायों के इस प्रकार के अंर्तव्यवहार की आवश्यकता है। उनका मतलब एकांकी संगठनो से नहीं हैं अपनेक्षेत्र में कोई भी समुदाय, यीशु के बड़े ढाँचे का एक भाग होता है।" अन्य लोगों से वो कहता है," आओ हम इस आत्मा से पीड़ित व्यक्ति पर भरोसा करके प्रार्थना करें।"

मि. फूलिश चिल्लाते हैं, "नहीं! उन पिशाचों का विरोध मत करो! वो हम पर हमला कर देगें।" प्राचीने ने उनके ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया तथा वो कमरे से भागकर, दरवाजें के कोने के पास से झाँकने लगे। प्राचीनों ने यीशु के नाम में बुरी आत्मा को डाँटा। अगले घंटे में उन्होंने तोबाइस को यीशु के नाम में अपने पापों को स्वीकार करने में सहायता करी तथा बुरी आत्मा से अपने को बचाने से पवित्र आत्मा की शक्ति प्राप्त करने में सहायता करी। आखिरकार तोबाइस को चैन आया तथा उसने परमेश्वर से याचना करी। उसने अपने पाप को स्वीकार तथा यीशु से अपने आप को बचाने के लिये कहा। कुछ क्षणों के मौन के बाद उसने बताया, "बुरी आत्माएं चली गई!"

उन्होंने प्रभु की स्तुति करी। तोबाइस ने जेकब को बताया, "मैं तुम्हारे को कुछ बताना चाहता हूँ। मैं अधिकारीयों के साथ काम करता हूँ तथा सरकार के विरोध में ध्वंसात्मक कार्य कलापों के लिये तुम्हारे मार्गदर्शकों को दोषी मैने ठहराया। मि. फूलिश ने मुझे सूचित किया कि तुम्हारी गुप्त सभाएं कहाँ होती थी। मैं उसका सारा कबाड़ खरीदता था और वो मुझे कुछ भी बता देता था।"

अगले दिन तोबाइस, पिशाचों के उत्पीड़न से मुक्त, अधिकारीयों को सच बताता है। वो लर्नर तथा हेल्पर को मुक्त करते हैं। जो लर्नर के घर पर वापस आते हैं तथा एक छोटे से समूह को उनकी रिहाई के लिये प्रार्थना करते हुए पाते हैं।

अनुभूतित लज्जा तथा परमेश्वर के समक्ष सच्चे अपराध बोध में अन्तर पहचानना

बाद में उस दिन डेबराह लर्नर के घर हाँफती हुई पहुँचती है। "मेरी मदद करो!" वो रोती है, "मेरा भाई सैमुअल अपने आप को मार डालेगा! आओ उससे बात करो! मैंने उसको यीशु के बारे में बताया था पर वो नहीं सुनता।"

लर्नर और सारा जल्दी से डेबराह के घर को जाते हैं। वो बताती है,

"सैमुअल ने एक उस्तरे को पकड़ा हुआ है तथा रो रहा है। डेबराह ने जल्दी से उसके पास से उस्तरा लिया। सैमुअल सुबकता है, "मैं जीने के लिये बहुत शर्मिंदा हूँ। कृप्या आप चले जाए!"

सारा पूछती है कि वो क्यों इतना उदास है। एक लम्बी चुप्पी के बाद वो उसको बताता है, "विश्वाविद्यालय के एक बेवकूफ प्राध्यापक ने मुझे अनुतीर्ण अंक दिये हैं तथा अब मैं आगे जारी नहीं कर सकता। मैं इस शर्म के साथ ज़िन्दा नहीं रह सकता। मैं उतनी मेहनत से पढ़ा जितना मैं पढ़ सकता था, परन्तु मैं तत्व याद नहीं रख सका। जिन विद्यार्थीयों के ऊँच अंक आए हैं मैंने उनसे ज्यादा महेनत करी! मैं अपने तथा अपने परिवार के ऊपर शर्म ले आया।"

सारा लर्नर से फुसफुसाती है "मि. वाईज़ सैमुअल के साथ क्या करते?"

लर्नर चुपचापी से ज्ञान के लिये प्रार्थना करता है, फिर नम्रता से सैमुअल को आश्वस्त करता है, "तुम शर्मिंदा हो पर तुमने कुछ गलत नहीं किया। तुम विश्वविद्यालय में अनुतीर्ण हो गए इसके लिये परमेश्वर तुम्हें अपराधी नहीं मानतां तुम जो कर सकते थे, तुमने किया। तुम्हें अपने आप को मारने की कोई जरूरत नहीं है। यीशु मसीह तुम्हारे हृदय से आयेगा तथा तुम्हारी लज्जा को हटा देगा।"

अगर मैं नहीं मरा, तो मैं उस प्राध्यापक से बदला लूँगा। उसके पास रसायनों की जाँच के कीमती उपकरण है। मैं उससे उनको चुरा लूँगा। वो यह प्रमाणित नहीं कर पायेगा कि मैंने ऐसा किया!" नहीं, नहीं! लर्नर ज़ोर देता है। "वो गलत होगा। तुम्हें दो तरह को लज्जाओं में अन्तर समझना चाहिये। एक तो सिर्फ अहसास होता है। दूसरा सच्चा अपराध बोध होता है जो कि परमेश्वर के दण्ड योग्य है! एक पाठ्यक्रम में अनुन्तीर्ण हो जाना पहली तरह की लज्जा लाता है, जो कि पाप नहीं है। परन्तु चोरी करना एक सच्चा अपराध है। वो वास्तविक अपराधबोध लाता है तथा परमेश्वर के दण्ड योग्य है!"

"मैं अन्तर को नहीं समझा।"

"मैं तुम्हें राजा शाऊल तथा दो प्रकार की लज्जाओं की कहानी सुनाता हूँ।"

अभ्यास

1 शमुअल 20:27-34 में देखें कि लर्नर सैमुअल की जानकारी के लिये क्या मदद करता है:

- पद 30 में देखें कि राजा शाऊल क्यों कहता है कि योनातन ने अपने परिवार को शर्मिंदा किया।
- पद 34 में देखें कि शाऊल ने दाऊद के साथ किस तरह से शर्मनाक व्यवहार किया।
- परमेश्वर के सामने किस आदमी की शर्म सच्चे अपराध बोध पर आधारित थी, शाऊल की या योनातन की?

लर्नर सैमुअल को समझाता है, "योनातन ने शर्म महसूस करी परन्तु परमेश्वर के सामने उसको कोई अपराध बोध ना था। उसने कुछ गलत नहीं किया था। उसके ईष्यालू तथा प्रतिहिंसक पिता राजा शा ऊल कोई अपराध बोध नहीं महसूस किया जबकि वो एक बुरा अपराध करना चाहता था। वो एक निर्दोष आदमी को मारना चाहता था। उसके पास परमेश्वर के सामने एक घमंडी तथा पापमय हृदय था। क्या तुम अन्तर देख सकते हो?

हाँ! यह मदद करेगा! विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में अनुत्रीर्ण होना शर्मनाक है परन्तु पाप नहीं है। परन्तु प्राध्यापक से कुछ चुराने की इच्छा परमेश्वर के समक्ष एक पाप है। जो सच में पाप नहीं था उसके लिये मैं शर्मिंदा हुआ, परन्तु जिस पाप का मैं दोषी हूँ उसके लिये मुझे कोई शर्म नहीं महसूस हुई। मैंने पिछली रात प्रार्थना करी कि प्राध्यापक को किसी तरह चोट पहुँचाने में परमेश्वर मेरी मदद करे। मैं गलत था। परन्तु मैं अपने माता पिता का कैसे सामना करूँ? उन्होंने मुझे विश्वविद्यालय भेजने में काफी धन खर्च करा था।"

"परमेश्वर तुम्हारी मदद करेगा। पहले परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करो तथा उसकी क्षमा माँगो। तुम्हें पाप के लिये यीशु के बलिदान के बारे में पता है। अब तुम्हें पता चला कि उसकी तुम्हें क्यों आवश्यकता है। पाप की स्वीकृति प्रार्थना का एक जरूरी अंग है। प्राध्यापक के पास से चोरी करने की इच्छा करना एक वास्तविक पाप है तथा परमेश्वर के समक्ष वास्तविक शर्म लाता है। तुम्हें उसको स्वीकारना चाहिये।"

"मुझे परमेश्वर से पापों को स्वीकारना नहीं आता है। मैंने यह कभी नहीं किया।"

III-13-प्रबन्धन-13

ईश्वरीय साधनों कें अच्छे खिदमतगार बन

केयरगिवर तथा उसकी पत्नी कारमैन लर्नर के घर पर उसको ये बताने आतें हैं, ''देश के अन्य भागों से परिवार यहाँ पर आ रहे हैं। कई लोग नदीं के पास, ज्यादा दूर नहीं देहाती झोपड़ियों मे रहतें हैं। हमें उनकी मदद करनी चाहिये।''

''हमें उन्हें देखने चलना चाहिये,'' लर्नर ने उत्तर दिया वो उन दयनीय झोपड़ियों को जिसमें कि लोग रहते थे देख रहे है जब उन्हें एक धंटी बजने की आवाज़ सुनाई देती है। मि. फूलिय अपना ठेला उनकी तरफ तेज़ी से ला रहे है। वो हाँफते हुए बोलतें हैं, ''पुलिस बहुत जल्दी इन लोगों को भगा देगी! यह सार्वजनिक स्थान पर है।''

केयरगिवर बोलता है, ''कितना शर्मनाक है। मैं अधिकारियों से इनके लिये याचना कँरूगा।''

''नहीं!'' मि. फूलिश असहमत हुए, ''इन्हे यहाँ से जाने दो! यह लोंग यहाँ पर हमेशा से रहने वालें की नौकरीयाँ छीन लेते है। इनके अजीब रिवाज है । इनकी वेशभुषा भिन्न है। अगर तुम इनकी रक्षा करोगे तो फिर से अधिकारीयों से परेशान होंगे। ये. तुम्हारी समस्या नहीं है। अगर तुम गरीबों की मदद करना चाहते होतो तुम मेरी मदद कर सकते हो। मुझे एक साईकिल की आवश्यकता हँ। तब मैं धूम सकूँगा तथा ज़्यादा लोगों को हमारी कलीसिया में निमंत्रित कर सकूँगा।''

कारमैन कराहती है।

''र्लनर, यहाँ देखो।'' मि. पूलिश छोटी बोतल दिखाते है जिसमें सफेद पाउडर है। ''यह हाथी का अर्क खरीद लो। एक चुटकी रोज़ सटकों, तुम बड़ें बन जाओगें।

केयरगिवर कहता है, मेरे चाचा ने यह आजमाया था तथा बताया था कि इससे तो एक नाक भी बड़ी नहीं होती! लर्नर, हमें इनकी अवश्य मदद करनी चाहिये जो कि बेहद गरीब है। मैं ने बाईबल में पढ़ा था कि कैसे परमेश्वर हमें जरूरत मंदों की मदद करने को बताता है। उनको सिर्फ पैसा हाथ में दे देने से कुछ अच्छा नहीं होता।हमें उनकी अन्य तरीकों से मदद करनी चाहिये।'' वो डोरकास की कहानी सुनाता है।

अभ्यास

प्रेरितों के काम 9:36-43 में देखें:

- लोग डोकास के बारे में क्या कहते थे?
- डोरकास ने किसकी मदद करी?

- डोरकास व पतरस ने किस व्यवहार से अन्य लोगों की सेवा करी?

केयरगिवर, मि.फूलिश तथा लर्नर को समझाता है।, जब वो नए परिवारों के गरीब झोपड़ों को देख रहे थे, ''डोरकास उन गरीबों तथा विधवाओं की मदद करती थी जिनका कोई मदद करने वाला नहीं था। वो तथा पतरस दोनों नम्रता से अन्यलोगों की सेवा करते थे। जब पतरस पहुँचा, उसने सबको कमरे से बाहर कर दिया,घुटने टेके तथा प्रार्थना करी। परमेश्वर ने डोरकास को मुर्दों में से उठा दिया।'' (जिलाया)

कारमैन आगे कहती है, ''प्रभु यीशु मसीह के लिये और ज़्यादा अच्छा करने के लिये हमारे पास यहाँ एक अवसर है। वो हमें अर्पण करने (देने) तथा जरूरतमदो की देखभाल करने की आज्ञा देता है।''

''हाँ!'' लर्पर उत्तर देता है। ''वो हमें मत्ती 25:31-46 में बताता है कि हम प्रेम से जो कुछ भी इन गरीब परिवारों के लिये करते है, वो हम उसके लिये करते है। यीशु के लिये प्रेम से जो लोग जरूरतमंदों की मदद करते हैं, परमेश्वर उन्हें स्वर्ग में प्रति फल देने का वादा करता है। 1युहन्ना 3:17 कहता है कि अगर हम उन्हें अनदेखा करतें हैं तो हमारे हृदयों में परमेश्वर का प्रेम नहीं है। हमारा प्रेम दिखाता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।''

समय तथा धन के लुटेरे

लर्नर जारी रखता है, अन्य लोगों को देने तथा उनकी सेवा करने के अवसर हमें परमेश्वर देता है। हमें सहृदयता से अपना ध न, अपना समय तथा योग्यताएं अर्पण करनी चाहिये। कभी-कभी हम परमेश्वर को अर्पण करने के अवसरों को अनदेखा कर देतें हैं। हम अपने धन को मूर्खता से खर्च करते है। हम अपना समय मूर्खतापूर्ण विवादों, बहसों, चिताओं तथा बेकार के कामों में नष्ट करते हैं। यह चीज़ें लुटेरे है। वो हमारा समय तथा धन चुरातें है। परमेश्वर के लिये हमें अपना समय अपने आत्मिक वरदान तथा अपने धन का उपयोग करने को योजना अवश्य बनानी चाहिये। हमें प्रार्थना तथा भरोसे से अवश्य देना चाहिये ताकि हम अपनी योजनाओं को परिपूर्ण कर सकें।'' ''बिल्कुल सही!'' लर्नर हामी भरता है। ''हमें लूका 14:28-30 के उस मूर्ख घर बनाने वाले की तरह नहीं होना चाहिये। वो अपनी इमारत को पूरा नहीं कर सका क्यों कि उसने पहले से योजना नहीं बनाई थी।''

''इन गरीब आगन्तुकों को हमारी सहायता की जरूरत है।'' केयरगिवर कहता है, ''बाईबल प्रकट करती है कि कैसे परमेश्वर ने उन लोगों को आशीषें दीं जिन्होनें जंग से, अकाल से या निदर्यता से भागे हुए लोगों की मदद करी। अब हमें इन जरूरतमंद लोगों की सहायता करने की योजना बनानी चाहिये। ''एक विश्वसनीय युवा विधवा, रूत,''की कहानी एक उदाहरण है।''

अभ्यास

रूत की पुस्तक में देखें:

- अध्याय 1 में, रूत ने परमेश्वर में साहस तथा विश्वास कैसे दिखाया?
- अध्याय 2 में, बोअज़ ने विदेशी विधवा के प्रति कैसे उदारता दिखाई?
- अध्याय 3 में, उनकी समस्याओं का समाधान करने में उन दो विधवाओं ने कैसे पहल करी?
- अध्याय 4 में, बोअज़ की उदारता के फलस्वरूप परमेश्वर ने रूत के साथ क्या अच्छाईयाँ पैदा होने दी?

कारमैन बोलती है, ''मैं समझी! रूत की पुस्तक जरूरतमंदो तथा अमीरों, दोनों को व्यवहार करने की शिक्षा देती है। रूत की कोई आय नहीं थी, ना ही कोई अन्य था जो विपत्ति में उसकी रक्षा करे। वो बहुत निर्धन थी । फिर भी वो अपनी सास तथा परमेश्वर के प्रति विश्वसनिए रही! वो सुस्त नहीं थी। वो बोअज के खेतों में गेहूँ एकत्रित करने का कार्य करती थी । वो बहादुर थी । उसने

नाओमी की सलाह का अनुकरण करके एक इस्त्रायली विधवा होने की रवा़तिर, बोअज़ से अपने अधिकारों की रक्षा करने को कहने की पहल करी।'' लर्नर जोड़ता है, ''दूसरी तरफ, बोआज, अमीर थर। को रूत के अनदेखा कर सकता था। पर उसके बजाय वो उसके प्रति उद्धार था। वो उसे खुल के गेहूँ इकट्ठा करने देता था तथा कर्मचारियों को उसका नुकसान करने से उसे बचाता था। वो विदेशी विधवा तक को, एक पैसा देकर छुडानों वाले संबंधी जैसा फर्ज निभाता था उसने अपनी जामदाद का खतरा उठाकर रूत को अपनी पत्नी ग्रहण किया। परमेश्वर ने इस उदारता पर आशीष दी। दाऊद तथा यीशु, रूत और बोआज के वंशज थे। रूत की कहानी एक उदाहरण है कि यीशु ने अपनी दुल्हन बनाने के लिये अपने सब विश्वासियों का उद्धार कैसे किया। वो हमारा उद्धारकर्ता है। वो हमारी जरूरतों में हमें बचाता है। जब कभी भी हम जरूरतमंदों की रक्षा करते है, जैसे बोअज ने रूत तथा नाओमी की रक्षा करी थी, हम मसीह की नकल करतें हैं।''

समुदाय के लिये दो प्रधान कार्य

लर्नर जारी रखता है, ''मैनें पढ़ा है कि मसीह के लोग कैसे सांसार को बदल देते है। उसके दो प्रधान कार्य है। वो हमारा बोझ सहने वालो दो टाँगो की तरह हैं। एक कार्य है यीशु मसीह के शिष्य बनाना। दूसरा है लोगों को प्रेम में सेवा करना। हमारे संसार में साथी भयंकर चीज़ें जैसे गरीबी, दुख तथा युद्ध, पाप के कारण आये। वो जारी रहतें हैं क्योंकि पाप हमारी जिन्दगियों पर शासन करता है। जब हम पश्चाताप करके परमेश्वर के पास आतें हैं, वो पाप की पकड़ को तोड़ता है तथा पापों के प्रभावों से हमको चंगा करना शुरू करता है। वो दो आदमीयों को लड़ते हुए देखते है पहला वाला दूसरे पर दोष लगाता है, ''तुमने मेरी बीयर चुराई है!''

''हमें इन जरूरतमँद लोगों को भी यीशु के बारे में बताता है,'' कारमैन ने तर्कतापूर्ण कहा।

''हम दोनों कार्य करेगें,'' लर्नर बोलता है, ''हम कलीसिया की देह की तरह मिलाकर काम करेंगे। यीशु हिंसा, गरीबी तथा भ्रष्टाचार की पकड़ को तोडेगा। जब लोग परमेश्वर की तरफ मुड़ते है, वो उसको सब कुछ देते है! उनका समय, उनके कार्य तथा उनके परिवार। फिर हम अपने लिये नहीं जीते है। हम एक दूसरे से चोरी तथा एक दूसरे की प्रेम में सेवा करना शुरू कर देतें हैं। अगर हम निर्धन है, हम विश्वासपात्र रहतें हैं तथा रूत की तरह कड़ी मेहनत करते है। जो लोग अमीर तथा शाक्तिशाली है उनको अपनी सेवा नहीं कखानी चाहिये। बोअज़ के जैसे उन्हें दूसरें को सेवा करनी चाहिये, जिससे कि सब के साथ अच्छा व्यवहार दे। तथा शांति से रह सकें। इससे पहले कि वो एक दूसरों को मार दें, चलो हम उन दोनो आदमियों से बात करें तथा देखें कि हम उनकी वास्तीवक समस्याओं का समाधान निकालनें में उनकी कैसे मदद कर सकते है।''

मि. फूलिश कहतें हैं, ''मैं उनके पास जाने से मना करता हूँ। उनको बीमारियाँ है।'' उन्होंने घंटी बजाते हुए अपने ठेले को सड़क के पीछे की ओर धकेला।

अगले दिन लनेर तथा केयर गिवर, अन्य प्राचीनों से, नए परिवारों की मदद की योजना बनाने के लिये, मिलतें हैं। परमेश्वर की सहायता तथा जरूरतमंद लोगों के लिये प्रार्थना करते है। यह जानने के लिये कि उनकी सबसे बड़ी जरूरत क्या है, उन्होंने उनसे कई बार भेंट की। उन्होनें उनके साथ एक कुएं का निर्माण में कार्य किया क्योंकि नदी के पानी में था । हेल्पर ने उनमें से कुछ आदमियों के लिये रोज़गार तथा बच्चें के लिए शिक्षा का प्रबन्ध किया। कारमैन ने उनकी प्रन्तीय भाषा समझी, जो कि कुछ अलग थी, तथा महिलाओं को स्थानीय भाषा में बोलना सिखाया। जब वो चिकित्सकों तथा सरकारी अधिकारियों से बोलने पर वे उनके लिये अनुवाद करती थी।

नए परिवारों ने आभार में प्रतिक्रिया करी। उन्होनें यीशु के बारे में सुसमाचार को स्वीकारा हेल्पर तथा के कई को मार्गदर्शकों के रूप में प्रशिक्षित किया। हेल्पर ने उनको, उनके विश्वास के बारे में गीत लिखने तथा उनकी निराली संगीत शैली में मदद करी। कुछ ही महीनों में और सभी अन्य समुदायों से ज्यादा लोग मसीह के पास आये।

क्रियात्मक कार्य

- यीशु के नाम में जरूरतमदों की सेवा करने के लिये अपने लोगों को सहायता हेतु इस खण्ड की कहानियों का उपयोग करें।
- सहानुभूति के वरदान से उन लोगों को प्रबन्धनों के आयोजन करने में सहायता करें जिनको आपकी बिरादरी में से कोई भी सहायता करने को तैयार नहीं। इनमें, अप्रवासी, शरणार्थी, विधवायें, अनाथ, शराबी या नशीली दवाईयों के आदि, जेल में रह रहे लोग तथा बड़ी आर्थिक तंगी से ग्रस्त,शामिल हो सकतें हैं।
- जरूरतमदो को सहायता के तरीके ठूँठे तथा उनकी समस्याओं के समाधान की पहल करें।
- अपने आप पर खतरा उठाकर भी, दुरव्यवाहर से ग्रसित लोगों के न्याय के लिये कार्य करें।
- समुदाय द्वारा चढ़ावों का उत्तरदायित्व सिर्फ ईमानदार लोगों को दें तथा ठीक प्रकार से लेखा- जोखा रखने में उनकी मदद करें।
- प्राचीनों की अनुमति के बिना धन उधार ना देने के लिये कोषाध्यक्ष को निर्देशित करें।

III -14-प्रबन्धन-14

मिरनरी भेजें

कई महीनों बाद मि. वाईज लर्नर से दुबारा मिलते हैं। लर्नर मि. वाईज़ को बताता है, ''आपने हमें सिखाया कि कैसे शिक्षा दें। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। आपने हमें सिखाया कि, नए समुदाओं कि वास्तीवक जरूरतों के क्रम में शिक्षा देने के लिये शिक्षा देने से पहले कैसे सुनना चाहिये। आपने हमें दिखाया कि कहानियों का उपयोग कैसे करें, जिससे कि हमारे सीखने वाले ईश्वरीय सत्य को याद रखें तथा दूसरों की तरफ बढ़ाये। आपने हमें दिखाय कैसे आपकी शिक्षाओ के बारे में प्रश्न पूछे जिससे कि कि हमें उन पर विचार करने में सहायता मिले तथा हम उनको अपने समुदायों पर लागू कर सकें।''

''मैंने तुम्हें सिर्फ वैसे सिखाया जैसे यीशु करता था मि. वाईज तथा लर्नर, उसके भाई हेल्पर से भेंट करने जाते हैं, तथा उसके घर पर मि. फूलिश को पाते है। वो मि.वाईज को बताते है,''मैं प्रभु के कार्य को शुरू करने के लिये देश के एक ऐसे भाग में जा रहा हूँ जहाँ पर कलीसियायें नहीं है। मैं एक कार्यदल बना रहा हूँ तथा हेल्पर तुम्हें अपने साथ जुड़ने के लिये पूछने आया हूँ। तुमने एक अन्य सभ्यता के लोगों के साथ समुदाय शुरू किया तथा उसमें से मार्गदर्शक खड़े किये। परमेश्वर ने तुमको समुदाय शुरू करने की इच्छा तथा वरदान दिया है। तुम एक 'भेजे हुए ' हो । इसी का मतलब 'प्रेरित' है। हम एक नई भाषा तथा एक नई सभ्यता सीखेगें।''

आप हेल्पर को नहीं लेजा सकते!'' मि.फूलिश विरोध करते है। ''उसके पास यहाँ उत्तरदायित्व है तथा करने के लिये बहुत कार्य है! उसके अलावा, उसको मिश्नरी के रूप में सहायता देने के लिये समुदाय अत्यन्त निर्धन है। जब हम और दृढ़ रूप से कलीसिया को स्थापित कर लेगें, तब हम मिश्नरी भेजने के बारे में सोच सकतें हैं। हमारे पास चिंता करने के लिये यहाँ बहुत पागान हैं।''

लर्नर असहमत होता हैं, ''यह हेल्पर के लिये एक बड़ा अवसर है उन लोगों तक सुसमाचार ले जाने का जिन्होने उसे कभी नहीं पढ़ा है। परमेश्वर ने अब्राहाम से वायदा किया था कि उसके वंशजो के द्वारा सारे देश आशीष पायेगें। यह वादा यीशु में आकर सच्चा होता है, जो कि अब्राहम का ही वंशज है। यीशु ने मत्ती 24:10 में कहा था कि इस संसार के अन्त तथा उसका आखिरी आगमन तब होगा जब संसार के हर देश में सुसमाचार का प्रचार हो चुका होगा। उसका मतलब राजनैतिक देशों से नहीं था, अपितु नीतिगत समूहों से था- एक सी सभ्यता के लोगों से।''

''हाँ!'' मि. बाईज़ सहमत होते है। यीशु ने कहा था कि पास तथा दूर की जगहों में और अपनी तथा अन्य सभ्यताओं में हमें उसकी गवाही देनी है। मत्ती 28:18-20 में उसको हमें अंतिम आशा यह है कि हम संसार के सारे देशों में उसके अनुयायी बनाएँ। परमेश्वर उन समुदायों पर आशीष देता है जो उसकी आज्ञाओं को मानते है। वो संसार के समस्त लोगों से प्रेम करता है तथा चाहता है कि हम उसको उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा जानें। मैं तुमको योनाह, एक अनिच्छुक मिश्नरी के बारे में बताता हूँ जो कि शुरू में अन्य सभ्यताओं तक पहुँचने के बारे में मि. फुलिश की तरह सोचता था।''

परमेश्वर संसार के सभी देशेों के लोगों को बचायेगा

अभ्यास

योना की पुस्तक में देखे:

- इस्त्रायाली भविष्यवक्ता ने क्या किया जब परमेश्वर ने उसको शत्रु नगर के बारे में संदेश दिया?

- परमेश्वर ने अपनी इच्छा को कैसे प्रबल रखा, जबकि मिश्नरी ने वहाँ जाने से मना कर दिया था जहाँ उसको भेजा गया था?
- किस तरह से यह कहानी संसार के सबसे अधिक पापी देशों के लिये भी परमेश्वर का प्रेम दर्शाती है?

''यह एक खतरनाक बात है!'' मि. फुलिश चिल्लातें हैं जब वो हेल्पर के घर पर मि. वाईज़ लर्नर तथा हेल्पर की बातों को सुनतें हैं । ''उन लोगों को खोजने के लिये, जिनको अपने पापों के प्रायश्चित की आवश्यकता है, हमें दूर के इलाकों में खोजने जाने की कोई जरूरत नहीं है।''

मि.वाईज समझाना जारी रखते है; योना ने एक शत्रु देश को उपदेश देने के लिये मना कर दिया था। वो जहाज़ का विपरीत दिशा में ले गया था। परमेश्वर ने उसको वापस लाने के लिये तूफान तथा उसके उपरान्त एक मछली को भेजा। योना ने वो कठिन तरीका सीखा कि उसको परमेश्वर की इच्छा का पालन करना चाहिये। परमेश्वर नीनवे के लोगों की उसे तरह से परवाह करता था जैसे कि संसार के और लोगों की। जब उन्होनो पश्चाताप किया तो परमेश्वर ने उनको क्षमा किया जैसे कि वह उन्हें क्षमा करता है जो उसकी तरह मुड़ते है। परमेश्वर हमारे को उन लोगों के प्रति भी प्रेम देता है जो कि हमारे से भिन्न होते है। वो हमें उन तक सुसमाचार ले जाने के लिये भेजता है तथा जब हम इच्छापूर्वक जाते हैं तो वो हमें आशीष देता है। अगर हम उसकी आज्ञानुसार नहीं है तो वो उन लोगों तक किसी और तरीके से पहुँचता है परन्तु फिर हम उसकी विशेष आशीष नहीं पाते है।''

मि.वाईज,हेल्पर की पत्नी राशेल से कहते है, ''परमेश्वर ने तुम दोनों को आत्मिक वरदान दिया है। कृपया मेरे साथ चलो। हेल्पर तुम निर्धन हो, तथा मैं तुम्हारे समुदाय से यह आशा नहीं रखता,जो स्वंय निर्धन है, कि वो तुम्हें वेतन दें। उनको किसी की सहायता करनी चाहिये तथा अन्य समुदायों को भी जिनको इस क्षेत्र में परमेश्वर ने खड़ा किया है। मेरी योजना यह है कि मैं और तुम एक व्यापार के अभिकर्ता के रूप में वहाँ जायेगें जिसने हमें वहाँ पर रोज़गार दिया है। हम अपनी जीविका ऐसे कमायेगें जैसे कि प्रेरित पौलुस ने प्रेरितों के काम 18 में किया था। पौलुस के मित्र, प्रिस्किवला तथा अक्विला:ने उसको बनाने का कार्य देकर रोजगार दिया था। हमारे पास प्रिस्क्ला तथा आक्विला जैसे मसीही मित्र है। वो हमें रोज़गार उपलब्ध करायेंगे जहाँ पर हम समुदाय शुरू करेंगे।''

अन्य सम्यताओं के लोगों तक सुसमाचार कैसे ले जायें

राशेल कहते है ''मैं नहीं जानती कि बहुत भिन्न सम्यता के लोगों के साथ कैसे कार्य किया जाता है।''

मि. वाईज समझाते है, ''हम वैसे ही करते है जैसे कि परमेश्वर हमारी सभ्यता में आया । यीशु को आवतरण के बारे में सोचो। परमेश्वर ने यीशु को हमें सुसमाचार बताने के लिये एक मिश्नरी के रूप में भेजा था। वो एक राजा के रूप में नहीं आया था जब कि वो इस योग्य था कि सब उसकी आराधना करें। उसने स्वर्ग में अपनी महिमामय जगह छोड़ी तथा एक असहाय शिशु की तरह आया। उसने एक बालक की तरह यहूदी सभ्यता सीखी! जब वो शिक्षा देता था तो लोग इसलिये नहीं सुनते थे कि वो शक्तिशाली था प्रसिद्ध है। वो इसलिये सुनते थे क्यों कि वो जानते थे कि उसके शब्द परमेश्वर कि ओर से आते है। जो उसके वचनों को नहीं पसन्द करते थे उन्होनें उसे मार डाला। हमारे प्रति प्रेम की खातिर उसने यह सब चीज़ें सहीं। वो हमें किसी और प्रकार से नहीं बचा सकता था।

''पराये लोग वो सब कैसे करेगें? '' मि. फूलिश पूछते है। ''वो फिर से बच्चे बनकर एक नयी सश्यता में तो नहीं उग सकते!''

मि. वाईन् प्रतिक्रिया करते है,''हम बच्चें तो नहीं बंन सकते पर बच्चों की तरह से दूसरी सभ्यता में प्रवेश तो कर सकते है हम यीशु की तरह अपने को नम्र बनायेंगे तथा लोगों से उनकी भाषा तथा सश्भ्यता सीखेगें। हम उन्हें अपने आप को सिखाने देगों। हम भरोसेमंद प्रथा प्रेममय संबंधों का निर्माण करेगे, जैसे रूत ने इस्त्राएल की सश्भ्याता में जाते समय किया था। उसने अपनी से नाओमी शुरूआत करते हुए इस्त्राएलीयों के साथ वाचा बान्धी थी वयों कि वो उनसे प्रेम करती थी।

हेल्पर जोड़ता है,''जब हम लोगों को अच्छी प्रकार जान लेगे, तो हम उनकी समझ वाली भाषा में सुसमाचार का वर्णन करना जान जायेंगे । प्रेरित पौलुस कुरिन्थियों 9:19-23 में कहता है कि वो यहूदियों के लिये यहूदी जैसा बन जाता था तथा अन्य जातियों के लिये उन जैसा । वो उनको यीशु के लिये जीतने में हर संभव उनके जैसा बनने की कोशिश करता था। मैं सोचता हूँ यह मज़ेदार रहेगा।''

मि.वाईज़ कहते है, ''मैं तुम्हारे लिये एक शिक्षा लाया हूँ पौलुस की तरह मिश्नरी यीशु के अवतरण की नकल कैसे कर सकते है इसमें सूचीबद्ध है:

क) लोगों में जाकर रहें जैसे वो रहते है, पापों के अलावा।

ख) भाषा सिखाने के लिये एक सहायक की मदद लें।

ग) प्रत्येक दिन उनकी भाषा के कुछ वाक्य सीखने के लिये चुनें।

घ) घूमने जाए तथा इन वाक्यों का प्रयोग पचास लोगों से करें जो आपको उस दिन मिलतें हैं।

प) जब आपको उनकी भाषा अच्छी तरह आजाये, तो उनको परमेश्वर तथा उसके पुत्र यीशु के बारे में बाईबल की कहानियाँ सुनाना शुरू करें

फ) ग्रहणकर्ता लोगों के प्रति ध्यान दें तथा प्रतिरोध करने वालों को फिर भी के लिये छोड़ दे।

म) घरों के मुखियाओं से बात करें। यह पूरे परिवार को यीशु में लाने के लिये सहायता करता है।

मि. वाईज हेल्पर तथा राशेल को समझाना जारी रखते हैं, ''जब अन्य सभ्यता से लोग यीशु के पास आतें हैं, ''जब तो हमें स्वधान रहना चाहिए कि हम उन्हें यीशु तथा प्ररितों की आज्ञायें ही सिखाये ना कि अपनी परम्परायें। उनको अपनी परम्पराओं को खुद विकसित करने दें जैसे जैसे वो बढ़ते है। हम उन्हें भ्रमित कर देगें अगर हम उनका बाईबल के अतिरिक्त कुछ और चीजों से परिचय करायेगें। वो यीशु के बज़ाए हमारी परम्पराओं को मानने लगेंगे। ज़्यादातर परम्पराएं अच्छी होती है परन्तु जब हम परम्पराओं

को एक सभ्यता में से दूसरी में ले जाते है, तो वो लगभग हमेशा नुकसान पहुँचाती है। हम उन्हें सिर्फ यीशु के बारे में बतायें तथा जो यीशु के नाम में पश्चाताप करते है तथा परमेश्वर से क्षमा माँगते हैं उन्हें बपतिस्मा दें। तब हम उन्हें कलीसिया के रूप में परमेश्वर की आराधना तथा प्रेम में उसकी सेवा करने के लिये एकत्रित करेंगे।''

''हमको जल्द से जल्द शुरूआत कर देनी चाहिये हेल्पर प्रसन्नता पूर्वक कहता है; ''जैसे ही एक बपतिस्मा लिये हुए विश्वासियों का समूह तैयार हो जायेगा, हम उन्हें आराधना के मूल तत्वों के बारे में शिक्षा देगें- गुणगान, प्रार्थना, पाप की स्वीकारिता तथा प्रभु भोज, वचन, अर्पण (देना) तथा भाईचारा। मैं उन्हें उनका अपना सांस्कृतिक संगीत शैली में स्तुतिये गाना सिखाँऊगा। हम यीशु की सारी आज्ञाओं का पालन करने में उनकी सहायता करेंगे। हम उन्हें धर्मग्रन्थों को पढ़ने तथा लागू करने के सारे साधन देंगे, जैसा कि आपने हमारे लिये किया था मि. वाईज़। हम उनको समुदायों के प्राचिनों के रूप में नियुक्त कर देगे जो अपने परिवारों का मार्ग दर्शन खुद करतें हैं।''

राशेल उत्साहित होकर सहमत होती हैं तथा मि.वाईज़ अंत करते हुए कहतें हैं, ''जब हम नए मार्गदर्शकों को प्रशिक्षित कर चुकेंगें, हम वहाँ से चल देंगे। हम समय समय पर उनके मार्गदर्शको को सलाह देने के लिये भेटं करने जाना जारी रखेंगें पर हम उनके समुदायों का मार्गदर्शन नहीं करेंगं। परमेश्वर जल्दी ही उनमें से मार्गदर्शक खड़े करेगा जैसा कि उसने प्रेरितों के काम में किया था, तथा हम उन्हे प्रशिक्षित करेंगे।''

मिश्नरीयों का नए रिवाजों से सामना

मि. फूलिश खिल्ली उड़ातें हैं, ''तुम कलीसियाओं को आकार नहीं दे सकते जब तक तुम्हारे पास पादरीयों को देने के लिये पैसा ना हो तथा गिरजा घर का निर्माण ना हो।"

''हमनें इस पर कई बार विचार विमर्श किया है। 1'' मि.वाईज़ उत्तर देतें हैं। ''जब धन की कमी हो रही हो, तो हम उसे प्रभु के कार्य को समाप्त नहीं करने देते। हम घरो में भेंट करते रहते है। आज की तारीख में ऐसे लाखों छोटी परन्तु तन्दरूस्त घरेलू कलीसियायें होगीं जैसी कि फिलेमोन के घर पर मिलती थी। पौलुस ने उनको फिलेमोन 2 में उनका अभिनन्दन किया था।''

''तुम नई कलीसियायें इतनी जल्दी नहीं बना सकते!''

मि. फूलिश बहस करना जारी रखते है। ''वो लोग हमारे से बहुत भिन्न है। वो नई कलीसियायों में अपने विचित्र रिवाज़ शुरू कर देगे जैसे कि नदी के पास के सारे बाहरी आदमीयों ने किया था। वो ऐसे भिन्न तरीके से संगीती गातें हैं कि वे मेरे कानों में लगता है तथा ऐसी चीजें खाते है जिन्हें मैं छूभी नहीं सकता । वो हमारे संस्कारो तथा उत्सवों को नहीं प्रयोग में लाते है। दूसरी सभ्यता के लोगों को मसीही बनने से पहले हमारे रीति - रिवाजों को जरूर सीखना चाहिये।''

मि. वाईज़ उदास होकर आह भरते हैं ''मैं बहुत शर्मिदा हूँ कि तुम परमेश्वर की महिमा को नहीं समझते मि. फूलिश। हम रिवाजों तथा परम्पराओं की आराधना नहीं करते हम मसीह की आराधना करते है तथा प्रेम में उसकी सेवा करते मसीह की आराधना करतें हैं तथा प्रेम में उसकी सेवा करते है जैसे कि उसने आज्ञा दी थी। हम दुबारा से पहली कलीसिया की समिति की कहानी को देखें।''

अभ्यास

प्रेरितों के काम अध्याय 15 में देखे:

- कुछ यहूदी विश्वासियों में क्या शिक्षा दी जिसने अन्तिया की सभ्यता में ईश्वरीए महिमा को आस्वीकार किया?
- परमेश्वर हमारी मुक्ति के लिये हमसे क्या चाहता है?
- परमेश्वर ने कैसे दिखाया कि अपनी सभ्यता छोड़े बिना भी सभी लोग मुक्ति पा सकतें हैं?

- अपनें यहूदी भाईयों जो कि अभी भी पुराने नियम का कानून मानते थे के विरोध को तोड़ने के लिये गैर यहूदी मसीहीयों को क्या करना थ, जबकि वो कानून के अर्तगत नहीं आते थे?
- समिति किस प्रकार से विश्वासियों को प्रोत्साहित करती थी?

मि.फूलिश जाते है। वो फिर किसी समुदाय मे सम्मिलित नहीं होते।

मि.वाईज़ हेल्पर तथा राशेल को मिश्नरी कार्य से संबंधित निर्देश देना जारी रखते हैं, ''प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रेरित पौलुस की तीन मिश्नरी यात्रओं की जानकारी देती है। जब उसके अपने लोगो ने, यहूदीयों ने, पौलुस का यीशु के बारे में सदेश को अस्वीकृत कर दिया तो वो गैर यहुदीयों के पास गया जिन्होनें उसे स्वीकार करा। कुछ यहुदी विश्वासी कहते थे कि गैर यहुदीयों को मुक्ति पाने के लिये यहुदी रिवाजो को मानना चाहिये। पौलुस तथा बरनबा उस बात से सख्ती से विरोध में थे। वो कहते थे कि मुक्ति पाने के लिये हमारे किसी भी कानूनों तथा रिवाजों का पालन करने की परमेश्वर को जरूरत नहीं है। परमेश्वर हमें यीशु मसीह में भरोसे की महिमा के द्वारा बचाता है, हम जैसे है वैसे ही। हमें अपनी सभ्यता बदलने की कोई जरूरत नहीं है।''

सारा कहती है,''मि. वाईज़, जहाँ पर हम मिश्नरीयों के रूप में सेवा करेंगे हम प्रसन्नता से अन्य सभ्यताओं का आदर करेंगे।''

''मैं जानता था तुम ऐसा करोगी। पौलुस प्रेरित ने यरूसूलम की समिति को उसकी कारनेलियुस तथा उसके लोगों से भेंट के बारे में याद दिलाया। वो गैर यहुदी थे, परंन्तु वो परमेश्वर की ओर मुड़े तथा उसने उन्हें पवित्र आत्मा का वरदान दिया। इस बात ने प्रेरितों को यह प्रमाणित किया कि परमेश्वर ने उनको वैसे ही स्वीकार किया जैसे वो थे, बिना यहुदी सभ्यताओं को अपनाए हुए। पतरस तथा उसके यहुदी सहायकों ने उल्लास मनाया तथा उन्हें उसी दिन बपतिस्मा दिया। समिति ने निश्चित किया कि गैर पर यहुदीयों पर पुराने नियम के मूसा के कानून को ना थोपा जाए? इसके बजाए उन्होंने गैर यहुदियों को अपने यहुदी पड़ोसियों का विरोध करने को मना किया। सारे विश्वासी उत्साहित हुए क्योंकि इस बात से मसीह की कलीसिया में एकता रही। वो एकताबद्ध रही, इसलिये नहीं कि सब एक जैसे रिवाजों को मानते थे, परन्तु इसलिये कि वो सब मसीह में भरोसे के द्वारा बचाए गए थे तथा स्वतंत्रता से विभिन्न रिवाजो को मान सकते थे। क्या तुम्हें पतरस के दर्शन के बारे में याद है?''

अभ्यास

प्ररितों के काम अध्याय 10 में देखेः

- परमेश्वर ने पतरस को कितनी बार उठने, मारने तथा खाने के लिये कहा उन जन्तुओं को जिनकी उसकी सभ्यता में मनाही थी?
- इस दर्शन ने पतरस को अन्य सभ्यता के साथ व्यवहार करने में मदद करी। परमेश्वर पतरस को मेहमानों के साथ कैसा व्यवहार करने देना चाहता था?
- पतरस का दर्शन तथा कार्य हमें विभिन्न सभ्यताओं के लोगों को स्वीकारने के बारे में क्या बताता है?

''अब समझा,'' हेल्पर कहता है। ''हम अन्य सभ्यता के लोगों को वैसी ही स्वतंत्रता देतें हैं जैसी कि पौलुस ने अपनी मिश्नरी यात्राओं पर दी थी। हम उनसे हमारी भाषा सीखने या हमारे रिवाजों को मानने या हमारी तरह से संगीत की शैली का प्रयोग करने की उपेक्षा नहीं रखेगें। हम उन्हें परमेश्वर की ओर मुड़ना सिखायेंगे जो कि क्षमा करता है तथा जैसे वो हैं उन्हें वैसे ही स्वीकार करता है। वो उन्हें पवित्र आत्मा का वरदान देगा जैसा कि उसने हमें दिया था जब हम उसकी ओर मुड़े थे। पवित्र आत्मा उन्हें सत्य का मार्ग दिखाएगा। वो उन्हें पापों के प्रति दोषी ठहरायेगा। वो उन्हें दिखयेगा कि कौन से रिवाज सहायता करते है तथा कौन से रिवाज मसीह की प्रभुता को अस्वीकार करते है।

''हम तुम्हें तथा राशेल को भेजेंगे,'' लर्नर हेल्पर को बताता है। ''हम तुम पर भरोसा करेंगे तथा अपनी आशीषों से तुम्हें भेजेगें।

हम तुम से लिये आपनी आराधना तथा अपने छोटे समूहो मे प्रार्थना करेंगें। हम तुम्हें प्रेम भरे उपहारों से सहायता करेगे तथा अगर हो सका तो तुसो भेंट करेगें। तुम उन लोगों के लिये परमेश्वर के दूत होगे, तथा परमेश्वर के काम में हम तुम्हारे सहयोगी होगे। कृपया हमें प्राय: सूचनांए भेजना ताकि हम प्रभु द्वारा किये गए हर कार्य में उल्लास मना सकें तथा जब कठिनाईयाँ होतो सहायता के लिये प्रार्थना कर सकें। हाँलाकि जो नए समुदाय तुम शरू करोगे वो बाहरी तौर पर इस समुदाय जैसे नहीं लगेगें परन्तु हम सब मसीह में एक देह हो कर रहेगें। वो हमें एकताबद्ध करता है, भाषा, सभ्यता या रिवाजों से नहीं परन्तु हमारे में अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा।''

क्षेत्र के सभी समुदाय एक रात एकांत जगह पर गुप्त रूप से आधिकारियों की नज़रों से दूर होकर मिलते है। वो हेल्पर और राशेल पर भरोसा करके प्रार्थना करते है, तथा उनको मि. वाईज़ के साथ दूर देश को जाकर मसीह के अनुयायी बनाने के लिये नियुक्त करतें हैं।

तीनों 'भेजे हुए' नए क्षेत्र में यात्रा करते हैं तथा उन परिवारों के साथ रहतें है जो उन्हें भाषा सीखाने में मदद करते है। वो अपनी आजीविका कमाने के लिये कड़ी मेहनत करते है। वह लोगों के चीजें करतें हैं जो कि उन्होंने प्रेरितों के बारे में कहानियों के द्वारा सीखी थी। लोग उनपर विश्वास करतें हैं क्योंकि वो कड़ी मेहनत करतें हैं तथा अपनी जिदगीयों में यीशु की छवि दिखाते हैं। हेल्पर अपने समुदाय को एक सूचना वापस भेजता है। ''कई लोग मसीह को प्राप्त कर रहें। आज हमने अच्छी संख्या में बपतिस्मे किये। उनके रिवाज बहुत भिन्न है परन्तु परमेश्वर हमें आशीष देता है जब हम उनके रीति रिवाजो का आदर करते है।''

यह सूचना उन समुदायों में अपार खुशी तथा उत्साह लाती है जिन्होनें हेंल्पर तथा राशेल को भेजा था। परमेश्वर का आत्मा उनके द्वारा कई नए समुदायों की पुनरावृत्ति करता है जहाँ पर एक भी नहीं था, बिल्कुल वैसे ही जैसे उसने मि. वाईज के साथ किया था जब उन्होनें लर्नर को परमेश्वर के लोगों का मागदर्शक बनाने के लिए प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया था।

क्रियात्मक कार्य

- खोज करें कि संसार में कौन से लोगों के समूह अभी तक स्वस्थ समुदायों से वंचित है तथा अपने समुदाय का इन लोगों के लिये नित्य प्रार्थना करने का प्रबन्ध करें।
- जिस समुदाय को परमेश्वर ने अन्य सभ्यता के लोगों के साथ काम करने का आत्मिक वरदान दिया है, परमेश्वर से उसे सही मार्ग दिखाने के लिये प्रार्थना करें।
- मिश्नरीयों की सहायता के लिये प्रार्थनाओं तथा अन्य दिनों की योजना बनायें।

- अपने मिश्नरीयों को मसीह के अवतरण की नकल करने मे प्रशिक्षित करें जब वो अन्य सभ्यताओं में प्रवेश करते मे प्रशिक्षित करें जब वो अन्य सम्यताओं में प्रवेश करतें हैं, बच्चों की तरह से सीखने के द्वारा तथा लोगों के द्वारा पहचानने के साथ। अगर संभव हो तो उन्हें पास की अन्य सभ्यता कें लोगों के साथ इसका अ़भ्यास करने दें।
- अन्य सभ्यताओं के रिवाज जो कि मसीह की प्रभुता को अस्वीकार नहीं करते उन्हे स्वीकारने का उन लोगों को प्रशिक्षण दें।
- अपने मिश्नरीयों को स्वस्थ समुदास रोपित करने तथा मार्गदर्शक तैयार करने का प्रशिक्षण दें।
- मिश्नरीयों के रूप में इन लोगों को अलग स्थापित करें जैसे कि अन्तिया की कलीसिया ने पौलुस तथा बरनबा को प्रेरितों के काम 13:1-3 में किया था, कलीसिया कि पुनरावृति को कि पुनरावृत्ति को फिर से दोहराने के लिये।

खण्ड \\\ का समापन

खण्ड - IV

पुराने तथा नए नियमों से बाईबल की कहानियाँ तथा समतुल्य सिद्धान्त

कहानियों के बाईबल के अंतनिर्देश **गहरी लिखाई** में है।

प्रचीन महायाजकों के समय की ऐतिहासिक घटनाएँ, समरूपी उत्तरकालीन घटनाओं तथा सम्बन्धित मतों के साथ

IV-1- सष्टि (संबंधित : नई रचना, पुर्नजीवन, पुर्नजन्म)

(पुराना नियम) **परमेश्वर ने भौतिक अस्थाई ब्राहमाण्ड की रचना करी,** उत्पत्ति 1-21

(नया नियम) **परमेश्वर अपनी नई सृष्टि का प्रारम्भ करता है, जो आत्मिक, अनन्त तथा पाप रहित है:**

- यीशु का पुनरूथान, जिसमें विश्वासी हिस्सा लेते है,नई सृष्टि की प्रारम्भ करता है। मत्ती 28 ।
- वो नए स्वर्गों तथा पृथ्वी से पूर्ण होगा जो हमारी प्रतीक्षा (करते हैं, प्रकाशित वाक्य 21-22
- हम उसमें आत्मिक रूप से दुबारा जन्में है (यीशु निकेदिमुस के साथ), युहन्ना 3:1-7

(हमारी प्रतिक्रिया) **उन अच्छी चीज़ों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें जो पुरानी सृष्टि में उसने हमारे लिए रची थी।**

- खुशी से घोषणा करें कि हम परमेश्वर की नई, आत्मिक तथा अनन्त सृष्टि में, यीशु के पुनरूथान में हिस्सा लेकर प्रवेश करते है, जो कि नई सृष्टि का पहला फल था, (1 कुरिन्थियों 15;2 कुरिन्थियों 5:17)। और कोई रास्ता नहीं है (युहन्ना 14:6)

IV-2 **प्रलोभन** (संबंधित: मौलिक पाप, मृत्यु, आदम, शैतान,यीशु शैतान और मृत्यु को हराता है)

(पु. नि.) **पहला आदम शैतान का प्रलोभन स्वीकार करके परमेश्वर की अवज्ञा करता है, आदमी पर मृत्यु लाने तथा पवित्र परमेश्वर से अलग होने के लिये (मौलिक पाप): उत्पत्ति 3**

(न. नि) **अंतिम आदम यीशु शैतान के प्रलोभन का तिरस्कार करता है, जीवन लाने तथा मानव जाति को परमेश्वर के साथ मिलाने के लिये:**

- यीशु ''आंतिम आदम'' (1कुरिन्थियों 15:45) शैतान के प्रलोभनों का प्रतिरोध करता है, मत्ती 4 ।
- यीशु, हमारे मे रहते हुए, हमको शैतान का प्रतिरोध करके संसार को जीतने में सक्षम बनाता है, यूहन्ना 16-17
- यीशु गतसमनी में अपने पिता की इच्छा का पालन करता है, मृत्यु तक भी (सर्वोच्च परीक्षा), मत्ती 26:36-42 ।

(हमारी प्रतिक्रिया) परमेश्वर के समक्ष अपने पाप स्वीकारें तथा पश्चाताप करें (1 युहन्ना 1: 8-10)

- पवित्र आत्मा की शक्ति में परमेश्वर के हथियारों का प्रयोग करके शैतान का विरोध करें (याकूब 4:7; इफिसियों 6)

IV-3 **कैन तथा हाबिल** *(संबंधित- लहू का बालिदान, यीशु का लहू)*

(पु. नि.) **पुराने नियम की आराधना एक निर्दोष बलि का बहता लहू माँगती थी।**

- पहले हत्यारे कैन ने हाबिल का वध करा जब परमेश्वर ने उसका लहू रहित चढ़ावा अस्वीकार करा परन्तु हाबिल का स्वीकार किया, **उत्पत्ति 4**
- परमेश्वर ने महायाजक के पुत्रों का वध किया जिन्होंने लहू के बिना उसकी उपस्थिति में प्रवेश किया; लैव्यवस्था10 ।

(न. नि.) नये नियम की आराधना मे मसीह का लहू शामिल है जो परमेश्वर का अनन्त मेमना है:

- यीशु ने यहूदियों को स्तंभित कर दिया यह कहकर कि हमें उसका माँस खाना चाहिये तथा लहू पीना चाहिये, युहन्ना 6: 26-59
- यीशु ने सामरी स्त्री को बताया कि हमें परमेश्वर की आराधना आत्मा तथा सत्य में होकर करनी चाहिए, युहन्ना 4

(हमारी प्रतिक्रिया) परमेश्वर की आराधना सच्चे हृदयों के साथ करें, अपने पापों के लिये यीशु के लहू की वलि को स्मरण रखते हुए (मत्ती 26:26-28)

- सहभागिता को उसके अनुसार मनाएँ (1कुरिन्थियों 10: 16-17;11:27-32)
- हम परमेश्वर की स्तुति अपने कर्कश होने तक कर सकते है, परन्तु अगर हम उसके वचनों का पालना नहीं करते तो हमारी स्तुति बेकार है (मत्ती 15:6-9)

IV-4 **नूह** *(संबंधित: बाढ़, पश्चाताप, दंड, न्याय, दूसरी मृत्यु)*

(पु.नि) परमेश्वर ने दुष्ट मानव जाति को शाररिक मृत्यु से दंड देने के लिए बाढ़ को भेजा (नूह), उत्पत्ति 6-9 ।

(न. नि.), हमारे पश्चाताप करने में असफल रहने पर परमेश्वर हमको दूसरी मृत्यु से चेंताता है- नरक में परमेश्वर से हमेशा के लिये अलग रहकर:

- युहन्ना बपतिस्मा देने वाला लोगों को पश्चाताप करने के लिये बुलाता है, यीशु मसीह जिसका वादा किया गया था,के लिए तैयार होने के लिये,(मत्ती 3)
- परमेश्वर पश्चाताप रहित पापियों को आग की झील में डालेगा (निर्णयक न्याय तथा 'दूसरी मृत्यु' प्रकाशित वाक्य 20:11-15

(हमारी प्रतिक्रिया) हमारे स्वगीय पिता की करूणा तथा दयालुता हमकों पश्चाताप करने के लिये मार्ग दिखाए (रोमियो 2:4)

- अपने पापों का पश्चाताप करें तथा मसीह में विश्वास रखें (मरकुस 1:15)

IV-5 **बाबुल** *(संबंधित: जातियों, सभ्यताएँ, भाषाऐं)*

(पु. नि) **परमेश्वर ने बाबुल की मीनार पर जातियाँ तथा विभिन्न सभ्यताएं उत्पन्न करी:**

- मनुष्यों ने एक धमंडी समाज में एकताबद्ध होकर रहने की चेष्टा करी परन्तु परमेश्वर ने उनको कई माषाओं मे विभाजित किया, उल्पत्ति 10 ।

(न. नि.) **सभी जातियाँ तथा सभ्यतायों उसकी अनन्तकालीन सिंहासन की महिमा के समा क्ष, परमेश्वर का गुणगान करती है, प्रकाशित वाक्य 7: 9-17**

(हमारी प्रतिक्रिया) **परमेश्वर में भरोसा रखें ना कि मनुष्य की राजनैतिक शक्ति पर (ज़करय्याह 4:6)**

- विभिन्न जातियों तथा सश्यताओं की सराहना करें जो कि अन्नतकाल तक स्वर्ग में पहचानी जा सकती हैं उनकी परमेश्वर द्वारा दी गई किस्म मसीह को वधु को सुन्दर बनाती है- सारे देशों, जनजातिओं तथा भाषाओं के लोग (प्रकाशित वाव्य 7:9-12)।
- सभी देशों के अनुयायी बनायें (सांस्कृतिक लोगों के समूह, मत्ती 28:18-20)

IV- 6 अब्राहाम से परमेश्वर का वादा *(संबंधित: वचन, विश्वास, वाचा)*

(पु. नि.) **विश्वासी अब्राहम के वशज के द्वारा परमेश्वर का सभी देशों पर आशीष देने का वादा:**

- अब्राहम परमेश्वर पर विश्वास रखात था, जो कि उसके विवास क पवित्रता को महत्व देता था, तथा परमेश्वर ने आशीषों का वादा, विश्वासी अब्राहम के बीज -एक वंशज के द्वारा देने को किया; तथा उस गंभीर वाचा पर मोहर लगाई, उत्नत्ति 12:1-7; उत्पत्ति 15 ।
- परमेश्वर मे अब्राहम को चमत्कारिक जन्म के द्वारा एक पुत्र का वादा किया, तथा अब्राहम ने उसका विश्वास किया; उत्पत्ति 15:1-6 ।

(न. नि) परमेश्वर ने सभी देशों को आशीष देने का अपना वादा अब्राहम के बीच यीशु के द्वारा पूरा किया, जो पापों से मुक्ति तथा चंगाई देता है:

- मरियम चमत्कारिक रूप से एक पुत्र को जन्म देना स्वीकार करती है जो कि उसका मुक्तिदाता है, लूका 1:26-56
- यीशु एक पिशाचों से पीड़ित व्यक्ति को तथा कई अन्यों को चंगा करता है, क्योंकि उनमें विश्वास है, मरकुस 1:21-34 ।
- यीशु एक लक्वाग्रस्त मनुष्य को चंगा करता है तथा उसके पापों को क्षमा करता है, उसको परवाह करता है तथा उसके पापों को क्षमा करता है, उसकी परवाह करने वाले मित्रों के विश्वास के कारण, मरकुस 2:1-12
- परमेश्वर कई देशों के यहूदियों पर अपना पवित्र आत्मा ऊँडेलता है, जो मसीह को पाते है(पन्तीकुस्त), प्रेरितों के काम 2 ।
- परमेश्वर गैर यहूदियों पर अपना पवित्र आत्मा ऊँडेलता है, सभी जातियों के लोगों की मुक्ति का रास्ता खोलने के लिए, प्रेरितों के काम 10:44-48

(हमारी प्रतिक्रिया) हमें परमेश्वर की क्षमा विश्वास के द्वारा मिलती है, अपनी योग्यताओ के द्वारा नहीं (इफिसियों 2:8-10)

- हम अब्राहम के, उत्तरधिकारी है। हम उससे वादा करी हुई आशीष पाते है, उसके किये हुए कार्यों पर विश्वास करके (गलतीयों 3:6-12; 4:21-31)।
- हम सभी देशों के लोगों के सामने पवित्र आत्मा की शक्ति में मसीह को गवाही देते है (याकूब 5:14-16)।
- परमेश्वर को चंगा करने की अनुमति दे, या उसकी जगह हमें वो कृपा का अन्य रूप दे, जैसा कि उसने पौलुस के लिए किया था (2 कुरिन्थियों 12:7-10- परमेश्वर सबको चंगा नहीं करता है अन्था कोई भी मृत्यु को प्राप्त ना हो तथा उसके साथ स्वर्ग में ना हो!)

IV-7 अब्राहम का विश्वास *(संबंधित: विश्वास, इस्लाम, इस़हाक)*

(पु.नि) अब्राहाम का विश्वास अच्छे कार्यों की ओर ले जाता है तथा परमेश्वर के वादे, जो दोनों पुराने तथा नए का आधार देते थे:

- अब्राहम अपने स्वार्थी भतीजे लूत को अपने उपजाऊ चराई के खेत देता है, उत्पत्ति 13 ।
- लूत को बचाने के लिये पाँच राजाओं के विरूद्ध अब्राहम विश्वास में अपने सेवकों को साथ लेकर युद्ध करता है, उल्पत्ति 14
- अब्राहम के विश्वास द्वारा इसहाक का जन्म हुआ, जिसके द्वारा परमेश्वर ने अपनी अनुग्रह की वाचा स्थापित करी,उत्पत्ति 21
- परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास की परीक्षा ली–उसको अपने इकलौते पुत्र इसहाक को बलिदान करने को कहकर– जो वाचा का उत्तराधिकारी था, उत्पत्ति 22
- विश्वास की अस्थाई चूक के कारण अब्राहम ने परमेश्वर की अनुग्रह की वाचा को अपने यत्नों द्वारा पूरा करने की कोशिश, की उत्पत्ति16–17 । इसका परिणाम यह हुआ कि हाजिरा के अवैध पुत्र इसमाईल के वंशज आज तक साराह के द्वारा अब्राहम के वेंशजों से लड़ते हैं।

(न.नि) यीशु विश्वास माँगता है, हमारे दुबारा जीवित होने, चंगाई प्राप्त करने तथा परमेश्वर की आशीषें खोजने के लिये:

- यीशु निकेदिमुस को समझाता है कि विश्वास के द्वारा हमें आत्मा में फिर से जन्म लेना चाहिये, युहन्ना 3
- यीशु एक विश्वासी फौज़ के सूबेदार के सेवक को चंगा करता है, मत्ती 8:–17 ।
- यीशु दो अन्धे मनुष्यों को उनके विश्वास के कारण चंगा करता है, मत्ती 9:27–38 ।

(हमारी प्रतिक्रिया) **विश्वास द्वारा हमारी मुक्ति के परिणाम अच्छे कार्य होते है, अन्यथा हमारा विश्वास अशुद्ध है (इफीसियों 2: 8–10; याकूब 1:22–24)।**

- उन शंकाओं का विरोध करें जिनके कारण अब्राहम ने अपने स्वंय के यत्नों से परमेश्वर की अनुग्रह की वाचा को पूरा करनें की चेष्टा करी, जो इस्माईल के जन्म का कारण बना, तथा उसके वंशजो द्वारा इस्लाम का उदय हुआ , जो कि संसार का सबसे ज़्यादा विधिवादी धर्म है। (गल्तीयों 3:6–12; गल्तीया 4:21–31)
- प्रतिदिन का नवीनीकरण खोजों – प्रतिदिन प्रार्थना करें तथा परमेश्वर का वचन पढ़ें –परमेश्वर के आत्मा को हमारे में प्रतिदिन नवीनता लानें दे (2 कुरिन्थियों 4:16)

IV-8 अब्राहम की सेवकाई *(संबंधित: अर्पणकरना, देना)*

(पु.नि) परमेश्वर ने अच्छे सेवकों को पुरूस्कृत किया– जो कुछ उसने पुराने नियम में उन्हें दिया:

- अब्राहाम ने यीशु जैसे याजक मेल्कीसेदेक को लुटेरों से वापस अधिकार में ली हुई संपत्ति का दशमांश दिया, तथा बंदीकतोओं की कुछ भी संपत्ति के लेने से इन्कार कर दिया, उत्पत्ति 14:11–24 ।
- निर्धन संग्रहकर्ता रूत के लिये, बोअज ने कटनी करने वालों को अनाज छोड़ने के निर्देश दिये, रूत 2

(न.नि) परमेश्वर उनके लिये स्वर्ग में जाने का वादा करता है जो उदारता से उसके कार्यों के लिये तथा जरूरत मंदों के लिये देते है:

- निर्धन विधवा ने सिक्के दे दिये जबकि उसको उसकी स्वंय की जीविका के लिये उन सिक्कों की जरूरत थी; लूका 21:1–4

- बरनबा ने अपनी संपत्ति के बेचकर जरूरतमंदो को दे दिया , **प्रेरितों के काम 4:33-37 ।**
- अच्छे सामरी ने अपने शत्रु की देखभाल करी, **लुका 10:25-37**
- यीशु विश्वासनीए सेवकों के दृष्टांत के द्वारा अच्छी सेवकाई का उदाहरण देता है, **लूका 19:11-27**
- यीशु आविश्वसनीए सेवकों के दृष्टोंत के द्वारा बुरी सेवकाई का उदाहरण देता है, **लूका 16:1-8**

(हमारी प्रतिक्रिया) **अच्छे सेवक बनें तथा जो हमें परमेश्वर ने दिया है उसका अच्छा प्रबन्ध करें, चाहे धन या सामान (कुरिन्थियों 4:2)**

- प्रसन्नता से दें। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम अनिच्छा से दें (2 कुरिन्थियो 9:6-15) ।

lV-9 अब्राहाम की मध्यस्थता की प्रार्थना *(संबंधित- विश्वास, मध्यस्थवा चंगाई)*

(पु.नि) पुराने नियम में परमेश्वर ने विश्वास की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया:

- लूत तथा उसके परिवार के लिए (सदोम और अमोरा) अब्राहम की मध्यस्थता की शानदार प्रार्थना, **उत्पत्ति 18-19**
- सुलेमान की परमेश्वर के मन्दिर तथा उसके लोगों के लिये समर्पण की प्रार्थना, **2 इतिहास 6; 7:1-4**
- एज्रा की, उसके लोगों की तरफ से पाप की स्वीकारिता की शानदार प्रार्थना, तथा उसके परिणाम (नवीनीकरण), **एज्रा 9 एज्रा 10:1-19**

(न.नि) परमेश्वर हमारी विश्वास की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है:

- पतरस का युहन्ना यीशु के नाम में प्रार्थना करके एक लंगड़े मनुष्य को चंगा किया- तथा उसके लिये उन्हें जेल जाना पड़ा, **प्रेरितों के काम 3-4 ।**
- पिशाचों से पीड़ित अपने पुत्र की विश्वास तथा चंगाई के लिए एक पिता की साधारण प्रार्थना, **मरकुस 9:14-29 ।**
- पापी चुँगी लेनेवाले की संक्षिप्त प्रार्थना, **लूका 18:9-14 ।**
- यीशु बताता है कि हम प्रार्थना कैसे करें (प्रभु की प्रार्थना के समेत-'ऐ हमारे पिता') **मत्ती 6:1-15 ।**
- यीशु अपने प्रेरितों तथा हमारे लिये प्रार्थना करता है, **युहन्ना 17**
- यीशु अपने पिता की इच्छा के प्रति प्रार्थना में याचना करता है, अपना जीवन हमारे लिये देने के लिये**; मत्ती 26:36-46**

(हमारी प्रतिक्रिया) **यीशु हमें उसके नाम में प्रार्थना करने को कहता है, जिससे कि हम आनंद से परिपूर्ण हों,(युहन्ना 16:24)।**

- प्रेरित पौलुस हमें बिना रूके प्रार्थना करना बताता है **(1 थिस्सलुनिकियों 5:17)**
- प्रेरित युहन्ना हमें परमेश्वर के समक्ष अपने पाप स्वीकारने के लिए बताता है **(1युहन्ना 1:8-10)।**

lV-10 इसहाक की पत्नी रिबका *(संबंधित-इसहाक, पन्तीकुस्त, पवित्र आत्मा)*

(पु. नि) अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक के लिए एक दुल्हन रिबका के देखने के लिए अपने सेवक को बहुत दूर भेजा, उत्पत्ति 24

(न. नि) परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा को एक विश्वासी दुल्हन देखने के लिये भेजता है-कलीसिया को-अपने पुत्र यीशु के लिये:

- यीशु शांतिदूत का वादा करता है, जो हमें हमारे पापों के प्रति आश्वस्त करेगा तथा मसीह को हम पर प्रकट करेगा, **युहन्ना 14:15-26; युहन्ना 16:7-16 ।**
- पवित्र आत्मा पन्तीकुस्त में आता है तथा यहूदियों में पहली कलीसिया का आरंभ होता है, **प्रेरितों के काम 2**
- पवित्र आत्मा गैर यहूदियों में आता है तथा कुरनेलियुस के घर पर पहली गैर यहूदी कलीसिया का जन्म होता है, **प्रेरितों के काम 10**

(हमारी प्रतिक्रिया) **उन्हें खोजो जिन्हें परमेश्वर ने अपनी दुल्हन बनाने के लिये चुना है, विश्वसनीए दूर देशों तक में भी (मत्ती 28:19-20)**

IV-11 याकूब परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करता है *(संबंधित :याकूब, एसाव, विश्वास, विश्वास के द्वारा मुक्ति)*

(पु.नि) सर्वेच्चि परमेश्वर ने उनको अनुग्रह प्रदान किया जिन्हें उसने चुना, उनके अच्छे कार्यो के कारण नहीं:

- याकूब अपने भाई एसाव के साथ विश्वासघात करता है, परन्तु फिर भी परमेश्वर की आशीषें पाता है, **उत्पत्ति 27-33**
- यह लम्बी कहानी प्राचीन इब्रानी सभ्यता की अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, परमेश्वर के कानून को करने से पहले:
- याकूब धोखे से एसाव से उसका जन्मसिद्ध अधिकार छीनता है, **उल्पत्ति 27**
- याकूब ने परमेश्वर की आराधना करी, तथा स्वर्ग से एक सीढ़ी देखी; परमेश्वर ने अब्राहम से किए हुए वादे याकूब से दोहराए। **उत्पत्ति 28 ।**
- परमेश्वर ने याकूब के धोखे को दंडित किया- लाबान ने उसको धोखा दिया, **उत्पत्ति 29**
- याकूब के विश्वास के कारण परमेश्वर ने उसको धन दौलत तथा बच्चों से फिर भी आशीष दी, जबकि उसने बुरे कार्य करे थे; **उत्पत्ति 30**
- परमेश्वर ने याकूब को लाबान तथा एसाव के क्रोध-से बचाया, याकूब एक स्वर्गदूत से लड़ता है, **उत्पत्ति 31-33 ।**

(न.नि) यीशु बुरे लोगों को उनके विश्वास के कारण क्षमा करता है तथा आशीष देता है, उनके कार्यो पर नहीं

- यीशु एक पी स्त्री को क्षमा करता है, **लूका 7:36-50**
- यीशु एक दृष्टान्त के द्वारा समझाता है कि परमेश्वर अच्छे तथा बुरे, दोनों को, उसके साथ भोज के लिए बुलाता है, **मत्ती 22:1-10**
- यीशु पापियों के साथ खाता-पीता है, जिनके वो बचाने आया , तथा उसकी आलोचना होती है, **लूका 5:27-32**

(हमारी प्रतिक्रिया) **परमेश्वर को हमारे विश्वास के कारण हमें क्षमा करने के लिए धन्यवाद दें, अपने कार्यो के कारण नहीं (रोमियो 8:28-30;9:10-18)।**

- मुक्ति का सुसमाचार बुरे तथा अच्छे, दोनों प्रकार के लोगों के पास ले जाए, क्योंकि यीशु खोए को खोजने के लिये आया था (लूका 5:32)

IV-12 युसुफ क्षमा करता है *(संबंधित:क्षमा, मध्यस्थता,यीशु हमारा पैरो कार)*

(पु. नि) युसुफ इस्त्रायल के पुत्रों की एक पैरोकार के रूप में सेवा करता था जिन्हों उसे अपकृत करा:

- युसुफ शक्ति संपन्न होता है तथा फिरौन से अपने भाईयों के लिए जिरह करता है जिन्होने उसे दासता के लिये बेच दिया था, उत्पत्ति 37 तथा उल्पत्ति 39-45 ।
- यह एक लम्बी कहानी है तथा आप उसके साथ छोटे भागों में व्यवहार कर सकते है। इसमें, क्षमा के ऊपर पाठ, शुद्धता, पारिवारिक सम्बन्ध, मध्यस्थता, तथा ईश्वरीय प्रावधनों का समावेश है। युसुफ भविष्यवक्ता के रूप में मसीह की छवि था:
- वो एक चरवाहा था,
  अपने पिता का बहुत प्यारा था,
  इस्त्रायल के पुत्रों अपने भाईयों द्वारा बेचा गया,
  प्रलोभन का विरोध-किया,
  अन्याय से कारावास में डाला गया
  राजा के दाहिने हाथ पर सम्मानित जगह पर फिर पहुँचा।
  अपने भाईयों के लिए मध्यस्थता करी, भष्य भोज से अपने भाईयों के साथ किरं एकता बद्ध हुआ।

(न.नि) पिता के सामने के सामने यीशु हमारी पैरोकार के रूप में सेवा करता है, यद्यपि हमने उसके विरोध में पाप किया है:

- यीशु एक अच्छा चरवाहा है जो खोई हुई भेड़ी को खोजता है, लूका 15:1-10।
- यीशु अपने पिता से उन लोगों को क्षमा करने की प्रार्थना करता है जिन्होंने उसे सूली दी, लूका 23
- यीशु अपने अनुयायीयों को बताता है कि हमें क्यों दूसरो को क्षमा कर देना चाहिए, मत्ती 18:15-35

(हमारी प्रतिक्रिया) **यीशु के नाम में प्रर्थना करें-वो पिता के सामने हमारा पैरोकार है, हमारे लिये जिरह करने वाला (युहन्ना 16:24; रोमियो 8:33-39)।**

- उन्हें क्षमा करें जो हमारे प्रति पाप करते है **(मत्ती 6:14-15; इफिसियों 4:32)**

विधिदायक मूसा के समय की घटनायों समरूपी उत्तरकालीन घटनाओं के साथ

IV-13 परमेश्वर मूसा को स्वतंत्रता दिलाने वाले के रूप में तैयार करता है *(संबंधित: स्वतंत्रता, पाप, उद्धार, सहभागिता, प्रभु भोज, महाप्रसाद)*

(पु.न.) परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता तैयार करा जो मिस्त्र से उसके लोगों को दासता से बाहर निकालकर उसके लोगों को दासता से बाहर निकालकर उनकी अगुआई करे, तथा एक नया पवित्र लाये:

- मूसा के जन्मे के इर्दगिर्द चमत्कारिक घटनाएं, तथा उसको मारने का प्रयास, निर्गमन 1-2 ।

- परमेश्वर ने अपने लोगों की अगुआई करने के लिये मिद्यान मे मूसा को तैयार करा, तथा उसे एक जलती हुई झाड़ी पर बुलाया तथा मिस्त्र जाने और उसके लोगों को स्वतंत्रता दिलाने को कहा, तथा उसको ऐसा करने के लिये चमत्कारिक शक्तियाँ दी, **निर्गमन 2-4 ।**
- मूसा का पहला चमत्कार पानी को लहू बनाना था-मिस्त्र के झूठे देवताओं के ऊपर एक श्राप, निर्गमन 7:13-25

(न. नि) परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता उपलब्ध किया जो उसके लोगों को पाप की दासता से निकालने में अगुआई करे।

- यीशु के जन्मे ने पर चमत्कारिक घटनाएँ तथा उसे मारने का प्रयास, **मत्ती 1:18-25 ; मत्ती 2**
- यीशु को तौयारी तथा बपतिस्मा, तथा पिता द्वारा पहचान कि वो ही परमेश्वर का पुत्र है, **मत्ती 3:13-17 ।**
- यीशु का पहला चमत्कार पानी को दाखरस बनाने था एक आशीष, **युहन्ना 2।**

(हमारी प्रतिक्रिया) **हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा करें, क्षमा तथा परमेश्वर की आशीषें लाने के लिये (युहन्ना3:165)।**

IV-14 मुक्तिदिवस का मेमना *(संबंधित: महाप्रसाद, सहभागिता, मेमने का लहू, बलिदान, पुनरूथान)*

(पु.नि) परमेश्वर इस्त्रायल के लिए सालाना अखमीरी रोटी का पर्व (मुक्तिदिवस) सस्थापित करता था, निर्गमन 12

सूचना:

- वो पोढियों तक उसके लोगों को याद रखने में सहायता करने के लिए था कि कैसे उनको मिस्त्र में दासता से छुड़ाकर लाया।
- मृत्यु का स्वर्गदूत दरवाजों की चौखट पर लहू देखता था उन घरों से आगे निकल जाता था जो परमेश्वर को मानते थे

(न.नि) यीशु अपने लहू में उसकी नई वाचा की अभिपुष्टि करने के लिये प्रभु भोज का संस्थापना करता है, लूका 22

- यह हम पीढ़ियो तक याद रखने में सहायता के लिए करते है कि कैसे उसने अपना खून बहाकर हमें पाप से छुड़ाया।

(हमारी प्रतिक्रिया) **हम यीशु को देह तथा लहू में हिस्सा लेते है जब हम यह नया मुक्ति दिवस पर्व मनाते हैं। (1कुरिन्थियों 10:16-17)**

IV-15 दासता से छुटकारा *(संबंधित : दासता, पुनरूथान, अमरत्व, लाल सागर)*

(पु.नि) परमेश्वर ने लाल सागर के द्वारा इस्त्रायल को दासता से बाहर निकाला-पुरानी वाचा का आधार, निर्गमन 12-13(न-नि यीशु ने हमाको पाप तथा मृत्यु की दासता से अपने मुर्दे में से जी उठने के द्वारा बाहर निकाला-लुका1-24

(न.नि) योशु ने हमको पाप तथा मृत्यु की दसातासे अपने मुदों मे से जो उठने के द्वारा बाहर निकाला, लूका 24

- मसीह हमें अन्नत जीवन देता है क्यों कि विश्वासी उसके पुनरूथान में उसके साथ जुड़ते है, युहन्ना 11

(हमारी प्रतिक्रिया) **हम अकेले मसीह को मानते है-अकेला जीवन दाता- हमें आमरव्व देने के लिए (1कुरिन्थियों 15)**

IV-16 परमेश्वर मन्ना तथा पानी उपलब्ध करता है *(संबंधित: जीवन का जल, अनन्त जीवन, मन्ना, अमरत्व, जीवन की रोटी)*

(पु.नि) परमेश्वर के चमत्कारों के द्वारा मूसा ने रेगिस्तान में खाना तथा पानी उपलब्ध कराया:

- परमेश्वर ने स्वर्ग से खाने के लिए मन्ना उपलब्ध कराई, **निर्गमन 17:1-7**
- परमेश्वर ने चट्टान में से पानी उपलब्ध कराया, **गिनती 20:1-12**

उपलब्ध कराता है:

- यीशु ने चमत्कारिक रूप से 5000 लोगों को खिलाया, तथा फिर स्वर्ग से रोटी के रूप में अपना माँस प्रस्तुत किया, अनन्त जीवन के लिये, कई लोगों को नाराज़ करते हुए, युहन्ना6 ।
- यीशु ने परमेश्वर के पवित्र आत्मा को हमारे में रहने रहने देने का वादा किया, युहन्ना 7:37-39 तथा हमें परामर्श दिया, युहन्ना 14:15-26 ।

(हमारी प्रतिक्रिया) **स्वर्ग से सच्ची रोटी की खोज करो, पदार्थ नहीं, तथा परमेश्वर का आत्मा प्राप्त करो (मत्ती 6:31-34; युहन्ना 20:21-23)।**

IV-17 परमेश्वर अपने लोगों के लिए चरवाहे उपलब्ध कराता है *(संबंधित: प्रचीन, यित्रो)*

(पु.नि) परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने लोगो का मार्गदर्शन करने के लिए प्राचीन उपलब्ध कराए, निर्गमन 18:12-27

(न.नि) परमेश्वर अपनी कलीसिया के मार्गदर्शन के लिये प्राचीन उपलब्ध करता है, प्रेरितों के काम 14 (पद 23 पर ध्यान दें)

(हमारा प्रतिक्रिया) **कलीसिया स्थापित करने वाले नए क्षेत्रों में प्राचीन नियुक्त करतें हैं जिनमें अनुभवी मर्गदर्शको की कमी होता है(तितुस 1:5-9)।**

- हम उन मार्गदर्शको की बात मानते है जो परमेश्वर के समुदायों में हमारे ऊपर दृष्टि रखतें हैं(इब्रानियों 13:17)

IV-18 दस आज्ञायें *(संबंधित: पुरानी वाचा, नई वाचा, यीशु की आज्ञायें, कानून)*

(पु.नि.) परमेश्वर ने एक पत्थर पर दस आज्ञायें खुदवायी-इस्त्रायल के आचरण का आधार, निर्गमन 31:18 ।

- परमेश्वर एक नई वाचा का वादा करता है-उसके नियम पत्थर की जगह मनुष्यों के हृदय पर लिखे जायेगें, यिर्मयाह 31:31-34।
- जो पुराने नियम के कानून का पालन नहीं करते थे वो मृत्युदंड पाते थे, गिनती. 25:1-11

(न.नि.) यीशु अपनी आज्ञाओं का पालन करने को कहता है-नई वाचा में हमारे आचरण का आधार, मत्ती 28:18-20। हम करते है:

- यीशु एक चट्टानी नीव है; उसके वचनो का पालन ही एक रास्ता है जिस पर हम निर्माण कर सकें मत्ती 7:24-29
- प्रथम कलीसिया यीशु की सारी आज्ञाओं को उनके मूल रूप में पालन करती थी प्रेरितों के काम 2:37-47:
- उन्होनें पश्चाताप करा, विश्वास करा तथा पवित्र आत्मा को प्राप्त किया,मरकुस 1:15; युहन्ना 3:16; 20;22
  - उन्होंनें बपतिस्मा पाया तथा नया परिवर्तित जीवन शुरू करा जिसकी वो पहल करता है, मत्ती 28: 18-20
  - वो एक दूसरे से प्रेम करते थे, जो कि उनके भाई चारें में दिखा तथा जरूरतमदों की देख भाल में। प्रेंम में, परमेश्वर, हमारा

पड़ोसी, साथी अनुयायी, जरूरतमंदो- तथा शत्रुओं (क्षमा) का व्यवहारिक रूप से समावेश है, मत्ती 22:36-40; युहन्ना 13:34-35; लूका 10:25-37; मत्ती 5:43-48 ।

- उन्होनें रोटी तोड़ी (सहभागिता, हमारी आराधना से संबंधित)मत्ती 26:26-28; युहन्ना 4:24 ।
- उन्होनें प्रार्थना करी (इसमे शामिल है एकल तथा परिवारों का समर्पण, मध्यस्थता तथा आत्मिक युद्ध),युहन्ना16:24।
- वो देते थे (इसमे शामिल है अपने समय की खजाने की तथा अपनी प्रतिभाओं की सेवकाई),लूका 6:38
- उन्होने अनुयाया बनाये (इसमें शामिल है मसीह के प्रतिगवाही, मार्गदर्शन, वचन को शिक्षा मार्गदर्शकों को प्रशिक्षण तथा मिश्नरी भेजना) मत्ती 28:18-20

- यीशु की हमारे लिये प्रभुख आज्ञायें है कि हम परमेश्वर तथा मनुष्यों से प्रेम करें, जो पुराने नियम के सारे कानूनों का जोड़ है, मतती 22:33-40 ।
- यीशु फरीसियों को मनुष्यों को आज्ञाओ को थोपने तथा परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना, करने के लिये डाँटता है, मरकुस 7:1-23; मत्ती 23 ।

(हमारी प्रतिक्रिया) **अब हम पवित्र आत्मा द्वारा अगुआई पा रहे हैं, जो कि हमारे में पवित्रता के फल का उत्पादन करता है, (रोमियो 8:3-16; गलतीयों 5:14-26)।**

- हम मृत्यु के पुराने कानून के विधिवाद का परिहार करते है, तथा जीवन और स्वतन्त्रता की नई वाचा को अंगीकार करते है, (2 कृरिन्थियों 3:13-18)।
- पवित्र आत्मा को हमें हमारे पापों के प्रति आश्वस्त करने दें (युहन्ना 16:5-15)।

IV-19 सब्त का विश्राम *(सबधित-विधिवाद, कानून)*

(पु.नि) परमेश्वर की पुरानी वाचा में विश्राम तथा आराधना का एक विशेष दिन होता था:

- परमेश्वर ने साँतवे दिन को अलग किया, पुरानी भौतिक सृष्टि के निर्माण के बाद अपने विश्राम को देखते हुए, निर्गमन 20:8-11
- परमेश्वर ने अपने लोगों को एक मनुष्य को मारने की आज्ञा दी, जो सब्त के दिन जलाने के लिये लकड़ी इकटठा कर रहा था: गिनती 15:30-36

(न. नि) परमेश्वर की नई वाचा में आराधना का एक विशेष दिन है:

- विश्वासी प्रथम दिन को आराधना करते थे, जब यीशु जी उठा था,
- नई अन्नत सृष्टि की ओर देखते हुए, प्रेरितों के काम 20:7
- यीशु नई वाचा की घोषणा करता है, लूका 22:13-20

(हमारी प्रतिक्रिया) **हम नई वाचा का पालन करते है, वो हमको मृत्यु के कानून से स्वतन्त्र करता है, जिसे हम पूरा नहीं कर पाते है,(2 कुरिन्थियों 3:6-9)**

- हम पुराने कानून के विधिवाद का परिहार करते है, जो कि खतना तथा विशेष दिनों का रखा जाना माँगता था(गल्तीयों 4:8-10 गलतीयों 4: 8-10; गलतीयों 5:5-14)
- हम किसी भी दिन आराधना करने के लिये स्वतन्त्र है: (रोमियों 14:1-18)

IV-20 मूर्तिपूजा दंडित *(संबंधित: सोने का बछड़ा, लालच)*

(पु. नि) परमेश्वर उनको दंडित करता था जो सोने के बछड़े की पूजा करते थे, निर्गमन 32

(न.नि) प्रतिक्रिया परमेश्वर उन्हें भयंकर महामारी से दंडित करेगा जो मूर्तिपूजा करते है, समय के अंत में, प्रकाशितवाक्य 9

(हमारी प्रतिक्रिया) **प्रर्तिपूजा के किसी भी रूप से भागें, जिसमें लालच शामिल है (1कुरिन्थियों 10:14, कुलुस्सियो 3:5)**

IV-21 अविश्वास इस्त्रायल को खानाबदोश बनाकर छोड़ता है *(संबंधित : उल्लंधन, वादा की हुई भूमि, आग्रिप्पा)*

(पु.नि) यीशु ने इस्त्रायलियों को वादा करी हुई भूमि की आशीषे पेश की, परन्तु विश्वास की कभी के कारण वो उसे रख नहीं सके:

- बारह जासूसों ने भूमि की जाँच पड़ताल करी, पर लोग ऐसा करने से डरते थे तथा वो 40 साल तक रेगिस्तान में घूमते रहे, गिनती 13-14

(न.नि) प्रेरित पौलुस राजा अगिप्पा को मुक्ति का संदेश प्रस्तुत करता है, जो उस पर विश्वास करने से मना कर देता है, प्रोरितो के काम 26

(हमारी प्रतिक्रिया) **हम प्रभु को खोजतें हैं जब तक वो हमें मिल सकता है, यशायाह 55:6-7**

IV-22 पवित्रस्थान *(संबंधित: पूजा का तम्बू, शरण स्थान, याजकता, महायाजक, यीशु हमारा महायाजक)*

(पु.नी) परमेश्वर ने मूसा को एक शरणस्थल खड़ा करने का आदेश दिया, जहाँ वो अपने लोगें से मिल सके, सबसे अधिक पवित्रस्थान के अन्दर:

- परमेश्वर ने पवित्र स्थान को बनाने तथा याजकों के पहिनावे के सख्त निर्देश दिये, **निर्गमन 25-31, निर्गमन 35-40** ।
- लैव्यव्यस्था की सम्पूर्ण पुस्तक शरणस्थल में बलिदानों तथा याजकों की सेवा के बारे में समझाती है
- शरणस्थल में तीन भाग थे, हरेक अपने साज-सामान के साथ, नीचे सूचीबद्ध है, **निर्गमन 40**
  1) उपासकों के लिये बाहरी आंगन। जलाने वाले चढ़ावों के लिये एक वेदी थी तथा याजकों के धोने के लिये एक पानी की टंकी थी (निर्गमन 38) वेदी, यीशु तथा उसके बलिदान का प्रतीक थी, जिसने अनन्तकाल के लिए मुक्ति पाई तथा जानवरों के बलिदानों की जरूरत को समाप्त करा (इब्रानियो 9-10)। टंकी की तुलना बपतिस्मे से की जा सकती है जिसके द्वारा सारे विश्वासियों को धोया जाता है तथा वो नई वाचा के याजक बनतें हैं।
  2) सिर्फ याजकों के लिये पवित्र स्थान। उसमें एक मेज़ पर 'उपस्थिति की रोटी' (प्रभु भोज की आकृति, एक सोने का दीवट जो तेल से हर समय जलता रहता था (पवित्र आत्मा की आकृति) तथा एक सुगंध की वेदी (प्रार्थना की आकृति)।
  3) सबसे अधिक पवित्रस्थान - सामल में एक बार सिर्फ महायाजक प्रवेश कर सकता था। एक विशाल लाल परदा, जो कि यीशु के माँस का प्रतीक, जो कि उसको अलग करता था। उसमें वाचा की परत चढ़ा हुआ सन्दूक था, तथा उसके ऊपर दोनों सिरों पर कस्ब (स्वर्गदूत) थे। परमेश्वर की प्रत्यक्ष महिमा उसके ऊपर चमकती थी-परमेश्वर के लोगों के बीच में उपस्थिति दर्शीत हुई, यीशु की प्रतीकता व्यक्त करती हुई।
- पवित्रस्थान के आंगन मे लोग अपने पापों के अस्थाई प्रायश्चित के लिये लहू के बालिदान चढ़ाते थे। निर्गमन 29:36-41 ।

- महायाजक के पुत्रें ने सबसे पवित्र स्थान में, लहू के बिना एक विचित्र अगिन का चढ़ावा चढ़ाया तथा परमेश्वर ने उनका वध किया, लौत्यत्यवस्था 10
- सबसे पवित्र स्थान में सिर्फ महायाजक साल में एक बार प्रवेश करता था परमेश्वर के लोगों के लिए लहू का बलिदान चढ़ाने के लिये लैव्यव्यवस्था 16
- सदियों के पश्चात राजा सुलेमान ने पवित्रस्थान को, जो कि एक विशाल तम्बू था, एक भव्य मन्दिर में बदल दिया; 1 राजा 5-6

(न.नि) यीशु ने अपनी मृत्यु, पुनरूथान तथा ऊपर उठने के द्वारा, स्वर्गोय पवित्रस्थान में हमारे महायाजक के रूप में प्रवेश किया:

- यीशु मनुष्य बनने, परीक्षा में पढ़ने तथा सताये जाने के द्वारा हमारा त्रुटिरहित महायाजक बना, **इब्रानियों 2'14-18**
- यीशु,जो हमेशा रहता हैं,ने पुराने महायाजक तथा उससे संबंधित बलिदान तथा सेवाये बदली, **इब्रनियों 7-9 ।**

(हमारी प्रतिक्रया) **विश्वस्तता के साथ परमेश्वर के नजदीक आएं, अन्य विश्वासियों को उत्साहित करने में लगे रहें (इब्रानियों 10)।**

IV-23 सर्वोच्च आज्ञा- एक सच्चे परमेश्वर से प्रेम करें *(संबंधित: बच्चे, विवाह)*

(पु. नि) परमेश्वर एक है- हमें उसे अपने संपूर्ण हृदय से प्रेम करना चाहिये तथा अपने बच्चों को उसके कानूनों का पालन करने के निर्देश देने चाहिर्य, व्यवस्थाविवरण 6:1-9।

(न.नि) यीशु विवाह के लिए निर्देश देता है तथा बच्चों को आशीषें देता है, मत्ती 5:31-32; मत्ती 5:31-32; मत्ती 19:13-15

(हमारी प्रतिक्रिया) **पति अपनी पत्नियों से प्रेम करें,जो कि अपने पतियों के प्रति पूर्ण समर्पित रहें (इफिसियों 5:21-33)**

- पौलुस बच्चों को अपने माता-पिता का कहना मानने के निर्देश देता है, तथा पिताओं को कि वो विश्वास में अपने बच्चों को निर्देश दें (इफिसियों 6:1-4)

IV-24 जादू-टोने की मनाही *(संबंधित: आत्माएं, तंत्र-मत्रं, यीशु का बुरी आत्माओं पर वशीकरण, पिशाच, शैतानी तबाही)*

(पु.नि) परमेश्वर ने मूसा को जादू-टोने, मृतकों से संबंध था आत्माओं से बात, करने की मनाही करी, व्यवस्थाविवरण 18:9-12

- राजा शाऊल ने एन्दोर की जादूगरनी से एक युद्ध के बारे में पूछ-ताछ करी तथा परमेश्वर ने उसके साम्राज्य को समाप्त कर दिया, 1श्मुवल 28:6-25; 1शमुएल 31

(न.नि) यीशु शैतान समेत सभी बुरी आत्माओं को वश में करता है

- यीशु ने गदरेानयों के लोगों में से कई दुष्टात्मायें निकाली तथा उन्हें सुअरों में भेजी, तथा कई अन्यों में, मत्ती8:28-34 मत्ती12:22-32 ।
- अंतिम दिनों में यीशु शैतान तथा उसके साम्राज्य को हमेशा के लिये नाश कर देगा, प्रकाशित वाक्य 12; प्रकाशितवाक्य 20:1-10।

(हमारी प्रतिक्रिया) **जादु-टोनेका परिहार्य करें दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों के लिए यीशु के नाम में प्रार्थना करें (गलतीयो 5:19-21 लूका 10:9)**

IV-25 आग द्वारा परीक्षा *(संबंधित: स्वर्ग में खजाना, स्वर्ग)*

(पु.नि) परमेश्वर ने अपवित्र लूटी हुई संपत्ति को अपने पवित्र तम्बू में वर्जित किया; जवाहरातों तथा मूल्यवान धातुओं की अग्नि के द्वारा परीक्षा करी गई, गिनती 31।

(न.नि) परमेश्वर चेताता है कि हम स्वर्ग में वर्जित वस्तुएं नहीं ले जा सकते -हमारे कार्यो की अग्नि द्वारा परीक्षाली जायेगी: 1कुरिन्थियों 3:10-15 ।

- यीशु लालच तथा धन- दौलत से चिपकने के प्रति चेताता है अपने धनी मूर्खा के दृष्टान्त में, लूका 12:14-31 (हमारी प्रतिक्रिया) पृथ्वी पर धन इकटठा करने कि बजाए स्वर्ग में खजाना बचा के रखो (मत्ती 6:19-21)।

IV-26 बिलाम की ईर्ष्यापूर्ण आशीष *(संबंधित: बिलाम, लालच, धनलोलुपता, भौतिकवाद, धन-दौलत)*

(पु.नि) कुछ परमेश्वर की सेवा के लिए अपनी धन संपत्ति का उपयोग करते थे; कुछ लालच तथा स्वार्थ में उसका गलत उपयोग करते थे:

- इस्त्रायल को श्राप देने के लिए बालाक ने बिलाम को भुगतान किया, परमेश्वर ने उसे उन्हें आशीष देने के लिये गधे का उपयोग तथा अन्य तरीके उपयोग करने को थोपे; गिनती 22-24
- धनी नाबाल ने स्वार्थवश दाऊद के भूखे सैनिकों को खाने के लिये मना कर दिया, परन्तु परमेश्वर स्थिति बदलता है, 1शमुएल 25 ।
- राजा हिजकिय्याह बाबिल के संदेशवाहको को गर्व से शाही संपत्ति दिखाता है - तथा उन्हें खोता है। 2 राजा20:12-19
- राजा सुलेमान के पास अपार धन दौलत थी, कई पत्नियाँ थी, तथा हर सुख में वो सम्मिलित होता था, पर सब खोखला पाया, सर्भोपदेशक 2:1-11

(न.नि) एक स्वार्थी धनी मनुष्य जो नरक में जागा का दृष्टान्त सुनाकर यीशु धन-दौलत जमा करने के प्रति चेताता है, लूका 16:19-31।

(हमारी प्रतिक्रिया) **विश्वासियों को धन - दौलत का साथ, या जिनको उसकी इच्छा है परमेश्वर की चेतावनी द्वारा सचेत हो जाना चाहिये कि वो हमारे दुख का कारण होगी, (याकूब 5:1-6)।**

इस्त्रायल के न्यायियों के समय कीघटनाएं समरूपी उत्तरकालीन घटनाओं के साथ

IV-27 यहोशु वादा की हुई भूमि पर चढ़ाई करता है *(संबंधित:युद्ध, कलीसिया उगाना, मिश्नरी)*

(पु.नि) यहोशु ने परमेश्वर के लिये चढ़ाई करी, उन मूर्तिपूजक देशों को पुद्ध में हराकर जिन्होने वादा की हुई भूमि को घेर रखा था:

- परमेश्वर ने यहोशु को साहसी बनाने की आज्ञा दी तथा उन मूर्ति पूजक देशों को वादा करी हुई भूमि से खदेड़ने को कहा, यहोशू 1:1-11 मूर्तिपूजा का नगर यरीहो गिरता है, **यहोशू 6**

- एक देशदोही की मूर्तिपूजा के कारण परमेश्वर ने यहोशू की फौज को अस्थाई रूप से हारने दिया, यहोशू 7-8
- भूमि पर अधिकार करने के लिऐ यहोशु अनेक शक्तिशाली राजाओं को हराता है, 9-11

(न.नि) प्रोरित परमेश्वर के लिये चढ़ाई करते है, शैतान को परास्त करके जब वो संसार के मूर्ति पूजक देशों मे सुसमाचार को ले जाते है:

- अन्तिया का समुदाय नियुक्तियाँ करता है तथा पहली बार लम्बी-अवधि के लिए मिश्नरी भेजता है, प्रेरितों के काम 13:1-3
- पौलुस तथा बरनबा, दूरस्थ देशों तथा अन्य सभ्यताओं में लम्बी मिश्नरी यात्राएं करते है, प्रेरितों के काम 13-14 प्रोरितों के काम 16-21
- पौलुस यीशु को यहूदी मार्गदर्शकों तथा वहमी राजाओं फेस्तुस तथा अग्रिप्पा के समक्ष यीशु को प्रस्तुत किया यद्यपि इसका मतलब बंदी बनना था, प्रेरितों के काम 20 -26

(हमारी प्रतिक्रिया) **परमेश्वर आपके झुँड को जो प्रेरित देता है उन्हें उपेक्षित क्षेत्रों में भेजें (इफिसियों 4:11-12 के काम 1:8)।**

- आज के प्रेरित शैतान को पीछे खदेड़ना जारी रखतें हैं जैसे परमेश्वर का साम्राज्य सारी पृथ्वी पर फैलता है
- परमेश्वर के शत्रुओं का साहस से सामना करें, तथा जो दुख वो लाते है उन्हें सहें (मत्ती 10:16-42) ।

IV-28 इस्त्रायल के परमेश्वर द्वारा गैर यहूदियों का आशीष पाना *(संबंधित: राहाब, परमेश्वर में देश में लाए गये विदेशी, यीशु की कलीसिया में सारे देशों का समावेश)*

(पु.नि): पुराने नियम में परमेश्वर विश्वसनीए परदेसियों को इस्त्रायल में अपने लोगों के बीच के सम्मिलित करने को लाया:

- कनानी वेश्या राहाब ने विश्वास में परमेश्वर के गुप्तचरों को छुपाया, तथा जब यरीहों का नगर गिरा तो उसे बक्शा गाया, यहोशू 2; यहोशू 6:17
- मोआबी विधवा रूत अपनी सास नाओमी के प्रेम में आकर इस्त्रायल आती है तथा परमेश्वर पर भरोसा करती है। रूत तथा राहाब, दोनो, यीशु के वंशानुक्रम में है (रूत राजा दाऊद की परदादी थी), रूत-एक खूबसूरत प्रेम कथा।
- अरामी की फौज का सेनापति नामान, अपने घमंड से संघर्ष करने के पश्चात, यरदत नदी में नहाता है तथा परमेश्वर उसके कोढ़ को चंगा कर देता है, 2 राजा 5 ।

(न.नि) मसीह की कलीसिया सभी देशों को अंगीकार करती है:

- यीशु ने पहले सैदा की स्त्री के विश्वास को परखा तथा फिर उसे पुरस्कृत किया, मत्ती 15:21-28 ।
- यीशु रोमी सूबेदार के दास को फौज के सूबेदार के विश्वास के कारण चंगा करता है, लूका 7:1-10
- पौलुस प्रेरित कई देशों में मिशनरी यात्रायें करता है, प्रेरितो के काम 13:14;प्रेरितों के काम 13-14 प्रेरितों के काम 17-20 ।

(हमारी प्रतिक्रिया)

- यीशु हमें धर्म के प्रचार की तथा सारे देशों में अनुयायी बनाने की आज्ञा देता है, लूका 24:46-48; मत्ती 28:18-20

IV-29 गिदोन दुर्बलता में शक्ति प्राप्त करता हैं *(संबांधित: गिदोन, दाऊद ने गोलियत का वध किया, पतरस का इन्कार, आत्मिक युद्ध)*

(पु.नि) परमेश्वर पुराने नियम में शक्तिशाली को हराने में दुर्बल इन्सानों का उपयोग करता था:

- गिदोन ने 300 सैनिकों के साथ परमेश्वर के विलक्षण निर्देशों का पालन करा तथा एक विशाल सेना को हराया, न्यायियों 6-7
- चरवाहो को पुत्र दाऊद पलिश्तियों के दैत्यगोलियत को हराता है, 1शमुएल 17.

(न.नि) परमेश्वर नए नियम में दुर्बल तथा दोषयुक्त लोगों का महान कार्य करने के लिए प्रयोग करता है:

- पतरस ने यीशु का इन्कार किया पर परमेश्वर ने उसका शक्तिशाली उपयोग किया, उसके पवित्र आत्मा प्राप्त करने के पश्चात, मत्ती 26:31-35 69-75

(हमारी प्रतिक्रिया) **अपने पाप तथा दुर्बलताओं को परमेश्वर के समक्ष स्वीकारें .**

- परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा करें, न कि मनुष्य के ज्ञान तथा धन पर (कुरिन्थियों 1-2)
- शक्ति के लिए प्रार्थना करें, जैसे पौलुस, जिसने कहा, ''मैं मसीह की शक्ति द्वारा कुछ भी कर सकता हूँ'' (फिलिप्पियों 4:13)
- आत्मिक क्वच तथा हथियारों का उपयोग करके, जो परमेश्वर उपलब्ध कराता है, आत्मिक युद्ध में लगे रहें (इफिसियों 6:10-18)

IV-30 रूत *(संबंधित: स्त्री मार्गदर्शक, स्त्री आदरणीय)*

(पु.नि) परमेश्वर ने पुराने नियम में उसका कार्य करने के लिये रूत, ऐस्तर तथा दबोरा जैसी विश्वसनीए स्त्रियों को समर्थ बनाया:

- दबोरा ने इस्त्रयल को स्वतन्त्र कराने में एक साहसिक सैन्य अभियान चलाया, न्यायियों 4-5 रूत तथा ऐस्तर की पुस्तकें भो देखें।

(न.नि) परमेश्वर नए नियम में उसका कार्य करने के लिए विश्वसनीए स्त्रियों को समर्थ बनाता है:

- मरियम ने प्रभु की सेविका बनना स्वीकार किया तथा प्रशंसा की एक शानदार प्रार्थना गाई लूका 1:22-56
- प्रिस्किल्ला अपने पति के साथ तमबू बनाती थी तथा उसने अनेक समुदायों को प्रारंभ करने में सहायता करी तथा अपुल्लोस को परमार्श दिया, प्रेरितों के काम 18
- दोरकास निर्धनों के लियें कपड़े बनाती थी, प्रेरितों के काम 9:36-43

(हमारी प्रतिक्रिया) **स्त्रीयों का आदर तथा सम्मान करें, तथा विश्वास की सदाचारी स्त्रियों की प्रशंसा करें, नीतिवचन 31:10-31;इफिसियों 5:21-33)।**

- मसीही स्त्रियों को उन प्रबन्धनों को करने में प्रोत्साहित करें जिनका परमेश्वर ने उनको वरदान दिया है (उदाहरण, फिलिप्पुस की पुत्रियाँ, प्रेरितो के काम 21:8-9)।

IV-31 पलिश्तियों ने अति पवित्र सन्दूक कब्जाया *(संबंधित: दंड, दुख, वाचा की सन्दूक स्ती पनुस, उत्पीड़न, शहीद)*

(पु.नि) परमेश्वर दुष्ट लोगों को उसके भूल करने वाले बच्चों को दंडित करने देता है, तथा सदाचारी लोगों का इस संसार में दुख उठाने देता है:

- न्यायियों की पुस्तक उदाहरण देती है कि कैसे परमेश्वर के लोग मूर्तिपूजा तथा अन्य पापों में पड़ गए, तब परमेश्वर ने विधर्मीयों को उनका उत्पीड़न करने दिया। जब उन्होंने पश्चाताप किया, परमेश्वर ने एक मुक्तिदाता भेजा तथा वो शांतिपूर्वक रहने लगे- जब तक उन्होनें फिर से पाप ना किया, चक्र को दोहराते हुए।
- शिमशोन, अपनी नैतिक दुर्बलता के चलते भी, इस्त्रायल को मूर्तिपूजा पलिश्वियों से स्वतन्त्र करने के लिये अपने आप को परमेश्वर को उपयोग करने दिया; न्यायियी 14-16.
- पलिश्तियों ने वाचा का सन्दूक कब्जाया तथा उसे दागोन के मंदिर में रख दिया। तीसरे दिन दागोन का सिर कट गया, उसी तरह जैसे यीशु मै पुराने दुष्ट शैतान के पहले वाले मृत्यु के राज्य में प्रवेश किया था परन्तु बंधको की स्वतन्त्रता के लिये उसका सिर कुचल दिया जब वो तीसरे दिन जी उठा। गायो ने, बिना किसी मनुष्य के रास्ता दिखाए हुए, इस्त्रायल को सन्दूक वापस कर दिया उसी तरह जैसे विजेता मसीह अपने शिष्यों को दिखाई दिया था, अपने जी उठने के बाद, तथा महिमा में ऊपर उठाया गया, 1 शमुएल 4-6
- अय्यूब एक सदाचारी इन्सान था परन्तु उसने बड़े दुख झेले। वो परमेश्वर से प्रश्न करता था परन्तु कभी भी उसके विरोध में नहीं गया, अरयूब 1-42 । (यह एक बड़ी लम्बी कहानी है तथा इसे संक्षिप्त होने या टुकड़ों मे पढ़ाये जाने की आवश्यकता है। अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्याय है, अय्यूब1-4 तथा 40-42)।

(न.नि) परमेश्वर हमें इस समय दुख झेलने की अनुमति देता है, ताकि हम बाद में उसकी महिमा बाँट सकें, तथा उनको देता है जो उसके बच्चों का उत्पीड़न करते है

- राजा हेराद ने युहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सर काट दिया था तथा याकूब और अन्यों का वध किया था, परन्तु बादमें कीड़ो द्वारा खाया गया, प्रेरितों के काम 12
- अविश्वासी यहूदियो ने यरूसलम में स्तिफुनुस को पत्थरवाह करके मार डाला तथा मसीहियों का उत्पीड़न किया। फलस्वरूप कई जगहों पर बिखर गए, सुसमाचार को फैलाना- अनेको के लिये आशीष, प्रेरितो के काम 7-8
- पौलुस प्रेरित ने यहूदियों से मार खाई व पत्थरवाह हुआ, लूटा गया तथा उसका जहाज़ ध्वस्त हुआ, 2 कुरिन्थियों 11:22-33; प्रेरितो के काम 27-28

(हमारी प्रतिक्रिया) **मसीह के लिये दुख उठाते हुए खुशी मनाएं, क्योंकि महिमा में हमारा पुरस्कार बहुत बड़ा होगा (1पतरस 4:12-19)।**

- हम इस संसार में दुख उठाते है क्यों कि यह मसीह से नफरत करता था तथा हमसे नफरत करता है परन्तु हम पुरस्कृत होगें (युहन्ना 15:18-27; रोमियो 8:17-39)
- उस क्रूस का बोझ उठाओ जो यीशु हमें देता है(लुका 9:22-26)

इस्त्रायल के राजाओं के समय की घटनाएं समरूपी उत्तरकालीन घटनाओं के साथ

IV-32. परमेश्वर इस्त्रायल के मार्गदर्शको को तैयार करता है *(संबंधित: शमुअएल, हन्ना हन्नाह, एली, राजा शाऊल, यशायाह, प्रेरितों के लिए बैयारी)*

(पु.नि) परमेश्वर विभिन्न तरीको से अपने भविष्यवक्ताओ तथा मार्गदर्शकों का तैयार करता था:

- हन्ना ने अपने बालक शमुएल को परमेश्वर की सेवा करने के लिए, महायाजक एली को दे दिया था, रामुएल नो एली के लिए चौकानेवाला संदेश प्राप्त हुआ, 1शमुअल 1-3
- इस्त्रायलियों ने शमुएले से उन लिए एक राजा नियुक्त करने को कहा और उसने उन्हें चेताया कि क्या होगा, परन्तु वो अड़े रहे, इसलिए उसने शाऊल को नियुक्त किया, जो कि एक शक्तिशाली योद्धा था, लोगों की आपार खुशी के लिये : 1 शमुएल 8-10
- शाऊल ने इस्त्रायल के अनेक शत्रुओं को हराते हुए अच्छी प्रकार से शासन किया, तथा फिर कुछ गभीर मुर्खतापूर्ण भूल कर दीं, 1शमुएल 11-15 ।
- दाऊद ने, मूसा की तरह, बचपन से अपने पिता यिशै की भेड़े चराते हुए एक अच्छा चरवाहा बनना सीखा, 1शमुएल 16: 1शमुएल 17-33-37 ।
- दाऊद एक अच्छा योद्धाबना तथा राजा शाऊल उससे ईर्ष्या करने लगा तथा उसको भागने तथा छुपने पर मजबूर करने लगा। दाऊद को उसपर विश्वास करना सिखाने के लिए परमेश्वर ने चीज का उपयोग किया (जैसे कि उसके कई भजन व्यक्त करते है) 1 शमुएल 18-31 । इन अध्यायों में युद्ध की अनेक कहानीयों का सामावेश है।
- यशायाह ने परमेश्वर की उसके मंदिर में एक ऐसी भयानक दृष्टि देखी कि वो इतना पाप ग्रस्त हुआ कि वो गिर गया, यशायाह 6
- यिर्मयाह ने कई दुख उठाये, उसके समेत जब उसको एक गडढे मे रखा गया था जब उसके येरूसलम के पल्व की भविष्यवाणी की थी, यिर्मयाह 38 ।

(न.नि) परमेश्वर नए नियम में अपने मार्गदर्शकों को तैयार करता है:

- पतरस तथा ग्यारह अन्य वास्तविक प्रेरितो ने यीशु, एक कुशल व्यक्तिन्व, के साथ बिताए, मरकुस 3:13-19 ।
- पौलुस प्रेरित ने अनेक दुख उठाये, तथा अपने धर्मप्रचारक के कार्य से पहले अरब में समय व्यतीत किया, गलतियो 1:11-24

(हमारी प्रतिक्रिया) **हम परमेश्वर की सेवा के लिए अच्छी तैयारी करें, बलिदानों की क्रिया समेत:**

- मूसा ने अपने लोगों की सेवा करने के लिये मिस्त्र के राजमहल की धन- दौलत छोड़ी तथा शर्मिदगी उठाई (इब्रानियों 11:24-28)
- इस तैयारी में परमेश्वर के वचन का ज्ञान प्राप्त करना, जो इस समय आप कर रहे हैं, तथा उसको अपने परिवार, अपने लोगों तथा नए मार्गदर्श कों सिखाना शामिल है (2 तिमुथियुस 2:2)

IV-33 इस्त्रायल के अच्छे राजा *(संबंधित: दाऊद का अच्छा शासन, सुलेमान, आज्ञाकारिता, शासक, अच्छे, शेवाकी रानी, इस्त्रयाल के राजा, प्राचीन)*

(पु.नि) परमेश्वर ने .अच्छे मार्गदर्शकों का जैसा दाऊद तथा उसके पुत्र सुलेमान को उसके लोगों पर शासन करने दिया जब वो मूर्तियों से मुड़े तथा उसके आज्ञाकारी बने, परन्तु बुरे राजाओं को भी शासन करने दिया जब वो मूर्तियों की पूजा करते थे। अधिकतर राजा बुरे थे।

- सुलेमान परमेश्वर से ज्ञान माँगते हुए अपना शासन प्रारंभ करता है। उसके ज्ञानी निर्णय बहुत दूर के लोगों को आकर्षित करते थे, 1 राजा 3;4:21-34
- सुलेमान ने परमेश्वर का मंदिर निर्मित किया तथा बड़ी शानो शौकत तथा समारोह के साथ का वाचा का सन्दूक लाया, 1 राजा 8

- शेवा की रानी बहुत दूर से सुलेमान की महिमा देखने आती है तथा उसका ज्ञान और धन- संपत्ति से चकित होती है, राजा 10:1-13 ।
- सुलेमान के शासन में इस्त्रायल असी समृद्धि का सुख लेती है, 1 राजा 10:22-29
- यहोशापात ने मूर्तियों हटायीं, तथा परमेश्वर के कानूनों को सारे इस्त्रायल में गैर र्सस्थागत शिक्षण द्वारा सिखाई, 2 इतिहास 17-18
- योश्यिाह, एक बालक राजा, ने अपने सलाहकारों की सुनी तथा इस्त्रायल में आत्मिक नवीनीकरण लाया 2 राजा 22-23
- हिजाकय्याह, अजज्याह तथा असाहेल राजाओं की तरह यहुदा को लाया, 2 इतिहास 29-32

(न.नि) परमेश्वर अच्छे मार्गदर्शकों को उसके समुदायों की सेवा करने को देता है जब वे उसके वचन का पालन करते है तथा पवित्र आत्मा की अगुआई का:

- पौलुस अपने प्रशिक्षु तितुस को, ठीक प्रकार के प्रचीनों को जो श्रेते के नए समुदायों का मार्गदर्शन करें, नामित करने के लिये कहता है, तितुस 1:5-9

IV-34 इस्त्रायल के भविष्यवक्ता *(संबंधित: चेतावनी, एलिय्याह, अहाब, बाल, पश्चाताप, झूठे मार्गदर्शक)*

(पु.नि) परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं को, बुरे राजाओं को चेतावनी देने तथा लोगों को पश्चाताप करने के लिए भेजा था:

- सुलेमान के मूर्ख पुत्र रहूबियाम ने लोगों पर कड़े करों को हल्का करने से मना कर दिया, जिसने योरोबाम तथा उत्तरी जातियों को विभाजित होने के लिए उत्तेजित कर दिया-इस्त्रायल उत्तर में तथा यहूदा दक्षिण में, 1 राजा 12।
- यारोबाम ने, जो उत्तर मे इस्त्रायल का पहला राजा था भविष्यक्ता की चेतावनी का उल्लंधन करा तथा गंभीर मूर्तिपूजा संस्थापित की, 1 राजा 13
- अनेक राजाओं ने यारोबाम के बुरे उदाहरण का अनुसरण किया। अहाब लगभग पूरे इस्त्रायल को मूर्तिपूजा की अनुमति देता है, परन्तु भविष्यवक्ता एलिरयाह ये दिखाने के लिए चमत्कार करता है कि परमेश्वर जिंदा है तथा बेजान मूर्तियों से ज्यादा शक्तिशाली है। एलिय्याह एक विधवा के पुत्र को चंगा करता है, 1 राजा 17 ।
  - एलिय्याह बाल के भविष्यवक्ताओं को उसके तथा अहाब के साथ प्रतियोगिता करने के लिये कर्म्मेल के पर्वत पर बुलाता है,1 राजा 18 ।
  - एलिय्याह अकेलापन महसूस करते हुए निराशा में पड़ता है परन्तु परमेश्वर के स्वर्गदूत से उसे तसल्ली मिलती है, 1 राजा 19 ।
  - एलिय्याह सबसे दुष्ट राजा अहाब को पश्चाताप करने के लिये आश्वस्त करता है, 1 राजा 21 ।
  - अहाब मिकायाह की भविष्यवाणी को ठुकरा देता है तथा अपनी हिसांत्मक मृत्यु का कारण बनता है, 1 राजा 22 ।
  - एलिय्याह राजा अहज्याह के दूतों पर स्वर्ग से आग को नीचे लाता है, 2 राजा 1 ।
  - एलिय्याह को आग के रथ पर स्वर्ग में ले जाया जाता है परन्तु परमेश्वर अपनी शक्तियाँ अपने प्रशिक्षु एलिशा की तरफ बढ़ा देता है, 2 राजा 2 ।

- एलीशा इस्त्रायल के राजा यहोराम को माओबी सेना को चमत्कारिक रूप से हराने में समर्थ बनाता है, 2 राजा 3
- एलिशा परमेश्वर की शक्ति के द्वारा एक निर्धन विधवा को उसके आधार चुकाने में समर्थ बनाता है, 2 राजा 4
- एलिशा परमेश्वर की शक्ति के द्वारा अरामी फौज के सेनापति नामान को अपने कोढ़ को साफ करने में समर्थ बनाता है, 2 राजा 5 ।
- एलिय्याह परमेश्वर की शक्ति के द्वारा अरारम की आक्रमण करती फौज को परास्त करता है, 2 राजा 7:24-33;2 राजा 8

- यिर्मयाह येरूसलम के पतन तथा परमेश्वर के दंडका भाविष्यवाणी करता है, परन्तु राजा उसे सुनने से इनकार कर देता है 2 इतहास 36: 11-23, यिर्मयाह 36
- राजा तथा लोग और ज्यादा बुराई उपजाते है तथा आखिरकार येरूसलम का पतन हो जाता है। कई लोग बाबुल को दासों के रूप में लें जाये जाते है 2 इतिहास 36
- योना, जो प्रथम मिश्नरी था, उसे दूसरे देश में भेजा जाता है, तथा जब तक परमेश्वर उसे आज्ञाकारिता नहीं सिखाता है वे परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करता है, योन्ना...

(न.नि) यीशु सभी मनुष्यों को पश्चाप के लिए बुलाता है, तथा बुरे मार्गदर्शको ं के प्रति चेताता है- वो भेड़िये जो परमेश्वर के लोगों को पथभ्रष्ट करने में अगुआई करते है:

- यीशु एक भटकी हुई भेड़ का दृष्टान्त सुनाता है यह प्रकट करने के लिए कि जब पापी पश्चाताप करते है तो स्वर्ग में कितना आनंद होता है, लूका 15:1-10 ।
- एक अपत्यायी पुत्र के दृष्टान्त के द्वारा, यीशु परमेश्वर के अनुग्रह का वर्णन करता है, जो मनुष्यों को पश्चाताप में ले जाता है, लूका 15:11-32
- पतरस सुसमाचार को घोषणा करता है तथा श्रोताओं के एक बड़े समूह को पन्तीकुस्त में पश्चाताप करने के लिये बुलाता है, प्रेरितों के काम 2:1-41 ।
- योशु एक अंधे मनुष्य को सब्त के दिन चंगा करता है, तथा पाखंडी धार्मिक नेता अप्रसन्न होते है कि उसने यह सब्त के दिन किया,युहन्ना 9
- तारसी का शाऊल जिसने मसीहियों को बंदी बनाया तथा उनकी मृत्यु का कारण बना, परन्तु परिवर्तित हुआ तथा पौलुस प्रेरित बना, प्रेरितो के काम 9:1-31 ।
- यीशु उन त्रेड़ियों के प्रति चेताता है जो ढोंग करते है कि वो निष्ठावान मसीही मार्गदर्शक है परन्तु वो झूठे है, मत्ती 7:15-20
- युहन्ना बपतिस्मा देने वाला हेरोद को उसके व्याभिचार की चेतावनी देता है। हेरोद ने उसे बंदी बनाया तथा बाद मे उसका सिर काट दिया; मत्ती 14
- यीशु फरीसीयों के खमीर की चेतावनी देता है-आत्मा नीतिपरायणता तथा मनुष्यों के नियम, लूका 12:1; मत्ती 15:1-20
- पौलुस इफिसुस के प्राचीनों को चेताता है भेड़िये (झूठे मार्गदर्शक)उनके समुदायों को विभाजित तथा भ्रष्ट करने की कोशिश करेगें, प्रेरितो के काम 20:28-32
- परमेश्वर, युहन्ना की भविष्वाणी के द्वारा, मसीही विरोधियों द्वारा विश्वासियों के नृशंस उत्पीड़न की चेतावनी देता है, प्रकाशितवाक्य 13 ।

- युहन्ना के दर्शन उन भयंकर न्यायों की भी चेतावनी देते थे जो कि उन लोगों पर आने वाले थे जो पश्चाताप नहीं करते थे, प्रकाशित वाक्य 16-18।
- युहन्ना के दर्शन स्वर्ग में एक भव्य विवाह भोज का भी वादा करते थे उनके लिये जो पश्चाताप करते थे, प्रकाशितवाक्य 19
- युहन्ना के दर्शन उन पश्चाताप ना करने वालों के प्रति, परमेश्वर के भव्य सफेद सिंहासन के समक्ष निर्णायक न्याय को प्रकट करते थे, प्रकाशित वाक्य 20
- युहन्ना के दर्शन, नए स्वर्गा तथा पृथ्वी की, जहाँ पर हम रहेगें तथा मसीह के साथ अन्तकाल तक शासन करेगें, जहाँ पर ना शोक, ना विलाप, ना पीड़ा रहेगी, को भी प्रकट करते थे ,प्रकाशित्वाक्य 21-22

(हमारी प्रतिक्रिया)

- उस झुंड पर नज़र रखें जो परमेश्वर ने हमें मर्गदर्शन के लिये दिया है, अपने परिवारों से शुरूआत करते हुए (प्रेरितों के काम 20:28-32)
- मार्गदर्शकों के रूप में जिम्मेदार, अनुभवी लोगों का नामांकन करें जिन्होंने अपनी योग्यता साबित करी हो, (1तिमुथियुस 3)
- उनसे दूर रहें जो विभाजनों का कारण बनतें हैं (तितुस 3:10-11)
- हमारे समुदाय को मामूली भूलों का परिहार करना चाहिये जो समुदायों को निर्बल करती है, जिसकी हमें मसीह ने प्रकाशितवाक्य 2-3में चेतावनी दी है।
- पवित्र आत्मा के प्रतिदिन नवीनीकरण की खोज़ करें (2कुरिन्थियों 4:16-18)
- पीड़ित विश्वासियों को उनके अनन्त पुरस्कार के बारे में विश्वस्त करें (1पतरस 1:6-9; 1युहन्ना 3:1-3)।

IV-35 *(संबंधित: शैतान का स्वर्ग से गिराया जाना, आत्मिक युद्ध, शैतान यीशु को प्रलोभन देता है, शैतान)*

(पु.नि) लूसीफर ''बाबेल का राजा'' जो एक खूबसूरत फरिश्ता था, घमंडी हुआ तथा स्वर्ग से गिरा, हमारा शत्रु शैतान बनने के लिये, यशायाह 14:3-17)यह घटना सृष्टि के प्रारम्भ में हुई थी, परन्तु विभाजित राज्यों के समय तक प्रकट नहीं हुई थी। (न.नि) शैतान परमेश्वर के लोगो के विरूद्ध लगातार युद्ध करता है:

- स्वर्ग में एक युद्ध के चलते हुए, शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाला गया अन्य फरिश्तों के साथ जो गिराये गए थे तथा शैतान से जुड़ गए थें।, प्रक शितवाक्य 12:7-9
- दृष्टात्मा यीशु को प्रलोभन देता है, मत्ती 4
- यीशु चेताता है कि हमारे हृदयो से परमेश्वर के वचा का बीज छीनने के लिये शैतान दुष्टात्माओं को चिड़ियों का तरह भेजता है, मुत्ती 13
- शैतान यहूदा को यीशुं से विश्वासघात करने को अभिप्ररित करता है, युहन्ना 13:21-30; युहन्ना 18:1-12
- शैतान विश्वासी मसीही हन्याह तथा सफीरा के पापों का भी कारण बना, प्रेगेरितों के काम 5:1-11।

(हमारी प्रतिक्रिया)

- शैतान का विरोध करें और वो से हमारे पास से भाग जायेगा (याकूब 4:7)
- शैतान से सावधान रहें, क्योंकि वो एक गर्ज नेवाले शेर की तरह दबे पांवा आता है, कि किसको फाड़ खाये (1पतरस 5:8-9)

इस्त्रायल के बचे हुए लोगों की बन्धनावस्था तथा उनकी उनके देश के वापसी के समय की घटनाएं समरूपी उत्तरकालीन घटनाओं के साथ

IV-36 इस्त्रायल कह बाबेल की बन्धनावस्था *(संबंधित: मेर्दकै, दान्नियल, विश्वासियों की युरक्ष, यीशु -एक अच्छा चरवाहा)*

(पु.नि) परेमेश्वर उन बचे हुओं की रक्षा करता था जो सिर्फ उसकी आराधना करते थे, जब वो बन्धनावस्था में थे:

- मोर्दकै आपनी चचेरी बहन की मदद करता है, जो कि साहसी रानी एस्तेर थी, परमेश्वर के शत्रुओं के विनाश की योजना बनाने में, एस्तेर थी, (सारी पुस्तक)
- परमेश्वर दान्नियल के तीन मित्रों को धधकते हुए भब्ड़े में से बचाता है, दान्नियेल 3, तथा दान्नियेल को शेरों की माँद में से, दान्नियेल 6

(न.नि) यीशु एक अच्छा चरवाहा, अपने अनुयायीयों को अपने हाथों मे हमेशा सुरक्षित रखने का वादा करता है, युहन्ना 10:7-39

(हमारी प्रतिक्रिया) **परमेश्वर की उसके बच्चों को हमेशा उसके हाथों में रखने की असीम कृपा दृष्टि पर भरोसा करें, रोमियो 8:28-39**

IV-37 एज्रा, सुधारक *(संबंधित: पुनरूद्धार, बाबेल की बन्धकता से वापसी, नहेम्याह, आत्मिक वरदान)*

(पु.नि) परमेश्वर ने अपने लोगो का पुनरूद्धार करने तथा उसकी सेवा के लिए उन्हें संघटित करने के लिय विश्वसनीए मार्गदर्शक उपलब्ध-किया:

- फारस का राजा कुस्त्रू बाबेल में निर्वासित लोगों को वापस आने देता है इस्त्रायल की भूमि तथा मंदिर को पुनस्थापन करता है, एज्रा।
- लोग वापस आतें है तथा मंदिर का पुननिर्माण आनंद तथा आसुओं के बड़े शोर के साथ करते है, एज्रा 3
- नहेम्याह राजा अर्तक्षत्र से येरूसलम के पुननिर्माण की अनुमति माँगता है। नहेम्याह वापस जाकर अवशेषो का सर्वेक्षण करता है, नहेम्याह 1-2 ।
- नहेम्याह येरूसलम की शहरपनाह को बनाने के लिये हथियारबदं सेवकों की अगुआई करता है, काफी विरोध के बीच में, नहेरयाह 3-4
- लोग परमेश्वर का वचन सुनते है तथा हयान देते है, अपने पापों को स्वीकारते है तथा पश्चाताप सबसे बड़े राष्ट्रीय नवीनीकरण में करते है, एश्र 8-9

(न.नि) परमेश्वर हमको अपने पवित्र आत्मा के द्वारा अगुआई करने, एक दूसरे की सेवा करने तथा जरूरतमंदो की मदद करने, के वरदान देता है:

- यीशु पश्चातापी पापियों के साथ खाता है तथा उनपर परमेश्वर का अनुग्रह लाता है, मरकुस 2:13-17
- हम आपसी तालमेल में आत्मिक वरदानों को अन्य वरदानों के साथ, कलीसिया में प्रेम से एक दूसरे की सेवा करने के लिये उपयोग करते है, 1कुरिन्थियों 12:14-31
- पौलुस अपने प्रशिक्षुओ को अन्य मार्गदर्शकों का नामांकन तथा प्रशिक्षण करने के लिये कहता है, इस क्रिया को गुणा करते रहने देने के लिए, तीतुस 1:5;2 तिमुथियुस 2:2

(हमारी प्रतिक्रिया) **अपने लोगो को परमेश्वर के कर्यो के प्रति लाभबन्द होने के लिए विश्वस से योजना बनाएं (इफिसियों 4:11-16)।**

- नए सेवकों को नियुक्त करें तथा वहाँ भेजें जहाँ उनकी सबसे ज्यादा आवश्यकता हो (प्रेरितों के काम 13:1-3; तीतुस 1:5)

यीशु के सांसारिक जीवन के समय की घटनाऐं

IV-38 यीशु का जीवन *(संबंधित: चुने हुए प्रेरित, विजयी प्रवेश, क्रूस, यीशु ऊपर जाता है)*

- यीशु का जन्म :मत्ती 1-2; लुका 2
- यीशु का बपतिस्मा: मत्ती 3
- यीशु कि दुष्टात्मा द्वारा परिक्षा: मत्ती 4
- यीशु बारह अनुययीयों को बुलाता है जो बाद में प्रेरित बन जाते है: मत्ती 4:18-21; 9:9-13; युहन्ना 1:35-51; मरकुस 3:13-19
- यीशु का रूप-परिवर्तन: मत्ती 17
- यीशु का येरूसलम में विजयी प्रवेश
- यीशु का प्रभु भोज आयोजित करना : मत्ती 26: 17-29
- यीशु की गतसमनी मे व्यथा तथा पकड़ा जाना, मत्ती 26:36-56
- यीशु का अनेक अधिकारियों के समक्ष परीक्षण: मरकुस 14:55-64; युहन्ना 18:28 -40; 19:1-16
- यीशु को सूली पर पढ़ाया जाना: मत्ती 27; मरकुस 15, 1 लूका 23; युहन्ना 19:17-37
- यीशु का दफनाया जाना: युहन्ना 19:38-42
- यीशु का पुनरूथान तथा दिखाई देना:मत्ती 28; युहन्ना 20-21
- यीशु का सभी लोगों में से अनुयायी बनाने का अधिकार प्रदान करना, पवित्र आत्मा की शक्ति में पश्चाताप तथा क्षमा की छोषणा करते हुए, मत्ती 28: 18-20; मरकुस 16:15-16; लूका 24:46-48 प्रेरितों के काम 1:8।
- यीशु का स्वर्ग पर उठा लिया जाना, लुका 24:50-53

यीशु के महिमा में स्वर्गारोहण के उपरान्त की घटनाऐं

IV-39 पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त के ऊपर आती है *(संबंधित: स्तिफनुस, पिन्तेकुस्त, कलीसिया की समिति, मिश्नरी दल?, न्याय)*

- पवित्र आत्मा का पिन्तेकुस्त में यहूदी विश्वासियों के ऊपर आना: प्रेरितों के काम 2
- मसीह के शत्रु स्तिफनुस को पथराव करके मार डालतें हैं जब वो पुराने नीयम के इतिहास में से उनको दिखाता है कि उनके बाप- दादा ओं ने पीढ़ियों तक परमेश्वर का विरोध किया: प्रेरितों के काम 7
- प्रथम गैर- यहूदी कलीसिया : परिवर्तित गैर यहूदियों ने भी पवित्र आत्मा प्राप्त किया: प्रेरितों के काम 10
- प्रथम मिश्नरी दल: प्रेरितों के काम 13-14
- प्रथम अन्तर- कलिसिया समिति: प्ररितों के काम 15
- निर्णायक न्याय: प्रकाशितवाक्य 20:11-15

खण्ड-V
प्रकरण सूचीपत्र

A

अब्राहम उसका विश्वास III-9; IV- 6,7,10 उसकी मध्यस्थता की प्रार्थना III-12
आदम I-1;IV-2
अग्रिप्पा IV-21
अहाब IV-34
परमेश्वर के देश मे लाए गए विदेशी IV-28
प्रेरित 'भेजे हुए' खण्ड III (संपूर्ण); चुने हुए IV-38
प्रेरितों की तैयारी IV-32
वाचा का सन्दूक IV-31
धन लोलुपता-IV-26

B

बाल IV-34
बाबुल IV-5
बिलाम IV-26
बपतिस्मा I-7; II-2;III-I
बईबल, ईश्वर के वचन को पढ़े, पढ़ाये तथा लागू करे III-4
बाईबल की कहानियाँ सूचीबद्ध, तुलना IV-1-39
लहू, बलिदान IV-3,14
मसीह का लहू IV-3
जीवन की रोटी IV-6

C

इस्त्रायल की बन्धनावस्था IV-36
छोटे समूह, देखें छोटे समूह
बच्चे, पालन पोषण तथा देखभाल III-9,IV-23
मसीह की कलीसियाई सभी देशों को अंगीकार करती है IV-28
कलीसियाई समिति का जीवन III-2; कलीसियाई समिति IV-39
कलीसिया उगाना III-5; IV-27
सहभागिता II-6;III-3;IV-14
पाप की स्वीकारिता I-6
विरोध का समाधान III-7
अनुशासनहीन विश्वासियों को सुधारना II-6; मार्गदर्शको को सुधारना III-14 परामर्शदेना III-8
वाचा IV-6
सृष्टि I-1;Iv-1

क्रूस IV-38
सभ्यताऐं IV-5

D

दान्नियेल IV-36
दाऊद का गुप्त पाप दंडित, III-11; उसका अच्छा शासन IV-33
दाऊद का गोलियत का वध करता IV-29
डीकनों के कर्तव्य III -10
मृत्यु, यीशु द्वारा वशीकरण I-4;IV-2
छुटकारा IV-15
पिशाच I-4 यीशु के नाम में प्रार्थना द्वारा निकाले गए III-12, IV-24
दुष्टात्मा IV-35
यीशु के अनुयायी I-8; अनुयायी बनाना II-3
कलीसिया में अनुशासन III-11
अवज्ञा IV-21
दोरकास, उदार दानी III-13

E

प्राचीनएु बनने की योग्यताए II-6;प्रशिक्षण III-6 कर्तव्य IV-17,33 एली, IV-32
एलीयाह का हतोत्साहन III-8; उसके चमत्कार I-2; IV-34
एस्तेर, प्रार्थना द्वारा उसका देश बचाया गया III-12
अनन्त जीवन IV-16
एसाव IV-11
महाप्रसाद IV-13,14
धर्म प्रचार, खण्ड I (संपूर्ण); III-1
एज्रा IV-37

F

विश्वास III-9;IV-6,7,9,11,21
पारिवारिक जीवन बलशाली होना III-9
झूठे मार्गदर्शक IV-34
भय, डर, विजयी होना III-1
भाईचारा, भीतर तथा आपस मे समुदाय के III-7
बाढ़ I-5; IV-4
क्षमा I -3; II-4;IIV-12
जीवन तथा प्रबन्धन की नीवं II-1

G

गिदोन IV-29

वरदान, देखें आत्मिक वरदान
अर्पण, देना II-7;III-13;IV-8
परमेश्वर एक है I-2; उसकी पवित्रता चाहती है कि पाप दंडित हो I-5
सोने का बछड़ा IV-20
अनुग्रह II-20
कृपादृष्टि IV-11
महान अधिकार देना I-8
लालच 26
प्रसन्नता, उसका उसली उद्‌गम III-11
हन्ना IV -32
चंगाई IV-9 ; स्वर्गीय पुरस्कार II-7
महायाजक IV-22
पवित्रता I-6; III-1
पवित्र आत्मा II-1; III - II ;IV-10 ,39
मूर्तिपूजा I-2; IV-20
अमरत्व IV-15;16
मध्यस्थता IV-9,12
इसहाक IV-7, परमेश्वर उसको एक पत्नी उपलब्ध करता है III-9
यशायाह IV-32
इस्लाम IV -7

J

याकूब IV-11; राशेल से प्रेम करता है III-9
यीशु परमेश्वर के लोगों की पैरोकारी करता है IV- 12
महिमा में स्वर्गारोहण IV-38
उसका बपतिस्मा III-1
जरूरतमंदो की देखभाल III-10
पिशाचों को निकाला I-4
उसका बचपन III-9
उसकी आज्ञायें IV-18
शैतान, दुष्टात्माऐं तथा मृत्य को पराजित किया I-4; IV-2
अच्छा चरवाहा IV-36
उसका महान अधिकार प्रदान करना I-8
महायाजक III-10; IV-22
उसका मानव तथा ईश्वरीए स्वभाव III-10
उसका जीवन IV-38 दुष्टात्माओ का वशीकरण किया IV-24
मुर्दो में से जी उठा I-3; I-8;-38

उसकी बलिदानी मृत्यु I-3;
शैतान द्वारा परखा जाना III-4
यित्रो IV-17; मूसा को परामर्श III-6
अय्यूब, एक निर्दोष मनुष्य, पीड़ित होता है III-8
युसुफ IV-12
यहीशु वादा की हुई भुमि पर चढ़ाई करता है IV-27
योशिय्याह का नवीनीकरण III-4
न्याय IV-4; 39

K

इस्त्रायल के राजा IV-33
यहूदा के राजा IV-33

L

मेमने का लहू IV-14
भाषायें IV-5
कानून, पुराने नियम का विश्राम का दिन, IV-18
कानून, दस आज्ञायें IV-18
मार्गदर्शकों को तैयार करना IV-32
मार्गदर्शन III-6
विधिवाद IV-19
पिशाचों से स्वतन्त्रता, देखें पिशाच
प्रभु भोज, देखें सहभागिता
प्रेम II-4; कलीसिया में III-7; व्यवहारिक III-5 लूसीफर IV-35

M

मन्ना IV-16
शहीद IV-31
विवाह III-9; IV_23
भौतिकतावाद IV-26
सदस्य की देखभाल III-8
दया का प्रबन्धन III-10
नए नियम द्वारा अपेक्षित प्रबन्धन, खण्ड III(संपूर्ण)
मिश्नरी III-14; IV-27भेजे गए, IV 27 दल बनाये IV-39 मौरदकै रानी एस्तेर को परामर्श देता है IV-36
मूसा IV-16,22

N

नामान I-7
देश IV-28

जरूरतमंद, परवाह करना III-10
नहेम्याह का ज्ञानी प्रशासन III-2;IV-37
नई वाचा IV-18
नूह तथा बाढ़, परमेश्वर का मानवता पर दंड I-5; IV-4

O

मसीह के प्रति आज्ञाकारिता I-7; खण्ड II(संपूर्ण) आज्ञाकारी राजा IV-33
रहस्यमय IV-24
पुरानी वाचा IV-18
मौलिक पाप I-1;IV-2

P

मुक्ति दिवस III -3; IV-14
मार्गदर्शन का प्रशिक्षण III-6
मार्गदर्शन की देखभाल तथा परामर्श करना III-8
पौलुस का परिवार्तित होना I-8 पुनस्त्पादक समुदाए उगायों III-5
पिन्तेकुस्त IV-10,39
उत्पीड़न IV-31
पतरस यीशु का इनकार करता है IV-29 अपने सांस्कृति पुवाग्रहों के लिये पैलुस द्वारा डाँटा गया III-11
याजकता, IV-22
प्रार्थना II-5; III-12;IV-9
अपत्ययी पुत्र I -1;IV-34
परमेश्वर का वादा IV-6
वादा करी हुई भूमि IV-21
भविष्यवक्ता IV-34
दंड IV-4

Q

शेबा की रानी IV-33

R

धन-दौलत, विश्वासघात I-5
रूत III-13
राहाब IV-28
जातियाँ IV-5
पुर्नजन्म IV-1
लाल सागर IV-15
पुर्नजीवन IV-1
रहबाम की हठ इस्त्रायल को विभाजित करती है III-7

पश्चाताप I-1;7; II-1 ;IV-4,34
पुनरूद्धार IV-37
पुनरूथान I-3; IV बाबेल की बन्धनास्था से वापसी IV-37
धन दौलत IV-26
शासकए अच्छे IV-33
रूत IV-30

S

सब्त IV-19
विश्वास से मुक्ति IV-11
सामरी, अच्छा सामरी अपने पड़ोसी से प्यार करता था -4 सामरी स्त्री, कुएँ पर I-2
शमूएल IV-32 आज्ञाकारी बालक III-9
शरणास्थल IV-22
शैतानी तबाही IV-24; उसका स्वर्ग से गिराया जाना IV-35;
आदम को प्रलोभन देना IV-2; यीशु को प्रलोभन देना IV-35 शाऊल, राजा IV-32; दाऊद से मित्रवत व्यवहामर करने पर अपने पुत्र योनतान को शर्मिदा करता III-12
दूसरी मृत्यु IV-4
विश्वासियों की सुरक्षा IV-36
मार्गदर्शक सेवक III-6
एक दूसरे की सेवा करना III-5
शर्मिदगी, अपराध बोध के साथ तुलना III-12
परमेश्वर के लागों के मार्गदर्शक IV-17
बीमार, देखभाल तथा प्रार्थना करता III-10
पाप, IV-2;दंडित I-5
पाप, क्षमा किये I-3
दासता IV-13,15
छोटे समूह III-5
सुलेमान IV-33
आत्माऐं IV-24
आत्मिक वरदान III-2;IV-37
आत्मिक युद्ध IV-29,35
स्तिफनुस का निर्भीक साक्ष्य III-1; IV-31,39
सेवकाई II-7; III- 13; IV-8
दुबर्लता में शक्ति IV- 29
पीड़ा IV-31

T

पवित्रस्थान–III-3; IV 22
प्रलोभन IV-2
दस आज्ञायें IV-18
अध्यात्मिक शिक्षा, देखे मार्गदर्शन का प्रशिक्षण
स्वर्ग में खजाना IV-25
आग से परीक्षा IV-25
विजयी प्रवेश IV-38

V

भेंट करना–III-8

W

चेतावनी IV-34
जीवन का पानी IV-16
धन- दौलत IV-26
जादू–टोना IV-24
मसीह के साक्षी–I-8
आराधना, III-3; आवश्यक तत्व–II-3

Z

जक्कई का पश्चाताप I-6
महिला मार्गदर्शक IV-30
आराधना, सत्य में I-2